संपादकनां अन्य पुस्तको

संघविजयकृत सिंहासनबत्रीसी (१९३३)
माधवकृत रूपसुन्दर कथा (१९३४)
वीरसिंहकृत उषाहरण (१९३८)
वाघेलाओनु गुजरात (१९३९)
मतिसारकृत कर्पूरमंजरी (१९४१)
प्राचीन गुजराती साहित्यमां वृत्तरचना (१९४१)
इतिहासनी केडी—लेखसंग्रह (१९४५)
संघदासगणिकृत वसुदेव-हिंडी—अनुवाद (१९४६)
वस्तुपाल का विद्यामण्डल—हिन्दी अनुवाद (१९४७)
वस्तुपालनुं विद्यामंडळ अने बीजा लेखो (१९४८)
सत्तरमा शतकनां प्राचीन गुर्जर काव्य (१९४८)
ज्येष्ठीमल्ल ज्ञाति अने मल्लपुराण (१९४८)
पञ्चतंत्र (१९४९)
जगन्नाथपुरी अने ओरिसाना पुरातन अवशेषो (१९५१)
हेमचन्द्राचार्य का शिष्यमण्डल—हिन्दी अनुवाद (१९५१)
जैन आगमसाहित्यमां गुजरात (१९५२)
उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन १–१८ (१९५२)
भारतीय आर्यभाषा अने हिन्दी (१९५२)
नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित षष्टिशतक प्रकरण, त्रण बालावबोध साहित (१९५३)
Literary Circle of Mahāmātya Vastupāla and Its Contribution to Sanskrit Literature (1953)
शब्द अने अर्थ—ऐतिहासिक शब्दार्थशास्त्र विषे पांच व्याख्यानो (१९५४)

प्राचीन फागु-संग्रह (छपाय छे)
नन्दोपाख्यानम् (छपाय छे)

अनुक्रम

मुखपृष्ठ—उपयोगमां लेवायेली हस्तप्रतना प्रथम अने अंतिम पृष्ठना फोटा.

प्रस्तावना

आ कृतिना प्रकाशननुं प्रयोजन

महीराजकृत 'नल-द्‌वदंती रास' ए विक्रमना सत्तरमा शतकना आरंभमां रचायेलुं एक प्राचीन गुजराती काव्य छे. नलदमयंतीनी पुराणप्रसिद्ध कथा ए तेनो विषय छे. आ विषयनी आ करतां विशेष जाणीती रचनाओ आ कृतिना पहेलां तेम ज त्यार पछी रचायेली छे, अने आ करतां विशेष लोकप्रिय पण थयेली छे. छतां 'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'ना बीजा ग्रन्थ तरीके महीराजकृत आ 'नल-द्‌वदंती रास' पसंद करायो एनुं मुख्य कारण ए छे के **एनी हस्तप्रत कर्ताना हस्ताक्षरोमां ज सं. १६४१ जेटला जूना समयमां लखायेली मळी छे.** कोई कृतिनी हाथप्रत एना कर्ताना हस्ताक्षरोमां ज मळी होय ए घटना कोई पण देशना प्राचीन साहित्यना इतिहासमां विरल गणाय एवी छे. गुजराती साहित्यमां नरसिंह, भालण के प्रेमानंद जेवा लोकप्रसिद्ध कविओनी एकबे रचनाओ पण एमना हस्ताक्षरोमां लखायेली प्राप्त थाय—जो के एवी प्राप्तिनो खास संभव जणातो नथी—तो साहित्यना इतिहासमां ए अति महत्त्वनो बनाव गणाय. सद्‌भाग्ये केटलाक जैन लेखकोनी बाबतमां, एमनी कृतिओ एमना ज हस्ताक्षरोमां आज सुधी सचवाई रही होय एम बन्युं छे. विक्रमना बारमा शतकमां थयेला मलधारी हेमचन्द्रे ('कलिकालसर्वज्ञ' हेमचन्द्रथी भिन्न) 'जीवसमास' उपर रचेला संस्कृत विवरणनी एमना हस्ताक्षरोमां लखायेली ताडपत्रीय हाथप्रत खंभातमां शान्तिनाथना भंडारमां छे. विक्रमना तेरमा शतकना उत्तरार्धमां 'चैत्यवन्दन भाष्य' उपर धर्मघोषसूरिए रचेली 'संघाचार वृत्ति'नी कर्ताए स्वहस्ते संशोधेली अने

संस्कारेली ताडपत्रीय प्रत पण ए ज भंडारमां छे. सत्तरमा शतकमां थयेला कवि दामोदरकृत गुजराती काव्य 'सुरपतिकुमार प्रबन्ध' (रच्या सं. १६६०)नी सं. १६६५मां कविने हाथे लखायेली पोथी मारा पुराणवस्तुसंग्राहक मित्र पं. अमृतलाल मोहनलाल भोजके मने उपयोग माटे आपी हती. ए ज शतकमां थयेला कवि समयसुन्दरनी संख्याबंध रचनाओ एमना ज हस्ताक्षरोमां लखायेली मळे छे (जुओ 'नागरी-प्रचारिणी पत्रिका,' वर्ष ५७मां श्री. अगरचंद नाहटानो लेख 'कविवर समयसुन्दर,' पृ. १०-२०). अराढमा शतकमां थयेला महापंडित उपाध्याय यशोविजयजी जेमना स्मरणरूप सारस्वत सत्र गये वर्षे एमनी निर्वाणभूमि डभोईमां उजवायुं हतुं एमनी केटलीक संस्कृत तेम ज गुजराती रचनाओ एमना हस्ताक्षरोमां आज सुधी सचवायेली छे. एमां पण गुजराती साहित्यनी दृष्टिए विशिष्ट गणाय एवो, तर्कशास्त्रना कठिन प्रमेयोनुं विवेचन करतो यशोविजयजीनो 'द्रव्यगुणपर्यायनो रास' तथा ते उपरनो एमनो गद्य 'टबो,' एमना हस्ताक्षरोमां लखायेलो, हमणां मळ्यो होवाना समाचार पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीए मने आप्या छे. जिनहर्षकृत 'शत्रुंजयमाहात्म्य'नी सं. १७५५मां कर्ताना हस्ताक्षरोमां लखायेली पोथी पाटणना ग्रन्थभंडारमां छे. जिनहर्षकृत 'आरामशोभा रास'नी सं. १७६१नी स्वहस्तलिखित प्रति तथा क्षमाप्रमोदगणिकृत 'धर्मदत्त-चंद्रधवलनृप चोपाई'नी सं. १८२६नी स्वहस्तलिखित प्रति गया ऑक्टोबरमां अमदावादमां मळेली सत्तरमी अखिल भारत प्राच्य विद्या परिषदना प्रदर्शनमां मूकवामां आवी हती. गई शताब्दीमां थयेला वडोदरावासी कवि गिरधरनी केटलीक कृतिओ तथा कवि दयारामकृत 'रसिकवल्लभ'नी प्रत कर्ताना हाथे लखेली विद्यमान छे. आवां बीजां पण थोडां उदाहरण छे. परन्तु मूळ कर्ताना हस्ताक्षरोमां मळती आ प्रकारनी विरल पोथीओमां पण संस्कृत करतां गुजरातीनी-

बावतमां एक विशेष छे, अने ते ए के तत्कालीन शिष्ट भाषानुं स्वरूप समजवामां ए खूब ज उपयोगी थाय छे. भारतभरना विद्वन्मंडलमां जीवंत रहेली एक प्रकृष्ट भाषा तरीके संस्कृत सर्वदा विकास साधती रहेली छे, पण एनुं व्याकरण अने कोश सैकाओ थयां चोक्कस बनेलां होवाने कारणे भाषा तरीके एना शास्त्रीय अध्ययननो प्रश्न एटलो विकट नथी, जेटलो प्रान्तीय भाषाओनां जूनां रूपोनो छे. छेल्लां हजारेक वर्षोमां ए भाषाओ खूब झडपथी परिवर्तन पामेली छे, एनां ऐतिहासिक परिवर्तनो समजावनारां कोश अने व्याकरणो हजी हवे रचावानां छे, हस्तप्रतो केटलीक वार खूब अशुद्ध मळे छे अने नकल करनाराओए जाणी जोईने के अजाण्ये जूनी भाषाने अर्वाचीन स्वरूप आपी दीधेलुं होय छे. वळी संस्कृतना दृढ बंधवाळा अक्षरमेळ वृत्तोनी तुलनाए गुजराती वगेरे भाषाओना जूना साहित्यमां छंदो मुख्यत्वे मात्रामेळ के लयबंधने अनुसरनारा प्रयोजाया छे. आथी पण अभ्यास के संपादननी अमुक मुश्केली वधे छे. मूळ कर्ताओना हस्ताक्षरोमां लखायेली जे कृतिओ मळे एमनुं प्रकाशन आ दृष्टिए खास उपयोगी गणी शकाय. मूळ रचनानो आ पाठ कर्ताए लख्यो तेवो ज आपणने मळतो होई सौथी वधु अधिकृत गणाय ए तो खरुं ज, पण ग्रन्थकारो जूनी गुजराती भाषा आ रीते लखता—ओछामां ओछुं, आ ग्रन्थकारे तो आ रीते लख्युं छे—ए पण एमांथी जाणवा मळे. आपणी भाषा अने साहित्यना इतिहासमां दरेक सैके आवा एकबे सीमास्तंभो मळे तो भाषाशास्त्रीओ माटे ए खूब उपयोगी थाय.

'नल-दवदंती रास'नी हस्तप्रत अने तेनो कर्ता

हमणां जेनो निर्देश कर्यो ते दामोदरकृत 'सुरपतिकुमार प्रबन्ध'नी जेम, आ महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'नी हाथप्रत पण मने पं. अमृतलाल मोजक पासेथी मळी हती. जैन धाटीनी देवनागरी लिपिमां

लखायेली आ ५४ पत्रनी पोथी छे. ५४मा पत्रनुं बीजुं पृष्ठ कोरुं छे; बाकीनां बधां पत्र उपर बन्ने बाजुए लखाण छे. पोथीनां पानांनुं माप १०॥" × ४॥" छे अने दरेक पाना उपर नियमित १४ पंक्तिओ लखेली छे.

ग्रन्थप्रशस्तिमां कह्युं छे ते प्रमाणे, आ कृतिनी रचना सं. १६१२मां सेनापुरमां संघना कहेवाथी थयेली छे. आ सेनापुर गुजरातमां कये स्थळे आव्युं अथवा अर्वाचीन कया गामने सेनापुर तरीके ओळखाववुं एनो निश्चय थई शक्यो नथी. सेनापुर ए वखते हालनुं सीनोर होय एवो तर्क एक संमान्य विद्वाने रजू कर्यो हतो, पण एने माटे कशो आधार नथी. कोई चालु लोकप्रचलित नामनुं ग्रन्थकारे 'सेनापुर' एवुं संस्कृतीकरण कर्युं होय एम पण बने. जे प्रति उपरथी आ संपादन थयुं छे ए प्रति ग्रन्थकारे सेनापुरमां ज सं. १६४१मां एटले के मूळ रचना थया पछी २९ वर्षे लखी छे, एटले त्यार पहेलां ग्रन्थकारने हस्ते के बीजाओने हस्ते एनी केटलीक नकलो थई चूकी हशे.

ग्रन्थकर्ता महीराज एक जैन साधु छे. एमणे ग्रन्थप्रशस्तिमां पोतानी गुरुपरंपरा नीचे प्रमाणे आपी छे:—तपापक्षमां धर्मरत्नसूरिनी पाटे विद्यामंडनसूरि, अने तेमनी पाटे सौभाग्यरत्नसूरि थया. तेमना शिष्य विनयमंडन उपाध्याय हता. एमना बे मुख्य शिष्यो हता—विवेकमंडन अने सौभाग्यमंडन. ए सद्गुरुना चरण प्रणमीने महीराजे नल राजर्षिना गुण उल्लासपूर्वक गाया छे. प्रशस्तिने अंते सं. १६४१मां पुस्तक लखावानी जे पुष्पिका छे एमांथी स्पष्ट थाय छे के ग्रन्थकर्ता महीराज ए विनयमंडनना शिष्य हता. साध्वी विनयसुन्दरीनी शिष्या मरघाईना पठन माटे कर्ताए आ नकल करी हती.

गुजरातीमां नलकथा

नल-दमयंतीनुं पुराणप्रसिद्ध कथानक भारतना अन्य प्रान्तोनी

जेम गुजरातमां पण खूब लोकप्रियता पामेलुं छे, तथा जैन तेम ज जैनेतर कविओए पोतपोतानी रीते ए कथानकनो विनियोग करेलो छे. बीजा अनेक पौराणिक विषयो के लोकप्रिय वार्ताओनी बाबतमां बन्युं छे तेम, नळाख्यानना विषय उपर अनेक कविओए रचना करेली छे. जैनेतर कविओमां विक्रमना सोळमा शतकना पूर्वार्धमां कवि भालणे अने उत्तरार्धमां वडोदरानिवासी वणिक कवि नाकरे तथा अराढमा शतकमां कवि प्रेमानंदे 'नळाख्यान' रच्यां छे. तेमां ये प्रेमानंदनुं 'नळाख्यान' तो एना विशिष्ट काव्यगुणे करीने गुजरातना साहित्य-रसिकोमां तेम ज बहुजनसमाजमां अपूर्व लोकप्रियता पाम्युं छे अने गुजरातनां मध्यकालीन आख्यान-काव्योमां सर्वप्रथम स्थाननुं अधिकारी बन्युं छे. जैन कविओमां सं. १५२९ पहेलां अज्ञातकर्तृक 'नल-दवदंती चरित्र' (जुओ आ ग्रन्थनुं परिशिष्ट) उपरांत ऋषिवर्धनसूरिए सं. १५१२मां 'नलदवदंती रास—नलराज चउपइ' (संपादक अर्नेस्ट बॅन्डर, फिलाडेल्फिया, १९५१), वाचक नयसुन्दरे सं. १६६५मां 'नल-दमयंती रास' (प्रसिद्ध, 'आनंदकाव्यमहोदधि,' ग्रन्थ ६), वाचक मेघराजे सं. १६६४मां 'नल-दमयंती रास,' वाचक समयसुन्दरे सं. १६७३मां 'नल-दवदंती रास,' सेवक नामे कविए विक्रमना १७मा शतक आसपासमां 'नल-दवदंती विवाहलु,' पालनपुरना श्रीमाली वणिक वासणसुत भीमे सं. १७२७मां 'नळाख्यान' तथा सं. १७८२मां इलोलमां गुलालविजये 'नल-दमयंती रास' रच्यो छे. नलकथा विषेनी एकाद गद्यकृति पण १९मा सैका आसपासमां रचाई छे.

प्रेमानंदादिना 'नळाख्यान'नो आधार 'महाभारत'ना 'वनपर्व'-मांनुं 'नलोपाख्यान' छे, अने ए मूल कथानो उद्देश राज्यसमृद्धिथी भ्रष्ट थई वनवासना दारुण दुःखमां आवी पडेला युधिष्ठिरने नल-दमयंतीनां सुखदुःखनी कथा कहीने धीरज आपवानो छे. जैन कविओए

आ कथानकनो उपयोग कर्मनो सिद्धान्त घटाववा माटे तथा दानमहिमा समजावीने जैन धर्मनो उपदेश आपवा माटे मुख्यत्वे करेलो छे, अने एथी कथारस अनेक स्थळे चेपाय छे. आम छतां नयसुन्दर जेवा कविए आ बधी मर्यादाओनी वच्चे रहीने पण एक सुन्दर साहित्यकृति आपी छे.

जूना गुजराती साहित्यमां नलकथानी आम बे परंपराओ छे.

महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'नो कथासार

हवे, महीराजकृत 'नल-दवदंती रास'नी कथानी रूपरेखा जोईए:–

आदितीर्थंकर अने ब्रह्मपुत्री सरस्वतीनी स्तुति करीने तथा पूर्वकालना कविओनी तुलनाए पोतामां अनेक प्रकारनी त्रुटि होई सरस वाणीनी प्राप्ति माटे शारदाने प्रार्थना करीने कर्ता 'नल-दवदंती रास'नो प्रारंभ करे छे.

जंबुद्वीपना भरतक्षेत्रमां सागरपुर नामे नगर हतुं. त्यां मम्मण नामे राजा हतो. एनी वीरमती नामे पटराणी हती. एक वार मम्मण राजा वीरमतीनी साथे नगर बहार शिकारे जतो हतो त्यां एक ऋषि सामे मळ्या. राजाए विना कारण ऋषिने संताप्या, पण ऋषि तो पोतानी सौम्य दृष्टिथी चळ्या नहि. आथी आश्चर्य पामीने राजा ऋषिने पगे पड्यो अने पूछ्युं के 'हे स्वामी! तमारो धर्म केवो छे? अने तमे क्यां जाओ छो?' ऋषिए उत्तर आप्यो के 'हुं अष्टापद तीर्थनी यात्राए जाउं छुं, अने संघथी छूटो पडी गयेलो हुं मार्ग चूकीने अहीं आव्यो छुं.' आ पछी मुनिए राजा-राणीने केटलोक उपदेश कर्यो अने दयामूलक जिनधर्मनो मर्म समजाव्यो. आथी बन्ने जणां आनंद पाम्यां. मुनिने घेर तेडीने श्रद्धापूर्वक दान दीधुं. पछी मुनि अष्टापद तरफ वळ्या अने राजा जिनधर्मनुं पालन करवा लाग्यो. मम्मण राजा अने वीरमती आखुं जीवन दयाधर्म पाळीने देवरिद्धि पाम्यां.

पोतनपुरमां धम्मिल्ल नामे आहीर अने तेनी पत्नी रेणुका रहेतां हतां. मम्मणनो जीव धन नामे एमनो पुत्र थईने अवतर्यो. पाछला भवनी जे वीरमती ते पण आहीरकुलमां अवतरी अने धूसरी नामे धननी पत्नी थई. एक वार वर्षाऋतुमां धने नगरनी बहार ध्यानस्थ रहेला एक मुनिने जोया. धनने दया आवी अने एणे एमना माथा उपर छत्र धर्युं. पोताना घेरथी ताजुं दूध लावीने तेणे मुनिने प्रेमपूर्वक पारणुं कराव्युं. चातुर्मासमां ए मुनिने त्यां ज राख्या अने तेमनी पासेथी श्राद्ध अर्थात् श्रावकनो धर्म सांभळ्यो. पछी त्यां सात वर्ष सुधी चारित्र पाळीने धन अने धूसरी ए दंपती हिमवत क्षेत्रमां युगलिक* तरीके उत्पन्न थयां. त्यांथी अवसान पामीने देवरिद्धि पाम्यां. ए पछीनो एमनो जन्मान्तरप्रसंग कवि विस्तारथी वर्णवे छे.

धन-कनक वडे अतिसमृद्ध अने सघळा देशोमां शृंगाररूप कोसल नामे देश छे. एमां कोसला नगरी छे. एनुं वर्णन जूनां गुजराती कथा-काव्योनी परिपाटीए कवि करे छे. ए नगरीमां निषध राजा हतो अने तेनी सुन्दरी पटराणी हती. देवरिद्धि भोगवतो जे धननो जीव हतो ते सुन्दरीनी कूखमां आव्यो. सुन्दरीने अनेक प्रकारना धर्मप्रधान दोहद थवा लाग्या अने राजा ए दोहद पूरा करवा लाग्यो. एम करतां, नव मास पूरा थतां निषधराजाने घेर पुत्रजन्म थयो, सर्वेनी आशा पूरी थई अने सर्वत्र उत्सव थई रह्यो. उत्तम लक्षणवाळा ए पुत्रनुं नाम नल पाडवामां आव्युं. बीजना चंद्रनी जेम ए कुमार वधवा लाग्यो, अने पांच

* जे समये अने जे क्षेत्रोमां लग्नसंस्था स्थपाई नहोती ए समये अने ए क्षेत्रोमां स्त्रीपुरुषनां युगलो साथे जन्मतां, संसार भोगवतां अने एवां ज युगलोने पाछळ मूकी अवसान पामतां, एवी एक प्राचीन मान्यता छे. लोको बधा सात्त्विक प्रकृतिना हता अने जीवननी बधी जरूरियातो अनायासे प्राप्त थती, आथी राज्यदंडनुं अस्तित्व पण ए समये नहोतुं.

वर्षनो थयो एटले तेने विद्याभ्यास माटे निशाळे मूक्यो. नले थोडा समयमां छंद, लक्षण (व्याकरण), साहित्य, प्रमाण, ज्योतिष, नाटक, सामुद्रिक, स्मृति, पुराण, वेद आदि शास्त्रो जाणी लीधां तथा बोतेर कळा पण शीखी लीधी. एम करतां कुमार यौवनवेशमां आव्यो.

आ तरफ, सर्व देशोमां सारभूत विदर्भ देश छे. एमां रळियामणुं नगर कुंडिनपुर हतुं. त्यां भीमकराजा राज्य करतो हतो. एने पुष्पदंती राणी हती. राणीने एक वार स्वप्न आव्युं के जाणे दावानळथी त्रासेलो सफेद हाथी पोताने त्यां आव्यो छे. राणीए पोताना पतिने आ स्वप्न कह्युं अने एनुं फल पूछ्युं. राजाए उत्तर आप्यो के ' तने उत्तम संतान प्राप्त थशे. ' पाछला भवनी धूसरीनो जीव पुष्पदंतीनी कूखे अवतर्यो, शुभ दिने पुत्रीनो जन्म थयो. एना शरीरनां लक्षण उत्तम हतां अने कपाळमां तिलक हतुं. पांच धात्रीओ जेने उछेरती हती एवी ए कन्यानुं नाम दवदंती पाडवामां आव्युं.* ए पुत्री जन्मी त्यारथी शत्रु राजाओ भीमकनी आण मानवा लाग्या, देशमां भंडार वध्यो तथा कुटुंब अने प्रजाने अधिकतर सुख प्राप्त थयुं. आठ वर्षनी थतां एने निशाळे मूकवामां आवी. त्यां चोसठ कळा, अराढ लिपि अने सर्व शास्त्रोमां ए पारंगत थई तथा एनी जीभ उपर सरस्वतीए वास कर्यो. जिनधर्म पण तेणे सारी रीते जाण्यो हतो तथा ए सम्यक्त्व पाळती हती. एनां धर्मकार्योथी प्रसन्न थईने शासनदेवताए एने तीर्थंकर शान्तिनाथनी मूर्ति आपी हती अने कह्युं हतुं के ' आ मूर्तिनी पूजाथी तने सुख मळशे तथा दुर्गति दूर थशे. '

शास्त्रनिष्णात थयेली दवदंती एक वार राजसभामां आवी. पिताए एने उत्संगमां बेसाडी, अने शास्त्रने लगता जे संदेहो पूछ्या एना एणे

* दवथी त्रासेलो दंती (हाथी) राणीना स्वप्नमां आव्यो, तेथी कन्यानुं नाम दवदंती पाडवामां आव्युं.

सुन्दर उत्तर आप्या. दवदंतीने पूर्ण कलाकुशल जोईने भीम हर्षित थयो, पण अराढ वर्षनी यौवनवेशमां आवेली कन्या जोईने एने वरनी चिन्ता थवा लागी.

पछी भीमे उत्तम स्वयंवरमंडप रच्यो अने देशदेशना राजाओने त्यां आमंत्रण आप्युं. एमां कोशल देशथी नल अने एनो भाई कूबर पण आव्या. इन्द्रना सामानिक देवो जेवा बधा राजाओ स्वयंवरमां पोतपोतानां सिंहासने आवीने बेठा. कोई मूछ मरडता हता, तो कोई हाथमां कमळ धारण करीने बेठा हता. कोई मालतीनो परिमल पोते लेता हता अने बीजाने आपता हता, कोई हाथमां फूलनो दडो उछाळता हता तो कोईए हाथमां केवडो राख्यो हतो. कोईए वळी आमळां जेवडां मोतीनो हार पहेर्यो हतो अने ते हाथमां पकडीने जोता हता.

रूपथी तिलोत्तमाने पण हरावती दवदंती सर्व शृंगार धारण करीने स्वयंवरमंडपमां आवी. 'आ ते विद्याधरी छे के किन्नरी? लक्ष्मी के सरस्वती?' एम विमासता राजाओ जाणे चित्रमां आलेखेला होय एम स्तब्ध थई गया. राजाओनां गाम, ठाम अने कुळनी जेने जाण हती एवी प्रतिहारीए ए सौनो दवदंतीने परिचय कराव्यो, पण राजकुमारीए तो सौभाग्यनिधि नलने जोईने एना ज कंठमां हार आरोप्यो. ए समये कृष्ण नामे एक राजा अमर्षथी नल साथे युद्ध करवा लाग्यो, पण नले एने हराव्यो.

पछी भीमराजाए भारे धामधूमथी नल अने दवदंतीनुं लग्न कराव्युं. राजाए आपेला सप्तभूमि-आवासमां नल अने कूबर घणा दिवस सुधी रह्या पछी तेमणे विदाय लीधी. मार्गमां एक ध्यानस्थ मुनिने वंदन करीने दवदंती सहित ए बन्ने जण पोताना नगरमां आव्या. दवदंतीए सासुससराने चरणे मस्तक नमाव्युं.

केटलाक समय पछी निषधराजाए नलने राज्य सोंपीने, उचित धर्मशिक्षा आपीने, दीक्षा लीधी. ए पछी नलराजाए त्रिखंड पृथ्वी उपर दिग्विजय कर्यो, अने सर्व राजाओ एनी सेवा करवा लाग्या.

नलराजानो नानो भाई कूबर आ ख्याति जोईने चित्तमां अबटातो हतो अने ईर्ष्या करतो हतो. नल अने दवदंती सुख भोगवतां हतां. ईश्वर अने पार्वती, चातक अने मेघ, मधुकर अने मालती, पाणी अने माछली, कमलिनी अने सूर्य जेवो स्नेह एमनी वच्चे हतो. पण संचित पुण्य होय त्यां सुधी ज सुख भोगवाय छे. कवि कहे छे के आ संबंधमां आगळनो वृत्तान्त सांभळो.

नलने राज्यभ्रष्ट करवा इच्छता कूबरे एक अवधूत पासेथी पोतानी इच्छापूर्ति थाय एवो मंत्र मेळव्यो. पछी तेणे नलने द्यूत रमवा आमंत्रण आप्युं अने नले ए स्वीकार्युं. वृद्ध मंत्रीओनी अने दवदंतीनी विनंतीओ सांभळ्या विना राजा द्यूत रम्यो अने सर्वस्व हारी गयो. कूबरे नलने कह्युं के 'हवे आ मारी भूमि छे, माटे तमे अन्यत्र जाओ.' दवदंती सहित नल वनमां जवा नीकळ्यो अने नगरमां सर्वत्र शोक छवाई रह्यो.

दवदंती अने नल बन्नेए कुंडिनपुर जई आश्रय लेवानो विचार करी ते तरफ रथ चलाव्यो, पण मार्गमां भीलोए एमनो रथ लई लीधो, एटले तेओ पगपाळां चाल्यां. वीसामो लेतां लेतां, अडवाणे पगे पाटा बांधीने तेमणे अटवीमां महादुःखपूर्वक मार्ग कापवा मांड्यो. पाणी पीवा माटे पासे जलपात्र पण नहोतां. एम करतां एक अशोकवृक्षनी छायामां बन्ने रातवासो रह्यां. दवदंती निद्राधीन थई अने नल जागतो बेठो. एणे विचार कर्यो के 'आ स्थितिमां ससराने त्यां जवामां मारुं मान नहि रहे, आथी आ स्त्रीनो त्याग करीने परदेश चाल्यो जाउं.' दवदंती जे वस्त्र पाथरीने सूई गई हती एना उपर पोताना रुधिरथी नले अक्षर लख्या के

'तुं पियर जजे, हुं परदेश जाउं छुं.' अंतरमां द्विधा अनुभवतो, पाछुं वाळीने जोतो जोतो ए चाल्यो गयो.

ए समये दवदंतीने स्वप्न आव्युं के जाणे पोते एक आंबा उपर केरी लेवा माटे चढी छे, पण एटलामां हाथीए आवीने ए झाड उखाडी नाख्युं अने पोते भूमि उपर पडी गई. ए ज समये एनी ऊंघ ऊडी गई अने पासे नलने नहि जोतां ते विलाप करवा लागी. एम केटलो ये समय वीती गया पछी, हृदयमां दुःख धरतां धरतां एणे बिहामणी अटवीमां थईने पियरनो मार्ग लीधो. मार्गमां एने एक सार्थ मळ्यो. एनो सार्थवाह वसंत नामे एक वेपारी हतो. थोडे आगळ जतां सार्थने लूंटवा माटे चोर आव्या, पण दवदंतीए भगवाननुं ध्यान धरीने होंकारो करतां ए बधा नासी गया. वातचीतमां मालूम पड्युं के वसंत सार्थवाह अनेक रीते नलना उपकार नीचे आवेलो हतो. एणे दवदंतीनी अनेक प्रकारे शुश्रूषा करी. पण त्रणचार दिवस पछी सार्थ पोताने मार्गे गयो अने दवदंती वनमां एकली रही.

आगळ चालतां जंगलमां एक विकराळ राक्षस दवदंतीनुं भक्षण करवा आव्यो, पण दवदंतीए एने पोतानो परिचय आप्यो अने दृढता-पूर्वक एने 'भाई' कहीने बोलाव्यो. राक्षसे दवदंतीने अभयवचन आप्युं, अने अवधिज्ञानथी* जोईने कह्युं के 'बार वर्षे तने पियरमां पतिनो मेळाप थशे.'

पछी दवदंती एक पर्वतनी गुफामां शान्तिनाथनी वेळुनी मूर्ति बनावीने एनी पूजा करती रहेवा लागी. त्यां विमलमति तापस सहित पांचसो तापसोने तथा पोताना प्रवासमांथी त्यां पाछा आवेला वसंत सार्थवाहने एणे प्रतिबोध पमाड्यो. प्रतिबोध पामेला तापसोए त्यां तापसपुरी नामे नगर वसाव्युं.

* अमुक अवधि—मर्यादामां जे द्वारा पदार्थोनुं ज्ञान थाय एवो अतीन्द्रिय ज्ञानविशेष.

ए गुफामां दवदंती सात वर्ष सुधी रही. कोई प्रवासीए पोताने नलनी भाळ क्यांक मळी होवानुं कह्युं, तेथी फरी पाछी ए नलनी शोधमां बहार नीकळी. केटलोक समय अरण्यमां रझळया पछी एक सार्थनो तेने भेटो थयो. एनो सार्थवाह धनदेव नामे हतो. एनी साथे ते अचलपुर पहोंची. दवदंतीने त्यां मूकीने सार्थवाह आगळना प्रवासे गयो.

अचलपुरमा ऋतुपर्ण राजा राज्य करतो हतो. एनी चंद्रयशा पटराणी हती. एनी दासीओ वावमा पाणी भरवा आवी हती. त्यां पाणी पीवा आवेली, कादवे खरडेली कमलिनी जेवी, दुःखी पण दिव्यरूपी दवदंतीने एमणे जोई, अने चंद्रयशा पासे जई एने विषे वात करी. चंद्रयशाए दासीओ द्वारा दवदंतीने बोलावी. चंद्रयशा अने दवदंतीनी माता बन्ने सगी बहेनो हती; पण घणां वर्ष वीती गयां होवाथी दवदंतीने कोई ओळखी शक्युं नहि. दवदंतीए साची वात नहि कहेतां वणिकपुत्री तरीके पोतानी ओळखाण आपी, अने त्यां रहेवा लागी. चंद्रयशानी पुत्री चंद्रवतीनी साथे दवदंतीने घणो स्नेह थयो.

चंद्रयशा पटराणी नगरनी बहार दानशाळामां सुपात्रोने दान आपती हती. त्यां दवदंती पण बेसती, दान आपती अने जे कोई परदेशी आवे एने नलराजाना समाचार पूछती, अने बपैयो जेम मेघनी वाट जुए तेम, नलनी वाट जोती.

हवे, भीमकराजाए एम सांभळ्युं के नलना भाई कूबरे नलनुं राज्य लई लीधुं छे तथा नल अने दवदंती क्यांक चाल्यां गयां छे. भीमकनी पत्नी पण खूब चिन्ता करवा लागी. राजाए हरिमित्र पुरोहितने नल अने दवदंतीनी शोध करवा माटे मोकल्यो. फरतां फरतां हरिमित्र अचलपुरमां आव्यो, अने ऋतुपर्ण राजा अने चंद्रयशा राणीने मळ्यो.

चंद्रयशाए आववानुं प्रयोजन पूछतां हरिमित्रे बधी वात करी. ए सांभळी चंद्रयशा रडवा लागी. पण हरिमित्र दानशालाए गयो त्यारे दवदंतीने तेणे ओळखी अने पछी मासी-भाणेज मळ्यां. आटलो समय गुप्त रीते रहेवा माटे चंद्रयशाए दवदंतीने ठपको आप्यो.

थोडा दिवस वीत्या बाद हरिमित्रे दवदंतीने साथे लई भीमराजा पासे जवानी रजा मागी. चंद्रयशाने प्रणाम करीने दवदंती नीकळी तथा ऋतुपर्ण पण विदाय देवा आव्यो. कुंडिनपुर पहोंचतां भीमराजा अने पुष्पदंती पुत्रीनो सत्कार करवा सामे आव्यां. पोतानी माताने जोईने दवदंतीनुं हृदय भराई आव्युं अने ए रोवा लागी. गंगा अने यमुनानी जेम माता अने पुत्री मळ्यां. माताए पुत्रीने आश्वासन आप्युं अने भवितव्यतानुं प्राबल्य समजाव्युं. भीमराजाए प्रसन्न थईने हरिमित्र पुरोहितने पांचसो ग्राम आप्यां. नगरमां उत्सव थयो. देवगुरुनी भक्ति करवामां आवी अने कुटुंब संतोष पाम्युं. पियरमां रहेती दवदंती शुद्ध भावथी भगवाननुं स्मरण करती हती अने भगवानने कदी वीसरती नहोती.

पण दवदंतीनो त्याग कर्या पछी नल उपर शुं शुं वीत्युं एनो वृत्तान्त कवि कहे छे. 'आ हुं दवदंतीनो द्रोह करुं छुं' एम मनमां झूरतो नल साहस करीने, हृदय कठण करीने दवदंतीने मूकीने नीकळ्यो. एवामां तेणे वनमां दावानल जोयो, अने 'हे नल! रक्षण कर!' एवो अवाज सांभळ्यो. ए सांभळीने नल त्यां आव्यो तो एक मोटा नागने तेणे दावानलमां दाझतो जोयो. उपकारबुद्धिथी नले एने उपाडीने बहार काढ्यो त्यां नागे एना हाथ उपर दंश कर्यो. 'हुं उपकार करवा आव्यो, अने आ तें शुं कर्युं?' एम नल बोले छे एटलामां तो एनुं शरीर कूबडुं अने अत्यंत कुरूप थई गयुं. नल विचारे छेः 'आ ते केवी दैवगति?

नारीनो वियोग थयो अने कूबडापणानो कुयोग थयो ! उपकारनुं आ फल ! हवे क्यां जाउं ?' एटलामां त्यां तेजपुंज देवतानुं रूप प्रगट थयुं अने तेणे कह्युं, 'हुं पाछला भवनो तारो पिता निषध छुं. *ब्रह्मलोकमां हुं देव छुं. तें घणा राजाओ उपर विजय कर्यो छे अने तेमना देश लई लीधा छे. आथी कोई तने पीडा करे नहि ए सारु हितबुद्धिथी तने में कूबडो बनावी दीधो छे.' एम समजावीने तेणे पुत्रने एक श्रीफल अने रत्नकरंडक आप्यां, अने कह्युं के 'ज्यारे तारुं मूळ रूप धारण करवानी जरूर पडे त्यारे आ श्रीफल वधेरजे, अने तेमांथी एक देवदूष्य नीकळशे ते पहेरजे. रत्नकरंडकमाथी रत्नजडित हार अने बीजां आभरण नीकळशे ते पहेरजे.' वळी निषधदेवे पुत्रने आश्वासन आप्युं के 'तारी पत्नी पोताना पिताने त्यां छे, माटे एनी चिन्ता करीश नहि. तमारो बन्नेनो निश्चित मेळाप थशे.' पछी नलना कहेवाथी देवे एने सुंसमारपुर पासेना नंदनवनमां मूकी दीधो त्यां प्रासादमां नेमिनाथनी मूर्तिनी पूजा करीने नल नगरमां नीकळ्यो. ए वखते एक हाथी मत्त थईने नासतो हतो एने नले पोतानी कलाथी वश करी दीधो. गोखमां बेठेला दधिपर्ण राजाए एनुं आ पराक्रम जोयुं अने सोनानुं सांकळुं प्रीतिदान तरीके आपी पोतानी पासे बेसाड्यो. पछी सूर्यना तापथी रसोई करवानी पोतानी कला पण नले दधिपर्णने बतावी. दधिपर्णने थयुं के 'आ कला तो नल सिवाय बीजुं कोई जाणतुं नथी.' पण आ कूबडो नल होई शके एम ते कल्पी शक्यो नहि. दधिपर्णे नलने मोटुं प्रीतिदान आप्युं अने नल पण आ गुप्त रूपमां

---

* पूर्वज नाग थाय ए गुजराती लोकसमाजनी मान्यता घणी जूनी छे. आचार्य हेमचन्द्रना शिष्य रामचन्द्रना (विक्रमनो बारमो सैको) संस्कृत 'नलविलास नाटक'मां पण आ प्रकारनुं निरूपण छे. (जुओ 'नलविलास नाटक' विषे प्रो. रामनारायण वि. पाठकनो लेख, एमनो लेखसंग्रह 'आलोचना', पृ. २२३) लोकप्रचलित मान्यतानो जैन लेखकोए एक साहित्यिक प्रयोजन (Motif) लेखे अहीं उपयोग कर्यो जणाय छे.

त्यां रहीने दधिपर्णनी सेवा करवा लाग्यो. एनी विद्या विषे दधिपर्णे प्रश्न करतां एणे उत्तर आप्यो के 'हुं हुंडिक नामनो नलनो रसोइयो छुं, अने एनी पासेथी आ विद्या शीख्यो छुं. नल-दवदंती वनमां गयां, पछी नल तो स्वर्गवासी थयो अने हुं अहीं आवी पहोंच्यो छुं.'

पछी एक वार दधिपर्ण राजाए पोतानो एक दूत राजकाजने अंगे भीमराजाना दरबारमां मोकल्यो. तेणे आ बधा समाचार त्यां कह्या. आमां नलनो संबंध आवतो जोई एनुं रहस्य जाणवाने दवदंती उत्सुक थई अने तेणे नलनी शोध कराववा माटे पिताने विनंती करी. भीमराजाए कुशल ब्राह्मणने सुंसमारपुर मोकल्यो. ब्राह्मण दधिपर्णनी सभामां आव्यो, अने त्यांथी कूबडाना निवासस्थाने गयो. एने जोईने ज ब्राह्मणे विचार्युं, 'दवदंती निष्कारण मोह धरे छे. क्यां राणी ने दासी! क्यां राजा ने रंक! क्यां कायर ने धीर? क्यां सोनुं ने माटी! क्यां दिवाळी ने होळी! क्यां कीडियां ने मोती! क्यां नलराजा अने क्यां आ कूबडो!'

पछी कूबडो राजसभामां आव्यो एनी साथे ब्राह्मण पण आव्यो. त्यां वधु रहस्य जाणवा माटे, राजानी अनुज्ञा लई ब्राह्मणे संगीत शरू कर्युं. ए सांभळी कूबडो प्रसन्न थयेलो जणायो, एटले ब्राह्मणे एक दूहो कह्यो—

निसत्त्व निर्दय निस्त्रप, धूर्तमांहि रेह;
अबला नारी तेहनइ नलइ दीधु छेह.

आ दूहो सांभळीने कूबडाने दवदंती सांभरी आवी अने ते रडवा लाग्यो. ब्राह्मणे तेने पूछ्युं के 'हे भाई! तुं आटलुं वधुं शा माटे रडे छे? तने शेनुं दुःख ऊपज्युं?' कूबडाए उत्तर आप्यो, 'तमारा मधुर गानमां हुं लीन थई गयो हतो, एटले आंखमां आंसु आव्यां. पण तमे जे सरस दूहो संभळाव्यो एनो अर्थ कहो.' ब्राह्मणे पोताना आगमननुं प्रयोजन

कह्युं, त्यारे कूबडो बोल्यो के 'तमे सांभळ्युं छे ते प्रमाणे, हुं नल राजानो रसोइयो छुं ए खरी वात छे, पण नल तो सुरलोकमां पहोंच्यो छे.' पछी ब्राह्मणने कूबडो पोताने घेर लई गयो, सूर्य-रसवती जमाडी अने प्रीतिदान आप्युं. पछी ते ब्राह्मण भीमराजाना नगरमां आव्यो अने बधा समाचार कह्या. ए सांभळीने दवदंतीनुं वाम अंग फरक्युं. मनमां हर्ष थयो अने 'ए ज मारो वल्लभ नल हशे' एवो चित्तमां प्रकर्ष थयो. तेणे पिताने कह्युं के 'नल विना बीजुं कोई सूर्यपाक रसवती जाणतुं नथी, माटे कुब्जकने अहीं तेडावो. ए नल हशे तो जरूर हुं ओळखी शकीश.' आवी कुब्जकना रूपमां नल होय तो जरूर दधिपर्ण राजानी साथे ते आवे एटला माटे भीमके दवदंतीनो स्वयंवर कर्यो होवानुं दधिपर्णने कहेवराव्युं. स्वयंवरनुं मुहूर्त चैत्र सुद पांचमे हतुं, अने दूत मात्र एक ज दिवस पहेलां, चोथना दिवसे आव्यो हतो. दधिपर्ण विचार करवा लाग्यो के 'छ-सात पहोरमां कुंडिनपुर शी रीते जवाय?' कुब्जके राजाने धीरज आपी के पोते तेने समयसर कुंडिनपुर लई जई शकशे, परन्तु एना मनमां तो विमासण ए हती के दवदंती जेवी सतीनो स्वयंवर बीजी वार शी रीते थई शके?

पछी कुब्जके रथ तैयार कर्यो अने छत्रधर, बे चमरधर, स्थगीधर, राजा अने कुब्जक एम छ जण एमां बेठा. पोताना पिता निषधदेवे आपेलुं श्रीफल अने रत्नकरंडक साथे लईने कुब्जके रथ हांक्यो. पवन-वेगे रथ चाल्यो. एवामां राजानी पछेडी ऊडी अने तेणे रथ अटकाववा कह्युं, पण एने कहेवामां आव्युं के रथ एटली वारमां तो पचीस योजन चाल्यो गयो हतो. एवामां मार्गमां बहेडानुं वृक्ष आव्युं. राजाए कूबडाने कह्युं, 'आ वृक्ष उपर केटलां बहेडां छे ए मारी विद्याना प्रतापथी वगर गण्ये हुं कही शकुं छुं.' त्यारे कूबडाए उत्तर आप्यो के 'एक ज मूठीनो प्रहार करीने ए बधांने एक साथे नीचे पाडुं तो मारी विद्याने

तमारा करतां अधिक गणजो.' पछी कुब्जके मूठीनो प्रहार कर्यो, एटले बधां फळ एक साथे नीचे पड्यां अने राजाए एनी साची संख्या अराढ हजार कही. कुब्जके राजाने अश्वविद्या अने गजविद्या आपी अने एनी पासेथी गणितविद्या लीधी.

कुब्जकनी कुशळताना प्रतापे सूर्योदय थतां तो कुंडिनपुरमां रथ आवी पहोंच्यो. भीमराजा स्वागत करवा सामे आव्यो, अने दवदंतीना हर्षनो पार न रह्यो. भीमे दधिपर्णने पूछ्युं के 'छ पहोरमां तमे केवी रीते आवी शक्या?' दधिपर्णे कह्युं के 'कुब्जकनी विद्याथी'. पछी भीमनी विनंतीथी कुब्जके सूर्यपाक रसोई बनावी अने सर्वे ए जम्यां. ए जंम्या पछी तो दमयंतीना मनमां कुब्जक नल होवा विषे संदेह न रह्यो. भीमराजाए कुब्जकने अनेक प्रश्नो कर्या, पण एनो स्पष्ट उत्तर मळ्यो नहि; पण कुब्जकना अंगुलिस्पर्शथी दवदंतीनां गात्र रोमांचित थयां; अने आश्चर्य पामतां परिजनोने तेणे कह्युं के 'काळो, कूबडो अने अति रंक होवा छतां आ निष्कलंक नल छे.' पछी नले श्रीफलमांथी देवदूष्य अने रत्नकरंडकमांथी अलंकार काढीने पहेर्यां, एटले पूर्वे हतुं एवुं, कन्दर्प सरखुं एनुं रूप थयुं. दवदंतीए नलने जोईने ऊलट धरीने आलिंगन दीधुं, अने बन्नेए पोतपोतानी वीतक-वात कही. भीमराजा नलनी सेवा करवा लाग्यो, अने दधिपर्णे पण पोते जे कंई अपराध कर्यो होय एनी क्षमा मागी; पण नले तो पोताने आश्रय आपवा बदल ऊलटो एनो सामो आभार मान्यो. धनदेव सार्थवाह त्यां आवी पहोंच्यो; एनुं बहुमान करवामां आव्युं. दवदंतीनी मासी चंद्रयशा, एनो पति ऋतुंपर्ण राजा अने एमनी पुत्री चंद्रवतीने आदरपूर्वक त्यां तेडाव्यां. जे विमलमति तापसने दवदंतीए वनवासमां बोध कर्यो हतो ते मरण पामीने सौधर्म देवलोकमां देव थयो हतो ते सौना आश्चर्य वच्चे त्यां आव्यो, अने

पोतानी देवरिद्धिने दवदंतीनो कृपाप्रसाद गणावी, तेणे सुवर्णनी वृष्टि करी. भीमराजाए नलनो राज्याभिषेक कर्यो.

घणा मास त्यां रह्या पछी ससरानी रजा लईने नलराजा कोसला-नगर जवा नीकळ्यो, अने दवदंतीए पण पोतानी मातानी विदाय लीधी. कूच करतां तेओ कोसलानगर आवी पहोंच्यां अने उपवनमां पडाव नाख्यो. कूबरना मनमां मोटो भय पेठो. नले नगरमां प्रवेश कर्यो, अने नगरमां सर्वत्र आनंद-उत्सव थई रह्यो. कूबरने आश्चर्य ए थयुं के 'आवी निष्किंचन अवस्थामां नीकळ्यां हतां अने सैन्य लईने क्यांथी आव्यां ?'

पछी नले फरी वार कूबरने द्यूत रमवानुं कहेण मोकल्युं, अने द्यूत रमतां एनी बधी समृद्धि जीती लीधी. पण एने नगरमांथी हांकी नहि मूकतां दवदंतीनी सलाहथी एने राज्यमां पदवी आपी. पछी शुभ मुहूर्ते नलनो अभिषेक थयो एम जणावी कर्ता पुण्यनो महिमा वर्णवे छे.

एम करतां घणो समय वीती गया पछी नलनो पिता जे देव थयो हतो तेणे एक वार नलने उपदेश करी, संसारनी अनित्यता समजावी एने सविशेष धर्माभिमुख कर्यो. एवामां कोसलानगरना उद्यानमां जिनसेनसूरि नामे आचार्य आव्या. एमने वंदन करवा माटे नल अने दवदंती गयां. दवदंतीए आचार्यने पूछ्युं के 'अमने आटलो वियोग शाथी पड्यो ?' त्यारे आचार्ये उत्तर आप्यो, 'मम्मण अने वीरमतीना भवमां तमे यतिने बार घडी पीडा करीने पापकर्म बांध्युं, माटे बार वर्षनो वियोग पड्यो, परन्तु आहीरना भवमां तमे दूधनुं दान कर्युं, एथी आटली समृद्धि प्राप्त थई छे.' पछी संसारथी विरक्त थयेलां नल अने दवदंतीए, पुष्कल नामे पुत्रने राज्य सोंपीने, गुरु पासे दीक्षा लीधी अने कठिन धर्माचरण शरू कर्युं.

साधुअवस्थामां पण एक वार दवदंतीने जोईने नलनुं चित्त चंचल थयुं हतुं अने एनी शिक्षारूपे गुरुए एने गच्छ बहार कर्यो हतो. पण अपराधनो पश्चात्ताप करतां गुरुए पाछो एने स्वीकार्यो हतो. केटलाक समय पछी अनशन करीने नल मरण पाम्यो अने पहेला देवलोकमां इन्द्रनो धनद नामे भंडारी थयो. दवदंती पेढालपुरमां हरिचंद्र राजानी कनकवती नामे पुत्री थई. स्वयंवरमंडपमां एने वसुदेव साथे परणाववामां आवी. पूर्वभवना स्नेहना बंधनथी धनददेव त्यां आव्यो अने सुवर्णनी वृष्टि करी. पछी द्वारकामां वसती कनकवती वसुदेवनी साथे सुख भोगवती हती. अंते शुभ भावनाए आरूढ थई, केवलज्ञान पामी, ते मुक्तिमां गई. धर्मनी आराधना करतो धनददेव पण अपार सुख पामशे.

अंतमां कवि विस्तारपूर्वक पुण्यनो महिमा वर्णवे छे, नलराजाए पूर्वपुण्यना प्रतापे अनेक सुख भोगव्यां एम कहे छे, नलनो वृत्तान्त जे सांभळशे एनां सघळां पाप टळशे एवी फलश्रुति उच्चारे छे, तथा पोतानी गुरुपरंपरा इत्यादि वर्णवी कृतिनी समाप्ति करे छे.

कृति तथा संपादन विषे थोडुंक

लगभग साडाबारसो कडीना आ काव्यनो छंदोबंध दूहा, चोपाई आदि मात्रामेळ छंदोमां तथा लोकप्रिय देशीओमां बंधायेलो छे. घणीखरी देशीओने मथाळे जे लोकप्रिय पूर्वकालीन ढाळने अनुसरीने ते देशी रचाई छे एनो कविए निर्देश कर्यो छे. छेक छेल्ली कडीमां 'श्रीनल-राजानु रास ए, बारसइ त्रिसठि रसाल' एवो निर्देश छे. एमांनी 'बारसो त्रेसठ' संख्या वडे कृतिनी कडीओनी संख्या निर्दिष्ट हशे एम मानवुं? जो एम होय तो, आपणने मळी छे ए प्रतमां ए करतां थोडीक ओछी कडीओ छे एनो खुलासो शी रीते थाय? आपणे आगळ जोयुं

तेम, मूळ कृति रचाया पछी २९ वर्षे कर्ताए तेनी आ नकल करेली छे. अने पहेली वारनो खरडो के साफ नकल तैयार थया पछी आटलां वर्षोमा तेणे पोते पण आ कृतिमां कंईक फेरफार कर्यो होय एम बने. ए कारणे कडीनी संख्यामां थोडोक हेरफेर थयो हशे एम अनुमान थाय छे.

काव्य तरीके आ 'नल-दवदंती रास' मध्यम कोटिनो छे, पण केटलांक वर्णनोमां अने सर्वसामान्य सुभाषितोमां कर्ता ठीक शक्ति बतावे छे. उदाहरण तरीके, कोसला नगरीनुं वर्णन (कडी ८८-१०३), विनयनो महिमा (कडी १३८-१४४), स्वयंवरमंडपमां आवेला राजाओनुं वर्णन (कडी १७६-१८१), दवदंतीनुं रूपवर्णन (कडी १८२-२००),* नल-दवदंती वनमां जतां कोसलानगरीमां छवायेलो शोक (कडी ३८६-९२), नलना वियोगे दवदंतीनो विलाप (कडी ४४०-५०), नागने दावानलमांथी बचावती वखते परोपकारी नलनुं चिन्तन (कडी ७५०-५५), ऋतुवर्णन अने दवदंतीनी विरहव्यथा (कडी ८२४-६०), कुशल ब्राह्मण कुब्जक अने नलनी मनमां तुलना करे छे ए समयना एना विचारो (कडी ८७६-९१), 'फाग' ए शीर्षक नीचेनुं वसंतवर्णन (कडी १००१-७), पुण्यना प्रभावनुं वर्णन (कडी १०६७-७५), जेना उपर माणिक्यसुन्दरसूरिरचित सुप्रसिद्ध वर्णकप्रधान गद्यकृति 'पृथ्वीचन्द्रचरित्र' अथवा 'वाग्विलास' (सं. १४७८)ना आरंभमांना ए प्रकारना खंडकनी स्पष्ट असर छे,+ नजीवी वस्तुने कारणे अमूल्य

* एमां संख्याबंध जूनां आभूषणोनो निर्देश आवे छे ते सांस्कृतिक अभ्यासनी दृष्टिए महत्त्वनो छे. एमांनां केटलाकनां नाम अत्यारे अल्पज्ञात के अज्ञात छे.

\+ सरखावो 'पृथ्वीचन्द्रचरित्र'ना आरंभमांनो ए खंडक—

पुण्य लगइ पृथ्वीपीठि प्रसिद्धि, पुण्य लगइ मनवांछितसिद्धि; पुण्य लगइ निर्मल बुद्धि, पुण्य लगइ घरि ऋद्धिवृद्धि; पुण्य लगइ शरीर नीरोग, पुण्य लगइ अभंगुर

वस्तुनो नाश न थवा देवो एम समजावतां सुभाषितो (कडी ११५९-६७), इत्यादि सूचवी शकाय. लोकप्रिय देशी ढाळोने-सैकाओ जूनी, लोकमुखे चढेली साहित्यिक परंपरानो लाभ मळे छे अने एथी भाषामां अनायासे प्रवाहितानो गुण आवे छे एनां उदाहरणरूपे 'तेणइ वचनि तूठउ ते राक्षस' (कडी ५०८-२५), 'चंद्रयशा ते पटराणी, नगर बाहिरि दिइ दान दे' (कडी ६६९-८२) इत्यादि देशीओ छे.

मूळनी हस्तप्रत ग्रन्थकारना हस्ताक्षरोमां ज होई संपादनपद्धति विषे झाझी विगत आपवानी आवश्यकता नथी. मूल हस्तप्रतनां पृष्ठोनो निर्देश मुद्रणमां यथास्थाने कर्यो छे. क्वचित् लेखकनी चूकथी एकाद अक्षर पडी गयो जणाय छे त्यां ए अक्षर [ ] आ प्रमाणे मोटा कौंसमां मूक्यो छे तथा कोई वार मूल प्रतिमां कडीनो अंक लखवामां चोख्खी भूल थई छे त्यां तेटला पूरतो साचो अंक लख्यो छे. आ सिवाय बीजो कोई पण फेरफार कर्यो नथी. मूळमां आपेलां छंद अथवा ढाळनां नाम अहीं जराक नानां बीबांमां मूक्यां छे. मूळ प्रतिमां छेल्ली कडीनो अंक '५०' (एटले के १२५०) छे, तेने स्थाने संपादनमां '१२५४' जणाशे; आ चार अंकनो वधारो मूळ प्रतिमांना केटलाक खोटा अंक सुधारवाने कारणे थयेलो छे.



भोग, पुण्य लगइ कुटुंबपरिवार तणा संयोग; पुण्य लगइ पलाणीयइं तुरंग, पुण्य लगइ नवनवा रंग; पुण्य लगइ घरि गजघटा, चालतां वीजइं चंदनछटा; पुण्य लगइ निरुपम रूप, अलक्ष्य स्वरूप; पुण्य लगइ वनिवा प्रधान आवास, तुरंगम तणी लास, पूजइ मन चींतवी आस; पुण्य लगइ आनंददायिनी मूर्त्ति, अद्भुत स्फुर्त्ति; पुण्य लगइ भला आहार, अद्भुत शृंगार; पुण्य लगइ सर्वत्र बहुमान, घणुं किसुं कहीयइ पामीयइ केवलज्ञान.

परिशिष्ट

परिशिष्टमां मूकेलुं अज्ञात कविकृत 'नल-दवदंती चरित्र' गुजरातीमां नलकथाने लगती उपलब्ध जैन कृतिओमां सौथी जूनुं छे. ६३ कडीनी आ संक्षिप्त कृति पं. अमृतलाल मोहनलाल भोजकना संग्रहमांना एक हस्तलिखित गुटकामांथी मळी छे. ए गुटकानां पृ. १०५ थी १०७ सुधीमां आ काव्य लखेलुं छे. काव्यने अंते नकल कर्यानुं वर्ष आप्युं नथी, पण आ गुटकामांनां बीजां संख्याबंध काव्योने अंते लेखनसंवत आपेला छे. लेखनसंवतना निर्देशवाळां ए सर्व काव्योनी नकल सं. १५४८ थी सं. १५६० सुधीमां थयेली छे, एटले आ 'नल-दवदंती चरित्र'नी नकल पण ए ज अरसामां थई हशे.

कृतिने अंते कर्तानुं नाम नथी तेम ज रचनासंवत पण नथी. पाटणमां सागरना उपाश्रयना ग्रन्थभंडारमां आ काव्यनी ३ पत्रनी एक हस्तलिखित प्रति छे. तेने अंते लख्यावर्ष सं. १५३९ आपेलुं छे,* एटले आ काव्य निश्चितपणे सं. १५३९ पहेलां रचायेलुं छे. एना रचनाकाळनी पूर्वमर्यादा नक्की करवानुं कोई साधन नथी, पण भाषाना स्वरूप उपरथी एनी रचना विक्रमना सोळमा शतकना प्रारंभमां गणवानुं योग्य छे. मध्यभारतमां टीकमगढ खातेथी ई. स. १९४६मां प्रसिद्ध थयेला हिन्दी 'प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ'मां आ कृति में पहेली वार संपादित करी हती. महीराजना 'नल-दवदंती रास' साथे एनुं प्रकाशन अभ्यासनी दृष्टिए उचित लागवाथी एने अहीं परिशिष्टमां स्थान आप्युं छे.

---

* जुओ ए प्रतनी पुष्पिका—'इति श्रीनलदमयंतीरासः समाप्तः ॥ संवत् १५३९ वर्षे लिखितं ॥ पं. समयरत्नगणिशिष्य हेमसंमयगणिलिपितं ॥' आ पुष्पिकानी नकल मारी पासेनी एक जूनी नोंधमांथी आपी छे. आ संपादन करती वखते सं. १५३९वाळी प्रति मळी नथी, एटले एनो उपयोग करी शकायो नथी.

आभार

महीराजकृत 'नल-दवदंती रास' नी विरल हस्तप्रत उपयोग माटे घीरवा माटे पं. अमृतलाल मोहनलाल भोजकनो आ स्थळे हुं उपकार मानुं छुं. वळी आ पुस्तकनो शब्दकोश तैयार करवामां गुजराती विभागना संशोधन-मददनीश श्री. सोमाभाई पारेख, एम. ए., एम. एड्. एमणे मदद करी हती तेमनो पण आभार मानुं छुं.

'नल दवदंती रास'नी कर्तानां हस्ताक्षरोमां लखायेली पोथीनुं प्रथम पृष्ठ

[illegible]

'नल-दवदंती रास'नी कर्ताना हस्ताक्षरोमां लखायेली पोथीनुं अंतिम पृष्ठ

महीराजकृत

नल-दवदंती रास

[1-A] एर्द०॥ पूज्य परमगुरुमहोपाध्यायश्रीश्रीश्रीविनयमंडनगणींद्रगुरुभ्यो नमः ॥श्री॥

आदिजिनवर प्रणमी करी, सरसति! दिउ मति माय!।
आपि न मझ मति निरमली, सुरनर सेवइ पाय ॥ १ ॥
ब्रह्मापुत्री सरसती, सोहइ पुस्तक हाथि ।
कमल कमंडल भजीइ, जपमाली दक्षण हाथि ॥ २ ॥
सुंदर मोतीहार उरि, नेउरनु झणकार ।
एहवी सारदा सामिनी, वाणी आपे सार ॥ ३ ॥
गुरु दीवु गुरु देवता, गुरु विना सहू अ असार ।
तत्त्व उलषीइ गुरु थकी, सेवीजइ पय सार ॥ ४ ॥
जेह सिरि छइ हाथ गुरु तणु, ज्ञानवंत कहिवाइ ।
हुई संदेवत ते सही, सघलइ प्रसिद्ध थाइ ॥ ५ ॥
वंछित पदारथ पामीइ, नामिइ अपूट भंडार ।
नामिइ नवनिधि संपजइ, नामिइ जयजयकार ॥ ६ ॥
एहवा गुरु चित्तिइ धरी, सरसतिनूं करू ध्यान ।
जेह तणइ सुपसाउलइ, नरपति दिइ बहुमान ॥ ७ ॥
भारति तूंह जि भगवती, तूं सेवक साधार ।
हूं मूरष छइ मानवी, माहरइ ताहरु आधार ॥ ८ ॥
आपु वाणी कृपा करी, हूं छूं ताहरु दास ।
सेवकनइ तूं त्रुप करे, पुगइ तुझथी आस ॥ ९ ॥
बावन अक्षर तेहनु, त्रिहु भुवने छइ व्याप ।
केलवण कीधी सी परिइ, कीधा परिइ जाप ॥ १० ॥
माई अक्षरमाहि तूं रमइ, अक्षरनूं बंधाण ।
ते भेद जाणेवु दोहिलु, जाणइ पंडित सुजाण ॥ ११ ॥

पुरविइ कवि हूवा घणा, तेह[1-B]नी किम करूं तुडि ।
अचिंत्य शक्तिना धणी, नवि आवूं तेणी जोडि ॥ १२ ॥
ऊची साप देपी करी, वामणउ लेवा जाइ ।
वाटइ जाता लोकनइ, हासारथ ते थाइ ॥ १३ ॥
तिम मूरप मति माहरी, कवियश वांछउं माइ ! ।
वाणी देजे सरस तूं, लागउं ताहरइ पाइ ॥ १४ ॥
हर्ष धरी ऊलटपणइ, रचूं अनोपम राम ।
श्रीनलदवदंती केरु, हुज्यो वचनविलास ॥ १५ ॥
पुण्यश्लोक नलरायनु, कहूं तेह चरित्र ।
सभा सहू को संभलु, अवतार हुइ पवित्र ॥ १६ ॥
पूर्वापर संबंध भणउं, कर जोडी कहूं सरसति ।
बालक ऊपरि दया धरी, देज्यो रूडी सुमति ॥ १७
कवण नल ? ते किहां हऊउ ?, तेह कहूं अवदात ।
सुणज्यो सहूए एकमना, श्रीनलनु दृष्टांत ॥ १८ ॥
जंबूद्वीपमांहिइं भलूं, भरतक्षेत्र सुविशाल ।
सागरपुर नामिइ नगर, मम्मण तिहा भूपाल ॥ १९ ॥
वीरमती तसु पटराणी, गुणवंती सुशील ।
पंच विषयसुप भोगवइ, राज्य करइ अतिलील ॥ २० ॥

चुपई

एणइ अवसरि ते मम्मणराय, वीरमतीस्युं पारधि जाइ ।
नगर बाहिरि आवइ जेतलइ, साहमु मिलीउ ऋषि तेतलइ ॥ २१ ॥
क्षेद ऊपनु ते देषी करी, संतापिइ निज हाथिइं धरी ।
मोलपणइ क्लेश कीधु घणउं, कहिउं न मानइ ते कहि तणउ ॥ २२ ॥
पीडिउ यती भूपिइ घडली वार, वेदना कीधी तेणइ अपार ।
बेहूनइ मनि कुतिग थाइ, उपशमि चडीउ श्रीऋषिराय ॥ २३ ॥

क्रोध न कीधु तेणइ रती, धर्मतत्त्व उलपीउं यती ।
सौम्य दृष्टि तेहनी देषी करी, चींतवइ राजा भाव धरी ॥ २४ ॥
महानुभाव ए य[2-A]ती देषीइ, एह समु को नवि पेषीइ ।
संतापवइ एहनइ न चडी रीस, आवी लागु पाए भूपीश ॥ २५ ॥
कहीउं राइ सीस ज नामि, 'धरम तम्हारु केहवु सामि?'।
पूछइ राजा मुनिवर कहइ, 'किहां जासिउ गिरूआ?' इम भणइ ॥ २६ ॥
ऋषि भाषइ 'अष्टापद भणी, यात्रा जाउं तीरथ तणी'।
संघ थकी अलगा थया राय, मारग चूका आव्या एणइ ठाय ॥ २७ ॥
तमे कीधउं मझनइं अंतराय, यतीपीडाइ दुष ज थाइ ।
संतापइ सुष न हुइ सही, शास्त्र-पुराणिइ वात ज कही ॥ २८ ॥
चारित्रीइ तु भक्ति कीजइ, अपूरव दान तेहनइ दीजीइ ।
नहीतरि अलगा रहीइ तेहथी, जु सुष वंछीइ देहिथी ॥ २९ ॥
यतीनिंदाइं कुलक्षय होइ, एह वात जाणइ सहू कोइ ।
एह थकी हुइ पुण्यनी हाणि, वचन अमृत तूं हईइ जाणि ॥ ३० ॥
एक भंडार छइ अस्त्री तणु, पार न पामइ कोइ तेह तणु ।
रत्न अनोपम कूपिइ धरइ, कोडि मनुष्यना उदर भरइ ॥ ३१ ॥
बीजु भंडार छइ पृथ्वी तणु, पार न पामइ कोइ तेह तणु ।
वनसपती नइ सघली धात, करसण संपजइ अनोपम वात ॥ ३२ ॥
त्रीजु भंडार छइ समुद्रह तणु, पार न पामइ कोइ तेह तणु ।
सारी वस्तु लाभइ छइ जिहां, नाम धराविउं रत्नागर तिहां ॥ ३३ ॥
चुथउ भंडार छइ डूंगर तणु, पार न०
पामीजइ औषधीनु योग, वंछित लहीइ सघला भोग ॥ ३४ ॥
पांचमु भंडार छइ दर्शनी तणु, पा०
विद्या मंत्र यंत्र विज्ञान, [2-B] करइ निरंतर जगगुरुध्यान ॥ ३५ ॥

जु तूसइ तु कल्पवृक्ष एह, सुष आपइ विहु भवनूं जेह ।
सेवा कीजइ भावस्यूं मुदा, एह वचन करजे तूं सदा ' ॥ ३६ ॥
कहिउ दयामूल जिनधर्म, दया तणु समझाविउ मर्म ।
पाय लागीनइ षमावइ तेह, ' षमज्यो अपराध अम्हारा बेह ' ॥ ३७ ॥
बेहू जणा रलीयायत थया, घणा भवना पाप ज गया ।
घरि तेडीनइ दिइ सन्मान, श्रद्धापूर्वक दीधूं दान ॥ ३८ ॥
मुनिवर वलीउ अष्टापद भणी, र' पालइ आज्ञा जिन तणी ।
समकितमूल बार व्रत सार, आराधइ अहिनिशि सुविचार ॥ ३९ ॥
धर्म करइ निश्चल ते सदा, शासनदेवति तूठी तदा ।
' धर्मकाजि सुमरेजे घणउं, कोड पुहुचाडसि हूं तुम तणउं ' ॥ ४० ॥
शासनदेवति सानिध्यइ करी, अष्टापदि आवइ भाव ज धरी ।
वीतरागनी पूजा करइ, पाप सघला जेहथी अपहरइ ॥ ४१ ॥
रत्नजटित तिलक चुवीस, आभरणे पूजी मूर्ति चुवीस ।
त्रिहु भेदे तेणइ पूजा किद्ध, धर्म प्रीछियानु लाहु लिद्ध ॥ ४२ ॥
यात्रा करीनइ वलीआ दोइ, आपणइ नगरि पुहुता सोइ ।
अधर्ममारग नवि सेवइ कदा, जगदीस ध्यान धरइ ते मुदा ॥ ४३ ॥
बेहनइ मनि सरिषु भाव, धर्मकामिइ नवि ऊपजइ कुभाव ।
दयाधर्म ते पाली करी, देवरिद्धि पामिया धर्मधुरी ॥ ४४ ॥

ढाल ॥ एकवीसानी ॥

पोतनपुरि रे धमिल छइ आहीर रे,
नारी रेणुका रे आतीहिं छइ गंभीर रे ।
ममण[3-A]जीव रे तिहां आवीनइं अवतर्या,
गोकुल केरी रे तेह तणूं चित्त अति ठरिउं ॥ ४५ ॥

१ मूळ प्रतिमां पाछळथी बीजा कोईए अहीं आगमदनुं चिह्न उमेर्युं छे (एटले के ' राउ ')

त्रूटक—अतिठरिया चित्तिइ धमिल सुंदर धन नामिइ पुत्र संपनु,
सरलस्वभावी रूडी मतिनु सविहुनइ हर्ष ऊपनु ।
पाछिला भवनी वीरमती जे तेह जि धननइ नारी हुइ,
आहीरकुलिइ धूसरी नामिइ धननइ घरणि थई ॥ ४६ ॥

आहीर धन रे धूसरीस्यूं रंगिइ रमइ,
गोरू चारइ रे स्वेच्छाइ ते वनि भमइ ।
एहवइ वर्षा रे आवीउ तेणइ समइ,
सचराचरि रे ए धारा सहूनइ गमइ ॥ ४७ ॥

त्रू०—गमइ सहूनइ वर्षा रूडु एहवइ धन महिषी चारए,
परणामिइ ते सुगध भोलुन्या, वृत्ति करइ सुविचार ए ।
माथइ छत्रडी देई चालइ कुडछिउ काळड अतिमलु,
हाथमाहिं महुअरि गीत गावइ राज पालटइ गुणनिलु ॥ ४८ ॥

पुरपरिसरि रे कासगरहीउ मुनिवरू,
एकइ चरणे रे ध्यानस्थ दीठउ सुंदरू ।
टाढइ कंपइ रे तेह तणूं शरीर रे,
वाइ हालइ रे वृक्षनी परि धीर रे ॥ ४९ ॥

त्रू०—वृक्ष हालइ जिम वाइ तेहवु मुनिवर दीसए,
तपिइ करीनइ शरीर कृश थयू, जेह मनि नहीं रीस ए ।
काम क्रोध लोभ मोटा सुभट तेणइ जीपीआ,
पंच महाव्रत सूधां पालइ चारित्रगुणे करी दीपीआ ॥ ५० ॥

परीसह रे बावीस सहइ अतिभला,
साधुगण रे [3-B]दीसइ माहि तेतला ।
नासिकाग्रिइ रे दृष्टि कीधी तेणइ समी,
स्तंभ परिइ रे देह वालइ, ते नवि नमी ॥ ५१ ॥

त्रू०–नमइ नहीं ते मुनि देपी, पासइ आवइ थिर ए,
एणी परिइ ध्यान करइ, चींतवइ ए थिर ए।
दया ऊपनी तेह धननइ, छत्रडीं तेह सिरि धरी,
जोयूं एहनइ हुसिइ दोहिलं, एह विधि दीसइ परी ॥ ५२ ॥

वरसइ मेह रे सबल धाराइ अतिघणु,
यतीपंथ रे विषम कहीइ एह तणु।
घणां कष्ट रे महानुभाव ए साधु सहइ,
आपणइ मारगि रे उत्तम जे सदा रहइ ॥ ५३ ॥

त्रू०–सदा मारगि रहइ उत्तम एहवउं चींतवइ जाम ए,
वरषा वरसी रहिउ तव ते पाइ लागु ताम ए।
भव्य प्राणी हाथ जोडी मुनिवरनइ तव कहइ इस्यूं,
'गुणवंत गिरूआ वर्षाऋतइं चीपलमांहिं चाल्या कसिउं? ॥ ५४ ॥

किहांथी आव्या रे? ते स्वामी मझनइ कहु,
आणइ थानकि रे चुमासूं तमे अहां रहु'।
वलतूं कहइ रे 'पांडुदेसथी आवीआ,
लंकाइ रे गुरुनइ वांदिवा भावीआ ॥ ५५ ॥

त्रू०–गुरुनइ वंदिवा जासिउं लंकाइ, आविउ वर्षा अतिघणु,
विहार न घटइ एणइ दिहाडइ. कहिउ मारग साधु तणु।
धरिउ अभिग्रह अम्हे एहवु वरसात वरसइ तां सही,
एकइ पगइ कासगि[1] रहूं एह वात तेहनइ कही ॥ ५६ ॥

वरषा र[4-A]हिउ रे आज ज सातमइ दिनि रे,
अभिग्रह रे संपूरण अम मनि रे।
अम्हे रहिसिउं रे कोएक रूडइ ठामि रे,
साहमूं दीसइ रे एणइ जासिउं गामि रे ॥ ५७ ॥

---

१ मूल प्रतमां पाछळथी बीजा कोइए 'कासगि'मांना 'का'नी पछी 'उ' उमेरेलो छे.

त्रू०–एणइ गामि जासिउं अमे,' मुनिवर कहइ तव आहीर ए,
'माहरइ घरइ छइ वृषभ वारू, ऊपरि चडउ तमे धीर ए।
वाटिइ कादव भूमि लपसणी चालता स्वामी दोहिलं,
इम करु तु लाभ मझनइ, तमनइ हुइ सोहिलं.' ॥५८॥

वलतूं कहइ रे मुनिवर वचन एणी परिइ,
'नवि कीजइ रे जीवपीडा हुइ जेणी परिइ'।
'इम करतइ रे स्वामी दोष कस्यु नथी,'
घणीघणी परिइ रे धन्नइ तेहनइ जोयूं कथी ॥ ५९ ॥

त्रू०–धन्नइ तेहनइ कही जोयूं, न मानइ ऋषिराय ए,
ते संघातिइ जावा लागा, कहइ धन लागी पाय ए।
क्षण एक पडपु अहींइ मुनिवर! महिषी दोही ल्यावूं दुग्ध ए,
यती तणी भक्ति धरतु घरि आवइ ते मुग्ध ए ॥ ६० ॥

उछकपणइ रे सारी महिषी ते दोहइ,
मांट भरीउं रे ते मुनिवर तणइ मोहइ।
नारी पूछइ रे 'एवडू दूध सिइ कामि रे?'
'यती कारणि रे.' वलतूं न पूछिउं नाम रे ॥ ६१ ॥

त्रू०–वलतूं न पूछिउं नारीइ काई, स्त्रीनइ त्रिणिस्यूं प्रेम रे,
दूध जमाई वाजित्र वाल्हा, शास्त्रिइ कहीउं इम रे।
कलह काजल सींदूर छट्ठउं ए नुहइ अलपामणा,
तेहमांहि दूध जमाई हुई प्रेम अतिघणा ॥ ६२ ॥

भूसरीनइ रे दान देवानी मति घ[4-B]णी,
बेहू योग रे सरिषा नुहइ घरधणी।
स्त्रीनइ श्रद्धा रे तु पुरुषनइ श्रद्धा नुहइ,
पुरुषनइ श्रद्धा रे त नारीश्रद्धा नहइ ॥ ६३ ॥

त्रू०-नुहइ श्रद्धा घरि स्त्रीनइ ते जाणेवी अभागिणी,
घरमहत्व तु रहइ जु दान दीइ सोभागिणी।
कृपण नारीइ शोभा जाइ पुरुष पाइक थाइ ए, पा॰ ८
यथासंपति दान दीइ तु मह गुण गाइ ए ॥ ६४ ॥

दूध लेई रे आवइ मुनिवर पासि रे,
ते हरषिइ रे दिइ दूधदान उल्हासि रे।
'छ दिन रे उपवास हऊउ एहनइ,
महिषी धिन रे दूध काजि आविउं जेहनइ ॥ ६५ ॥

त्रू०-दूध आविउं काजि जेहनइ सफल दिन हऊउ आज ए,
आहारपाणी तणी चिंता करीजइ ऋषिराज ए।
आतला दिननी एहनी संगति मइ कीधी अतिघणी,
जाणतु जु भक्ति न करइ आप्या न हुइ तेह तणी' ॥ ६६ ॥

दान देवूं रे दोहिलं जगि जाणीइ,
दान देवा रे मति भलेरी आणीइ।
नर तु शोभइ रे दाननु हुइ सृंगार ए,
पुरुषनइ रे ए मोटु छइ आचार रे ॥ ६७ ॥

त्रू०-आचार नरनइ कहिउ चारू, उत्तम हुइ ते साचवइ,
मध्याह्नवेलाइ बार ऊघाडा, यती-व्रतीनइ साचवइ।
कृपण प्राणी दानवेला दिगंबर ते थाइ [ए],
जाणवेलाइ बृहस्पति सरिषु गरविइ ते अति जाइ ए ॥ ६८ ॥

भजीइ तु रे विचारचतुरपणउं,
भजीइ तु रे डाह्यापणपणूं अतिभलं।
भजीइ तु रे शास्त्र संभालवूं नित सदा,
जु दीजइ रे दान सुपात्रिइ एकदा ॥ ६९ ॥

त्रू०—एकदा दीजइ दान पानिइ, मूलगूं अन्नदान ए,
जेहनी लहीइ प्या[5-A]ति मघलइ, वाधइ रूडु वान ए
दान दीधउं निष्फल नुहइ, कहिउं शास्त्रिइ एहवूं,
एकइं पासिइं मोदक बरटी, यथासंपतिइ जेहवूं ॥ ७० ॥

दूहा

सुपात्रिइ दान दीजीइ, गृही तणु धरम ।
यती व्रती नवि साचवइ, ए जाणेवु अधर्म ॥ ७१ ॥
मूलर्पी पोपट जेहवा, देपीता रूपवंत ।
शास्त्रश्लोक न आवडइ, तस परि जाणे चींति ॥ ७२ ॥
मोटु संगार दाननु, तस विण नवि शोभइ कोइ ।
थोडामांहिं थोडेरडूं, दान दीजइ सहु कोइ ॥ ७३ ॥
दूधकुंभ तिहां ल्यावीउ, कहइ मुनिवरनइ तेह ।
'स्वामी ! करु तमे पारणूं, श्लाघ्य हुइ दूध एह' ॥ ७४ ॥
चित्त वित्त नइ पात्र ते, मिलइ दोहिलु योग ।
भाग्य विना नवि पामीइ, यती तणु संयोग ॥ ७५ ॥
कूकस केरा ढोकल, भाविइं जु ते देइ ।
लेणहार मनि ते परमान्न, दाता वंछित पामेइ ॥ ७६ ॥
रूडा मोदक पकान्न, सरस सबिल आहार ।
कुभाविइं जु ते दीइ, दानफल न हुइ लगार ॥ ७७ ॥
यतीइ ते भलूं दूध लीधउं, बेहूनु मनि भाउ ।
आपणनइ जे वल्लभ, दीजइ धरी अणुराउ ॥ ७८
चुमासूं मुनि रापीया, श्राद्धधर्म कहिउ तेह ।
समकित शुद्ध प्रतिपालइ, बार व्रत छइ जेह ॥ ७९ ॥
सात वरस चारित्र पाली, ऊपना हिमवतक्षेत्रि ।
युगलीआ बेहू हऊआ, धर्म अछइ जेह चित्ति ॥ ८० ॥

अट्ठोत्तरशत लक्षण, अतिहिं हुइ रूपपात्र ।
समचतुल गंभीरिम, मनोज्ञ छइ जेहना गात्र ॥ ८१ ॥
मणिमय जेहनइ थाल छइ, सरस रसवतीपाक ।
इच्छाइ भोजन क[5-B]रइ, सुस्वाद मनोहर शाक ॥ ८२ ॥
तेह युगलीआनइ अपूरव, रत्नमय सृंगार ।
पंचविधा अलंकार छइ, मकरध्वज अवतार ॥ ८३ ॥
निर्मल शीतल जल भला, भ्रमरस्वर वाचाल ।
कपूर कस्तूरीपरिमल, दिव्य कुसुमनी माल ॥ ८४ ॥
मधुर गीत नाटक करइ, भलां छइ वाजित्र ।
अपूरव ठाम रहिवा तणा, चित्राम सुंदर विचित्र ॥ ८५ ॥
तिहांथी पामिया सुररिद्धि, भोगवइ बहुलं सुष ।
दान तणइ महिमाइ करी, नहीं तेहनइ कांई दुष ॥ ८६ ॥
अवतरसिइ जेणइ ठामिइ, कहू संबंध तेह ।
पूरवभव प्रेमिइ करी, अतिघणउ छइ बिहु नेह ॥ ८७ ॥

चुपई

धनकनकइ करी अतिहि समृद्ध, पृथ्वीमांहि ते छइ रे प्रसिद्ध ।
सघला देसमांहि सृंगार, कोशलदेस अनोपम सार ॥ ८८ ॥
तिहां छइ कोशला नगरी जेह, कासी सरषी कहीइ तेह ।
अनेक वाडी कूआ आराम, गढ मढ मंदिर अनोपम ठाम ॥ ८९ ॥
गढमांहि वसइ उत्तम वर्ण, सहू को पहिरइ आभरण सुवर्ण ।
सोहिजइ जिहां मनुष्य गौरवर्ण, शास्त्र सांभलिवा उत्कंठित कर्ण ॥ ९० ॥
व्यवहारीआ महार्द्धिक वसइ, आप हेठा कहिनइ नवि फसइ ।
जेह तणी छइ प्रसन्न द्रेठि, इस्या तिहां छइ न्यायवंत सेठि ॥ ९१ ॥
चिहुपषि रूडा चुपट चहुटा, अनेक चा[6-A]चरि नइ चुबटा ।
भला सुभट दीसइ सामटा, अतिबलवत्तर दीसइ कटा ॥ ९२ ॥

साहमसाहमा अपूरव हाथ, चोपी कीधी छइ रूडी वाट ।
सुंदर छइ गृह तणा आघाट, जेणइ जोतइ जाइ ऊचाट ॥ ९३ ॥
ऊचपणइ पर्वतस्यूं विवाद, उत्तंग तोरण सर्वज्ञप्रासाद ।
रात्रि दिवस वाजत्रनिनाद, करइ एकेका धर्मनु वाद ॥ ९४ ॥
दोसी वुहरइ अतिघणा वस्त्र, सुभट भला ते चहुइ शस्त्र ।
एक बइठा कहइ कथाकल्लोल, एक बइठा वीकइ मंजीठ चोल ॥ ९५ ॥
एक ठामि बइठा जवहरी, एक जाणे हेम परीक्षा करी ।
घणा तिहा छइ रत्नपारक्ष, ग्राहक जोगा बइठा लक्ष ॥ ९६ ॥
ते नगरीमांहि शत्रूकार, कण केरा बहुला कोठार ।
चउवीस प्रकारिइ मिलइ तिहा धान्य, परिपरिना अपूरव पान ॥ ९७ ॥
कहिनी वस्तु न जाइ ऊलखी, को कहिनइ न सकइ भोरवी ।
देसविदेसना आव्या संघात, व्यापारिइ रह्यिा वछीयात ॥ ९८ ॥
इसी नगरी नव जोअण बार, जिहां पामीइ वरण अढार ।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य नइ शूद्र, को कहिना नवि जोइ क्षुद्र ॥ ९९ ॥
माली कंदोई कुंभार, गांछा मर्दनीआ सूत्रधार ।
भइसाइत तंबोली जाणि, नुमु सोनार तूं हईइ आणि ॥ १०० ॥
छींपा गांछा नइ लोहार, मोची केरु छइ व्यापार ।
सुई पांचमु कारू जेह, अढार वरण कहीआ एह ॥ १०१ ॥
गलीआरा चींतारा घणा, ताई वणकर तेहनी नहीं मणा ।
कंडीआ जडीआ गणीआ भला, लाभइ वारूगा रुडी कला ॥ १०२ ॥
[6-B] मंत्र तंत्र रस लाभइ बहू, भाट पंपीआ आवइ सहू ।
कोशला नगरी वखाणउं किसी, जाणे इंद्रपुरी हुइ जिसी ॥ १०३ ॥

ढाल

एहवी नगरी सोहामणी ए, तिहां निषध नरेस ।
अतिहिं प्रतापी प्रौढ अछइ ए, लीला अलवेसर ॥ १०४ ॥

शत्रु आण मनावीइ ए, वली मूंक्या थापी ।
आसमुद्रांत पृथ्वीमाहिइ ए, रहिउ त्रिभुवनि व्यापी ॥ १०५ ॥
जेह तणा राज्यमांहिइ ए, कुव्यसन वात लोपी ।
दह दिसि कीरति विस्तरी ए, आण आपणी आरोपी ॥ १०६ ॥
सुभट भला सेवा करइ ए, मोटउं तेह राज्य ।
सीं उपमा दीजइ तेहनइ ए, जेहवूं इंद्रसाम्राज्य ॥ १०७ ॥
साहसीक शिरोमणी ए, अतिउद्‌भुत रिद्धि ।
विश्वमांहिं तेह रायनी ए, वाधी प्रसिद्ध ॥ १०८ ॥
घणा मदोनमत्त हस्तिराज, लक्षसंख्या घोडा ।
पुहुचतउ परिवार तेह, पायक नहीं थोडा ॥ १०९ ॥
तेणइ लीधा पराक्रमिइ ए, अतिमोटा दुर्ग ।
सहू करइ सेवा तेहनी ए, मोटा राजवर्ग ॥ ११० ॥
आण मनावी संविहु देसि, सप्तांग राज्य पूरउ ।
छत्रीसइ आयुध धरइ ए, संग्रामिइ सूरउ ॥ १११ ॥
तूठउ दिइ मोठउ पसाय, नही कुव्यसन सात ।
अन्यायमारग नगरमांहि नवि जाणइ को वात ॥ ११२ ॥
प्रजानइ सुपकारीउ, माइपिता समान ।
विचारचतुर डाहु भलु ए, दिइ यथोचित दान ॥ ११३ ॥
निपधराय एहवु अछइ ए, तेणइ नगरिइ सोहइ ।
आपणपाने गुणे करी ए, प्रजा सहू को मोहइ ॥ ११४ ॥
सुंदिरि नामिइ रायनइ ए, सुंदिरि पटराणी जेह ।
शील सृंगार छइ तेहनइ, गजगामिनी तेह ॥ ११५ ॥
[7-A] चुसठि कलाइ प्रवीण नारि, चालइं चमकंती ।
विनयवंति सुलक्षणी ए, सुंदिरि गुणवंती ॥ ११६ ॥

निषधराय सुख भोगवइ ए, सुंदिरिस्यूं तेह,
छट्टा भवनु संबंध, संभलु हवइ जेह ॥ ११७ ॥
देवरिद्धि वेहू भोगवइ ए, धन्य धूसरी जेह ।
सुंदिरिकूषिइ अवतरइ ए, धन्यनु जीव जेह ॥ ११८ ॥
दोहला ऊपजइ नवनवा ए, पूरइ निषधराय ।
मूर्ति पूजउं स्वामी तणी ए, वंदइ गुरुजनपाय ॥ ११९ ॥
दीन दुस्थ उपगार करइ ए, गुरुजननइ मान ।
धर्मकाम नित साचवइ ए, धरइ जगगुरु ध्यान ॥ १२० ॥
मनोरथ राजा भलभला ए, राणीना पूरइ ।
सात क्षेत्र वित्त वावरइ ए, दानिइ दालिद्र चूरइ ॥ १२१ ॥
दिन जाइ एणी परिइ ए, हुआ नव मास ।
पुत्रजनम हुऊउ निषधघरि, सवि पूगी आस ॥ १२२ ॥
उच्छव अतिभला ते करइ ए, वाजइ नींसाण ।
ठामि ठामि गुडी उछली ए, दीइ दान सुजाण ॥ १२३ ॥
तलीआ तोरण बांधीइ ए, नाटक ठामि ठामि ।
भाट बोलइ विरुदावली ए, उच्छव तेणइ गामि ॥ १२४ ॥
जयजयकार उचरइ ए, ते नगर मझारि ।
पंचशबद वाजित्र वाजइ ए, गाइ गीत नारि ॥ १२५ ॥
कुटंब सहू संतोषीउं ए, दीधूं नल नाम ।
लक्षण रूडा पुत्रमांहि सुंदर अभिराम ॥ १२६ ॥
दिनि दिनि वाधइ नलकुमार, जसिउ बीजनु चंद ।
कंदर्प सरीषु ते भजइ ए, दीठइ हुइ आणंद ॥ १२७ ॥
पांच वरसनु ते थयु ए, पिता मनि विमासइ ।
पुत्र नेसालइ मेल्हीइ ए, जिम विद्या अभ्यासइ ॥ १२८ ॥

दूहा

पांच वरस लगइ लालीइ, भणावीइ पछइ तेह ।
दस वरस लगइ आदर करु, नींपजइ सुत भलु तेह ॥ १२९ ॥
सोल वरस हुआ पछी, मित्र तणी परि जाणि ।
रीस न करवी तेह[7-B]नइ, एहवी छइ शास्त्रवाणि ॥ १३० ॥
पंडितनइ सहू को मानइ, पामइ अतिहिं महत्व ।
ठामि ठामि शोभा हुइ, मोटउं छइ ज्ञानतत्व ॥ १३१ ॥
ज्ञानवंतनी सभामांहिं, मूरष आवी वइसेइ ।
राजहंसमा बग जिम, सहू को तेहनइ हसेइ ॥ १३२ ॥
मूरष पुत्र विधवा सुता, हईइ पोट्ठ मित्र ।
यौवनि दारिद्रहूपणउं, चंचल अतिहि कलत्र ॥ १३३ ॥
मानवीनइ एह थकी, दुप ऊपजइ अत्यंत ।
निशिदिनि तेहनइ झूरिवूं, क्षण सुप नहीं तेह चिंति ॥ १३४ ॥
नान्हपणा लगइ मायवापिइ, आदर करिवु सार ।
कर्मयोगि बुद्धि संपजइ, छइ भणवा अधिकार ॥ १३५ ॥
रूडइ महूरति ते नल, मेल्हीउ नेसालि ।
पंडितनइ कहइ 'भणावयो;' ओपीउ संभालि ॥ १३६ ॥

चुपई

निषध कइइ, 'अध्यारू! सुणउ, शास्त्र भणावउ पुत्र अम तणु ।
करसिउं भक्ति तम्हारी अम्हे, जे जोईइ मागयो तुम्हे' ॥ १३७ ॥
विद्या लेवाना त्रिणि प्रकार, शास्त्रमांहि बोल्या अति सार ।
विनय पापइ विद्या नावडइ, भक्ति करवइ बुद्धि अधिकी चडइ ॥ १३८ ॥
विनय थकी गुरु रंजइ घणू, विद्याधन आपइ आपणउं ।
विनय गुण मोट्ठ जाणयो, विनय भलु सहू ए आणज्यो ॥ १३९ ॥

विद्या लेवानु वीजु भेद, सांभलु प्राणी ! माणसिउ पेद ।
सुत भणाव्यानु जु प्रप होइ, तु धन वेचीजइ अति जोइ ॥ १४० ॥
आपइ वस्तु सारी अतिभली, जे जोईइ ते आपइ वली ।
वंछित आपइ तेहनइ घणूं, तु किम काम न सरइ तेह तणूं ? ॥ १४१ ॥
जव आशा पुहुचइ पाठक तणी, आदर करावइ तेह भणी ।
तेहथी कसिउ इ सवारथ नही, निप्फल आ[8-A]यास न करीइ सही ॥१४२॥
तेहना घरनी जेहवी भक्ति, भणाववानी तेहवी युक्ति ।
हईउं त्रोडवूं फोकट तेह, भणावीउं न जाणइ जेह ॥ १४३ ॥
त्रीजी परि विद्यानी एह, आपणी विद्या दीजइ तेह ।
तेहनी विद्या आपण लीजीइ, ए भणाववानी परि कीजीइ॥ १४४ ॥
नलकुमर नेसालइ भणइ, जामलि नावइ कोइ तेह तणइ ।
छंद लक्षण साहित्य प्रमाण, ज्योतिष नाटक संमित जाण ॥ १४५ ॥
सामुद्रिकनु जाणइ भेद, जाणइ स्मृति पुराणह वेद ।
सीपी नलइ विहुत्तरि कला, तेहमाहि दीसइ गुण भला ॥ १४६ ॥
थोडा दिनमांहिं भणीउं सहू, पंडितनइ द्रव्य आपइ बहू ।
यौवनवेसिइ हऊउ कुमार, सुप भोगवइ निरंतर सार ॥ १४७ ॥

ढाल ॥ थूलिभद्रबारमासनी

देस सविहुमांहि जाणीइ ए, विदरभ विदरभदेस सुसार कि ।
कुंडिनपुर रलीआमणू ए, भीम ए भीमराजा सुविचार कि ॥ १४८ ॥

देसी

भीमराजा राज्य करइ न्यायवंत सुनिर्मलु,
तेहनइ राणी पुप्पदंती सोहइ पूनिमचंदलु ।
तसिइ राणी सूती शिय्या, पेषिइ ते सुहणूं इसिइं,
वनि दावानलिइ त्रासतु हाथी घरि आविउ तसिइ ॥ १४९ ॥

धवल हस्ती मेरु सरिखु अनोपम गुणवंत [ए],
सुभट सइनु जइतवादी साहसीक बलवंत ए ।
सुहणू देषी राणी जागी, आवी पासि भर्तारनइ,
सुहणउं कहिउं रायनइ ए, 'फल कहु स्वामी मझनइ' ॥ १५० ॥

भूपति भूपति तव चींतवइ ए,
शास्त्रि ए, शास्त्रइ कहिउ विचार कि ।
राय कहइ, 'सुण पुप्पदंती ए,
स्वप्न ए स्वप्ननु भेद अपार कि ॥ १५१ ॥

त्रू०-स्वप्नभेद छइ शास्त्रमांह [8 B] च्यारि पुहुरनूं ते सुहणउं,
पहिला पुहुरनूं वरस दीसइ फल आपइ तेह तणउं ।
बीजा पुहुरनूं छम्मासिइ फल, त्रीजानूं त्रिणि मास ए,
चुथानू फल मास दीसइ, पूगइ तेहनी आस ए ॥ १५२ ॥
पाछिली बिइ घडी हुइ ज्यारइ तेहवइ सुहणूं दीसीइ,
दस दिनमांहिं रिद्धि पावइ, अतिहिं तेहनूं मन हींसीइं ।
सूर्यउदइ सुहणउं देषइ ते दिनि ते फल होइ ए.'
सविशेषु राजा विचार करइ. हईआ साथिइं जोइ ए ॥ १५३ ॥

स्वप्न ए स्वप्न विचार कीधु घणउ ए,
नारीनइ नारीनइ कहिउं एह कि ।
'संतान हुसिइ अतिभलूं ए,'
निसुणीअ निसुणी हरपी तेह कि ॥ १५४ ॥

त्रू०-राय तणे कहणे संतोष प[पा]मीं शीलगुणे करी ते सती,
पतिचित्ति चालइ सुंदरी ते, पाप न करइ कोई सती ।
पाछिला भवनी धन्यनारी पुप्पदंती कूपि ए,
घूसरीजीव ते अवतरिउ भीमनइ कुलि सुपि ए ॥ १५५ ॥

आकाशियी ऊजलु हाथी ऊतरइ ठामि ए,
राजा राणी स्कंधि चडावी रमतु हींडइ गामि ए ।
सूकडि केसरि फूलइ पूजइ, हाथी आवइ भुवन्नि ए,
रत्नवृष्टि तेणइ कीधी, संतोष बेहू मन्नि ए ॥ १५६ ॥

शुभ दिनि शुभ दिनि बेटी जनमीइ ए,
उच्छव अतिघणउ होइ कि ।
ग्रहयोग रूडु तस तणउ ए,
ठामि ठामि मंगलीक जोइ कि ॥ १५७ ॥

त्रू०—संतोष हऊउ माता पितानइ, उच्छव कीधु अतिघणु,
मागत जननइ दान आपइ, मनोरथ फलीइ तेह तणु ।
शरीरलक्षण सुंदर दीसइ, तिलक भालिइ सोहए,
कायामांहिं ए गुण मोहु, तेणइ सहू को मोहए ॥ १५८ ॥

दवदंती तेह नाम दीधउं, पंच धावि[9-A]इ परिवरी,
जहीं थकी पुत्री जनमी दानइ कीरति संचरी ।
वयरी राइ आण मानी, वाधिउ देस भंडार ए,
कुटंब प्रजानइ सुप संपनूं, नयरनु संगार ए ॥ १५९ ॥

दिन दिनि वाधइ बालिका ए,
रूपिइ ए रूपिइ रंभ समान कि ।
आठवरीसी ते थई ए,
प्रजा ए प्रजा दिइ सनमान कि ॥ १६० ॥

त्रू०—मान दिइं सहू कोइ तेहनइ गुणवंती गुणि आगली,
मातपिताइ नेसालइ मेहली, सीपवइ चुसठि कलावली ।
पुराण स्मृति नइ छंद लक्षण जाणइ सर्व सिद्धांत ए,
ज्ञान विज्ञान लपि अढारइ लहइ बहु वेदांत ए ॥ १६१ ॥

दवदंती ते अतिही डाही जाणे लक्ष्मी हुइ जिसी,
शास्त्र सघला भण्या कुमरीइ जिह्वाइ सरसति वसी ।
हीआली समस्या जाणइ सींपी राजकुआरि ए,
थोडा दिनमांहि बुद्धि मेल्ह, पुहुती विद्यापार ए ॥ १६२ ॥
जिनधर्म जिनधर्म रूडु प्रीछीउ ए,
आराधइ आराधइ समकित कि ।
त्रिणि तत्त्व निरतां धरइ ए,
दया ए दया रूडी प्रतिपाल कि ॥ १६३ ॥[1]
त्रू०—दया पाल्इ तेह कुमरी, पुण्यमारग साचवइ,
षट दरसण दान दीइ, अतिथिमारग जालवइ ।
धर्म करवइ शासनदेवता तूठी कुमरीनइ सही,
शांतिनाथ केरी मूरति आपी, पूजइ ते त्रिभुवनपति लही ॥ १६४ ॥
शासनिदेवति इम जंपइ, 'करजे पूजा नित ए,
एह थकी तूंहनइ सुप होसिइ, पूजाइ रापे चित्त ए' ।
देवताकहणे भाव धरीनइ प्रतिमा पूजइ जिन तणी,
दुर्गति टालइ पाप क्षालइ पूजता त्रिभुवन धणी ॥ १६५ ॥
तेवड तेवडस्यूं क्रीडा करइ ए,
पामीअ पामीअ यौवनवेस कि ।
रूपिइ करी सुरसुंदरी ए,
अ[9-B]वगुण अवगुण नहीं लवलेस कि ॥ १६६ ॥
त्रू०—लवलेस अवगुण नहीं तेहमांहि, राइसभाइ ते आवी,
पिताइ उच्छंगि बइसारी, रूपिइं ते अतिही भावी ।
पूछइ संदेह शास्त्र केरा, आपइ ऊतर अभिनवा,
कलाकुशलइ पूरण देपी भीम लागु हरपवा ॥ १६७ ॥

[1] मूल प्रतमां कडीनो अंक लखवामां अहीं भूल थई छे; ६३-ने बदले ६४ अंक लख्यो छे.

कुंअरी देषी राजा चिंतइ, यौवनवेसिइ ए हुई,
कुंअरी पाणिग्रहणवा रायमनि चिंता थई ।
आठदसवरसनी संप योग्य वर रूडु जोईइ,
सरिषा सरिषूं मिलइ एहनइ तु आपणनइ सुप होईइ ॥ १६८ ॥

चउपई

एहवूं चींतवी राजा भीम, वलिइ करीनइ अतिहि भीम ।
स्वयंवरामंडप रचीउ सार, जेह दीठइ हुइ हरप अपार ॥ १६९ ॥
भला विचित्र कीधा चित्राम, सुवर्णमय भींति स्तंभ सुठाम ।
चंद्रूआ बाध्या ठाम ठामि, नर जोई छाडी सुकाम ॥ १७० ॥
चिहु पषे परीअचि अतिभली, धूपघटी चिहु पासे वली ।
मंच महामंच कीधा घणा, पार न पामइ कोइ तेह तणा ॥ १७१ ॥
कंकोत्री सघलइ मोकली, भूपति सवि आवइ सांभली ।
आपापणी रिद्धी लेई बहु, कुडिनपुरि पुहुता ते सहू ॥ १७२ ॥
भीमराय तसु साहमु जाइ, ते देषी रलीयायत थाइ ।
कोशलदेश निपधनु धणी, नलकुबेर आवइ तेह भणी ॥ १७३ ॥
उच्छवि आणइ नगरहु माहि, ऊतारा आपइ तेणइ ठाहि ।
मंडप भलु नींपायु जेह, पालंकविमान सरीपु तेह ॥ १७४ ॥
मोतीतणा झूबका झमाल, सेत्रंजी पाथरी चुसाल ।
सुवर्णसिंहासन मांडिया प्रत्येकि, भीमराजइ कीधु [10-A] विवेक ॥ १७५ ॥
लग्न तणइ दिनि सवि भूपाल, रूपवंत दीसीइ कृपाल ।
मज्जन करी पहिरी सृंगार, आपणउ सघलु लेई परिवार ॥ १७६ ॥
स्वयंवरामंडपि आव्या सहू, देसदेसना मिलीआ सहू ।
रिद्धिइ करी गर्वित पामता, सिंहासणि बइसइ शोभता ॥ १७७ ॥
जाणीइ इंद्रसमानिक देव, सेवक आपणा करइ सेव ।
एक बइसइ मूंछि मरडी करी, एक बइठा करि कमल ज धरी ॥ १७८ ॥

मालती तणउ एक परिमल लीइ, अनेरानइ वली ते दीइ ।
एक उलाउइ फूलनु दडु, एकना हाथमा छइ केवडु ॥ १७९ ॥
एक वइठा चडावइ धनुष, केतला नांपइ अबीर सनमुष ।
केतला फूलसिउं क्रीडा करइ, केतला हाथमा तरूआरि ज धरइ ॥ १८० ॥
आमलांप्रमाण मोतीनु हार, धरिउ छइ हईइ सृंगार ।
हाथिइ करीनइ जोइ छइ तेह, राजकुमर वइठा छइ जेह ॥ १८१ ॥

दूहा

दवदंती सृंगार करी, पूजइ स्वामीमूरति ।
विधिपूर्वक पूजा भली, भावना भावइ चिति ॥ १८२ ॥
रूपइ रूडी अतिभली, तस जामलि नहीं कोइ ।
वेणीदंड अपूरव, नाग सरीसु जोइ ॥ १८३ ॥
अष्टमिचंद भालस्थल, भमहि धनुषआकार ।
नयणा जिस्या मृगली तणा, गाल गोरा अति सार ॥ १८४ ॥
दंतपंक्ति दाडिम जिसी, अधर प्रवालीरंग ।
शुकना सरिषी नासिका, दीसइ अतिहि [10-B] चंग ॥ १८५ ॥
रूपि हृदयवइ-त्रिलोचना, मुष जसिउं पूनिमचंद ।
मोहइ विद्याधर देवता, मोहइ मानववृंद ॥ १८६ ॥
कुचयुग श्रीफल समा, बाहु जैसा मृणाल ।
अंगुलडी मगनी फली, राजहंसगति चाल ॥ १८७ ॥
घसी सूकडि जेहवी, सूहाली जिम होइ ।
उदरिइ मोहन ऊपजइ, नाभि गंभीरिम मोइ ॥ १८८ ॥
चित्रानी कडि जेहवी, तेह सरिषु छइ लंक ।
मध्यप्रदेश थोडेरूड, नहीं कसिउ तिहां वंक ॥ १८९ ॥
कदलीथंभ तिसी जंघा, पगि नेउर झणकार ।
चमकंती पगला भरइ, कीधु सवि सृंगार ॥ १९० ॥

कानिइ उगनिउं झलहलइ, कोटिइ नवसर हार ।
मादलीआ डोडी भजइ, गरसली कालीउं सार ॥ १९१ ॥
पीटली सोइामणी, सइधु सुवर्णमइ जेह ।
राषडीइ मन तिहा रहइ, लटकइ गोफणु तेह ॥ १९२ ॥
बाहिइ बाध्या बहिरषा, करि मुद्रडी झलकंति ।
सहसफूल नइ चुकडा, पद कडी चाके भजंति ॥ १९३ ॥
हांस नागहथ सांकला, नागफूली भमरी जेह ।
गांठीआ नइ वली गोमती, दीपइ सारी तेह ॥ १९४ ॥
पाए घूधर घमघमइ, एहवी दवदंती नारि ।
सुगंध पदारथ महमहइ, चंपकि केतकि सार ॥ १९५ ॥
सुपासणि बइसी करी, सपी तणु परिवार ।
स्वयंवरामंडपि ते आवइ, लक्ष्मीनु अवतार ॥ १९६ ॥
माथइ छत्र झलहलइ, बिहु पपि चमर ढलंति ।
वाजित्रइ अंबर गडगडइ, ऊलट धरंती चिंति ॥ १९७ ॥
आंगलिथी प्रतीहारडी, हाथमां सोवन कंब ।
रिदय[११-A]कमल विकाश हुइ, जिम वरसाति कदंब ॥ १९८ ॥
नरनारी जोइ सहू, अनोपम दीजइ दान ।
विद्यागुणे अलंकरी, धरती अति अभिमान ॥ १९९ ॥
मंडपमांहिं ते आवी, सुपासणि बइठा राय ।
भीमकुंअरी नयणे पेषी, सहु मनि विस्मय थाइ ॥ २०० ॥
विद्याधरी कइ किंनरी, कइ लक्ष्मी सरसति ।
चित्रलपित जिम थंभीइ, विमासइ निज मति ॥ २०१ ॥
गाम ठाम कुल रायना, जाणंती प्रतिहारि ।
दवदंतीनइ इम कहइ, 'निसुणउ राजकुमारि ! ॥ २०२ ॥

ढाल ॥ राग केदार ॥

ए सवि आव्या देशधणी, ताहरा रे वीवाह भणी,
स्वयंवरामंडप राइ मंडावीउ रे ॥ २०३ ॥
दवदंती ऊलट धरु, मनगमतु तुम्हे वर वरु,
तम तणइ कारणि एह रचावीउ रे ॥ २०४ ॥
त्रू०–रचावीउ श्रीभीमि हरपिइ, तेडावीआ ए राजा,
आपापणी रिद्धिइ करीनइ सहू एए छइ ताजा ।
शंशुमारपुरनु धणी जितशत्रु, तेहनु सुत रितुपर्ण,
एहनी रिद्धि अछइ मोटेरी दानिइ करीनइ कर्ण ॥ २०५ ॥
चंपापति सुबाहु सुणीइ, तेहनु धरणेंद्र पुत्र,
प्रगट प्रताप अछइ अधिकेरु, मीन मनाव्या शत्रु ।
रोहीतक राजानु सुत आ चंद्रशेपर एह,
बत्रीस लाप गामनु धणी ए बइठउ छइ तेह ' ॥ २०६ ॥
अनुक्रमिइ करी-प्रतीहारी कहितइ आवी नल समीपिइ,
दासी कहइ रे ' सुणु दवदंती ! ' कर जोडी-तव जंपइ ।
कोशलदेशनु राजा निषध, तस सुत नल गुणवंत,
लघुभाई कूवर पासिइ बइठउ ए बलवंत ॥ २०७ ॥
रिषभस्वामिकुलि ऊपनु, रूपिइ पुरंदर जाणि,
भाग्य हुइ तु ए वर वरीइ एहवूं हईइ आणि ।
बुद्धिइं करीनइ सुरगुरु जेहवु, चतुर सुवेषी सार,
वि[11-B]नय विवेक गंभीरिम गिरूउ एहमांहि नहीं गुणपार ' ॥२०८॥

देसी

दीठउ नल सोभागनिधि, कुमरीइ परिपी ते विधि,
पुप्पमाला-नलनी कंठिइ तव ठवी रे ॥ २०९ ॥

हुइ तव आकाशवाणी, शासनदेवति वपाणी,
रूडी रे जोडि युगती भली हवी रे ॥ २१० ॥
न्र०-देवताइ ते जोडि वपाणी ते सविहुइ सुणी,
की देशनु राजा कृष्ण बइठउ छइ भूधणी।
तेह तणइ मनि अमरष थयु रे कहइ एहवूं तेह,
'आहवा राजकुमरानइ मूंकी किम वरसिइ दवदंती एह ?॥२११॥
खडग लेईनइ हाकी ऊठिउ, 'नही देउं तुझ वरवा,
अवगणी अह्मनइ ए किम हुइ ? अघटतूं न देउं करवा।'
मंडपि आव्या आहवा कुमरा, पाछा वली ते जाइ,
तमे करसिउ पाणिग्रहण ए परिइ, दुप सहूनइ थाइ' ॥ २१२ ॥
वलतूं नल ते कहइ कृष्णनइ 'कां करइ फोक आयास ?
एणी कुमरीइ हूं तु वरीउ, मझनइ हऊउ उल्हास।
पराई अस्त्री साहमूं म जो तूं, ते थकी नवि हुइ सुप,
एक वारनू संतोष पामइ, निदानि हुइ दुप' ॥ २१३ ॥
एणे कहणे कृष्णकुमरनइ चडीउ क्रोध अपार,
षडग काढीनइ झूझवा लागु, नीचमांहि हुइ विकार।
सबल संघातिइ निर्बल बोलइ, मुष भंजावइ तेह,
थूक ऊडाडिवूं जीभह केरूं, वैरपणउं हुइ जेह ॥ २१४ ॥

देसी

वीर वेहू ते रणि चडीआ, माहोमाहिं अति भडीआ,
दलनु रे पार तेहनु न पामीइ रे ॥ २१५ ॥
भला सुभट छइ झूझार, झबकावइ ते हथीआर,
ऊपरि घा सबलपणइ वकारीइ रे ॥ २१६ ॥
-वकारीइ आपणा सुभट[12-A]नइ, जोइ सहू को लोक,
दवदंती तव चित्ति वचारइ 'ए तु वढइ छइ फोक।

माहरइ कीधइ मांहोमांहि नरनु हुसिइ संहार,
तुच्छ पुण्यनी हूं धणीआणी आ सिउं दीमइ रे अपार? ॥ २१७ ॥
शासनदेवता! माहरी माता! संभलु एक वचन,
तु हूं जगगुरु ध्याउं सविसेपइ निश्चल हुवू एक मन्न।
तु नलनइ जयतवाद हुज्यो,' नारीइ कहिउं एहवूं,
दवदंतीइ छटा त्रिणि दीधी 'सानिध्य करज्यो तेहवूं' ॥ २१८ ॥
नलकुमरिइ ते कृष्ण जीतिउ आवी लागु पाय,
'हूं सेवक स्वामी! तह्मारु' एहवूं कहीनइ जाय।
जगगुरु केरी मूरति पूजंता तेहनु ए पसाय,
दवदंतीनइ पुण्यमहिमाइ जयजयकार थाय ॥ २१९ ॥

दूहा

भीमरायनु जामाता, समरथ अतिबलवंत।
भाग्यवंत पुण्यइ अधिकु, लहुउ लीलावंत ॥ २२० ॥
पाणिग्रहणउच्छव करइ, भीमभूप सुजाण।
दवदंतीमनि हरप घणउ, पुण्यतणउ अहिनाण ॥ २२१ ॥
नलनइ परणावी दवदंती, आप्या देश भंडार।
गज रथ तुरंगम आपीआ, मनवंछित सृंगार ॥ २२२ ॥
सैन्य साथिइ, परणावीउ, आप्या भला पटकूल।
सारवस्तु राजाइ आपी, जेहना छइ बहु मूल ॥ २२३ ॥

ढाल

भीमिइ निपध संतोषिउ, केतलां दिन ए नल कुबेर तिहां रहिया ए।
सप्तभूमि आवास तिहां सुप भोगवइ, रिद्धि करीनइ गहगहिया ए ॥२२४॥
निपध कहइ 'सुणउ भीम! अमे हवइ जाएस्यूं कोशलानगरीइ सही ए।
घणा दिवस थया आव्या अमनइ, मोकलु,-
तुमथी शोभा घणी ल[12.B]ही ए' ॥ २२५ ॥

सेना कीधी सज्ज, निगध चालइ ए, दवदंती आवइ पिता भणी ए ।
'स्वामी ! दिउ हितशीष, मझ म विसारस्यु, तमे छउ तात भूधणी ए' ॥२२६॥
'सांभलि कुमरी वच्छि ! एक सीपामण, नीचसंगति टालज्यो ए ।
जेहथी हुइ अपवाद तेहथी दूरि रहिवूं, पतिनी आज्ञा पालज्यो ए' ॥२२७॥
मातानइ पाय लागइ, वेहूनइ लोचनि जलप्रवाह घणु वहइ ए ।
आलिंगन दिइ माय, कंठि विलगीय रोयंती किमवि नवि रहइ ए ॥२२८॥
माय दीइ सीपामण सारी, 'सुणि तूं कुमरीय ! रहिज्यो तमे रूडी परिइ ए ।
कंतनी भक्ति करज्यो मन तमे देईनइ, पतितणूं जिम चित्त ठरइ ए ॥२२९॥
सासू नणंदुर जेह पूज्यवर्ग ए, कहिउं करेयो तेह तणूं ए ।
तेहवी चालि चाल्यो जेणि वातिइ ए लाज न आवइ इम भणूं ए ॥ २३० ॥
देव गुरु धर्म सार आपणउ मारग रूडी परिइ आराधज्यो ए ।
चरणकमल पति केरा निशिदिन कुमरी अ विनयपणइ तमे सेवज्यो ए' ॥२३१॥
हईइ धरीआ वचन, आज्ञा मागीनइ रथि बइठी नलसुंदरी ए ।
सासरानइ अधिकारि पुत्री सामग्री सघली सारी विधि करी ए ॥ २३२ ॥
बुलावा भीमराय देसनी संधि लगइ आवीउ बहु सैन्य लेई ए ।
भीमनइ कहइ निषध, 'तमे वलु भूपति ! रूडइ ठामि हवइ बइसीइ ए ॥२३३॥
जिहां हुइ षीरवृक्ष जिहा हुइ जलठाम तिहां रही आज्ञा मागीइ ए' ।
बुलावी भीमराय सती दवदंती य पिता तणे [13-A] पाइ लागीइ ए ॥२३४॥
निषध नलकुबेर वाटइ चालइ ए दीठउ मुनि काउसगि रहिउ ए ।
एहवइ हस्ती आवइ, ऊपनी परजी ए वृक्ष जाणीनइ देह घसइ ए ॥ २३५ ॥
मद झरइ अति सार जिणइ परिमलइ भमरा आवी रणझणइ ए ।
चटका करइ मुनीडीलिइ, सहइ ते वेदना, देषीनइ हईउं कणमणइ ए ॥ २३६ ॥
नलइ दीठी ए परि, पितानइ वीनवइ, 'आहवा यतीनइ वंदीइ ए ।
कोडिभवना पाप एणइ वांदिइ ए, आम तात ! निकंदीइ ए' ॥ २३७ ॥

निषधनइ थयु भाव, पुत्रसंघातिइ ए परिवारस्यू प्रणमी रहइ ए।
'स्वामी! जंगम तीरथ पामिउ सुरतरु, आजनु दिन सफल हवु ए' ॥२३८॥
दीइ उपदेस सार, मुनिवर प्रणमीनइ निषधराजा चालीउ ए।
कोशलनगरीइ आवइ, कहइ दवदंतीनइ, 'नगर आपणउं आवीउं ए ॥२३९॥
अहां छइ जिननु प्रासाद.' एहवुं सांभलीनइ हर्षि थकी देहरइ गई ए।
चैत्यवंदन कीधूं नारि, भाविइ मनस्यू अ रलीयायत ते अति थई ए ॥ २४० ॥
कहइ दवदंती नारि 'सषी! तूं संमलि, मइ स्यूं पुण्य कीधूं घणउं ए?।
सोभागी वर पामिउ, मानव भव सारु सफल हऊउ सषी मझ तणउ ए' ॥२४१॥
रूडइ महुरत योगि वर पइसारु ए उच्छव हुइ अतिघणा ए।
नगरलोकसमदाय साहमा आवइ ए निषधराजा तेह तणा ए ॥ २४२ ॥
दवदंती आवी घरि सासूपाए य विनय करी लागइ रही ए।
वलती दिइ आसीस, 'कोडि दीवालडी जीवजे पुत्रस्यूं सही ए' ॥२४३॥
पगपडणइ द्रव्य आपइ [13 B] हरषी सासू अ पुण्यइ रूडी वहू पामीइ ए।
प्रभाति ऊठि तेह सासूससरानइ चरणिकमलि सीस नामीइ ए ॥ २४४ ॥

दूहा

सुष अपूरव भोगवइ, नल दवदंती नारि।
इंच्छा पुहुचाडइ मन तणी, लीइ लाहु संसारि ॥ २४५ ॥
हास्य विनोद कतूहल, पडोपलीइ केलि।
नाच गीत रस दिनि दिनि, लीइ लाहु संसारि ॥ २४६ ॥
एकदा निषध नलनइ कहइ, 'राजनु लीउ भार।
वैराग्यरंगिइ पूरिउ, लेसिउ संयम सार' ॥ २४७ ॥
पूर्विइ जे राजा हवा, मारग तेहनु एह।
वडपणनु योग जाणीनइ, व्रतधारी हुइ तेह ॥ २४८ ॥

ज्ञानीनि पहिल जरा, वृद्धपणउं मनि जाणि ।
मनस्यूं लूपु ते सही, नान्हाथी जरा आणि ॥ २४९ ॥
मूरपनइ वडपण आविउं, दीसीइ बाह्यवृत्ति ।
जाणे यौवन नवूं थयूं, मोहइ करी व्यग्रचित्त ॥ २५० ॥
विनय नही हईआमाहि, तृष्णा अधिकी वृद्धि ।
धर्मनूं नाम नवि गमइ, धर्म ऊपरि नही बुद्धि ॥ २५१ ॥
वृद्धपणउं तु शोभीइ, जु हुइ रूडी मति ।
नवि लेषवीइ पल्या भणी, कुमति ऊपजइ नित ॥ २५२ ॥
नान्हा ते वृद्ध ज कहिया, जे करइ धर्मनूं काम ।
वृद्ध लघु सरिया जाणिवा, नादरइ पुण्यकाम ॥ २५३ ॥
राज दीधउ नलपुत्रनइ, दिइ सीषामण तात ।
'वीसास जे नर करइ, तेहनु म करसिउ घात ॥ २५४ ॥
कुव्यसन सघला टालिवा, देवगुरु केरी भक्ति ।
छ दरसण तमे पालिवा, कही एहवी युक्ति ॥ २५५ ॥
पीडा म करसिउ कहि तणी, कहिनु म कर[14-A]स्यु लोप ।
सात क्षेत्रि वित्त वावज्यो, दीर्घ म करसिउ कोप ॥ २५६ ॥
चलावयो रूडी परंपरा, देवनु म लोपस्यु ठाम ।
सेवा करे सहिगुरु तणी, माहरुं रापे नाम ॥ २५७ ॥
कुलदेवी नइ कुलगुरु, कुलस्त्री नइ कुलाचार ।
ए च्यारइ जेणइ लोपीआ तेणइ हारिउं सुकृत सार' ॥ २५८ ॥
पुत्र सीषामण देई करी, लीधउं तेणइ चारित्र ।
साधुपंथ ते आदरइ, काया करइ पवित्र ॥ २५९ ॥
नलराजा ते राज्य करइ, सहूनी पूरइ आस ।
न्यायधर्म छइ अतिभलु, अनोरम करइ विलास ॥ २६० ॥

पूछइ प्रधाननइ एकदा, ' पितानी सी सी रिद्धि ? ।
केतु देस तेहनइ हुतु ? केतली भंडारनी वृद्धि ? ॥ २६१ ॥
यरतं कहइ मंत्री, ' सुणउ, पिता पाहिइ बहुलु देस ।
स्वांग ऊपार्जन तुम्ह करु, पोतइ घणउ निवेस ' ॥ २६२ ॥

चउपई

सैन्य सज्ज करी नीमरइ, आण मनावतु ते सचरइ ।
त्रिहु पंडनु हूऊउ भूधणी, आण मानइ सहू कोइ तेह तणी ॥ २६३ ॥
गौडदेस कन्यकुब्ज कलिंग, गोलदेस अंजन सुचंग ।
गंगापार आगधन अंग, मध्यदेस कुरु कामरूप चंग ॥ २६४ ॥
उड्र पुंड्र उडीस पंचाल, सौरसेन मालव बंगाल ।
जालंधर नइ लोहितपाद, कीधा नलइ तेहस्यूं विवाद ॥ २६५ ॥
कामाक्षा वपु अंतर्वेध, पूर्वदिसिइ जीपीआ सुवेध ।
कोछ सौराष्ट्र कुंकण न[14-B]इ लाट, वालिभ अवंती कर्णाट ॥ २६६ ॥
कासी किरात सौवीर बकाण, कुंकुम अरबद कंबोज ककाण ।
तामलिप्ती अवंती पारियात्र, अनोपम दीसइ तिहाना पात्र ॥ २६७ ॥
पश्चिम दिसिना एतला देस, सबल सैन्यइ करी जीपइ नरेस ।
बर्बर बूजर कास्मीर कार, श्रीकाष्ठ स्त्रीराज्य हिमालय सार ॥ २६८ ॥
लोहपुर टाक अनइ तुरुष्क, तायक टाक भलु छइ बष्क ।
उत्तर दिसिना एतला देस, सबल सैन्यइ करी जीपइ नरेस ॥ २६९ ॥
मलय सिंगल कोशल नइ अंध्र, श्रीपर्वत्त द्राविड नइ वंध्य ।
चेरोडे तापी लाजी धार, श्रीवैदर्भ पाटल अति सार ॥ २७० ॥
महाराष्ट्र कामाक्षा आभीर, कच पापांतिक निर्मदा नीर ।
वौढउर अनइ भलं श्रीमाल, दक्षणदेसि जीपीआ भूपाल ॥ २७१ ॥
एकदा सभाइ बइठउ भूप, इंद्र सरीपुं उद्भुत रूप ।
श्रीगरणा बइगरणा घणा, मंडलीक मुड्डधा नही मणा ॥ २७२ ॥

महाभंडारी रसोई तलार, राजवैद्य गजवैद्य ज सार।
दीवटीआ सुहबोला जेह, उचितबोला बइठा छइ तेह ॥ २७३ ॥
कथाकथक पीठमर्दक जिहा, संधिरेहा दूतपालक तिहा।
एहवी सभाइ बइठु राय, नरवरलक्ष सेवइ तस पाय ॥ २७४ ॥
पूछइ प्रधाननइ राजा इसिउं, 'कहु मंत्रि! जेहवूं हुइ तसिउं।
माहरइ पोतइ देस भंडार, पिता पाहिइ अधिकेरु सार ॥ २७५ ॥
कइ उछी रिद्धि अछ[15-A]इ अम तणी ?' मंत्री बोलइ, 'सुणि भूधणी।
अधिक राज्य पिताथी स्वामि, आण मनावी ठामिइ ठामि ॥ २७६ ॥
पिता थकी जे अधिकु होइ, उत्तम पुत्र कहीजइ सोइ।
कसिउ अणूरउं नथी तम देव, किंकरनी परि राय करइ सेव ॥ २७७ ॥

दूहा

विसइ जोअण ऊपरइ, तक्षसिला छइ गाम।
कदंबराजा राज्य करइ, शत्रुनउ फेडइ ठाम ॥ २७८ ॥
तमारी आज्ञा नवि मानी, ते छइ उनमत सुंड।
आण मनावता दोहिलं, सैन्यइ करी प्रचंड' ॥ २७९ ॥
नलनइ मनि रोस ज थयु, 'ते हूं जोउं कदंब।
सैन्यपणइ सैन्य सज्ज करु, मंत्री! म करु विलंब' ॥ २८० ॥
प्रधान कहइ नलरायनइ, 'मोकलीइ दूत एक।
ते हाथिइ कहावीइ, वचन तणु विवेक' ॥ २८१ ॥

ढाल पवाडानु

नलराजाइ दूत मोकलिउं, तक्षसिलाइ आवइ रे।
कदंब भूप सभाइ बइठउ, इंद्र सरीखु भावइ रे ॥ २८२ ॥
दूत तणां छ लक्षण कहियां, बुद्धिधणी ते होइ रे।
परायूं चित्त नरनूं ओलखइ, स्वामिभक्त दूत जोइ रे ॥ २८३

साहसीकपणउं तिहां जोईइ, सद्तउ दूत तेह रे ।
बोल बोलइ ते पडवडा, नवि उसंसइ जेह रे ॥ २८४ ॥
दूत आवीउ रायसभामांहि, कीधु राय प्रणाम रे ।
' मोटउ राजा पृथवीइ सुणीइ, कदंब ताहरूं नाम रे ' ॥ २८५ ॥
दूत कहइ ' संभलि वसुधाधिप, अम ठाकुर श्रीनल रे ।
सघलइ तेणइ आण मनावी, जेहनइ बहु[15 B]लूं दल रे ॥ २८६ ॥
वांक कसिउ नथी स्वामी! तेहनइ, तम विना सहू अ असार रे ।
लघु बांधव तेहनइ कूबर अछइ तिम तुम लेखवइ अपार रे ॥ २८७ ॥
आखु दीस तुमनइ संभारइ, करइ तुम गुणग्राम रे ।
सिउं कहूं घणउं कदंब! तुमनइ ? न वीसारिउं नाम रे ॥ २८८ ॥
आण मानइ सहू नल राजानी, उतकट भूपति जेह रे ।
तेहनी आण जु तमे मानु, हुइ तुम्हस्यूं सनेह रे ॥ २८९ ॥
सघला राजा सेवक परिइ, तमे न मानु आण रे ।
एणी वातिइ तुमनइ कुशोभो, सुणउ कदंब सुजाण रे ॥ २९० ॥
ते अभिमानी राजा नल लीधु बोल न मेल्हइ रे ।
वचन तेहनूं कुण उत्वरथइ ? रोप तोप आप मेलइ रे ॥ २९१ ॥
जउ नही मानु आण तेहनी तुम नही हुइ सुख रे ।
देश राज्यभंडार लेसइ, घणउं होइसिइ दुख रे' ॥ २९२ ॥
एहवू दूतइ कहीउं कदंबनइ, वचनबाण ते लागा रे ।
ते बोल हईडामांहि सालइ, डीलिइ अति तेह वागा रे ॥ २९३ ॥
कदंब कहइ वलतूं दूतनइ, ' सिउ नल सिउ कूबर रे ? ।
ताहरा नलनी वात जाणउं छउं, पृथवीमांहि न खर रे ॥ २९४ ॥
ताहरु ठाकुर वाइ सूतु कइ थयु सन्निपात रे ।
विकलावस्था हुई तेहनइ, ए लक्षण अन्य जात रे ॥ २९५ ॥

जा रे जई तूं कहि रे नलनइ, बल जु हुइ तुज्झ रे।
युद्ध करेशा वहिलु आवये, उच्छाह छइ वली मज्झ [16-A] रे' ॥२९६॥
तिहांथी दूत ते पाछउ वलीउ, आविउ नल समीपिइ रे।
प्रणाम करीनइ ऊभु रहिउ, कर जोडीनइ जंपइ रे ॥ २९७ ॥
'स्वामी! कदंब तह्मारु वयरी वांकडु छइ अत्यंत रे।
तेहनु आंकडु सबल जाणीइ, न गणइ कसिउं चित्ति रे ॥ २९८ ॥
ते तुम केरी आण न मानइ, मागइ छइ वली झुज्झ रे।
जे कहिउं वली स्वामी तुमनइ कहिता थाउं अमूझ रे' ॥ २९९ ॥
एहवूं निसुणी निषधपुत्र दल लेई चालिउ वाटइ रे।
छडे पीआणे नलराय आवइ विषम मेल्हंतु घाट रे ॥ ३०० ॥
'नल राजानूं सैन्य आवइ छइ' सुणीउ कदंबइ राय रे।
आपणउं सैन्य सज्ज कीधउं, गढ पाखरीउ तस ठाय रे ॥ ३०१ ॥
'एक सींह तिहां बीजु सिउ सींह?' गरव धरइ अति तेह रे।
कटक लेईनइ बाहिरि आवइ एह्वइ नल आविउ जेह रे ॥ ३०२ ॥
तक्षसिला चुपाखर वींटी, नलइ कहाविउ तस रे।
'जु तूं मझनइ आवी प्रणमइ तु तुझ मेहलउं अवश्य रे' ॥ ३०३ ॥
राउतइ राउत, पायकइ पायक, रणतूर अतिहि वाजइ रे।
धनुष तणा टंकारवइ सबल अंबर गाजइ रे ॥ ३०४ ॥
मदभिंभल ता गेलि गूगलीआ गडयडता गजेन्द्र रे।
तेजी तुरंगम तरवरीआ, ऊपरि चड्या नरेन्द्र रे ॥ ३०५ ॥
शबदवेधी धनुर्धर आगलिथा रहइ उलि रे।
आगां टोप रगाउलि पहिरिया, शोभइ राती मोलि रे ॥ ३०६ ॥
मांहोमांहि युद्ध मंडाणा, क्रोधिइ भरीआ तेह रे।
तव नल कदंबनइ कहइ, 'युद्ध कीजइ आपण बेह रे' ॥ ३०७ ॥

दोइ जणा संग्राम करंतइ हारइ कदंब राय रे।
जे जे परिइं युद्ध करइ तव नल जीतु न [16-B] जाइ रे ॥ ३०८॥
कदंब राय चींतवबा लागु, 'नहीं जीपुं हूं एह रे'।
ते राजा नाहसीनइ गयु, विस्मिउ ततक्षण तेह रे ॥ ३०९॥
वेराग्यरंगिइं चारित्र लीधउं, प्रतिमाइं रहिउ मुनि रे।
नलराजाइं ते यती दीठु, ध्यानस्थ शोभइ वनि रे ॥ ३१०॥
नल कहइ कदंबनइ 'हूं जीतिउ ऋषिराय रे।
एणी विधिइं मइं तु सही हारिउं, हूं तुम लागूं पाय रे' ॥ ३११॥
पंच महाव्रतधारक मोटउ साहस धीर रे।
काम क्रोध लोभ जीपीउ समरथ वीराधिवीर रे ॥ ३१२॥
केतली वेला ऊभु रहिउ, साहमूं न जोयूं तेणि रे।
निरीहमनि भूप तृणा सरीखु, ध्यान राखिउं चित्त जेणि रे ॥ ३१३॥
जयशक्ति नामिइं पुत्र छइ तेहनइ, राज्य आपीउं तास रे।
तेह तणु देशभंडार आपिउ, रिद्धि आपी जास रे ॥ ३१४॥
थापना कीधी तक्षशिलाइ, ते मेल्हिउ तेणइ ठामि रे।
नलराजा ते पाछु वलीउ, आविउ आपणइ ठाइ रे ॥ ३१५॥
त्रिणि खंडनु धणी हवु, जेहवु हुइ वासुदेव रे।
श्रीनलराजा अति बलवंतु, करइ सहू तस सेव रे ॥ ३१६॥

दूहा

लघु बांधव छइ तेहनइ कूबर नामिइं जेह।
नलराजानी ख्याति देखी अदयाइ चित्तिइ तेह ॥ ३१७॥
देखी न सकइ रूअडु, हईइ दुष्ट अपार।
देखी रिद्धि पीआरडी वहइ निरंतर खार ॥ ३१८॥
कूबर मनस्यूं इम जाणइ, 'लेउं एहनी रिद्धि'।
अभिप्राय पाडुउ चींतवइ, नींचनइ हुइ कुबुद्धि ॥ ३१९॥

नलराजा सुख भोगवइ, दवदंतीस्यूं नेह ।
प्रीति ईश्वरनइ पार्वती, चातकनइ जिम मेह ॥ ३२० ॥

मधुकरनइ जिम मालती,[17-A]इंद्राणी जिम इंद्र ।
प्रीति पाणी नइ माछिली, जिम कमलिनी दिणंद ॥ ३२१ ॥

एणइ अवसरि जेहवूं ते संभलु अधिकार ।
प्राचीन पुण्य हुइ जां लगइ तां सुख भोगवइ सार ॥ ३२२ ॥

ढाल ॥ पसली भरी पाणी तणी

भाई कूबर जे कहिउ, राज्यलोभीउ जेह रे ।
छल जोइ राजा नल तणा, शाकिनी परिइ तेह रे ॥ ३२३ ॥
कूबर दुष्टमां मूलगु, सेवइ व्यसन सात रे ।
अन्या मारगि ते हींडइ, नवि जाणइ पुण्य वात रे ॥ ३२४ ॥
तृष्णा छइ तेहनइ राज्यनी, मनि चींतवइ एह रे ।
सेवा करइ विद्यावंतनी, जिम रिद्धि ल्हउ एह रे ॥ ३२५ ॥
को एक अवधूत तिहां अछइ, सेवा करइ तास रे ।
आपीउ मंत्र जू तणउ, 'पूगसिइ तोरी आस रे' ॥ ३२६ ॥
ध्यान कीधउं तेणइ मंत्रनूं, जपइ अहनिसि तेह रे ।
कूबर कहइ नलरायनइं, 'रमीजइ जूअ जेह रे' ॥ ३२७ ॥
कूबरनी संगति करी नल तेहवु थाइ रे ।
नींच संगति नरनइ लागइ, क्रीडा करइ वेहू भाइ रे ॥ ३२८ ॥
जूअ रमइ वेहू जणा, पासा ढालइ तेह रे ।
नल हारइ कूबर जीपइ, दैवह योग एह रे ॥ ३२९ ॥
नलराजा छइ अति भलु, जूनू लागूं व्यसन्न रे ।
रात्रि दिवस राजा जू रमइ, लागूं तेहस्यूं मन्न रे ॥ ३३० ॥

रतन दूषण दीधउं विधात्राइ, मोटी कर्मनी राशि रे ।
तें आगलि कोइ न विछूटइ, सचराचर पाश रे ॥ ३३१ ॥
चंद्र कलंकी जाणीइ, समुद्रात खारु रे ।
सूर्यमांहि तेज घणउं, चपल मेघ सारु रे ॥ ३३२ ॥
विद्वांस निर्धन हुइ, कमल कंटकी जोइ रे ।
दोभागपणउं रूपवंतनइ, कल्पवृक्ष काष्ट सोइ रे ॥ ३३३ ॥
पशुपणइ हुई कामधेनु, रत्न पाषाण जाति रे ।
धननु धणी कृपण कीधु, [17-B] दुखीउ सुजात रे ॥ ३३४ ॥
चंदन फङूउं कां कीधुं, जल निर्मलइ पंक रे ।
एतलमांहि जिम अवगुण तिम नलमांहि वंक रे ॥ ३३५ ॥
निरंतर नल जू रमइ, हारइ लख कोडि रे ।
व्यसन किमइ मेल्हइ नहीं, मोटी लागी खोडि रे ॥ ३३६ ॥
देश नगर नइ पाटण कनक रत्न भंडार रे ।
कूबर जीपी ते लीइ हस्ती कोठार रे ॥ ३३७ ॥
नल राजा हारइ निरंतर, नथी किसी सार रे ।
वारिउ कहिनूं नवि करइ, संघनु हाहाकार रे ॥ ३३८ ॥
हाथी कानि साहिउ नवि रहइ, बहूमूल्य वस्तु हारइ रे ।
अश्व सुभट तेहु हारिया, तेहवो नही जि को वारइ रे ॥ ३३९ ॥
नारीइ प्रधान तेडीआ, 'जईनइ वारु तमे राय रे ।
कुव्यसन नलनइ न घटइ, लागूं तुम पाय रे ॥ ३४० ॥
राजानइ तु शुद्धि नथी, हारिउं सहू राज रे ।
त्रिणि खंड भोगवइ ए नल, एणी वातिइ लाज रे' ॥ ३४१ ॥
प्रधान आवी रायनइ कहिइ, 'तूं तु वसुधापति रे ।
सात व्यसनमांहि जू मूलगूं, एतु नवि कीजइ मति रे ॥ ३४२ ॥

व्यसन लागूं जे जेहनइ छांडइ नहीं तेह रे ।
कुव्यसनथी हुइ दुखइ, नवि जाणइ एह रे ॥ ३४३ ॥
कुव्यसनी हऊउ जे नर, नवि दीजीइ सीख रे ।
तेहनइ उपदेस न घटइ, न धरइ ते सीख रे ॥ ३४४ ॥
वायस कोटिइ न घटइ एकावलि हार रे ।
घूअडनइ नवि घटइ रहिवा सहिकार रे ॥ ३४५ ॥
नाहूनू नेसडू जिहां हुइ नवि घटइ प्राकार रे ।
गहिलनइ नवि घटइ शुभ अशुभ विचार रे ॥ ३४६ ॥
घूलहडीना रायनइ न घटइ श्वेत छत्र रे ।
त्राटीइर भीति जिहां नवि घटइ वारु चित्राम रे ॥ ३४७ ॥
डेडकानइ नवि घटइ वइ[18-A]सेवूं कमलि रे ।
रासभनइ नवि जोईइ चंदनपरिमल रे ॥ ३४८ ॥
जूआरीनइ नवि घटइ सारु उपदेस रे ।
रूअडी हितसीख नवि गमइ, साहमूं आणइ खेस रे ॥ ३४९ ॥
रूअडूं कहीइ तेहनइ साहमु गुण जाणइ रे ।
दूखवी कहितइ अति घणउं मनि खेद ते नाणइ रे ॥ ३५० ॥
गाढा गरढा वृद्ध मंत्री प्रीछवइ घणी परिइ रे ।
तेहनूं कहिउं मानइ नही, विपरीत ते करइ रे ॥ ३५१ ॥
राजा नही मंत्री वसिइ, पामइ सहू दुख रे ।
सर्व चिंतातुर थई रहिउं, प्रजानइ नवि सुख रे ॥ ३५२ ॥
कूबरनइ मनि कूड अछइ, 'लेउं हूं एहनूं राज्य रे' ।
प्रेरणाइ सविशेषु रमइ, लघु जीपइ साम्राज्य रे ॥ ३५३ ॥
दवदंती रायनइ कहइ, 'द्यूत न रमीइ देव रे ।
अतिघणउं सहू कांई नही, माझनइ कीजइ सेव रे ॥ ३५४ ॥

घणू अ गलिउं जु खाईइ तु ऊपजइ विकार रे ।
साहमूं देहि दुख ऊपजइ, सुणि कंता ! सुविचार रे ॥ ३५५ ॥
ए सी कुमति ऊपनी ? तमे चतुर सुजाण रे ।
बीजानइ हितसीख दीउ, जे हुइ अजाण रे ॥ ३५६ ॥
घणउं कहू छउ तुमनइ, टालउ एह व्यसन रे ।
स्त्रीवचन तमे मानयो, अपयश तणु ठाम रे ॥ ३५७ ॥
पुण्यवेला प्रभातिनी, सीखु कला सुज्ञान रे ।
धरमनी चर्चा तमे करु, दीउ मुनिवर दान रे ॥ ३५८ ॥
भर्त्तार हींडइ कुव्यसनइ, नारी लजवाइ रे ।
आंगुलीइ देखाडणउं, जूआरी कहिवाइ रे ॥ ३५९ ॥
कूबर संगति तमे मेहलु, वारूं छूं कंत रे ।
राज्य रिद्धि कांइं नीगमु ? ठामि राखु चींत रे ॥ ३६० ॥
कां करु वीसास भाईनु ? म थाउ भोला देव रे ।
विकलपणउं तम कां थयूं ? करु वीतराग सेव रे ॥ ३६१ ॥
लक्ष्मी छइ ता सहू काई, काजि नावइ [१४-B] कोइ रे ।
लक्ष्मीनूं सहू ए सगूं, हईआ साथि जोइ रे ॥ ३६२ ॥
मूरख मति तम कां थई ? चित्ति इसिउं विचारु ।
हूं छउं दासि तुमारडी, जू रमिवू वारु' ॥ ३६३ ॥
नल ते रामति नवि त्यजइ, हारइ नलराय रे ।
पांसा पडइं अवला तव कूबर सविसेषु थाइ ॥ ३६४ ॥
सवला पांसा कूबर, दुष्ट छइ तेहनी बुद्धि रे ।
रमवा लागु प्रेम सिउं, हईइ घण पइठउ ॥ ३६५ ॥
नारी हईइ आवटइ, तेणीइ स्यूं चालइ ? ।
उत्तम कुलनी जे नारी पति आज्ञा पालइ ॥ ३६६ ॥

रमतइ २ सहू हारिउं, हारिया त्रिणि खंड रे ।
कूबर तिम तिम हर्ष पामइ, कुबुद्धी प्रचंड रे ॥ ३६७ ॥
राज्य हस्ती नइ तुरंगम, हारीउ भंडार रे ॥।
नगर पुर पत्तन सवि भला, अंगओलगूं सार रे ॥ ३६८ ॥
हीर चीर नइ पटकूल, रायनु श्रृंगार रे ।
तिम तिम नांखइ पासा तिहां, दाहा आवइ असार रे ॥ ३६९ ॥
सुवर्णमय सिंहासन, भोजननूं थाल रे ।
शय्या ओसीसा रायना, हारइ भूपाल रे ॥ ३७० ॥
जल पीवाना कचोलडा, हारइ थई सार रे ।
छत्र चमरात हारीआ, आप्या ते वार रे ॥ ३७१ ॥
दवदंती राइ हारी, कूबरनइ संतोष ।
राज्य तणु धणी थयु, लोकनइ असंतोष ॥ ३७२ ॥
नारीइ ते विधि सुणी, 'सी पइरि करीसिइ ?।
कुमति आ सी एहनइ ऊपनी ? सिउं सिउं हवइ होसिइ ?' ॥३७३॥
विचारचतुर डाहा भला, डाहा गुणवंत रे ।
भवितव्यता तेहनइ नडइ, जे हुइ बलवंत ॥ ३७४ ॥
कूबर कहइ नलरायनइ, 'माहरी ए भूमि रे ।
तुझनइ रहिवा नही देउं, जाउ अन्य भूमि रे ॥ ३७५ ॥
पिताइ राज्य तूंहनइ दीधूं, स्वामीइ आपीउं मज्झ रे ।
तुमारूं अहीं कांई नथी, कहूं छउं नल तुज्झ रे' ॥ ३७६ ॥
चित्ति विचारइ श्रीनल, 'रहिवा नहीं अधिकार रे ।
त्रिहु खंडनु राजा ए थयु, टलिउ आपणउ लाग रे' ॥ ३७७ ॥
नल तिहांथी नीसरइ, पूठिइ आवइ दवदं[19-A]ती ।
सुख दुख प्रीयस्यूं निरवहइ, उत्तम कुलवंती ॥ ३७८ ॥

ते वारइ कूबर कहइ, 'दवदंती ! म जाउ ।
ए सहूए तुम्हारइं, मज्झ पत्नी थाउ' ॥ ३७९ ॥

चउपई

'ए स्यूं कहिउं रे कूबर ! दुष्ट ! लोकमांहि तूं हुउ अनिष्ट ।
ए तु कुहण नुहइ ताहरूं, कीधूं जोजे तूं माहरूं ॥ ३८० ॥
फटि रे पापी भूंडा चांडाल, कुबुद्धी तूं महाविकराल ।
वडा बांधवनी नारी जेह, माता सरीखी कहीइ तेह ॥ ३८१ ॥
नारी आठ निषेधी जेह, संगति न करवी पुरुषिइ तेह ।
गुरुनारी अनइ मित्रनी नारी, राजानारि निषेध विचारि ॥ ३८२ ॥
जातिहीन,कूआरी होइ, आपणा गोत्रमांहिली होइ ।
वंध्या अनइ परिव्राजिका कही, एहस्यूं संगति न कीजइ सही ॥ ३८३ ॥
ए स्यूं कहण मूरख तइ कहिउं ? तुझथी अम्हे सह् कांई लहिउं' ।
तव कूबरनइ वारइ प्रधान, 'तमे थाउ राजन् ! सावधान ॥ ३८४ ॥
अयुक्ती वात ए नवि कीजीइ, नलनइ मान महत्त्व दीजीइ' ।
इम कहितइ श्रीनल नीसरइ, नगरमांहि जीतु संचरइ ॥ ३८५ ॥
उद्वेग असुख प्रजानइ मनि. ऊचाट अछइ सविहुनइ तनि ।
नहीं किस्या उच्छवना रंग, तेणइ नगरि नवि वाजइ मृदंग ॥ ३८६ ॥
लोकनइ घरि नही जिमणवार, न विवसाईआ वाणिजव्यवहार ।
न चहुटइ मांडइ कोइ हाट, न पढइ कस्याइ कवित्त भाट ॥ ३८७ ॥
नगरमांहिइ नवि नाचइ पात्र, नेसालइ भणइ नही छात्र ।
न पोसालइ करइ वखाण, इष्ट गोष्टी न करइ सुजाण ॥ ३८८ ॥
सुललित बालिका न दीइ रास, क्षण नवि वांचइ पंडित व्यास ।
रूडइ कंठि कोइ [19-B] न करइ राग, रास भास नवि खेलइ फाग ॥ ३८९ ॥

न तालाचर वाइ ताल, 'हारू हारू' भणी न हींचकइ बाल ।
तिहां नही भेरी तणा भांकार, न वंश वाइ भला वंशकार ॥ ३९० ॥
न मालापाडइ झूझइ माल, लोक तणइ मनि अतिहि साल ।
रवाडी न श्रीवंत करइ, खेल वाडी न गुडीआ धरइ ॥ ३९१ ॥
घोडा हस्ती तणी नही वाह, लोकनइ घरि न वीवाहना गाह ।
नल संचरतइ दुप अपार, वरतइ सघलइ हाहाकार ॥ ३९२ ॥
दवदंती लेईनइ राय, राज मूंकी तव श्रीनल जाइ ।
वस्त्र लगइ सहू कूंवरइ ग्रहिउं, आपणउं दुक्ख न कहिनइ कहिउं ॥ ३९३ ॥
'सागडीत सहित रथ लिउ तमे, घणउं कहीइ छइ स्वामी अमे ।
पाला चालतां दोहिलूं होइ,' पाय लागी वीनवइ सहू कोइ ॥ ३९४ ॥
'रथ तणु माहरइ खप ज नही, माहरूं नथी अहीइ कांई सही'।
घणउं कहितइ रथ राखिउ तेणि, नलनइ आवइ वुलावा जेणि ॥ ३९५ ॥
रथ बइठी नल सुंदरी, सविकहि आज्ञा मागी करी ।
नगरलोक साथिइ छइ बहू, दुख धरइ हइयामांहि बहू ॥ ३९६ ॥

ढाल । राग रामगिरी

कोशला नगरीनु धणी नलराजा जाइ ए,
संघात नथी रे कोइ कहि तणु रे,
नगरमांहि स्तंभ दीठउ एक अपूरव,
पांचसइ हाथ मोटउ अतिघणउ ए ।
राज्यभ्रंश तणउं दुख छइ रे हईआमाहि,
लीलाइ ऊपाडिउ नल गुणवंतिइ ए,
तिहांनु रे थांभु तेह नींखीउ तेणइ ठाइ,
कुतूहल कीधू तेणइ बलवंतइ ए ॥ ३९७ ॥

त्रू०—'वलवंत नलराजा आ सिउ दीसइ ?' [20-A] लोक तिहां वार्त्ता करइ,
'देसोटुं दीइ भाईनइ तिहां राज्य अंतःपुर हरइ ।
केतले दिनि एह ज राजा हुसिइ पृथ्वीनु धणी,
पुण्यवंत पुण्यइ आगलु, दिशा हुसिइ एह तणी ॥ ३९८ ॥

निश्चइ नलनइ हुसिइ जयकार.' माहोमांहिं वात ए.
'एणइ पापीइ कूवरिइ भई मोटउ कीधउ संताप ए ।
राजा पहिलं मूलि त्रासिउ, जूअ रमिवूं नवि घटइ,
नलनइ ए तु कुबुद्धि ऊपनी,' लोक कोक सी परि नटइ ॥ ३९९ ॥

'मनुष्यनइ उपदिशा आवइ त्यारइ कुमति ऊपजइ,
आवणहारी वेला पाइइं, तव सुमति किहांथी संपजइ ? ।
मनुष्य चींतवइ काम जूउं, हुइ जूई परि रे,
चींतविउं काई काम न हुइ, जाणेज्यो खराखरि ए' ॥ ४०० ॥

देसी

राय कहइ मंत्रिनइ, 'चलु चलु लोकए ! अमनइ रे घणूअ संभारयो ए,
जेहवू रे हूं नल तेहवु रे कूबर, एहनी रे राज्यनीति पाल्यो ए ।
अमे कहिनइ रीस करी, राज्यमदिइ लक्ष्मी हरी, ते सहू लोक तमे खमाया ए ।
अमे रे जाउं छउं हवइ, रखे रे वीसारू,
तमे को एक वेलाइ चित्तिइ धरज्यो ए ॥ ४०१ ॥

त्रू०—धरयो अमनइ चित्तिइ सहू ए,' एहवूं कही लोक चालीआ;
दवदंती नइ नलराजा नगर मेल्ही चालीआ ।
नल पूछइ तव नारीनइ, 'किहां जइसिइ, केहइ ठामि ए ?
राज्य नगर देस छंडीउं, हवइ सिउं करीसिइ काम रे ?' ॥ ४०२ ॥

दवदंती तव कहइ पतिनइ, 'धीरठ थाउ कंत ए,
साहसपणउं धरु स्वामी ! चिंता म करु चिंति ए।
कुंडिनपुरिइ जईइ स्वामी ! पिता माहरु तिहां अछइ,
एक वारनूं तिहां रहीइ, वली जाणीसिइ पछइ ॥ ४०३ ॥
भीमराजा तम सस[20-B]रु भलु छइ गुणवंत,
तमनइ हित करसिइ घणउं, उत्तम प्रकृतिइ संत।
बीजु ठाम नथी नलजी ! जिहां आपण जाईइ;
पीहर छंडी अनेथि रहिता हलआपणउं थाईइ' ॥ ४०४ ॥

देसी

एहवूं अ विचारीय रथ खेडिउ,
कुंडनपुरिइ चालता अटवी अ आवी इसी ए।
बीहामणी रौद्र ए वनचर जीव ए,
तेणइं करी सबल वासिइ वसी ए।
मद्यपानिइ परवसि थया जस्या अवधूत,
तीर नइ कामठा तेणइ हाथिइ तेणइ धरिया ए,
कचपिचि बोलता कलकल शब्द ए,
क्रोधिइ रे करी रे भील अति भरिया ए ॥ ४०५ ॥
त्रू०-क्रोध भरिया भील एहवा नलराजाइ पेखीआ,
भील सघला रथ देखी मनि अतिहिं हरखीआ।
भील भयंकर फिरी वलीआ, धनुष सघले चडावीआ,
'नही जावा देउ तूहनइ, अमे घणे दिहाडे पामीआ' ॥ ४०६ ॥
नलराजा नारी लेई रथथी ते ऊतरइ,
आपणपूं भील पूठिइ धायु, एतलइ रथ को अपहरइ।
नाहसी भीलडा गया दह दिसि, नल-नारी चालए,
वाटइ चालता दोहिलं तेहनइ, नारी छइ सुकुमाल ए ॥ ४०७ ॥

रथइ तु बइसणइं तेह लीधुं, विधिइं लीधुं दुख ए.
पाप उदय प्रगट थाइ त्यारइ किहांथी सुख ए ! ।
पूरव पुण्य हतूं ज्यारइ त्रिणि खंडनु राजीउ,
सरजिउं लाभइ सुख दुख, चित्तिइ ते नवि गांजीउ ॥ ४०८ ॥

ढाल । लीधा रे अबोल नेमि जनम०

अटवीमांहि ते चालीआ हाथि ग्रही आपणी नारि रे ।
सुख तेह पाछिलं संभरइ, तेणइ स[21-A]मइ कहिनु न आधार रे ॥४०९॥
सवत्र रे दिन नुहइ सुखना, गरव म करसिउ कोइ रे ।
विधिइ रायरंक सरीखडा, भोगवी छूटइ सोइ रे ॥ ४१० ॥ स.
पाए रे खूचइ अति कांकरी, कांटा ते चरणे वींधाइ रे ।
झरझर रुधिर नीसरइ, नारीनइ देहि दुख थाइ रे ॥ ४११ ॥ स.
वीसासु रहिता रहिना ते जाइ, चरणे रे बांधीला पाटा रे ।
अणूहाण पगे भुइ चालिवुं, खूचइ २ तीखा काटा रे ॥ ४१२ ॥ स.
श्रान्त थई अति ऊससी, डीलिइं २ स्वेद ते अति रे ।
सास रे न माइ तेह नारि मुखिइ, जोउ जोउ कर्मनी गति रे ॥ ४१३ ॥ स.
एहवइ रे तृषा लागी नारीनइ, 'कंता रे ! ल्यावू किहांथूं नीर रे' ।
कन्हइ रे जळपात्र कसिउं नथी, चींतवइ साहसधीर रे ॥ ४१४ ॥ स.
'जल हूं ल्यावउं नारी केणी परिइं ? पाणी रे केणी विधिइं पीसि रे ?'।
ऊपनूं दुख तव हईआमांहि, 'आ सी रे अवस्था जगदीस रे ?' ॥४१५॥ स.
कम्रु पान रे तणु दूदु करी आणी आपिउं नलजीइ वारि रे ।
नीसासु मूंकीनइ पाणी पीइ, कहइ २ दवदंती नारि रे ॥ ४१६ ॥ स.
'केतली रे अटवी उलंघवी ? थाकी २ कंता ! न चलाइ रे' ।
नलनु पालव ग्रही इम कहइ, 'चरणे मांहरइ गांठि वलाइ रे' ॥ ४१७ ॥ स.

'सु रे जोअंण अटवी जवी, तेहमांहि जोअण पांच रे।
मृगनयणी! आव्या वेह्न जणा, माने माने वात तूं साच रे' ॥ ४१८ ॥ स.
हुलुइ हलुइ संचरइ एणी परिइ, संध्यासमइ हुऊउ तेह रे।
अशोकवृक्ष रे हेठलि रहिया, नलराजा कहइ धरी नेह रे ॥ ४१९ ॥ स.
'करि न तूं निद्रा रे दवदंती! [21-B] दुख रे वीसारु ताम एह रे।
रात्रिनइ अवसरि चित ठरइ, हुइ सुख तुम तणइ देहि रे' ॥ ४२० ॥ स.
अधलं रे वस्त्र त्यारइ पाथरिउं, चीतवइ दुवदंती नारि रे।
'मनुष्यनइ वेला रे जेहवी पडइ नरवहवी तेहवी सुविचारइ रे' ॥४२१॥ स.
कवही कूर कपूर कि सेजइ सूअणा, कवही अलुणा अन्न कि भुइ परिलेटणा।
कवहीं दुज्जग सरसी गोठ कि सज्जन वंचणा, देव नचावइ नाचि
तेणी परि नचणां ॥ ४२२ ॥

चउपई

देव गुरु केरूं ध्यान ज धरी, महामंत्र नवकार स्मरी।
आज्ञा मागी नलराय तणी, निद्रा कीधी, चित्ति चिंता घणी ॥ ४२३ ॥
तेणी वेला चिंतइ नलराय, 'कस्यु करीसिइ हवइ उपाय?।
जु जईइ ससरानइ ठामि तु जाइ सही आपणी माम ॥ ४२४ ॥
अधम हुइ ते सासरइ रहइ, अपमान जामाता लहई।
जईइ तेडिया भजीइ तेह तणा, नहीतरि थईइ अलखामणा ॥ ४२५ ॥
एणइ ठामि हूं मेलहउं नारि, परदेसि जाउं,' एहवूं विचारि।
'पगबंधन मज्झनइ एहनी, रात्रिदिवस चिंता जेहनी' ॥ ४२६ ॥
हेठलि वस्त्र पाथरीउं छइ जेह, रुधिरइ अक्षर लखीआ एह।
'एतलइ जाजे पीहरि तूंअ, परदेस जोवा जाउं छउं हूंअ' ॥ ४२७ ॥
'अनाथ करी किम मेल्हउं बाल? व्याघ्र आवीनइ भखइ सुकुमाल।
रात्रि रहूं हूं एहनइ पासि, प्रभाति समइ उठी जासि ॥ ४२८ ॥

जाया हीइं छउं मेल्ही एह, नारी साथि इसिउ माहरु नेह'।
एणी परिइ रयणी नींगमी, अंतर्गतपणइ वात नवि गमी ॥ ४२९ ॥
तिहां मेहलीनइ चालिउ धीर, पाछउं वालीनइ जोइ [22-A] वीर ।
अटवी कतूहल जोतु जाइ, नारी सुहणउं देखइ तेणइ ठाइ ॥ ४३० ॥
एहवइ समइ सुहणउं दीठउं एक, सहिकार फल लेवा चडी छेक ।
हाथीइ आवी उन्मूलीउ वृक्ष, भूमि पडी तव जागी दक्ष ॥ ४३१ ॥
पासिइ नवि देखइ नल कंत, विभ्रम थयूं दवदंती चिंत ।
दसोदसिइ ते नलनइ जोइ, दुखिइ करीनइ अतिहिं रोइ ॥ ४३२ ॥

दूहा

यूथ चूकी जिम मृगली, दवदंती हुई तिम ।
विचारइ सुहणउं इसिउं, आप मतिइ करी इम ॥ ४३३ ॥
'आंब समु छइ श्रीनल, राज्यसुख फल जेह ।
वनगज कूबर ते कहिउ, फल लेवा चडी एह ॥ ४३४ ॥
एहवइ समइ तिहांथी पडी, नलइ मूंकी हूं आज ।
ए दुख कहिनइ हूं कहूं ? कहींइ पेखसि नलराज ? ॥ ४३५ ॥

चउपई

मुख पखालेवा गयु प्रीउडउ, आवतु हुसिइ कंत रूअडउ'।
वाट जोइ नारी रही तिहां, 'मझ मूंकीनइ नल गयु किहां ? ॥ ४३६ ॥
सुंदर दीठउ रूपिइ करी, कोइ किंनरी गई हुसिइ अपहरी ।
कंत नावइ, घणी वेला थई, नावइ तु कस्यू कारण भई ? ॥ ४३७ ॥
मूंहनइ सही ए मेहली गयु, आपणपूं निश्चिंत ज थयु ।
मूंकी जावूं तुझनइ नवि घटइ, आपणपूं हईइ आवटई ॥ ४३८ ॥
कमललोचन ते माहरु वाहलउ, भलु कीधु नलजीइ टालउ ।
कोइ जईनइ कंतनइ वालु, किम हींडसिइ मोरु जीवनपालु ?' ॥ ४३९ ॥

राग कालहिरु। जोइ न विमासी०

दवदंती तिहां विलाप करइ, 'नल विना किम रहीइ रे माइ ?।
सगुण सुवेधी सुंदर कंता, ए दु[22-B]ष कहिनइ कहीइ रे माइ ?'॥ ४४० ॥
'प्रीऊ प्रीऊ' करती नारी हींडइ, दिसि विदिसिइ ते जोती रे।
दुख धरीनइ नीसासु मेहलइ, अबला नारी रोती रे ॥ ४४१ ॥
'रहीअ न सकूं तुम विण नलजी! कहीअ न सकूं तोइ रे।
माहरइ-मनि छइ तूंह जि कंता! तूं विण अवर न कोइ रे ॥ ४४२ ॥
सिउ अवगुण तुझ हईडइ वसीउ ? जे मेह्ली निराधार रे।
सिइ ऊवेखी माहरा कंता! निषधपुत्र! सुविचार रे ॥ ४४३
चंदसूरिज वनदेवता सांभलु! नलजी वन किहीं दीठु रे?।
ते कंतानइ मेलवु मझनइ, मूह स्यूं कंत ज रूठउ रे ॥ ४४४ ॥
सुणि तूं जीवनस्वामी! माहरा, मन ताहरूं किम वहिउं रे?।
गुण नवि वीसरइ कंता! ताहरा, मइ तु कांइ न कहिउं रे?॥ ४४५ ॥
स्या माटिइ वाहला! तूंअ रीसाणु? हूं ते नारी तोरी रे।
तइ छेहु भलु मझनइ आपिउ, घणीं कीधी तइ जूरी रे ॥ ४४६ ॥
सी परि करीसि? किहां हूं जाईसि?' 'नल नल' कही ते रडइ रे।
कूटइ हईडूं, डील आछेटइ, पगि पगि ते नारि आखडइ रे ॥ ४४७ ॥
'कइ मइ कोइ मुनिवर संतापिउ? कइ ऊगती वेलि कापी रे?।
कइ मइ कहिना मंडार ज लस्या? कइ लीधी वस्तु नापी रे?॥ ४४८ ॥
कइ मइ कूडूं आल ज दीधूं? कइ मइ छेद्या वृक्ष रे?।
कइ मइ कूडकपट ज केलविउं? कइ संतापिया दक्ष रे? ॥ ४४९ ॥
देवगुरुनी मइ निंदा कीधी? कहिसिउं कीधु द्रोह रे?।
खेदिइ मर्म पीआरा बोल्या? जे मइ पामिउ विच्छोह रे ॥ ४५० ॥

२।।२।। टाल।

तुझ ऊपरि मोरी आसडी, किम जासिइ मझ रातडी।
कहि आगलि करूं रावडी, चरणकमल की दासडी ॥ ४५१ ॥
चंचल चपल तोरी आंखडी, जैसी कमला दलनी पांखडी।
तोरी भमहि अछइ अणीआलडी, एहवइ नल[23-A]जीइ हूं छंडी ॥ ४५२ ॥
वाहलउ न मिलइ ता आखडी, किसीअ न खाउं सूखडी।
ते विरहइ नही भूखडी, रंग गयु एहनु ऊखडी ॥ ४५३ ॥
जोउं छउं कंता! वातडी, सार करु न अह्मारडी।
कां मेल्ही निराधारडी? किहां लागइ छइ वारडी? ॥ ४५४ ॥
जिम मेहनी वाट जोइ मोरडी, कंता! ताहरी छउं गोरडी।
मेल्हणवेला नही तोरडी, अवर पुरुषस्यूं कोरडी ॥ ४५५ ॥
सी आवी तुम रीसडी? नारी कणकनी दीवडी।
किम एकलां नावइ नींदडी, पूरव भवनी प्रीतडी ॥ ४५६ ॥
कांकिमपणउं धरिउं जिम गेडी, ढलवलती मेहली जिम दडी।
संघातिइं हूं सीद तेडी? ताहरी न मेल्हउं हूं केडी ॥ ४५७ ॥
तुमसिउं कंता! नही कूडी, नारी सविहुमांहि हूं भूंडी।
जाणज्यो कंता! नही कूडी, कोइ ल्यावइ नलनी शुद्धि रूडी? ॥ ४५८ ॥
प्रकृति थई कंता! अति करडी, स्या माटिइ तूं गयु मरडी?।
इम नवि जईइ वाल्हा! वरडी, बांधी छइ प्रेम गठडी ॥ ४५९ ॥
नल सरखी न मिलइ जोडी, वालापणनी प्रीति त्रोडी।
कपट करीनइ कां मोडी? आ रानमांहि हूं कां छोडी? ॥ ४६० ॥
किम तिजी माया एवडी? मझ हससिइ तेवडतेवडी।
कंटकि वींटी जेवडी, भमरू न मेल्हइ केवडी ॥ ४६१ ॥
विरहइ थईअ गहेलडी, जोउं छउं पगला रहिअ खडी।
सिइ कारणि तुझ रीस चडी? नलनइ वियोगिइ अतिहि रडी ॥ ४६२ ॥

नारी अबला माहडी, एकली न मेल्हीजइ बापडी ।
अस्त्री यौवनवइं बौरडी, तुम स्यूं नथी वेरडी ॥ ४६३ ॥
किसीइ वातिइ नत्रि आडी, ए दुख कहूं जु हुइ माडी ।
फूल विना नवि शोभइ वाडी, पति विना न हुइ नारी टांडी ॥
कंतस्यूं न कीधी वातडी, एणी एणी वृक्ष छाहडी' ।
भीमराजानी बेटडी दवदंती बोलइ भाखडी ॥ ४६५ ॥
'भली मेहली हूं गुडउ गुडी, सुख संभरइ ते घडी घडी ।
घणु नेह तइ देखाडी सिइं मेहली प्रभुडी ?' ॥ ४६६ ॥

ढाल । मनकु वा[23-B]हलु वेगलु । गुडी

'नल नल' कहिती नीसरी, नवि पेखइ कहइ ठामि रे ।
'सिइ ऊवेखी तूंअ गयु ? बलिहारी तुझ नामि रे ॥ ४६७ ॥
कहींइ मिलसिइ वालिभ ? तेह विण क्षण नवि जाइ रे ।
तइ न धरी माया माहरी,' एहवूं कहइ तेणइ ठाइ रे ॥ ४६८ ॥
नारी सोधइ दसो दिसि, 'शुद्ध नथी जीवन्न रे ।
रानवगडमां मेल्ही गयु, किम राखूं हूं मन्न रे ? ॥ ४६९ ॥
नान्हपणानु नेहडउ, कांइ वीसारिउ नाह रे ? ।
कठिन कठोरमांहि मूलगू, ताहरु प्रीछिउ माह रे ॥ ४७० ॥
ए तु कायर लक्षण, साहसीकनूं नही काम रे ।
अधविचि नारीनइ मेल्हीद, वलतूं न लीइ नाम रे ॥ ४७१ ॥
नलजी ! माहरा नाहला ! एक ताहरु आधार रे ।
माया सघली वीसारी, कां मेहली निरधार रे ? ॥ ४७२ ॥
कुटंब हुइ पुहुचतूं, कंत विना सही फोक रे ।
कुणइ कांई नवि हुइ, अवसरि सहू ए लोक रे,' ॥ ४७३ ॥

वस्तइ अक्षर देखीआ वांचिवा लागी तेह रे ।
'तूं हवइ पीहरि जाइजे, सुख हुइ तूंहनइ देहि रे' ॥ ४७४ ॥
'आवइं कूड नुहतूं जाणिउं, नरनी निर्गुण जाति रे ।
पुरुष निदानिइ छेह आपइ, ते तु कहीइ कुजात रे ॥ ४७५ ॥
तूं तु सुजाती जाणीउ, ताहरूं कुल सुवंश रे ।
पुरुषरत्नमां मूलगु, अवगुणनु नही अंश रे ॥ ४७६ ॥
इम मेहली कंता ! नवि जईइ, ताहरु नुहइ आचार रे ।
मूंहनइ वाल्हा ! दोहिलं, तूं तु छइ सुविचार रे ॥ ४७७ ॥
संभाल करु माहरी, मननु छइ विश्राम रे' ।
मंत्र तणी परि ते जपइ, मुखिथूं नवि मेल्हइ नाम रे ॥ ४७८ ॥

दूहा

दवदंती ते दुख धरी, चाली पीहरि तेह ।
न[24-A]ल अक्षर मंत्रनी परिइ राखइ अहनिसि जेह ॥ ४७९ ॥
वाटिइ वनगज फणगर, सीहतणा वोंकार ।
रौद्र अटवी बीहामणी, घूकतणा घूतकार ॥ ४८० ॥
सूअर घरकइ जिहां घणउं, वरकइ चीत्रा अति ।
अष्टापद तिहां जीवड़ा, बीहवानी नही मति ॥ ४८१ ॥
शंबर शरभ नइ कासुर, वरू सूअर सीआल ।
दावानल तिहां प्रज्वलइ, यक्ष राक्षस खेत्रपाल ॥ ४८२ ॥
गंधर्व विद्याधर खेचर, शाकिनी डाकिनी जेह ।
योगिनी दीसइ ठामि ठामिइ, तेहनु न लाभइ छेह ॥ ४८३ ॥
घोर बीभच्छ भयंकरी, सुणीइ महा हुकार ।
वनचरनु कोलाहल घणु, सूर्यकिरण न लगार ॥ ४८४ ॥

ते न पराभवई तेहनइ, नवि लोपइ ते आण ।
पंच पदनूं ध्यान करइ, जोउ शील मंडाण ॥ ४८५ ॥

'नल नल' कहिती ते चालइ, राखिउ हईआ वारि ।
सील सन्नाह पहिरी करी, जाइ दवदंती नारि ॥ ४८६ ॥

बोर वाउलीआ गोखरू, चरणि वींधाइ तेह ।
पीउ चित्तिइ न वीसरइ, अधिक वधारइ नेह ॥ ४८७ ॥

ढाल । सहिज सलूणु साजण सा०

भीमसुता रे वाटिइ चालती, एहवइ दीठउ साथ ।
तेह मांहि मूल्गु वसंत व्यवहारी, ते छइ सघलानु नाथ ॥ ४८८ ॥
दवदंती रे मारगि एकली झूरइ २ हईडामांहि ।
'छई कोइ तेहवु जे नल मेलवइ ?' नयणे जलनु प्रवाह ॥ ४८९ द. ॥
ते साथ साथिइ जाइ भीमसुता, चौर मिल्या ते वार ।
तेणइ जईनइ आगलि वाट रूधी, सघलइ कीधु रे विचार ॥ ४९० द. ॥
बीहवा लागा मानव बापडा, चिं[24-B]ता करइ रे अपार ।
'सी परि करीसिइ ? लुटा लटसिइ, कुण करसिइ अम सार ?' ॥ ४९१ द. ॥
नारी कहइ, 'रे तमे म बीहस्यु.' दीधी एहवी धीर ।
भगवंतनूं मनि ध्यान धरइ, घणउं साहसवंती वीर ॥ ४९२ द. ॥
दवदंतीइ हूंकारु कीधु, नाहसी गया तव चोर ।
नारीइ उपगार कीधु अति घणु, भयनु समाविउ सोर ॥ ४९३ द. ॥
पूरव पुण्यइ जाणे देवि आवी, तस परि कीधूं सानिध्य ।
सारथवाह आवी पाए लागु, पोतइ बहुली रिद्धि ॥ ४९४ द. ॥
पूछइ वसंत नारीनइं इसिउं, 'सिउं कारण ? कहु एह ।
आहवी अटवीइ तमे एकलां, संदेह भांजु जेह !' ॥ ४९५ द. ॥

आपणउ संबंध कहिउ तेहनइ, 'हूं छउं नलनी नारि ।
व्यवहारी ! जाणउ भीमरायनी सुता, संभलि तूं सुविचार' ॥ ४९६ द. ॥
दवदंतीनइ वसंत इम कहइ, 'ते नल अह्मारु स्वामि ।
रूडा वाना अमारइ तेह्ना, भलइ लीधूं तेह नाम' ॥ ४९७ द. ॥
तेहनी भक्ति करइ अति घणी, नवि दूहवइ कुवचन्नि ।
मायनी परिइ ते नित आराधइ, सेवइ ते एकमन्नि ॥ ४९८ द. ॥
तेणइ समइ वर्षा आवीउ, अखंड धाराइ मेह ।
विरहीआनइ ते संतापिआ घणेरु जगावइ नेह ॥ ४९९ द. ॥
गाजवीज अति घणा हुइ, दवदंती मनि साल ।
नय नाला घणा पूरइ आवीआ, मनसिउं झूरइ बाल ॥ ५०० द. ॥
त्रिणि दिहाडा वरखा वरसीउ, विवहारी चालिउ परदेसि ।
नारी एकली वली रे ति[25-A]हां थई, छइ ते यौवन वेसि ॥ ५०१ द. ॥
नलनु वियोग जहींनु हूऊउ, चउथ करइ उपवास ।
वीसामइ रहिती नारी ते जाइ छइ, जिन धर्मनु वास ॥ ५०२ द. ॥

दूहा

एहवइ राक्षस देखीउ, भयंकर विकराल ।
राता लोचन केश मोटा, दीठु देतु फाल ॥ ५०३ ॥
अमांस सरिखु दीसीइ, काजल जेहवूं होइ ।
काती छइ हाथिइ ग्रही, पेखइ नारी सोइ ॥ ५०४ ॥
क्षुधाइ करी पीडीउ, दीठी राक्षसइ नारि ।
'भक्ष आवीउं माहरूं,' चींतवइ राक्षस त्यारि ॥ ५०५ ॥
वीहवा लागी ते नारी, धीरठ करीनइ चित्त ।
राक्षसनइ प्रमदा कहइ, 'वचन सुणि तूं एक मित्त ॥ ५०६ ॥
नलनी हू छउं सुंदरी, चिति वसिउ जिन धर्म ।
निरंजननइ उलगूं, तूं छइ बांधव मज्ज्ञ' ॥ ५०७ ॥

ढाल। बार बरस बाहुडी न छोडूं

तेणइ वचनइ तूठउ ते राक्षस, 'कांई नारी तूं मागि रे लाल।
नलनी नारी ते माहरी बहिनि, लागूं ताहरइ पागि रे लाल' ॥ ५०८ ॥
खिणि खिणि चित्तिइ नाह संभरइ, करती नलनूं ध्यान रे लाल।
तेहनइ दुखिइ पीली हुई, जैसिउं पाकूं पान रे लाल ॥५०९॥ खिणि २ चि.
दवदंती कहइ, 'निसुणि निशाचर! वीनतडी अवधारु रे लाल।
माहरु कंत कहींइ मिलसिइ? माहरी वेदना वारु रे लाल' ॥ ५१० ॥
अवधि ज्ञानिइ जोई करीनइ एहवूं कहइ वेताल रे लाल।
'बारे वरसे मिलसिइ वल्लभ' एहवूं कहिउं ततकाल रे लाल ॥ ५११ ॥
'पीहरि रहितइ नलजी आवसिइ ए तूं निर्द्धार जाणे रे लाल।
चिंता म धरीसि हईइ नारी! एह वचन मनि आणि रे लाल' ॥ ५१२ ॥
रूप प्रगट कीधूं तेणइ यक्षइ, ते छइ तेजमय देव रे लाल।
सत्त्व जोवा ते आविउ सुरवर, कीधी तेहनी सेव रे लाल ॥ ५१३ ॥
'पतिवियोगिइ ए सहू टालिउं, तांबूल नइ सिणगार रे लाल।
दूधदहीं हूं न जिमूं घीगुल, दिन अंतरि आहार रे लाल' ॥ ५१४ ॥
[25-B] एकइ पर्वति रही ते गुफामांहि, वेलुनी कीधी मूर्त्ति रे लाल।
शांतिनाथनी कीधी थापना, अनोपम छइ स्फूर्त्ति रे लाल ॥ ५१५ ॥
करइ पूजा भला पुष्प आणीनइ, भावना भावइ त्रिणि वार रे लाल।
चउत्थ तणउ तप करइ निरंतर, जिन धरम करइ सार रे लाल ॥ ५१६ ॥
केतलइ दिनि वसंत व्यवहारी, आविउ तेणइ ठामि रे लाल।
गुफामांहि ते दीठी नारी, हर्ष अति घणउ थाइ रे लाल ॥ ५१७ ॥
स्वामी केरी मूरति पूजइ, प्रणाम करीनइ बइसइ रे लाल।
वसंत पेखइ जिनजीनी प्रतिमा, धर्मनु रंग चित्ति वसइ रे लाल ॥ ५१८ ॥
दवदंती संतोष जि पामी, पूछइ कुशल खेम रे लाल।
बोल बोलइ सुकोमल रूअडा, साकर गली जिम रे लाल ॥ ५१९ ॥

एहवइ तापस ढूकडा, तेणइ ठामि आव्या रे लाल.।
एहवइ वरपा आवीउ, धाराइ ते त्रासव्या रे लाल.॥ ५२० ॥
सघला तापस दवदंती पासिइ, कहइ वंचन तस एह रे लाल.।
'वीहस्यु मां रे माहरी माता ! खाई खणी तिहां तेहि रे लाल.॥ ५२१ ॥
तुह्मारूं ध्यान तु साचूं जाणीइ, जउ नवि वरसइ मेह रे लाल.।
ए कुंडमांहि छांटउ न पडइ, तु सूधउ धरम एह रे लाल.' ॥ ५२२ ॥
तापसइ कहिउं दवदंतीनइ, नारी चींतवइ तव रे लाल.।
'माहरा धर्मनु महिमा दाखूं, पूजइ भगवंत जव रे लाल.' ॥ ५२३ ॥
शील तणइ महिमाइ करी त्यारइ मेघ न वूठउ तेणइ ठामि रे लाल.।
छांटउ न पडिउ तेह कुंडमांहि, हुउउ अतिहि आराम रे लाल.॥ ५२४ ॥
ते सहू देखी आश्चर्य पामिउं 'घणी दीसइ एहनी शक्ति रे लाल.'।
सार्थवाह धर्म माया चींतवइ, 'एहनी सी छइ युक्ति रे लाल.?' ॥ ५२५ ॥

दूहा

वसंत पूछइ नारीनइ, 'सी मूरति कहिवाइ ?।
ए पूजिइ स्यूं फल हुइ ? परि ए किम लहिवाइ ?' ॥ ५२६ ॥
दवदंती कहइ तेहनइ, 'ए जगगुरु भगवंत ।
त्रैलोक्य तणु छइं ठाकु[26-A]रा, मूरति कीधी गुणवंत ॥ ५२७ ॥
भाविइ पूजा कीजीइ तु पामीइ राज ।
बेहू भवनूं काज सरइ, सुणि तूं श्रेष्टि महाराज ॥ ५२८ ॥
सिंह व्याघ्र न पराभवइ, ते एहनु प्रसाद ।
दयामूल धर्म ज कहिउ, हऊउ तेह आह्लाद' ॥ ५२९ ॥
तापस प्रतिबोध्या सही, उलखाव्यउ जिनधर्म ।
विरमाव्या ते पापथी, ऊपार्जइ शुभ कर्म ॥ ५३० ॥

वासिउं नगर अपूरव, तापसिइ कीधु वास ।
तापसपुरं नामिइ इस्यूं, पूरइ सविकहि आस ॥ ५३१ ॥
मोटउ प्रासाद अति भलु, कीधु अतिहि उत्तंग ।
भावना भावइ तिहां आवी, नाटक करइ अति चंग ॥ ५३२ ॥
सार्थवाह ते तापस पंचसया परिवार ।
तेहमांहि विमलमति मूलगु, सम्यक्त्व आराधइ सार ॥ ५३३ ॥

ढाल । भोला भ्रमइ लागु रे०

एहवइ समइ तिहां सिंहकेसरी मुनिवर, ऊपनूं केवल तेह ।
उच्छव करवा आवइ रे देवता, बइसइ सिंहासणि जेह रे ॥ ५३४ ॥
केवली दिइ रूडी देशना रे, भवभयहरणी वाणि रे । केव.
के ज्ञानीइ तिहां देशना दीधी, ' नरभव दोहिलु होइ ।
दया धर्मनूं समझवूं दोहिलूं, हइआस्यूं तुमे जोइ रे ॥ ५३५ ॥ के.
त्रिणि तत्त्वनूं जाणिवूं दोहिलूं, देव तु श्रीअरिहंत ।
तेजपुंजमय ज्योतिस्वरूपी, ध्याईइ ते भगवंत रे ॥ ५३६ ॥ के.
गुरु ते जे जिनकल्पी मारगि, सूधा साधु ज जेह ।
काम क्रोध लोभरहित जे मुनिवर, गुरु कहिया एहवा तेह रे ॥५३७॥ के.
दया धरम ते सारु कहिउ, दया अनोपम जाणि ।
त्रिहु आराधवइ नरक न पामीइ, एतले हईइ आणि रे ' ॥ ५३८ ॥ के.
एहवइ तिहां एक आवीउ देवता, 'प्रणमइ दवदंती नारि ।
केवली वं[26-B]दीनइ तिहां बइसइ, ' सुंणि सुंदिरि ! सुविचार रे ॥५३९॥
एह ज वनमांहि कुलपति तापस, हूं हतु एहनु सीस ।
कर्पर नामिइ तप हूं करतउ, मझ हती बहुली रीस रे ' ॥ ५४० ॥
देवता पूरवभव कहइ रे, ' संभलु तमे रे सुजाण रे । दे.
कठिन हूं तप करउं, पंचाग्नि साधउं, वाधिउं अधिक तप तेज ।
बीजा तापस भक्ति नवि करइ, मझ ऊपरि नहीं हेज रे ॥ ५४१ ॥ दे.

ते छांडी हूं तिहांथी नीसरिउ, क्रोधिइ भरीउ अपार ।
रात्रि तणइ समइ अंधकार व्यापीउं, उच्छक हऊउ ते वार रे ॥ ५४२ ॥ दे.
खोह ऊडी छइ डूंगर केरी, पडीउ हूं तेहमांहि ।
अतिहि वागउ मझ शरीर सघलइ, वेदना हुई त्याह रे ॥ ५४३ ॥ दे.
कष्ट भोगविउं मइ सात दिनि अतिहिं, नींसरी आवीउ ठामि ।
क्रोधिइ करीनइ सबल हूं धगधगउं, नवि लीधउं कुणइ नाम रे ॥ ५४४ ॥ दे.
काल करीनइ एणइ वनिइ हऊउ विषधारी सर्प ।
क्रोधतणउं फल ततकाल लहीउं, नवि धरीइ एहवु दर्प रे ॥ ५४५ ॥ दे.
जीवडा क्रोध न करइ रे, जेणइ हारीइ रूडउ तप रे,
निष्फल थाइ जप रे । ध्रूपद ।
जेह तणइ मनि क्रोध ज वसिउ ऊपजइ त्रिणि विकार ।
संतापइ ते आपणउ आतमा, सुख नवि हुइ लगार रे ॥ ५४६ ॥ जी.

दूहा

परनइ पीडा ऊपजइ, परलोक हाणि करेइ ।
रूडउं कीधउं सहू काई, क्रोध चांडाल हरेइ ॥ ५४७ ॥
नवकार भणीउ नारीइ, ते संभलिउ तेणी वार ।
दवदंती दिनि दिनि भणइ, संभलउ निरंतर सार ॥ ५४८ ॥
जीववध करतु हूं घणउं, पंच पद सुणी अपार ।
जातिसरण ऊपनूं. धरिउ उपशम सार ॥ ५४९ ॥
अणसण लेई देवगतिइ, ऊपनु कुसुमप्रभ देव ।
कुसुम विमानि [27-A] सुख भोगवउं, करूं इंद्रनी सेव ॥ ५५० ॥
अवधि ज्ञानिइ जोईउं, आविउ तुझ भणी नारि ।
माहरी माता तूं सही, उपगारीक सुविचार ॥ ५५१ ॥
देवरिद्धि जे पामीउ ते ताहरू प्रसाद[१] ।
दवदंतीनइ पाइ लागु, संपनु अति आह्लाद ॥ ५५२ ॥

चउपई

विमलमतिइं संभलीउं एह, वैराग्यरंग पामीआ तेह ।
चारित्र मागई केवली कन्हइ, वलतूं वचन ते तव भणइ ॥ ५५३ ॥
केवली कहइ तापसनइ इसिउं, 'जेहवूं छइ तेहवूं संभलु तसिउं ।
यशोभद्रसूरि देसिइ सीख, ए जाणेयो अह्मारी सीख' ॥ ५५४ ॥
'तमे दिक्षा देता नथी स्या भणी?' "संभलि कुलपति तापसधणी ।
कौशला नगरीइ नलरायनु बांधव छइ कूवर तेहनु ॥ ५५५ ॥
सिंहकेसरी तेहनुं हूं पुत्र, नान्हपणा लगइ चित्त पवित्र ।
एहवइ संगा नगरी जेह, जितशत्रुराज्य करइ तिहां तेह ॥ ५५६ ॥
बंधुमती पुत्री तेहनइ, चिंता ऊपनी पिता जेहनइ ।
जितशत्रुइ कहाविउं कूवर भणी, 'तम पुत्र सिंहकेसरी भूधणी ॥ ५५७ ॥
पाणिग्रहण करवा आवयो, भली रिद्धि साथि लावयो' ।
एहवूं कहाविउं जितशत्रु राय, तं निसुणी मनि उच्छक थाय ॥ ५५८ ॥
कूवरिइ कहिउं, 'तमे जाउ वच्छ, बंधुमती परणउ चित्त स्वच्छ' ।
परिवार लेई हूं संगाइ गयु, जितशत्रु राय रलीयायत थयु ॥ ५५९ ॥
उच्छव करी परणावी तेह, बंधुमतीस्यूं अति घणु नेह ।
दिन केतला सुखिइ तिहां रही, ससरा आज्ञा मागी सही ॥ ५६० ॥
'आज्ञा हुइ तु चालउं अमे, संतोष्या आवरया तमे' ।
बंधुमतीस्यूं चलावीउ, जितशत्रु वुलावा आवीउ ॥ ५६१ ॥
वाटइ चालता दीठा मुनि, सुहि गुरु भेटीआ उपवनि ।
भक्तिपणइ मइ वंद्या पाय, देशना दी[27-B]धी श्रीऋषिराय ॥ ५६२ ॥
गुरु कन्हइ पूछीउं तव जेह, 'अम तणउं आयु केतूं छइ तेह' ।
वलतूं पभणइ श्रीगुरु नाम 'पंच दिवसमांहि सारु काम ॥ ५६३ ॥
संसार मेल्हीनइ चरित्र लीउं, निर्जरी कर्म केवल पामीउं' ।
तेह भणी संभलि तूं कुलपती! यशोभद्र कन्हइ हुसिउ यती" ॥ ५६४ ॥

वात करंतइ सिंहकेसरी, मुक्तिरमणि तेणइ हेल्या वरी ।
विमलमति आविउ गुरु भणी, 'चारित्र दिउ, गिरूआ गच्छधणी!' ॥५६५॥
पांचसइनइ दीधउं चारित्र, संयम पालइ अतिहिं पवित्र ।
गुरुनइ कहइ दवदंती नारि, 'नरक तणा दुख स्वामी! वारि ॥ ५६६ ॥
संयम मागूं हुं तुम कन्हइ' सहिगुरु वलतूं वचन इम भणइ ।
'नलनु छइ तमनइ संयोग, भोगवस्यु तमे नारी! भोग' ॥ ५६७ ॥
सार्थवाहइ आदर करी, 'सामी! पधारु तापसपुरी' ।
तेणइ कहणे तिहां आवीआ, मान सनमान देई ठावीआ ॥ ५६८ ॥
पूर्विइ प्रासाद कराविउ सार, श्रीजिन सोलसमु अपार ।
गुरुइ प्रतिष्ठा कीधी तेह, त्रिणि तत्त्व उच्चरीआ जेह ॥ ५६९ ॥
सहिगुरु तिहांथी विहार ज करइ, विचरंता पृथ्वीइ संचरइ ।
पंच सयास्यूं पालइ चारित्र, विमलमति छइ अतिहि पवित्र ॥ ५७० ॥

दूहा

तेणी गुफाइ सात वरस रही दवदंती नारि ।
धर्म आराधइ जिन तणु, सफल करइ संसार ॥ ५७१ ॥
पंथी तिहां एक आवीउ, कहइ, 'संभलि दवदंति! ।
को एक परिसरि पेखिउ ताहरु वल्लभ पति' ॥ ५७२ ॥
भर्त्तारनी सुद्धि कहइ, ते तु वाहलउ होइ ।
जीवनु जीव ते सही, एहवूं कहीउं सोइ ॥ ५७३ ॥
वलभ नइ वयरी तणी पूछवानी परि एक ।
मित्र संदेसु जे कहइ; चित्त [28-A] रइ विवेक ॥ ५७४ ॥
'तमनइं किहां भेटिया हता? सिउं करइ छइ तेह? ।
स्यु व्यापार तेहनु? केहवा दीठा देहि?' ॥ ५७५ ॥

वस्त्रइ करी सुखीआ पेखियां ? एकला कइ हता दोई ?'।
जिम निखूंती पूछीइ तिम २ हरख ज होइ ॥ ५७६ ॥
मित्र दुखीउ जाणीइ तु अतिहिं दुख थाइ ।
सांभलीइ वयरी सुखी प्राणी घणउं अवटाइ ॥ ५७७ ॥
तेहनां वचन सांभली, रोमांचित हुई तेह ।
नीसासू मेल्हइ घणू, प्रेमनूं लक्षण एह ॥ ५७८ ॥
तेहना कहणथी नींसरी, आवी अटवी मझारि ।
नल कंत देखइ नही, चींतवइ अबला नारि ॥ ५७९ ॥

ढाल । उ पेलु नेमि किम आवइ०

पगला जोइ नलजीना सुंदरी गुणवंती रे ।
विरहिं विछोही ते अबला प्रीऊ ऊपरि एक चिंती रे ॥ ५८० ॥
'सुंदर माहरु नलजी अ गयु हुसिइ एणी वाटइ रे । २
सिउ अवगुण तुझ हईडइ वसींउ ? हूं मूंकी कंत स्या माटिइ रे ? ॥५८१॥ सुं.
साते वरसे तइ कंता ! संभाल न कीधी रे ।
तुझ विण घणउं हूं टलवलउं, जिमणी वाचा दीधी रे ॥ ५८२ ॥ सुं.
तइ मझनइ नवि मोकलिउ संदेसु एक वार रे ।
नाम जपूं हूं ताहरूं, आश्रितनु आधार रे ॥ ५८३ ॥ सुं.
ते धन्य ते वनसपती, वृक्ष तणी धन्य छाया रे ।
धन्य ए सघला रूंखडा, जिहां बइठा नलजी राया रे ॥ ५८४ ॥ सुं.
ते धन्य भूमिका, धन्य सारी रज रे ।
कंतनइ चरणे जे लागी, पवित्र संपनी तेह रे ॥ ५८५ ॥ सुं.
मारगि जातइ जेह भणी संपजावी हुसिइ दृष्टि रे ।
सफल हऊउ तस अवतार, आमूआ पाखइ थई वृष्टि रे ॥ ५८६ ॥ सुं.

चउपइ

समलि स्वामी नलकुमार ! इंद्राग वस तणु [28 B] श्रृंगार ।
माहरइ स्वामी ताहरू आधार, तइ लीधु उड गज्यनु भार ॥ ५८७ ॥
तुझथी निश्चनइ घणु उपगार, तू मोटउ गुणनु भडार ।
भाग्य सोभाग्य करीनइ सार, तू उत्तम निरतु सदाचार ॥ ५८८ ॥
गरूअडी तणउ कुण पामइ पार ? तइ दीठइ लोचनि सुखाकार ।
तुझ सरिखु माहरइ भर्त्तार, हू रडवडउ स्वामी ! निराधार ॥ ५८९ ॥
तइ कीधु माहरु अगीकार, हरखिउ सघलु तत परिवार ।
हवइ काइ कीधु मझ परिहार ? ए ताहरू नुहइ आचार ॥ ५९० ॥
बीजा जाणइ सघला व्यवहार, विनय विवेक अछइ सुविचार ।
एकली मूकवानु नाविउ विचार, कुण करेसिइ माहरी सार ? ॥ ५९१ ॥
जउ हूतउ मझ छाडणहार दाधा उपरि का दीधु खार ? ।
उरमइण माहरु अलकार, ' इम बीनवइ दवदती वारोवारि ॥ ५९२ ॥

दूहा

नलकूअर कही नवि पेखिउ, जोयू सवि आरामि ।
पाछी वलइ गुफा भणी, वनचर छइ ठामि ठामि ॥ ५९३ ॥
नल नाम मत्र उचरइ, एहवइ राक्षसी एक ।
मुख पसारीनइ रही ' भक्षण करू हू छेक ' ॥ ५९४ ॥
दवदतीनइ ते कहइ, ' भूखी छउ हू नारि ।
तुझनइ जावा नही देउ, जाणेजे सुविचारि ' ॥ ५९५ ॥
नारी चीतवइ एहवू, ' जु नल हुइ मझ चित्ति ।
सती प्रमानिइ ए हुज्यो, निश्चल थाज्यो शुचि ॥ ५९६ ॥
अढार दोषरहित स्वामी, एहवु जगगुरुदेव ।
ध्यान हुसिइ जु माहरइ, तु ए करसिइ सेव ॥ ५९७ ॥

आजनमाविधि दया धरम जु हुसिइ माहरइ मनि ।
तु ए विकराल राक्षसी न पराभवइ मझ-तनि' ॥ ५९८ ॥
शीलप्रभाविइ राक्षसी आवी लागइ पाय ।
सुहणा परि अदृष्ट थई, नारी विमासण थाइ ॥ ५९९ ॥
'सी परि करीसि एकली ? पासिइ न[29-A]ही मझ कोइ ।
स्यामी राखइ तिम रहीइ, जे विधि करइ स होइ' ॥ ६०० ॥

ढाल । मारुणी कहइ छइ कोशा कामि०

एहवइ लागी तृषा सुंदरी रे, चित्तडइ विचारई तेह रे ।
'घणी व्यापइ छइ मझ तरसडी रे, दीसइ नहीं जल ठाम जेइ रे' ॥ ६०१॥
गुणवंती अबला नारी एकली रे, संभारइ पूरव सुख रे ।
हईइ लखी नलजी राखीउ रे, 'होसिइ वली आगलि सुख रे' ॥ ६०२ गु.॥
एतलामांहि तु जल कही नथी रे, कंठइ सूकइ तेह रे ।
जल पाखइ थाइ अति दोहिलं रे, आकुल व्याकुल देह रे ॥ ६०३ गु. ॥
सूकी नदी दृष्टिइ तव हुइ रे, 'जु सद्दहउं समकित सार रे ।
नल जीवन माहरइ मनि हुइ रे, तु जल हुज्यो अपार रे' ॥ ६०४ गुण. ॥
एहवूं अ कहितइ जल प्रगटीउं रे, गंगा सरीखूं वारि रे ।
जल वावरीउं तिहा स्वस्थ थई रे, एहवी नहीं बीजी को नारि रे. ॥ ६०५ गु. ॥
थाकी रे वनिता तव चालतइ रे, दीठउ २ एक ज वृक्ष रे ।
छाया रे सीतल सोहामणी रे, तिहां आवी बइठी दक्ष रे ॥ ६०६ गु. ॥

ढाल । भाभानी

सुखिइ रे बइठी छइ तिहां दवदंती, एहवइ आवीउ साथ रे ।
'कुण ए बइठी छइ रानमांहि ?' पूछिउं २ तेणइ साथि रे ॥ ६०७ ॥
'प्रेमलु बाधु रे माहरा नलजी सिउं, रखे रे वीसारु स्वामि ! रे ।
ताहरइ रे भामणइ कंता ! हूं जाउं, बलिहारी नाह ! तुझ नामि रे' ॥६०८॥ प्रे.

वलतु कहइ रे 'हू तु माननी, भूली भूली अटवी अ माहि रे ।
तापसपुरि अमे जाइसिउ, रहिठाण माहरू त्याह रे' ॥ ६०० ॥ प्रे
नारी अ पूछइ ते साथनइ, 'साथिइ लीधइ जाउ मज्झ रे'।
'अमे तु सध्या लगइ [~9 B] चालस्यू, नइठी देरसी पूठीउ तुझ रे'॥६१०॥प्रे
वलतू कहइ रे तव दवदती, 'निगुणउ तमे करुणावत मेह रे ।
हू रे वणिग केरी दीकरी, पति साथिइ चाली पिता गेहि रे ॥ ६११ ॥ प्रे
निशा समइ निद्राइ हू सूती, मेहली गयु माहरु नाथ रे ।
आणी रे हू ताहरइ सेवकइ, रूडउ रे मिलीउ मझ साथ रे' ॥ ६१२ ॥ प्रे
'अचलपुर अमे जाइस्यु' साथिइ लीधी दवदती नारि रे ।
धनदेव सुता जाणी हित करइ, नलनारी हईइ नवि हारइ रे ॥ ६१३ ॥ प्रे
रात्रि समइ वासु रहिया, सुखिइ सूती दवदती तेह रे ।
तेहना साथमाहि कोइ नर, गणइ छइ पच पद जेह रे ॥ ६१४ ॥ प्रे
धनदेवनइ नलनारि कहइ, 'ए तु कोइ श्रावक दीसइ रे'।
साहमी बेहू तव मिल्या, भीमसुतानू मन हीसइ रे ॥ ६१५ ॥ प्रे
पट्ट छइ अपूरव तेह कन्हइ, आलेखी अ प्रतिमा रूडी सार रे ।
चैत्यवदन पूजा करइ, दवदती पूछइ एक वार रे ॥ ६१६ ॥ प्रे
'एणइ पटिइ स्याहनी छइ मूरति' कहु तमे एहनु विचार रे'।
ते नर कहइ, "सुणि श्राविका! शीलवति तू सदाचारि रे ॥ ६१७ ॥ प्रे

दूहा

काती नगरी जाणीइ, वणिग वसउ हू जाणि ।
धर्मगुप्त चारित्रीआ आवीआ तेणइ ठाणि ॥ ६१८ ॥
ते सभली वदणि गयु, देशना दीधी सार ।
ते वारइ मइ पूछीउ, 'कहु न तमे गणधार' ॥ ६१९ ॥

केहे 'तीर्थि सुख पामसिउं ? कहिनूं करूं हूं ध्यान ? ।
भक्ति करूं केहा जिन तणी ? ' पूछइ श्रेष्टि निदान ॥ ६२०
मुनिवर वलतूं इम कहइ, ' तीर्थंकर मल्लिनाथ ।
मथिला नगरीइ अछइ, नरगि पड़ता दिइ हाथ ॥ ६२१ ॥
सुणउ श्रेष्टि ! तमे अहां थकी, पामसिउ तमे सुररिद्धि ।
तिहां थकी नह्ने च्यवी ऊपजसिउ मथिलाइ ऋद्धि ॥ ६२२ ॥
ते मथिलाना तमे धणी, राजा प्रसन्नचंद ।
थाईसि मोटी पदवीइ, जेहवु हुइ दिणंद ॥ ६२३ ॥
[30 A] मल्लिनाथ वीतरागथी दृष्टिइ देखी तेह ।
ऊपजसिइ तुझ केवल, ' गुरुइ कहीउं एह ॥ ६२४ ॥
तहीं थकी हूं भक्तिपणइ, पट्ट आलेखी सार ।
मल्लिनाथ पूजा करू, बीजुं सहू असार ॥ ६२५ ॥
आपणउं संबंध तव कहिउ, हूं धर्मबांधव जाणि ।
हवइ ताहरी स्थिति मझनइ कहे, अंतर हईइ म आणि " ॥६२६॥

ढाल रामगिरी । अम्हारु जुहार माने०

" नलरायनी हूं छउं सुंदरी, भीमराय तमे जाणु ।
तेह तणी बेटी दवदंती, माहरु पति सपराणु ॥ ६२७ ॥
बांधव ! करम कथा सुणउ माहरी, हूं छउं बहिनि ताहरी । बांधव
देउर कूबरिइ जूअ रमाडी लीधु सघलु देस ।
भंडार, हस्ती, तुरंगम लीधा, तुहइ मनि आणइ खेस ॥ ६२८ बां. ॥
मझ सरसिउं अंतपुर हारिउं, सारी लीधी रिद्धि ।
जूआरीपणउं नलनइ संपनूं, पतिनइ ऊपनी कुबुद्धि ॥ ६२९ बां. ॥
देउर कहइ, ' रहिवा नहीं देउं, ए तू माहरी भूमि ' ।
सघला रे देसनु धणी संपनु, अहंकारइ करी घुमइ ॥ ६३० बां. ॥

तिहाथी मझनइ लेई चालिउ, रातिइ आवी नींद ।
रान वगडमा मेल्ही गयु, कंत पूनिमचद ॥ ६३१ वा. ॥
एह कष्ट भोगवी अहींइ रह, न रही कतनी सिद्धि ।
ते मनमोहन जु मझ मिलइ, तु एतलइ नव निधि ॥ ६३२ वा. ॥
ते कोइ नहीं जे आगलि कह जिम हुइ क्षण सुख ।
दुख जाणइ भाई ! ते नर थोडा, बहिनिनू ए छइ दुख ॥ ६३३ वा. ॥
ते विना मझ सतोष नही, बीजा नर कोडि लाख ।
ललित गर्भेसर वाहलु, माहर मींठानोलु द्राख " ॥ ६३४ वा. ॥
ते सभली [३० B] सह दुख पामिउ, आसू आव्या नयणे ।
' विधात्राट दूसण दीधउ, ' एहवू कहिउ वयणे ॥ ६३५ ॥
' चिंता म धरीसि माहरी बहिनि ! कर्मनू कारण एह ।
करम आगलि कोइ न छूटइ, तीर्थंकर हऊआ तेह ॥ ६३६ ॥
बहिनि ! तू न धरीसि चिंता, थोडे दिनि मिलसिइ कता ॥ बहिनि.
इद्र उपेन्द्र पातालवासी, चक्रवर्त्ति ते वार ।
ते हु करमिइ अति घणा नडीआ, सुणि न मृगाक्षी नारि ! ॥ ६३७ ॥ ब
सयोग वियोग पूरवकर्मिइ, सोभाग नइ दोभाग ।
निर्धन सधन पूरव कर्मिइ, एहवू कहइ वीतराग ॥ ६३८ ॥ ब
चुरासी लाख जीवा योनिइ, ए भमिउ छइ जत ।
ते हु पूरव कर्म पसाइ, इम भाखइ अरिहत ॥ ६३९ ॥ ब.
ब्रह्मा विष्णू अनइ रुद्रादिक, सभलि तू तत्त्वज्ञ ! ।
ए ह कर्म थकी रोलवीआ, इम कहइ रे श्रीसर्वज्ञ ॥ ६४० ॥
बहिनडी ! कर्म तणी गति विसमी, कहइ रे श्रावक धरमी ॥ बहिनडी कर्म.
भोगवीनइ कीधा कर्म छूटीजइ, हुणार छइ असाध्य ।
ते आगलि कोइ डाहु न थाइ, बीजू सह काइ साध्य' ॥६४१॥ बहिनडी क

एणे कहणे दवदंतीनूं टारिउं अतिहि मन्न ।
सीख दीधी तेणइ श्रावकइ सारी, पवित्र कीधा कन्न ॥ ६४२ ॥ ब.
' धनदेव ताहरु पिता जाणेजे, हूं छउं ताहरु भाई ।
साहमी आपण हवइ संपना, सुणि न माहरी बाई ! ॥ वहिनडी कर्म. ॥६४३॥
आज पछी तूं दुख म धरजे, करजे जगगुरु ध्यान ।
ताहरु नलजीवन पति मिलसिइ, हुसिइ घणेरूं मान ' ॥ ६४४ ॥ ब.
सार्थवाह ते प्रभाति समइ, पामिया अचलपुर सार ।
दवदंतीनइ कहइ वेहू ते, ' सुणि सुंदिरि ! सुविचारि ॥ ६४५ ॥ ब.
मोटउं नगर अछइ अनोपम, तमे अहां रहु मात ! ।
अह्मे तु परदे[31-A]सि जाएसिउं,' कही एहवी वात ॥ ६४६ ॥ ब.
'म वीसारसिउ ताम अमनइ.' प्रणाम करीनइ जाइ ।
दवदंती तिहां एकली रही, मनि चिंता अति थाइ ॥ ६४७ ॥ ब.

चउपई

दवदंती अति तरसी थई, पाणी पीवा वाविमांहि गई ।
जलजीविइ पग ग्रहीउ इसिइ, नारी चित्ति विमासइ तसिइ ॥ ६४८ ॥
'दैव तणी गति विसमी जोइ, सुख वांछतइ दुख ज होइ' ।
त्रिणि वार भणीउ नवकार, पाणीजीविइ मेल्ही ते वार ॥ ६४९ ॥
हाथ मुख पखाली करी, पंच पदनूं ध्यान ज धरी ।
वावि थकी बाहिरि नीसरी, जोइ अनोपम अचलापुरी ॥ ६५० ॥
रितुपर्ण राजा तिहां राज्य ज करइ, आश्रित जननइ वाच्छल्य धरइ ।
चंद्रयशा पटराणी इसी, रूपिइ इंद्राणी हुइ जिसी ॥ ६५१ ॥
राय तणइ घरि छइ बहु दासि, काज काम करइ मन उल्हासि ।
जल आणिवा आवी छइ वावि, हस्तमुखी छइ सरल सभावि ॥ ६५२ ॥

एहवइ दीठी अनोपम सुंदरी, अचम्भाइ पेखइ ते अनुचरी ।
कादविइ खरडी कमलिनी होइ, कमलिनी गुण नवि फीटइ सोइ ॥ ६५३ ॥
दासी सघली प्रगमइ रूप, 'एहवी नारी नहीं कोइ सरूप' ।
कलश भरी आवइ गजगुगति, अतिहि घणउ हऊउ हर्ष मति ॥ ६५४ ॥
'चद्रयशा ! सुणउ, अम्हारी मात ! नगर बाहिरि छइ अनोपम वात ।
नगर बाहिरि एक बइठी नारि, रूपवत नहीं बीजी समारि' ॥ ६५५ ॥
सखीइ वखाण कीधउ घणउ, आणिवा मन थयू तेह तणउ ।
'तेडी आवु,' दासीनइ कहइ, 'आपणइ थानकि अहा सुखिइ रहइ' ॥६५६॥
कहण एह राणीनू समली, तेडवा आवी ऊतावली ।
दवदती कन्हइ आवी करी, कर जोडी जपइ अनुचरी ॥ ६५७ ॥
'किहांथी आव्या ? केहू गाम ? आगइ तुम्हारु केहु ठाम ? ।
आहवा रूपवत एकला काइ ? [31 B]जेहवू हुइ तेहवू कहु अम माइ' ॥६५८॥
वणिगपुत्रीनु सबध कहिउ, तेहनु अधिकार दासीइ लहिउ ।
'सुणउ मात ! माहरी वीनती, तमे दीसउ छउ महानुभावि सती ॥ ६५९ ॥
एणइ नगरि छइ रितुपर्ण राय, शत्रु सवे तस सेवइ पाय ।
चद्रयशा छइ नारी तिसी, राजानइ चित्ति अतिहि वसी ॥ ६६० ॥
स्नेह धरी तेडइ छइ तह्म, राणीइ कहिउ छइ इम ।
'चद्रवती सुता जेहवी, लेखवसिउ तमनइ तेहवी' ॥ ६६१ ॥
दवदती सघातिइ गई, चद्रयशा रलीयायत थई ।
देखी रूप हऊउ सतोष, नलनारीनइ हऊउ सतोष ॥ ६६२ ॥
'चद्रयशा नइ माहरी माइ, वेहू ए सगी बहिनर थाइ ।
माहरी मासी ए निश्चिइ होइ, मझनइ उलखतू नथी कोइ' ॥ ६६३ ॥
चद्रयशाइ नवि उलखी, पतिवियोगिइ अतिहिं दुखी ।
रितुपर्णनइ प्रणाम ज किद्ध, दवदतीनइ मान ज दीध ॥ ६६४ ॥

चंद्रयशाइ राखी पासि, पूछइ तेहनइ मन उल्हासि ।
'एकली आवी अहींइ किम ?' 'वणिगपुत्री हूं' कहिउं तिम ॥ ६६५ ॥
चंद्रवती दवदंती वेह, मांहोमांहिइ घणु स्नेह ।
कहइ चंद्रयशा, 'सुणि चंद्रवती ! रूपिइ देखीइ जिसी दवदंती ॥ ६६६ ॥
ए तु बहिनि ताहरी जाणीइ, उलखीइ जु सहि नाणीइ' ।
चंद्रवती कहइ, 'सुणि न मात ! दवदंती आववानी किहा वात ? ॥ ६६७ ॥
चिऊआलीस जोअण छइ जेह, तिहांथी अहां आवइ किम तेह ?।
अवस्था आहवी न हुइ माइ, जेहनइ ऊआरणइ देवांगना जाइ' ॥ ६६८ ॥

ढाल गुडी । संभारी संदे०

चंद्रयशा ते पटराणी नगर बाहिरि दीइ दान दे ।
दीन अनाथ सुपात्रनइ दिइ, भलं तेहनइ मान दे ॥ ६६९ ॥
दानशालाइ दवदंती बइसइ, दीइ दान सार दे ।
केवारइ नलराजा मिलइ ? आश्रितनु आधार दे ॥ ६७० ॥
तहीं थकी दवदंती नारी, यथा संपति आहार दे ।
दानशालाइ जे कोइ आवइ, दीइ अन्न अपार दे ॥ ६७१ ॥
दान देईनइ पूछइ तेहनइ, 'कहीं दीठउ नलराय दे ? ।
जउ जाणउ तु कहु मझनइ, ते जोईइ वली ठाय दे' ॥ ६७२ ॥
एक वार दानशाला आगलि पेखिउ [32-A] चोर एक दे ।
निवड बंधणे बांधिउ सबलु, लेई जाइ छेक दे ॥ ६७३ ॥
विस्वर वाजइ वाजित्र, पूछइ दवदंती नारि दे ।
'एवडी पीडा कांइ करु तमे ? एहनु कहु विचार दे' ॥ ६७४ ॥
'रितुपर्ण राय तणी जे बेटी, चंद्रवती नामिइ दे ।
रत्नकरंडीउ तेहनु लीधु, तेह भणी वेदना पामइ दे' ॥ ६७५ ॥

दवदंतीनइ ते चोर कहइ, 'माहरइ शरण ताहरूं दे ।
तू मोटी छइ नारीसिरोमणि, जीवित आपू माहरूं दे' ॥ ६७६ ॥
जलइ करीनइ बंधन छाटिया, शथल थया ततखेव दे ।
घणु कोलाहल तिहां संपनु, राय आविउ सीघ्रमेव दे ॥ ६७७ ॥
दवदंतीनी कांति देखीनि राजा विसय थाट दे ।
भूपति कहइ, 'तूं सुणि न पुत्री ! राजधर्म अम जाइ दे ॥ ६७८ ॥
दुष्टनिग्रह, शिष्ट पालीजइ, ए अह्मारु आचार दे ।
एणी वातिइ अम दोस न लागइ, सुणि नारी ! सुविचार दे' ॥ ६७९ ॥
करजोडी कहइ तव दवदंती, 'संभलु पृथवीनाथ ! दे ।
ए आविउ स्वामी ! शरणि अह्मारइ, किम उवेखूं अनाथ दे ? ॥ ६८० ॥
जगगुरु उपरि जेहनी वासना, तेहनि मनि दया आवइ दे ।
एहनु अपराध खमु तमे स्वामी ! मझ मनि एहवूं भावइ दे' ॥ ६८१ ॥
दवदंतीने कहणे मेल्हिउ, जीवितदान दीधउ दे ।
दयावंतनी दृष्टिइ हऊउ, तु काज तेहनूं सीधउं दे ॥ ६८२ ॥

दूहा

उपगार कीधु जेहनइ संभारइ निमिदीस ।
प्रणमइ आवी नारीनइ, 'तू ठाकुर तूं ईस' ॥ ६८३ ॥
पूछइ एकदा चोरनइ, 'किहांथी आविउ तूंअ ?' ।
'तापसपुरि वसंतनू पिंगल नामिइ दास हूंअ ॥ ६८४ ॥
व्यसनिइ करी पराभविउ, लक्ष्मी लेई सार ।
रात्रि समइ नीसरिउ, चौर मिलिया ते वार ॥ ६८५ ॥
मझ कन्हइथी सहूइ लीधउं, आविउ आपणइ ठामि ।
रितुपर्ण रायनी सेवाइ, जाणइ आखूं गाम ॥ ६८६ ॥

मझनि कुबुद्धि ऊपनी, चंद्रवतीनु जेह ।
दीठउ रत्नकरंडीउ, लीधु ततखिण तेह ॥ ६८७ ॥
लेई हूं जव नीसरिउ, वाटिइ मिल्या रख[32-B]वाल ।
चोर तणी चेष्टा लही, उलखीउ ततकाल ॥ ६८८ ॥
सबल बंधन वांधीउ, रायनइ कहिउं तेह ।
आदेस दीधउ पांडुर्ड, हऊउ मझनइ छेह ॥ ६८९ ॥
ताहरी दृष्टिइ संपनु, जीवी दीधूं माय ।
तुझ उसीकल नवि थाउं, प्रणमउ ताहरा पाय' ॥ ६९० ॥

ढाल । ते गिरूउ भाई ते गिरूउ०

दवदंती कहइ, 'सूणि तू पिंगल ! जीवनइ पोतइ पाप रे ।
चारित्र विना नवि छूटीइ मोइ, ते संसारनुं व्याप रे' ॥ ६९१ ॥
उपदेस दीइ दवदंती नारी, सरल सुकोमल वाणी रे ।
'काज सारीइ आपणउं, संसार असार जाणी रे' ॥ ६९२ ॥
एहवइ तिहां साधुजी आव्या, माधुकरीइ सार रे ।
नलनारी हर्षित पामी, अन्न दीधउ ते वार रे ॥ ६९३ ॥
दवदंती कहइ मुनिवरनइ, 'योग्य जाणु जु स्वामी ! रे ।
आ पुरुषनइ दिक्षा दीउ, तमे छउ संयमधामी रे' ॥ ६९४ ॥
योग्य जाणीनइ चारित्र दीधउं, मुनिवर तिहांथी विचरइ रे ।
चारित्र सूधूं प्रतिपालइ, आपणउं काज ते सारइ रे ॥ ६९५ ॥
हवइ दवदंती तिहां रहइ, चंद्रवती धरइ स्नेह रे ।
नलनी वाट ते जोइ, जिम बापीहउ मेह रे ॥ ६९६ ॥

ढाल केदार गुडी । श्रीजिननायक वं०

भीमराजाइ संभलिउं रे, नलनु लघु भाई जेह ।
तेणइ हराबी राज्य लीधउं रे, हारी दवदंती तेह ॥ ६९७ ॥

भीम मनि चिंता अतिहि थाइ, दिन दोहेलद जाइ ॥ भीम.
पछइ दवदंती लेई करी रे, नीसरिउ नलराय ।
न जाणीइ किहां गयु रे, नवि लाभइ तेहनु ठाय ॥ ६९८ ॥ भी.
भीम पुष्पदंती दुख धरइ रे, आरति थई तस अति ।
तेहना जीवनइ सुख नहीं रे, अंगि ऊपनी अरति ॥ ६९९ ॥ भी.
हरिमित्र ब्राह्मण तेडीउ रे, भीमराजा कहइ एह ।
'नल-दवदंतीनी शुद्धि जोउ रे, तू छइ भक्तउ जेह ॥ ७०० ॥ भी.
तेहनी सिद्धि जउ तूं ल्यावइ रे, आपू अपूरव रिद्धिं' ।
आज्ञा मागी नीसरिउ रे [33-A], जेहनी निर्मली बुद्धि ॥ ७०१ ॥ भी.
सोधतु हीडइ ठामि ठामिइ रे, नल नइ सती दवदंति ।
अचलपुरिइ ते आवीउ रे, विचारइ ते चींति ॥ ७०२ ॥ भी.
'आणइ नगरिइ जोइवूं रे,' पुहुतु सभा मझारि ।
उलखीउ रूतुपरण राजाइ, दीधउं महुत अति सार ॥ ७०३ ॥ भी.
चंद्रयशा पूछइ इस्यू रे, 'कहु ब्राह्मण ! छइ खेम ? ।
भीमराजा पुष्पदंतीनइ रे, सुख समाधि छइं तिम ? ॥ ७०४ ॥ भी.
नल-दवदंती बेहू जणा रे, शरीरइ छइ नीरोग ? ।
रूडी परिइ बेहू अछइ रे, तेहनइ सुखसंयोग ?' ॥ ७०५ ॥ भी.
हरिमित्र ब्राह्मण ते बोलीउ रे, 'सुणी नारी ! एकंति ।
अकथ्य वात तिहां एक हुई रे, सुणतइ दुख हुसिइ चिंति ॥ ७०६ ॥ भी.
राज्य हारिउ जूइ करी रे, कूबरिइ लीधउं राज ।
नल-दवदंती नीमर्या रे, शुद्धि नथी हजी आज' ॥ ७०७ ॥ भी.
चंद्रयशा वात सांभली रे, रडवा लागी अति ।
'किहां गई हुसिइ भाणेजि रे ?' एहवूं कही विलपंति ॥ ७०८ ॥ भी.
राजसभाथी ऊठीउ रे, जाइ नगर मझारि ।
चिंतिइ चिंता अति घणी रे, आविउ जिहां शत्रुकार ॥ ७०९ ॥ भी.

एहवइ तिहा देव एक आवीउ, अनोपम ऋद्धिइ शोभावीउ ।
हाथ जोडीनइ कीधु प्रणाम, प्रभाव वधारिवा बोलिउ ताम ॥ ७२१ ॥
' हु पिंगलक चोर प्रसिद्ध, ताहरे कहणे दिक्षा लीध ।
श्मशानमाहिं रहिउ कासगि, दावानल ऊपनु उपसर्ग ॥ ७२२ ॥
दाझनइ नवि मेल्हिउ ध्यान, नवपद समरिया नवइ निधान ॥
तिहा थकी सुररिद्धि पावीउ, तूहनि नमवा अहा आवीउ ॥ ७२३ ॥
घात करंता तइ राखीउ, सुद्ध धर्ममारग दाखीउ ।
ताहरा प्रमादथी लहिउ सौम्य, तू तु माहरइ जाणउं गुरु मुख्य ' ॥७
कीधी सुवर्णनी वृष्टि सात कोडि, पाए लागु दोइ कर जोडि ।
ते देवता आप ठामिइ जाइ, प्रजा सहू रलीयायत थाइ ॥ ७२५ ॥
देखी धर्म तणउ स्वरूप, दया धरम आदरइ तव भूप ।
दिन केतला हुआ जेह, ब्राह्मण अवसर लही कहइ तेह ॥ ७२६ ।
' तुह्मारी जउ आज्ञा होइ, पिता तणउं घर दवदंती जोइ ।
भीमरायनइ हुइ सुख, आखु दीस धरइ छइ दुख ' ॥ ७२७ ॥
सैन्यसामग्री सघली करी, दवदंती पीहरि नींसरी ।
चंद्रयशाला प्रणम्या पाय, वुलावा आवइ तिहा राय ॥ ७२८ ॥
कुंडिनपुरिइ आवइ तेह, वहुलउ सैन्य सा[34 A]थिइ छइ जेह ।
दवदंतीनी आव्या वधामणी, भीमराजा रिद्धि आपइ घणी ॥ ७२९ ।

ढाल । गिरुआ गणपति रे०

भीमराजा रे साहमु आवए, दवदंती रे अनोपम भावए ।
पिता तणे चरणे रे आवीनइ नमइ, कुंडिनपुरिइ रे सहूनइ मनि गमइ ॥७
त्रू०—मनि गमइ रायनइ, सुता देखी आलिंगन दीइ हर्ष धरी,
पुष्पदंती माता आनइ सुतानइ मोहइ करी ।
दवदंती आपणी मानइ देखी प्रहुमु चडीउ वेगिसिउं, २० ॐ

जाह्नवी यमुना येह मिलीआ, माइ बेटी तेह,
आपणडं वाहलडं देखी करीनइ अधिक ऊपजइ नेह ।
'दुःख म धरि रे सुता ! हवइ' भवितव्य एहवूं सरजीइ,
हुणार वस्तु ते अधिक मोटी, कुणइ ते नवि वरजीइ' ॥ ७३२ ॥

नीसासु मेहलीनइ कहइ, 'मात ! संभलि वीनती,
एणइ कंतिइ मेहली रानमांहि, माया न धरी एक रती ।
नलजीनइ कीधइ घणीं अ परिना दुःख सहिया अति घणा,
माता ! स्यूं कहू घणूं अ तूंहनइ ! संख्या न लहूं तेह तणा ॥७३३॥

सुखदुख सहिया एवडा नइ संदेसु नवि मोकलइ,
मन्न एहनूं थयूं नींठर, वालीनु ते नवि वलइ ।
न आणीइ परनारी रातु, वसि कीधु तेणीइ,
माहरी कणवार वलती न कीधी कामणगारिउ जेणीइ' ॥ ७३४ ॥

देसी

उछंगि वइसारीनइ रे पुत्रीनइ कहइ,
'दुःख तूं म धरि रे, अहींइ तूं सुखिइ रहइ ।
जीवता जीवनइ रे रूडूं होइसिइ,
संभाल करणहार रे जगगुरु जोइसिइ ॥ ७३५ ॥

ध्रु०—जगगुरु केरूं ध्यान धरू नइ चिंता म करु पुत्रि !
भगवंतनी पूजा करु नइ दान दीउ नित्त ।
आन जां लगइ जीवस्यूं निर्वहइ[31-B]स्यूं तूंहनइ बाल !
पछइ ताहरूं कर्म करसिइ,' एहवूं कहइ भूपाल ॥ ७३६ ॥

'सघला दिन नवि हुइ सरिखा, आगलि रूडा थायसिइ,
हवडा आविउं अंतराइ, तेह सघलूं जाइसिइ ।
थोडे दिनि ताहरु नाह मिलसिइ, सांभली था दीकरी !
जेहवा थाय तेहवा उलावीनइ, संभलि नल्ली सुंदरी !' ॥ ७३७ ॥

नलइ हीअडउं गाढउं करी नींसरिउ, स्वेच्छाइ जाइ नरे ।
एहवइ दावानल वनमांहि देखइ,
'नल नल ! राखि तूं एणइ ठाइ नरे' ॥ ७४५ ॥ झू.
संभलिउ शवद तिहां नलराइ, तेणइ ठामि आवीउ भूपति नरे ।
महामोटउ रे भुजंगम तिहां दीठउ,
चिंतवइ ते वली चित्त नरे ॥ ७४६ ॥ झू.
'माहरूं नाम सर्प ! तूं किम जाणइ ? तइ किम जाणिउ माहरु वंश नरे ?' ।
'सुणि तूं निपधपुत्र ! एकमनु, तूं छइ वसुधाधीश नरे ॥ ७४७ ॥ झू.
पूरवजनमइ हूं मानवी, आणइ भवि हवु सर्परूप नरे ।
पूरवपुण्यइथी भाषा ऊपनी, तूं छइ उपगारी भूप नरे ॥ ७४८ ॥ झू.
अवधिज्ञानिइ हूं नाम ठाम जाणउं, तूं छइ गुणनु भंडार नरे ।
निपधपुत्र ! तूंहनइ घणूं कहूं, मझनइ दीउ जीवित सार नरे' ॥७४९॥ झू.

चउपई

नलराजा विचारइ इस्यूं, 'मझ आगलि दुख न रहइ कसिउं ।
हूं एहनइ करूं उपगार, एतला ऊफरु नथी धर्म सार' ॥ ७५० ॥
सिंह आगलि न रहइ गजघटा, अमृत आगलि न रहइं विपछटा ।
सींचाणा आगलि न रहइ चिडउ, मोगर आगलि न रहइ घड्ड ॥ ७५१ ॥
भूख्या आगलि न रहइ भिक्ष, कुहाडा आगलि न रहइ वृक्ष ।
पवन आगलि न रहइ मेह, तडका आगल न रहइ नेह ॥ ७५२ ॥
मोर आगलि न रहइ सर्प, योगीन्द्र आगलि न रहइ कंदर्प ।
सद्गुरु आगलि न रहइ संदेह, कुमाणस दिठिसिं न रहइ नेह ॥ ७५३ ॥
मेघ आगलि न रहइ दुर्भिक्ष, मंत्र आगलि न रहइ भूतयक्ष ।
पुण्यवंत आगलि न रहइ दुष्ट, तिम उत्तम आगलि न रहइ कष्ट ॥ ७५४ ॥
उपगारनी बुद्धि सहिजिइ होइ, कमल्नइ सहिजिइ परिमल जोइ ।
मयूर ईंड सहिजिइ चींतराइ, सत्पुरुष सहिजिइ उपगार कराइ ॥ ७५५ ॥

ठारवी तव मातपिताइ, संतोष हूऊउ तेहनइ,
टाढउ बोल दीइ ज्यारइ संतोष न हुइ कहिनइ ।
हरिमित्रनइ भीमज तूठउ, पांचसइ आप्या गाम,
' नल आवंतइ राज्य देउं, तेहनु छइ वली ठाम ' ॥ ७३८ ॥

नगरमाहि आवतइ उच्छव कीधु अपार ए,
सात दिन लगइ भक्ति कीधी देवगुरुनी सार ए ।
कुटुंब सहू संतोष पामिउं हूऊउ जयजयकार,
गला मोटा दान आपइ सहूनइ तव अनिवार ॥ ७३९ ॥

पीहरि रहइ दवदंती नारी, सखीसिउं ते परिवरी,
भगवंत पूजा करइ अहनिशि शुद्ध निर्मल भाविइ करी ।
पंच पद नवकार जपइ, दीइ दान सुपात्रनइ
जीवदया ते सूधी पालइ, पीडा नहीं जीवमात्रनइ ॥ ७४० ॥

संभरइ नल जीवन वाहलु, सखीस्यूं रामति करइ,
निषधपुत्रनइ नित संभारइ, हईइ अहनिशि ते धरइ ।
सीआलइ वरसालइ नलजी, उन्हालइ नवि वीसरइ,
दवदंतीनइ कोइ नहीं जे जेहथी दुख वीसरइ ॥ ७४१ ॥

भीमराजा कहइ पुत्रीनइ, ' करूं मेलापक नल तणी,
निसिदिनि मूंहनइ ताहरी चिंता, वच्छि ! हईइ अति घणी ' ।
दवदंती तिहां पितामंदिरि संभारइ नलगुण सदा,
हवइ नलनु संबंध संभलु, पइरि हुई सी तदा ॥ ७४२ ॥

राग देशाख । झरी झरी हूं पंजर०

नलराजाइ नारी तिहां मेहली, साहस धरीनइ जाइ नरे
पाछउं वालीनइ साह[35-A]मूं जोइ, हईइ दुख अति थाइ नरे ॥ ७४३ ॥
झूरइ २ राजा श्रीनल ए तु ' हूं करूं छउं एहनइ द्रोह नरे ।
नारी बंधन पुरुषनइ अति घणउ, ए तु दोहिलु छइ मोह नरे ' ॥७४४॥ झू.

नलइ हीअडउं गाढउं करी नींसरिउ, स्वेच्छाइ जाइ नरे ।
एहवइ दावानल वनमांहि देखइ,
'नल नल ! राखि तूं एणइ ठाइ नरे' ॥ ७४५ ॥ झूर.
संभलिउ शबद तिहां नलराइ, तेणइ ठामि आवीउ भूपति नरे ।
महामोटउ रे भुजंगम तिहां दीठउ,
चिंतवइ ते वली चित्त नरे ॥ ७४६ ॥ झू.
'माहरूं नाम सर्प ! तूं किम जाणइ ? तइ किम जाणिउ माहरु वंश नरे ?'।
'सुणि तूं निषधपुत्र ! एकमनु, तूं छइ वसुधाधीश नरे ॥ ७४७ ॥ झू.
पूरवजनमइ हूं मानवी, आणइ भवि हवु सर्परूप नरे ।
पूरवपुण्यइथी भाषा ऊपनी, तूं छइ उपगारी भूप नरे ॥ ७४८ ॥ झू.
अवधिज्ञानिइ हूं नाम ठाम जाणउं, तूं छइ गुणनु भंडार नरे ।
निषधपुत्र ! तूंहनइ घणूं कहूं, मझनइ दीउ जीवित सार नरे' ॥७४९॥ झू.

चउपई

नलराजा विचारइ इस्यूं, 'मझ आगलि दुख न रहइ कसिउं ।
हूं एहनइ करूं उपगार, एतला ऊफरु नथी धर्म सार' ॥ ७५० ॥
सिंह आगलि न रहइ गजघटा, अमृत आगलि न रहइ विषछटा ।
सींचाणा आगलि न रहइ चिडउ, मोगर आगलि न रहइ घडु ॥ ७५१ ॥
भूख्या आगलि न रहइ भिक्ष, कुहाडा आगलि न रहइ वृक्ष ।
पवन आगलि न रहइ मेह, तडका आगल न रहइ त्रेह ॥ ७५२ ॥
मोर आगलि न रहइ सर्प, योगीन्द्र आगलि न रहइ कंदर्प ।
सद्‌गुरु आगलि न रहइ संदेह, कुमाणस विचिमां न रहइ नेह ॥ ७५३ ॥
मेघ आगलि न रहइ दुर्भिक्ष, मंत्र आगलि न रहइ भूतयक्ष ।
पुण्यवंत आगलि न रहइ दुष्ट, तिम उत्तम आगलि न रहइ कष्ट ॥ ७५४ ॥
उपगारनी बुद्धि सहिजिइ होइ, कमलनइ सहिजिइ परिमल जोइ ।
मयूर ईड सहिजिइ चींतराइ, सत्पुरुष सहिजिइ उपगार कराइ ॥ ७५५ ॥

बुद्धिइ करीनइ [35 B] काढिउ फणी, दया ऊपरि मति छइ तेह भणी।
अगोचर भूमिइ मेल्हिउ जसिइ, नलराजा-हाथि डसीउ तिसिइ ॥ ७५६ ॥
'महापुरुष कहीइ तूं नर, ए सिउं कीधउं फणी ! मूंहनइ ?।
मइ करिवु तुझनइ उपगार, इम करिवानु नहीं अधिकार ॥ ७५७ ॥
शरीरि हुंउ विपनु व्यार, मनल संभनु अति घणउ ताप ।
दूधदायकनइ डसीइ किम ? डसीफल थयु मझ करी इम !' ॥ ७५८ ॥
इम करतइ कूनइ हवु भूप, कालु कुछित अतिहिं करूप ।
'दैवगति आहवी संदनी, ए वली वक्रति किहाथी ऊपनी ? ॥ ७५९ ॥
आगइ नारी तणउ वियोग, कूबड देहि हुंउ कुयोग ।
वेरा पाडी मझ ममकाल, उपगारनूं फल हवूं ततकाल ॥ ७६० ॥
एणइ रूपिइ मइ किहीं न जवाइ, मघलइ मझनइ हासू थाइ ।
फोकट नींगमूं कां अवतार ?. चारित्र लेउं संसारह सार' ॥ ७६१ ॥
नलनइ ऊपनी रूटी मति, दीक्षा भाव धरीउ चित्ति ।
आवी लागु पाए देव, प्रगट रूप कीधउं ततखेव ॥ ७६२ ॥
तेजपुंजमय देवतारूप, 'संभलि वाणी तूं नलजी भूप !।
निषध पिता जाणेजे हुंअ, पाछिला भवनु नल पुत्र तूंअ ॥ ७६३ ॥

ढाल । नयर द्वारामती०

तूहनइ राज्य देई करी, मइ लीधउं चारित्र ।
ब्रह्मलोकि सुर ऊपनु, रिद्धि पामी पुत्र !' ॥ ७६४ ॥
कर जोडी कहइ देवता, 'जाणेजे सुजाण ।
स्नेह माटिइ अहींइ आवीउ, तूं नथी अ अजाण ॥ ७६५ ॥
अवधिज्ञानिइं जोईउं, पेखिउ एणइ ठाणि ।
माया कीधी मइ घणी, ताहरा हितनइ कामिइ ॥ ७६६ ॥
तइ राजा किंकर कीधा, लीधा सघला देश ।
कोइ रखे पीडा करइ, कीधु कूबड वेस ॥ ७६७ ॥

मं धरीसि चारित्र मनोरथ, हजी छइ तुझ भोग ।
दीक्षा समय जणावसिउं, हवडां नथी योग ॥ ७६८ ॥
आ लीउ पुत्र ! तमे श्रीफल, आपिउ रत्नकरंड ।
जालवयो तमे रूडी परिइ, वसि हुसिइ ब्रह्मांड ॥ ७६९ ॥
रूपनु अरथ ज्यारइ हुइ, विदारयो एह ।
[36 A] देवदूष्य वस्त्र देखसिउं, पहिरज्यो तेह ॥ ७७० ॥
रत्नकरंड ऊघाडयो, रत्नजटित छइ हार ।
आभरण बीजा घणा, अनोपम छइ सार ॥ ७७१ ॥
देवदूष्य वस्त्र पहिरयो, करयो शृंगार ।
अदभुत रूप नवूं हुसिइ, हईइ धरयो विचार' ॥ ७७२ ॥
नल पूछइ आम तातनइ, 'वहू ताहरी दवदंति ।
जिहां मेहली तिहां अछइ ? कइ गई अ अन्येथि ?' ॥ ७७३ ॥
सुवि संबंध तेहनु कहिउ, 'नथी तेणइ वन्नि ।
भीम तणइ घरि ते अछइ, चिंता माणसि मन्नि ॥ ७७४ ॥
सिउं भमतु हींडइ रानमांहिं ?' 'क्रिम करूं आम तात ?' ।
विरह थयु मझ नारिनु, सी कहूं तुम वात ?' ॥ ७७५ ॥
जिहा गइ लज्जा ऊपजइ तिहां तूंअ म जाए ।
नारी मिलसिइ तूंहनइ, निश्चित पुत्र ! थाए' ॥ ७७६ ॥
तव कहइ नल देवनइ, 'पुर छइ सुंसमार ।
तिहां मेल्हउ मझनइ तमे, दिउ एतलु आधार' ॥ ७७७ ॥
देविइ तिहांथी लेई करी नंदनवन सार ।
नगर तणइ पासइ अछइ, मेल्हिउ नलकुमार ॥ ७७८ ॥
देवता निज ठामिइ गयु, नलइ दीठु प्रासाद ।
प्रतिमा छइ नेमिनाथनी, हऊउ अति आह्लाद ॥ ७७९ ॥

अटवीमांहिइं तेह नलनइ उपदिशा,
स्त्रीभर्त्तार वियोग, सुख ते नही किस्या ।
नल पुहुतु सुरलोकि, हूं अहां आवीउ,
रंजीउ वियाइ तूअ, हूं अहां ठावीउ' ॥ ८०१ ॥
ते निसुणी राय चित्ति अति तव दुख धरइ,
'नारीनी सी पइरि?' विमासण मनि करइ ।
कूबडा रूपिइ राय नल तिहां रहइ,
दधिपरण आगलि नित्त काव्यकथा कहइ ॥ ८०२ ॥

दूहा

दधिपरण राय तिहां थकी मोकलिउ दूत एक ।
मित्राई भीमरायस्यूं, आवीउ तव छेक ॥ ८०३ ॥
राजकाज मोटा भणी, दूत आविउ तेणइ ठाइ ।
बइठउ सभाइ भीमराय, आवी प्रणमइ पाय ॥ ८०४ ॥
खेम कुशल पूछिउं भीमिइ, मान दीधूं अति सार ।
'प्रस्ताव जाणी दूत मोकलिउ, नलनु आविउ सूआर ॥ ८०५ ॥
दधिपरणनइ पासइ रहइ छइ, अति ते गुणवंत ।
पण डीलिइ स्वामी ! कूबडउ, महा महुकम बलवंत ॥ ८०६ ॥
सूर्यपाक रसवती विद्या तणइ [37-B] प्रमाणि ।
नीपाइ, ते अपूरव नलथी सीखी सुजाणि ॥ ८०७ ॥
ते कूबडउ तिहां अछइ, वाहलउ दधिपर्णचित्ति ।
रायनइ ते पाखइ नवि सरइ, रंजवइ वली नितनित' ॥ ८०८ ॥
दवदंती ते संभली, नलनूं नाम पवित्र ।
नाम संभलतइ हर्ष ज थयु, स्नेह तणउ जोउ चित्र ॥ ८०९ ॥

ढाल। इम सुणी चडवड चालीआ०

भीम राजानइ कहइ, 'एक वीनती अवधारि।
जोउ शुद्धि नल तणी, तेह विण हूं निराधार ॥ ८१० ॥
तातजी! कहूं छउं तुमनइ रे, क्षण एक युग थाइ मझनइ ॥ ८११ ॥ ता.
तुम आगलि स्वामी! सिउं कहूं! लजामणी ए वात।
कहिया पाखइ नवि सरइ, शुद्धि जोउ नलजीनी तात॥ ८१२ ॥ ता. क. छ.
दिन नींगमूं हूं कतूहले, पण राति दोहिली जाइ।
रागी रोगी माणसा, सहिज रे सरीखडूं थाइ' ॥ ८१३ ॥ ता
नाम संभलइ नेह जागिउ, दुख धरइ ते नारि।
सखी आवी ठारवइ, लीधी रे हईडा वारि ॥ ८१४ ॥ ता.
सखी कहइ, 'सुणि दवदंती! आवसिइ ताहरु कंत।
साहसपणउं आदरु, दुख म धरु रे तमे चींति' ॥ ८१५ ॥ ता.
'पीइरिथी नवि छूटीइ, नारीनइ कंत श्रृंगार।
नर विण नारी नवि शोभइ, नरनु मोटु आधार ॥ ८१६ ॥ ता.
पीइरिथी हलूई थाइ, तिहां रहइ जे हुइ सुख।
ते सुक्ख दुख करी जाणिवूं, अपवाद हुइ रे लक्ष ॥ ८१७ ॥ ता.
सासरानूं दोहिलूं, उत्तम बेठी रहेइ।
निदानि हुइ सुख भलूं,' कुलवंती सखीनइ कहेइ ॥ ८१८ ॥ ता.
'भर्त्तारनूं ऊपर हुइ तु कुटुंब दिइ बहुमान।
जु कंत तेहनु नवि मानइ, नवि वाधइ तेहनु वान ॥ ८१९ ॥ ता.
भाइ पिता नवि लेखवइ, धिक्कार करइ सहु कोइ।
अगणइ तेहनिइ मावडी, जु कंतनूं मान नवि होइ ॥ ८२० ॥ ता.
पीइरि रहितइ अति घणूं, अलखामणी हुइ तेह।
महुत जाइ नारिनूं, हुइ रे उछेरडउ नेह ॥ ८२१ ॥ ता.

कहि न सखी ! हूं किम करूं ? मोह प्रीऊ ना[38 A]वइ जेह ।
बार वरस थयां आज सही, भावठि भोगवउं एह ॥ ८२२ ॥ ता.
नीर्गुण नीमत नीठर, इम मूकी नर को जाइ ।
प्रीत मांडी छेह दीधु, यौवन दोहेलउं थाइ ॥ ८२३ ॥

राग सामेरी

वरसाला ऋतु सोहामणी, जलधर वरसइ मेह ।
कदंब रूडा वन वहिसीइ, विरहीआ जागइ नेह ॥ ८२४ ॥
मन उल्हसइ कलंबी तणा, ऊससइ वेलि वितान ।
लोक लोकनइ वीसमइ, विणसीउ जवाना पान ॥ ८२५ ॥
गाजंतु मेघ संभली, रीस धरी सिंह धसंति ।
दावानलइ न भ्रमइ धारा, नरनारी रंगि हसंति ॥ ८२६ ॥
काढविइ पाय खरडीआ, लेईं काष्टखंडि घसंति ।
नदीनु उपकंठ मेहली, ग्रामीण दूरि वसंति ॥ ८२७ ॥
कण जेणइ संग्रहीया, तेहना कृष्ण वदन थाउ ।
व्यापारी वीजा हसइ, नीसासु मेहली घरि जाइ ॥ ८२८ ॥
परनालि पडतउं पाणी निर्मल, झालीइ कुंभिइ सार ।
मोर किंगारव करइ, दुख सालीइ अपार ॥ ८२९ ॥
भला ठाकुर साथ करी, नवा गाम वासंति ।
डूंगर तणे नीझरणे तेणइ ताणिया ढोल घसति ॥ ८३० ॥
बलवंत तारू नदी पूरइ, पडसता विमासइ तेह ।
श्लेष्मा हुइ जेहनइ अधिकु खासइ क्षणि २ जेह ॥ ८३१ ॥
डरडरइ दुद्दुर तिहां, वारू चातक वंछइ मेह ।
मेघ मल्हार कीजीइ. सुख हुइ अति घणु देह ॥ ८३२ ॥

चउपई

पाणी तणा प्रवाह खलहलइ, निर्मल नींझरण नींकलइ ।
वाडि ऊपरि बहू वेला वलइ, दातार मन धर्म ऊपरि भलइ ॥ ८३३ ॥
नीली भुइ भली संपजइ, भव्य जीवना अभिग्रह पलइ ।
सरोवर तु राजहंस ऊमटइ, पगि पगि जल निर्मल ऊमटइ ॥ ८३४ ॥
चीखलि चालता शकट स्कलइ, जलइ करीनइ दव नवि ज्वलइ ।
भरियां सरोवर अति ऊलटइ, वाट छंडी पंथी ऊवटि वलइ ॥ ८३५ ॥
नदी तणा प्रवाह पहिटीइ, वनसपती जलिइ करी [38-B] छाटीइ ।
एहवइ सखी ! ए वर्षाकाल, नल हईइ जिम सलइ साल ॥ ८३६ ॥
आविउ सखी ए भलु सीतकाल, रुदन करइ ते अबला बाल ।
नित कीजइ सांकली सेव, सगडी कीजइ अवश्यमेव ॥ ८३७ ॥
सूहाली करी भूख टालीइ, घीअ जिमी देहू संभालीइ ।
पाछिली रात्रिइं भणीइ सदा, सुगंध अभ्यंग करीजइ मुदा ॥ ८३८ ॥
दुग्ध कढी कीजीइ प्रभाति, मंजीठ रंगि जूजूई भाति ।
एहवूं वस्त्र ऊपरि ऊढीइ, सुखशिज्याइ भली पुढीइ ॥ ८३९ ॥
उष्ण जलइ मज्जन कीजीइ, तांबूलनु लाहु लीजीइ ।
एहवु सीआलु मझ संभरइ, नलजी वाहलु नवि वीसरइ ॥ ८४० ॥
उन्हालु आविउ सोहामणु, सखी ! मानवनइ कोडामणउ ।
पाडल परिमल भलु विस्तरइ, रात्रि पाखइ पंथ न नस्तरइ ॥ ८४१ ॥
कोइलिडी अति कलरव करइ, भमरा रणझणता दिसि फिरइ ।
वेला तणु समूह सूकीइ, हाथिथी पाणी नवि मूंकीइ ॥ ८४२ ॥
वेउल सारी अति बहिकीइ, लू तणी ज्वाला सबल लहिकीइ ।
सतपुरुष तुच्छ आहार जिमइ, सुवेध नर वाडीइ रमइ ॥ ८४३ ॥
भोगी भला ते घरि वीसमइ, चंदकिरणे रयणी नींगमइ ।
चंदन तणा विलेपन गमइ, चरणे वाणही भली चमचमइ ॥ ८४४ ॥

दिवस मोटा नइ रात्रि साकडी, फोफल पाहिट वाल्ही वाकडी ।
टाढउं पाणी नइ टाढउ अन्न, ते ऊपरि टरइ अतिहिं मन्न ॥ ८४५ ॥
एहवु उन्हालु मझ सभरइ, नलजी वाहलु नवि वीसरइ ' ।
सखी कहइ, ' सुणि दवदंती माइ ! दुख म धरु, तुम लागूं पाइ ' ॥८४६॥

दूहा

' छानइ छंदइ छल धरी, जे रमी गयु छट्टल ।
ते न मिलइ वली जा लगइ, ता नवि भागइ सल्ल ॥ ८४७ ॥
ऐ ऐ ताहरा गुण किम्या [२] निर्गुणगारा कंत ! ।
दाखवि रंग पतगनु, पछइ उतारिउं चित ॥ ८४८ ॥
मइ जाणिउ रंग चोलनु, रहिसिइ सघलु काल ।
नींठर केरी प्रीतडी, टलत न लागी वार ॥ ८४९ ॥
लखिउं कपालिइ पामीइ, सुखदुखनु सयोग ।
जेहसिउं वाधइ प्रेमरस [39 A] तेहसिउं काइ वियोग [२] ॥ ८५० ॥
जन्म लगइ विहडइ नही, उत्तम स्त्रीसिउं नेह ।
कृष्ण विरहइ नदी कालंदी, आजइ छइ कृष्ण जल जेह ॥ ८५१ ॥
वेगली छइ ते दवदंती, नल न वीसारिउ चित्ति ।
दूरि रहिवइ जे प्रेम राखइ, ते स्नेह कहीइ एकंति ॥ ८५२ ॥
मंत्रपरीक्षा जाणीइ सर्प तणइ घणइ डसि ।
सुवर्णपरीक्षा तव कहीइ, आवइ चोसी कसि ॥ ८५३ ॥
सुभटपरीक्षा जाणीइ, हुइ ज्यारइ झूझ ।
गमीरपणानू पारखूं, राखी रहइ चित्ति गूज्झ ॥ ८५४ ॥
मित्रपरीक्षा जाणीइ, अति घण आवइ कष्टि ।
अवसरि जु ते काजि आवइ, तु जाणीजइ इष्ट ॥ ८५५ ॥
सत्त्वपरीक्षा जाणीइ, लइ ज्यारइ अणसन्न ।
अवसरि ल्हीद पारखूं, न चलइ तेहनूं मन्न ॥ ८५६ ॥

दानपरीक्षा जाणीइ, सबलु पडइ दुकाल ।
साचानी अ परीखडी, जाणीइ पतीज कालि ॥ ८५७ ॥
बुद्धि तणी परीखडी, जाणीइ विसमइ ग्रंथि ।
चरणपरीक्षा तव लहीइ, जव चालिवूं वेगलइ पंथि ॥ ८५८ ॥
तारूपरीक्षा जाणीइ, पइसइ नदीनइ पूरि ।
स्नेहपरीक्षा जाणीइ, जव रहिवू हुइ दूरि ' ॥ ८५९ ॥
एहवूं सखीनइ घणूं कहिउं, एकमनी छइ नारि ।
' अवर पुरुष मझ सहोदरा, नल कंत एणइ संसारि ' ॥ ८६० ॥
जे ऊपरि जे एकमनी, तेहनी पूरइ आस ।
शनिइ २ तेहनइ सुख हुइ, दुख न हुइ तास ॥ ८६१ ॥
भीमिइ कहीउं सुतानइ, ' नल जोरावूं आज ।
चिंता म धरीसि वेटडी ! हुसिइ तूंहनइ राज ' ॥ ८६२ ॥
दवदंती कहइ, ' सुणउ पिता ! सूर्य आतपि जे अन्न ।
नींपजावइ तम जामाता, ते विण न लहइ अन्न ' ॥ ८६३ ॥
कुशल ब्राह्मण तेडीउ चतुर डाहु तेह ।
भीमराजा कहइ तेहनइ धरी अति घण नेह ॥ ८६४ ॥

ढाल । सरस [39-B] सकोमल कामिनी सूडा टोडे ऊ०

' सुसमारनगरिइ जाउ, संभलु तमे द्विजराज ! रे ।
शुद्धि जोई आवउ नल केरी, एतलू करु एक काम रे ' ॥ ८६५ ॥
राय कहइ, ' सुणउ ब्राह्मण ! चिंता अमारइ मन्नि रे ।
निशदिन सारणि मूंहनइ द्विज ! तेह विण सुख नही तन्नि रे ॥ ८६६ ॥
काज करी वहिला आवयो, देउं तमनइ घणी रिद्धि रे ।
ल्यावयो वधामणी रूअडी, अम पूगइ कारय सिद्धि रे ' ॥ ८६७ ॥
प्रणाम करीनइं नीसरिउ, द्विज रूडे शकुने संचरइ रे ।
वाट घाट उलंघतु, आविउ सुंसमारपूरिइ रे ॥ ८६८ ॥

नगरमाहि जोअतु, पुहुतु राजसभाइ रे ।
राजा बइठउ परवारस्यू, विस्तरती सूर्यप्रभाइ रे ॥ ८६९ ॥
दधिपर्णइ ते देखीउ, पूछइ तव तेहनइ अहसिउ रे ।
'किहाथी आव्या द्विजराज ?' कहइ वलतू द्विज जसिउ रे ॥ ८७० ॥
'भीम कन्हइथी हू आविउ, काई कार्यविशेषिउ रे ।
नलनी शुद्धि जोवा मोकलिउ,' सभली दधिपरण हरखइ रे ॥ ८७१ ॥
भीमराजानी शुद्धि पूछी, कहिउ कुशल खेम रे ।
दधिपर्णनइ कहइ ब्राह्मण, 'स्वामी ! कुबजक किहा रहइ छइ रे ?' ॥८७२॥
वलतू राजा कहइ एहवू, 'ते कूबडउ छइ अहा रे' ।
'घणी विद्या छइ तेह कन्हइ, कहु न रहइ छइ किहा रे ?' ॥ ८७३ ॥
आपिउ थानक रूअड़, राखिउ अपूरव ठामि रे ।
तिहाथी ब्राह्मण वेगिइ सिउ, कुबजक ठामिइ जाइ रे ॥ ८७४ ॥
वइठउ दीठउ कूबडउ, कुच्छित वाका अगे रे ।
गाढउ बीभच्छ बीहामणु, नवि दीसइ कसिउ ढग रे ॥ ८७५ ॥
कुशल ब्राह्मण तव चितइ, 'किहा ए किहा नल चग [40 A] रे ? ।
दववती फोक मोह धरइ, निष्कारण धरइ रग रे ॥ ८७६ ॥
अतर दीसइ एवडू, जेवडउ सोनईउ रूउ रे ।
अतर दीसइ एवडू, जेवडउ बाप नइ फूउ रे ॥ ८७७ ॥
अतर दीसइ एवडू, जेवडउ राणी नइ दासि रे ।
अतर दीसइ एवडू, किहा दही किहा छासि रे ' ॥ ८७८ ॥
अतर दीसइ एवडू, जेवडउ राय नइ रक रे ।
अतर दीसइ एवडू, जेवडउ कायर धीर रे ॥ ८७९ ॥
अतर दीसइ एवडू, किहा सोनउ किहा माटी रे ? ।
किहा भीति नइ किहा त्राटी रे ? किहा रभा नइ किहा राटी ? ॥
अतर दीसइ एवडू, किहा दूध किहा छासि राटी रे ? ॥ ८८० ॥

किहां सुखासण किहां डोली ? किहां व्यवहारू नइ कोली रे ? ।
किहां दीपोच्छव किहां होली ? किहां जव रोटी गहूं पोली रे ? ॥ ८८१ ॥
अंतर दीसइ एवड्डु, पटउलउं कछोटी रे ? ।
अंतर दीसइ एवड्डु, जेवडउ पापा नइ त्रोटी रे ॥ ८८२ ॥
किहा नाटईउं नइ किहां फाली ? किहां रूपवंत नइ हाली रे ? ।
किहां राजकुमरु किहां माली ? किहां कोडीआ मोती जाली रे ? ॥८८३॥
अंतर दीसइ एवड्डु, सारू हीर नइ सूतली रे ।
अंतर दीसइ एवड्डु, जेवडउ मानव पूतली रे ॥ ८८४ ॥
अंतर दीसइ एवड्डु, जेवडउ सीह सीआल रे ।
अंतर दीसइ एवड्डु, जेवडउ साकर राल रे ॥ ८८५ ॥
अंतर दीसइ एवड्डु, किहां गरूड किहां मसु रे ? ।
अंतर दीसइ एवड्डु, किहां गजनइ किहां ससउ रे ? ॥ ८८६ ॥
अंतर दीसइ एवड्डु, जेवडउ मानव ढोर रे ।
अंतर दीसइ एवड्डु, जेवडउ साधु नइ चोर रे ॥ ८८७ ॥
अंतर दीसइ एवड्डु, किहां हार किहां दोर रे ? ।
अंतर दीसइ एवड्डु, किहां बग किहां मोर रे ? ॥ ८८८ ॥
अंतर दीसइ एवड्डु, किहां गंगानु वाह रे ? ।
अंतर दीसइ एवड्डु, किहां गामनु प्रवाह रे ? ॥ ८८९ ॥
अंतर दीसइ एवड्डु, किहां चंद्रमा किहां राहु रे ? ।
अंतर दीसइ एवड्डु, आक छाया वृक्ष छांह रे ॥ ८९० ॥
किहां ए कूबड किहां नल ? अंतर दीसइ एह रे ।
आश्चर्य पामिउ ए देखी, ते नल रूपवंत देह रे' ॥ ८९१ ॥

दूहा

कूबडउ आविउ रायसभाइ, साथिइ आविउ बंभ ।
तेहनू स्वरूप को नवि लहइ, कुब्जकनु मोटउ दंभ ॥ ८९२ ॥

कुशल ब्राह्मण तव कहइ, 'संभलु दधिपर्ण राय ! रे ।
तमारी आज्ञा जउ हुइ, गीत गाउं मझ ताय !' ॥ ८९३ ॥
आज्ञा मागी रायनी, गीत गाइ रसा[40-B]ल ।
भलइ कंठिइ राग आलवइ, ते लहइ सघली चाल ॥ ८९४ ॥
हावभाविइ करी ते नाचइ, माहिलु कहइ संकेत ।
तिम तिम कुब्जक मोही रहइ, सुणतइ अति गहगहंति ॥ ८९५ ॥
कुशल ब्राह्मण दूहु कहइ छइ ।
'निसत्त्व निर्दय निस्त्रप धूर्तमांहि रेह ।
अबला नारी तेहनइ नलइ दीधु छेह ॥ ८९६ ॥
रानमाहिइ एकली, वीसासी गयु तेह ।
जाता पग तेहना किम वहिया ? दूहु कहिउ एह ' ॥ ८९७ ॥
कूबडउ तव एहवूं सुणी, रडइ अति घणउं तेह ।
दवदंती मनि संभरी, सालइ अति घणउ नेह ॥ ८९८ ॥
पूछइ ब्राह्मण, 'सिइ रडु ? कहु कूंबडा ! मज्झ ।
सिइ दुख तमनइ ऊपजइ ? सिउ एवडु मोइ तुज्झ ?' ॥ ८९९ ॥
कूबर कहइ, 'बंभण ! सुणउ, तमे गान कीधउं रसाल ।
तह्मारु कंठ रूअडु, पुहचतु भलु विशाल ॥ ९०० ॥
सरस दूहइ लीणीउ, अरथ कहु सुविचार' ।
कुशल ब्राह्मण कहइ तेहनइ, 'सुणि न तूह विचार ॥ ९०१ ॥
दधिपरण राय भीमनइ, दूत मोकलिउ कांई काजि ।
तेणइ तिहां वार्त्ता कही, कुब्जक आविउ अम राजि ॥ ९०२ ॥
ते नलनु सूआर छइ, महा चतुर गुणवंत ।
कलाइ करीनइ आगलु, महा महुकम बलवंत ॥ ९०३ ॥
गजशिक्षा तेहनइ आवडइ, सूर्य आतपिइ पाक ।
शरीरइ छइ कूबडु, पण विद्यानु नही वांक ॥ ९०४ ॥

दूतीइ भीमरायनइ कहिउं, ते सुणीउं दवदंति ।
हईआमांहिइ गहगही, तव स्त्री विमासइ चींति ॥ ९०५ ॥
सुताइ पितानइ कहिउं–नल जोवरावु शुद्धि ।
को एक अनुचर मोकलिउ, मझ ऊपनी छइ बुद्धि ॥ ९०६ ॥
दवदंतीइ एहवूं कहिउं, भीमराय विचारइ मन्नि ।
जोवरावूं हुं जामाता, तु सुख ऊपजइ तन्नि ॥ ९०७ ॥
विमासी राय मझं [41-A] कहिउं, हूं मोकलिउ जोवा काजि ।
दवदंती अंदोइ धरइ, संभलि कूबडराज ! ॥ ९०८ ॥
नल मेल्हीनइं नीसरिउ, अबला वन मझारि ।
ते नारी पीहरि रही, पितानइ आधारि' ॥ ९०९ ॥
कूबडइ पूरव परि कही, 'नल पुहुतु सुरलोइ ।
हूं सूआर तेहनु खरु,' एहवूं कहीउं सोइ ॥ ९१० ॥
हईआ साथिइ प्रेम धरी, भवनि तेडिउ तेह ।
मज्जन करावी प्रीसींउं, सूर्य रसवती जेह ॥ ९११ ॥
ब्राह्मणनइ नलइ आपीउं सोवन टंका लाप ।
आगता स्वागति घणी, मींठाबोलु द्राख ॥ ९१२ ॥
तिहांथी ते पाछउ वलीउ, आविउ भीमनइ ठामि ।
सवि संबंध तेहनइ कहिउ, दवदंती सुणइ जाम ॥ ९१३ ॥
वाम अंग फरूकीउं, नारीनइ मनि हर्ष ।
नल वल्लभ सही ते हुइ, चित्तिइ हऊउ प्रकर्ष ॥ ९१४ ॥

ढाल । देशाख । खडीउ रे गु०

दवदंती कहइ, 'संभलु तात ! ए तु असंभम सुणीइ ।
सूर्यपाक रसवती जे जाणइ, नल विना को न गणीइ रे ॥ ९१५ ॥
कंत कोडामणु नलजी वाहलु, तेहनइ अहां तेडावु ।
तमनइ तातजी ! घणूं अ कहूं छउं, कोइ मोकली कहिवरावु रे ॥९१६॥ कं.

अगिन नेष्टा जोउं स्मामी, ते नल जउ अट्टा आवइ ।
हूं उलखीसि भर्त्तार माहराजनइ, मनोरथ सघला फावइ रे' ॥ ९१७ ॥ कं.
भीम कहइ, 'सभलि दवदंती ! स्मयंवरा कीजीइ ।
तेडावीइ दधिपर्ण राजानइ, भीमपुत्रीनइ दीजइ रे ॥ ९१८ ॥ कं.
ते आवंता कुबडउ आवसिइ, हुसिइ राय संघातिइ ।
फोकट कहण कहीसिइ एहवूं, वर जोईइ छइ सुजाति रे ॥ ९१९ ॥ कं.
स्त्रीपराभव देखी नही सकइ, जाणीसिइ ते वारउ ।
एणी विधिइ पसूनइ दुग्ग ऊपजइ, जु नल हुइ कैवारउ रे' ॥ ९२० ॥ कं.
एहवू चीतवी रथ [41 B] मोकलीउ, जिहा छ दधिपरण राय ।
आवीनइ राजानइ कहइ, कर जोडी प्रणमइ पाय ॥ ९२१ ॥ कं.
'भीमरायनइ सुता छइ सारी, दवदंती इसिइ नामिइ ।
मंडाविउ स्मयंवरा पिताइ, तमे तेडिया तेणइ ठामि रे ॥ ९२२ ॥ कं.
चैत्र सुदिनूं पांचमि लग्न, तेणइ दिनि आवेयो' ।
ते दूत आविउ चउथि तणइ दिनि, 'कुब्जकनइ तमे ल्यावेयो' ॥ ९२३ ॥ कं.
'पुहुर छ सातमाहि कुंडिनपुरिइ,' चीतवइ राय, 'न जवाइ ।
दधिपर्णनइ चिंता मनि ऊपनी, 'न जईइ तु लजवाइ रे' ॥ ९२४ ॥ कं.
कुब्जक पूछइ दधिपरण रायनइ, 'सी चिंता छइ तमनइ' ।
जे काई हुई ते कहु न स्मामी ! कहिता लाज नही मझनइ रे' ॥ ९२५ ॥ कं.

चउपई

'सुणि तूं कुब्जक ! विद्यावंत ! चिंता ऊपनी एहवी चीति ।
भीमसुता छइ जे दवदंती, बीजा वरनी इच्छा चीति ॥ ९२६ ॥
स्मयंवरा मंडप माडिउ सार, चैत्र सुदि पाचमि लगन अपार ।
भीमइ मोकलिउ छइ नर तेडवा, ते सुणली लागा हरखवा ॥ ९२७ ॥
मझनइ इच्छा छइ तेह तणी.' कुब्जकनइ कहइ तव भूधणी ।
तव चिंतइ नल इम सुजाण, 'जउ ऊगइ पश्चिमइ भाण ॥ ९२८ ॥

समुद्र मर्यादा मेल्हइ तोइ, सती सील न चूकइ जोइ ।
अन्य पुरुप हईइ नवि धरइ.' कुब्जक तव विमासण करइ ॥ ९२९ ॥
'जउ बीजी वार स्वयंवर हुसिइ, ए दवदंती बीजु परणेसिइ ।
तु सिउं कीजइ प्रमदा मोह ? निष्कारण धरिवु अंदोह ॥ ९३० ॥
मन राखइ ते थोडी नारि, कंत छंडीनइ हींडइ व्यभचारि ।
असती नाम कहावइ घणउं, मान महुत्व जाइ तेह तणउं ॥ ९३१ ॥
चंचल अछइ स्त्रीनूं मन्न, जेहवू राधिउं हुइ अन्न ।
प्रहृ तणउ कोइ न लहइ पार, हईइ दुष्ट सदा मनि खार ॥ ९३२ ॥
सूर्यचरित्र ताराचरित्र, ग्रहचरित्र नइ राहुचरित्र ।
बुद्धिवंत जाणइ भला एह, नारी मननु न लहइ छेह ॥ ९३३ ॥
नर जाणइ [42-A] नारी आपणी, इच्छा हुइ बीजा तणी ।
फोकट करइ नारीसिउं नेह, साहमूं आपणउ दमिवु देह ॥ ९३४ ॥

दूहा

एक तुरिया नइ महिलीआ, ए बिहु फोक ज वेठि ।
ज्यारइ जेहवु सागडी, त्यारइ तेह जि हेठि ॥ ९३५ ॥

चउपई

दवदंती एहवूं नवि करइ,' मोटउं आश्चर्य मनि तव धरइ ।
'कल्पना करूं छउं हूं मन तणी, सतीमांहि रेखा तेह तणी ॥ ९३६ ॥
कुण परणइ मझ जीवता थका ? अन्य न वरइ सुंदिरि बालिका' ।
रायनइ कहइ, 'चिंता कांइ करू ? तमे जावानी सजाई करु' ॥ ९३७ ॥
हरखिउ राजा तेणइ समइं, तेणी वातिइ राय मनि अति गमइ ।
रथि जोतरीआ सारा तुरंग, केकाण दीसइ अतिहि उत्तंग ॥ ९३८ ॥
छत्रधर नइ चमरधर वेह, थईधर नइ कुब्जक जेह ।
छट्ठउ तिहां दधिपरण राय, रथिइं वइठा रूडइ ठाइ ॥ ९३९ ॥

रत्नकरंडीउ श्रीफल लेइ, कडिइ बांध्या वेह्र तेह ।
पंच पदनूं ध्यान ज धरइ, कूबडउ रथखेटइ संचरइ ॥ ९४० ॥
पवन वेगिइ चालिउ रथ जाइ, एहवइ पछेडी ऊडी वाइ ।
'राखि रथ कुब्जक ! क्षण एक.' 'पंचवीस जोयण चाल्या छेक' ॥ ९४१ ॥
एणइ कहणे भुइ एनली अतिक्रमी, कुब्जक कहइ तेतली ।
वाटिइ रायइं वहेडानु वृक्ष दीठउ, कहइ कुब्जकनइ दक्ष ॥ ९४२ ॥
राजा कहइ, 'संभलि कूबडा ! तमे विद्याइ छउ अति वडा ।
अणगणइ संख्या हूं कहूं तुझ, ज्ञानवंत जांणेजे तूं मझ' ॥ ९४३ ॥
कूबड कहइ, 'सुणि राय ! विचार, एक मुष्टिनु देउं प्रहार ।
समकालइ सघला ते पडइ, तुमथी मझ विद्या अधिकी चडइ' ॥ ९४४ ॥
एक मुष्टि मेहली तेणी वार, कूबडइ कीधु ढग अपार ।
राइ कहिया सहस अढार, तेतला हऊआ ते फल सार ॥ ९४५ ॥
अश्व-गजकला रायनइ दीध, कूबडइ गणितकला ते लिद्ध ।
कुंडिनपुरिइ रथ आवी रहइ सूर्योदयइं, भीमराय गहगहइ ॥ ९४६ ॥
सुहणउ दीठउं तत्र दवदंति, विचार कर[42-B]इ ते अतिहि चींति ।
आवी प्रणमइ भूपना पाय, 'एक विचार करु नरराय ॥ ९४७ ॥
जाणउ कौशलपुर आराम, को एक देखी देखाडइ अभिराम ।
फलिउ फूलिउ रूडु सहिकार, देखी चडी हूं सुरतरु सार ॥ ९४८ ॥
पहिलू पंखी चडिउ अति श्याम, भ्रमुकइ पडीउ तरुथी ताम ।
कमल आपिउं देवीइ मझ हाथि, एतलइ जागी पृथवीनाथ ॥ ९४९ ॥
आम तातजी ! फल कहु सार,' भीमराय तव करइ विचार ।
'पुण्यरूपिणी देवी कही, राज्यलोभ ते वाडी सही ॥ ९५० ॥
अंबचडण ते पदवी जोइ, पापिइ पडीउ कूबर सोइ ।
रूडुं फल हुसिइ तूं जाणि, देवगुरुनूं ध्यान हईइ आणि ॥ ९५१ ॥

आज मिलेसिइ तुझ भरतार, ते नल विश्व तणउ आधार'।
रलीयायत थई एणइ वचनि, सुख संतोष पामी मनि ॥ ९५२ ॥
पोलि पुहुतु दधिपर्ण राय, वधामणी लेवा भीम भणी जाइ।
'जेहनी वाट जोतां अतिघणी, आस पूगी छइ स्वामी! तम तणी' ॥९५३॥
राजा भीम आविउ तेह भणी, गाढइ महोच्छवि लाव्या भूधणी।
दवदंती मनि हरख न माइ नगरलोक रलीयायत थाइ ॥ ९५४ ॥
दधिपर्णनइ आव्या आवास, पूछइ भीम मन तणइ उल्हासि।
'छ पुहुरे तमे आव्या किम?' दधिपर्ण भणइ, 'सुणि तूं भीम ॥ ९५५ ॥
कूबडउ छइ अम पासि सूआर, ते छइ चतुर, अछइ सुविचार।
एहनइ महिमाइ अमे आवीआ, विद्यावंत माटिइ ल्यावीआ' ॥ ९५६ ॥
कहइ भीम कुब्जकनइ एह, 'आतपि रसो नीपाउ जेह'।
ते बोलइ अह्मे आया रुली, दवदंती सयंवर जोवा वली ॥ ९५७ ॥
पाणिग्रहण उच्छव करउ, पछइ रसोनु आदर धरु।
जेह काजि आव्या छउ अमे, ते उच्छव संपजावु तमे' ॥ ९५८ ॥
भीमिइ कीधु आदर घणु, प्रारंभ मांडिउ रसो तणु।
तउ तेणइ नीपाई रसवती, जमिउं सहू ए मनि भावती ॥ ९५९ ॥
दवदंती विचारइ इसिउं 'नल विना विद्या न हुइ कसिउं।
एह वात गिरूए गुरइ क[43-A]ही, ए विद्या जाणइ नल सही' ॥९६०॥
थाल भरी आपी रसवती, ते आरोगइ दवदंती सती।
मन सिउं कीधु निश्चय खरु, पितानइ कहइ, 'उच्छव करु' ॥ ९६१ ॥
भीमराय कहइ तव एकंति, 'अम मन तणी टालु भ्रांति।
मानु वात कूबडा! तमे, संतोष पामूं सूधवट अमे' ॥ ९६२ ॥
चलतूं कूबड कहइ, 'सुणु भीम! नल सरिखु को नहीं अहां सीम।
नल राजा ते इंद्र समान, सिउं दीजइ तेहनइ उपमान?' ॥ ९६३ ॥

जउ हूं होउं नल भीमराय ! कांइ न मानउं, मझ सिउं जाइ ? ।
तमे तु भक्ति करउ मझ घणी, हित चींतवउ जमाई भणी ' ॥ ९६४ ॥
विमासइ दवदंती तेह, ' निश्चइ नल ए नथी संदेह ' ।
भीम कहइ, ' कूबड ! अवधारि, नल समु को नथी संसारि ' ॥ ९६५ ॥
' मझनइ नल थाया तणी, वांछा छइ तम चित्त ।
तु हूं नल हवडा होईसि, मझनइ दिउ दवदंति ' ॥ ९६६ ॥
पितानइ कहइ दवदंती, मनिथी मूकी लाज ।
' माहरइ डीलइ एह तणी, अंगुलीइ फरसइ नलराज ॥ ९६७ ॥
अऊठ कोडि रोम उद्धमइ, तव जाणीसिइ सत्य ।
एह दीठइ मझ लोचन, विकाश हुइ चित्त ॥ ९६८ ॥
नेह ते नयणे जाणीइ, काया मांहि नयण सार ।
आपणा वाहलानइ जोअंता, तृप्ति न पामइ लगार ॥ ९६९ ॥
नेह ते दोहिलु अछइ, तेहथी जीवनइ दुख ।
दीठा पाखइ तेहनइ, न हुइ जीवनइ सुख ॥ ९७० ॥
आखु दिन तेहनी चिंता, संभरई क्षणि २ तेह ।
उत्तमस्यूं मेलावडु हुज्यो जगदीस नेह ॥ ९७१ ॥
जनम लगइ विहडइ नही, भली नारी जे होइ ।
एतला ऊफरूं सार नथी, राखइ ज वरलु कोइ ' ॥ ९७२ ॥

चउपई

हसी कहइ कुब्जक तेणी वार, ' तूं फरसावीसि किम सुविचारि ? ।
सतीपणानी जाणी वात, प्रीठी मइ हवइ ताहरी धात ' ॥ ९७३ ॥
अंगुलफरस कराविउ ताणि, राइ कूबड पाहिइं पराणि ।
[43-B] रोमाचित दवदंती थई, भावठि सघली नाहसी गई ॥ ९७४
सविहुनइ मनि आश्चर्य थाइ, ' ए सिउं कीधउं दवदंती माइ ? ।
कूबडा ऊपरि मन मिउं हवूं ? एहनूं रूप दीसइ अभिनवूं ' ॥ ९७५ ॥

चूक पडइ छइ नारीनइ धणीं, सहू को वात करइ तेह तणी ।
दवदंती मनी विभ्रम हुउ, विकलावस्था सपनी जोउ ॥ ९७६ ॥
' ए नारीनइ ए नवि घटइ, ' हईआमांहिं सहू को नटइ ।
' रत्नइ रत्न भजीइ सार, खोटउ हीरु नवि भजीइ लगार ' ॥ ९७७ ॥
रे किरतार कुंबुद्धिया कुजोडियां जोडंति ।
जे फल जाईइ तरूअरे ते वेले लागंति ॥ ९७८ ॥
माहोमांहिइ वात ज करइ, चित्तिइ घणेरूं सहू दुख धरइ ।
पण दवदंती मनि निश्चल तेह, चातक वंछइ जिम महा मेह ॥ ९७९ ॥
जेहना गुण जेहनइ हईइ वसइ, ते देखी तेहना नयणा हसइ ।
जे ऊपरि प्राणी रातु घणउं, नाम मेल्हइ कहु किम तेह तणउं ? ॥ ९८० ॥
जेहनइ जेहस्यूं बावउ रंग, तेहनइ मनि ते तेह जि चंग ।
जे देखी प्राणी अति ठरइ, निशिदिनि तेहनइं चित्तिइ धरइ ॥ ९८१ ॥
दवदंती मनि चिंतइ इस्यूं, ' मझ चित्तिइ ए रत्न ज जस्यूं ।
नल वल्लभ ए सुधु सही, राजलोकनइ ए वात ज कही ॥ ९८२ ॥
जउ सूकी तुहइ बुलसिरी, जउ वींधी तुहइ मोतीसिरी ।
जउ डुहलं तुहइ गंगाजल जाणि, जउ थोडी तुहइ सपुरिस वाणि ॥ ९८३ ॥
जउ जूनु तुहइ भलु अगर, जउ सूनूं वसमूं तुहइ नगर ।
जउ नान्हूं तुहइ प्रवहण, जउ खंड हुइ तुहइ सूर्यग्रहण ॥ ९८४ ॥
मेह अंधारिउ तुहइ दीह, अशक्तपणानु तुहइ सीह ।
थोडी तुहइ सूर्यनी प्रभा, जउ संकीर्ण तुहइ राजसभा ॥ ९८५ ॥
जउ कालु कूबडउ अतिरंक, तुहइ नल ए खरु निकलंक ' ।
एहवूं कही पालव झालीउ, ' भलु बोल वाल्हइ पालीउ ॥ ९८६ ॥
मइ आणिउ तुझस्यूं वीसास तइ हू [44-A] मूंकी रानि निरास ।
मझनइ तु तुमारी आस, संभलि वाहा ! लील विलास ॥ ९८७ ॥

जउ नरवहिवानी नुहुती आहि, स्नेह न मंडीइ मन उच्छाहि ।
प्रीति ऊपाई कीजइ परिहार, ए उत्तमनु नुहइ आचार ॥ ९८८ ॥
अवगुण सिउ तुझ आविउ हईइ ? मंडी माया दूरि नवि रहीइ ।
कीधु कसिउ नथी अपराध, सिइ दुख दीधा तइ रे अगाध ? ॥९८९॥
हजी ताहरूं मन नवि वलइ, विण बोलिइ जीवडउ टलवलइ ।
मझ ऊपरि ताहरु नथी रंग, म्या मारिइ तूं थयु विरंग ? ॥ ९९० ॥
फोकट माया चित्ति हूं धरूं, कालावाला घणा तुझ करूं ।
ताहरा मनमाहि नथी स्नेह, कां दीइ वल्लभ ! मझनइ छेह ? ॥ ९९१ ॥
फल पाखइ नवि भंजीइ वृक्ष, विनय पाखइ नवि भजीइ शिष्य ।
लावण्य पखीइ नवि भजीइ रूप, जल पाखइ नवि भजीइ कूप ॥ ९९२ ॥
पाणी विना मोती नवि शोभीइ, विकसिया विण फल नवि शोभीइ ।
सुभट पाखइ नवि शोभइ संग्राम, लोक विण न शोभइ नगर ग्राम ॥९९३॥
यौवन विण नवि भजइ श्रृंगार, नवि शोभइ बल विण अहंकार ।
वरखा विना नवि भजीइ मेह, चित्तरंग पाखइ न भजीइ स्नेह ॥ ९९४ ॥
अंतरंग जे माया धरइ, मुहडानी मलि मलि नवि करइ ।
सुखदुख घणउं जाणइ जेह, प्रीतूं माणस कहीइ तेह ॥ ९९५ ॥
अवसर वेला जाणी मिलइ, रीस धरी वली त्यारइ वलइ ।
नवि आपइ कहीइ तस छेह, प्रीतूं माणस कहीइ तेह ॥ ९९६ ॥
रे स्वामी ! म देईसि अवतार, तेहमांहि म देईसि मानव सार ।
जनम म देईसि तिहां तूं कसिउ, एह बोल मझ हईइ वसिउ ॥ ९९७ ॥
जन्म हुइ ज्यु क्यारइ वली, माया म मंडसि उतावली ।
जु कहिसिउं मंडाइ मोह, स्वामी ! करे तूं, राख विछोह ॥ ९९८ ॥
तेहमाहि सगुण सुवेध सुजाण, करइ सहू को तेहनूं वखाण ।
गंभीर गिरूउ नइ गु[44-B]णवंत, बुद्धिपराक्रमी अति बलवंत ॥ ९९९ ॥

पंडित डाहु विद्यावंत, नहीं छलछलीउ कहिवाइ संत ।
गर्व न धरइ हईआमांहि, सुंदर देखीतु प्रवाहि ॥ १००० ॥
एहवु पुरुष पामइ तु नारि, पूजा कीधी हुइ संसारि ।
सविशेषु प्रेम नरनु धरइ, जु नारी देखी हईडउं ठरइ ' ॥ १००१ ॥
दवदंती कहइ नलनइ एह, ' हईआस्यूं धरु स्वामी ! नेह ।
तमनइ कतूहल मझ विखवाद, प्राणनाथ ! हवइ करू प्रसाद ॥ १००२ ॥
कीडी ऊपरि सी कटकई ? तमारी माया ते किहा रे गई ? ।
दया धरु मझ ऊपरि घणी, पगि लागूं दासी तम तणी ' ॥ १००३ ॥
एणइ बोलिइ हऊउ हर्ष, मननु वाधिउ अतिहि प्रकर्ष ।
एहवइ ऋतु छइ मास वसंत, उत्तम नर ते सुख विलसंत ॥ १००४ ॥

फाग

सुख ऊपजइ जिहां नर मनि, आवीउ वसंत मास,
वाडीमांहि आवी रमइ, हुइ चित्ति उल्हास ।
कुंद मुचकंद महमहइ, गहगहइ नाग पुन्नाग,
रूडइ कंठिइ आलवइ, वसंत भलु जिहां राग ॥ १००५ ॥
खर्जूर अर्जुन चंदन चंपक भलु सहिकार,
पंचम स्वर तिहां आलवइ कोइलि अ अपार ।
जांबू जंबीर वानीर कणवीर सारी केलि,
मालती माधवी सेवंत्री भली ते नागरवेलि ॥ १००६ ॥
दमणउ मरूउ सरवू अ सींसमि सींबलि साग,
करणां पलास नइ बहेडा केसूनी अति राग ।
नालीअरी द्राख दाडिमी बीजुरी नइ बोर,
बाउलि कयर नइ खीजडि जिहां दीसइ हींगोर ॥ १००७॥

ग्हवी वनस्पती पुरीइ, रूडु वाट वाय,
भमग गुजारव करइ, बुलसिरी जिहा जाइ ।
झीणा वस्त्र पहिरीट, वीणा वाईट हाथि,
रमवा जईइ वाडीए तेवटतेवडा साथि ॥ १००८ ॥

हींच हींडोलइ तिहा घणूं, एक देवगवइ [45 A] गान,
एक गीन गवरावद, एक मुखि आरोगइ पान ।
एक फूल चूटइ एक पल्लव, एक बइठा सयोग,
केल्हग एक जोरट ए, एक छइ सुख संगोगि ॥ १००९ ॥
छ रितुमाहि धिन धिन, ए रितु रूडी वसंत,
दवदंतीनू जेणी रतिइ टरीउं तेहनूं चींत ।
बार मास माहि धिन धिन धिन २ चैत्रह मास
जेणइ करी दवदंतीनी रूडी पूगी आस ॥ १०१० ॥

पनर तिथिमा पाचमि धिन धिन धिन ए सार
बेहू पक्षमा धिन २ अजूआलु पक्ष सार ।
ते वेला धिन धिन्नह हऊउ मेलापक सार
दवदंतीना मनोरथ सफल फलिया रे अपार ॥ १०११ ॥

चउपई

श्रीफलमाहिथी वस्त्र जेह, देवदूष्य पहिरीआ तेह ।
करंडमाहिथी लेई शृंगार, पहिरिउ अपूरव नवसर हार ॥ १०१२ ॥
कंदर्प सरिखु जेहवु नल रूप, पूरव रूप संपनूं नल भूप ।
दवदंती नल देखी करी, आलिंगन दीधउं ऊलट धरी ॥ १०१३ ॥
वेलि वृक्षनइ भीडी रहइ, प्रणाम करीनइ नलनइ कहइ ।
'नेह स्यूं वीसरिउ पूरव स्वामि ? बलिहारी जाउं तुझ नामि ॥ १०१४ ॥
जाता ताहरा किम पग वहिया ? बार वरस वियोगना थया ।
एसी मति ऊपन्नी तूंहनइ ? दया करेयो हवइ मूंहनइ ॥ १०१५ ॥

पालवइ बाधी मातपिताइ, इम मेहलीनइ नर को जाइ ? ।
स्वामी हूं वीसारी भली !' दवदंती कहइ घणूं वली वली ॥ १०१६ ॥
नल कहइ ' नारी ! सुणउ रे तमे, विचारवंत छउं गाढा अमे ।
नाम न मेल्हउं हूं तुझ नारि, जाणेजे निश्चइ सुविचारि ॥ १०१७ ॥
हुणार वस्तु ते अधिकी होइ, तिहां कहिनूं [45-B] डाहापण न हुइ, जोइ' ।
आपापणा संबंध कहिया घणा, संतोप पाम्या वेहू जणा ॥ १०१८ ॥
रलीयायत थयू भीमराय सहू, उच्छव हुइ अति घणउ बहू ।
सिंहासणि वइठउ नलराय, भीम आवीनइ लागइ पाय ॥ १०१९ ॥
प्रतीहारनी परिइं भीम रहइ, दधिपर्ण तिहां एहवूं कहइ ।
'अपराध कीधु जेह अजाणि, ते सवि खमवूं दया मनि आणि' ॥१०२०॥
वलनूं बोलइ नलकुमार, ' तूं तु माहरइ हऊउ आधार ।
मित्र सहोदर भाई माहरु, उसीकल नहीं थाउं ताहरु' ॥ १०२१ ॥
एहवइ वसंत सार्थवाह, पूरविइ जेह तु आविउ त्याह ।
नारी संबंध कहिउ तेहनइ, संभरइ गुण उत्तम जेहनइ ॥ १०२२ ॥
धनदेव आविउ तिहां गुणवंत, दवदंतीनइ हर्ष थयु चिंति ।
तेहनी भक्ति तिहां अतिहि किद्ध, घणउं बहुमान तेहनइ दिद्ध ॥१०२३॥
रितुपरण राजा नइ चंद्रयशा, मासीना गुण अतिहि वस्या ।
चंद्रवती संघातिइ जेह, तेडाव्या आदर करी तेह ॥ १०२४ ॥
भीमराज्यइ सहू को रहइ, मनवंछित रिद्धि सघली लहइ ।
भीमनी सभाइ आविउ देव, आश्चर्य पामिउं सहू ततखेव ॥ १०२५ ॥
संघातिइ छइ बहुली रिद्धि, वइठउ आवी सभामध्यि ।
दवदंतीनइ कहइ कर जोडि, 'तुझनइ प्रणामनूं मझ कोड ॥ १०२६ ॥
विमलमति जे तापस हतु, कंदमूल हूं नित सेवतु ।
तइ प्रतिबोधिउ हूं सुविचारि, सांभलि तूं गुणवंती नारि ॥ १०२७ ॥

सौधर्मिइ देवलोकनी रिद्धि, पामिउ जे हूं ताहरी बुद्धि ।
[46 A]श्रीकेसर देव माहरूं नाम, केसर नामिइ विमान ज ठाम ॥१०२८॥
जगदीश्वरनइ धर्मिइं करी, आहवी रिद्धि अनोपम वरी ।
ए सहू ए ताहरु प्रसाद, मझनइ नथी कसिउ विषवाद ' ॥ १०२९ ॥
वृष्टि कीधी सुवर्ण सात कोडि, पाए लागउ दोइ कर जोडि ।
ते देवता निज ठामइ गयु, नगरलोक रलीयायत थयु ॥ १०३० ॥
दधिपर्ण नइ ऋतुपर्ण राय, वसंत भीम सहू सेवइ पाय ।
नलनइ कीधु राज्याभिषेक, नीपजाविउ सविहुइ विवेक ॥ १०३१ ॥
घणा मास तिहां रहिआ सहू, सैन्य समुदाय मेलीउ बहू ।
ससरानइ श्रीनल तव कहइ, ' ठामि जावानूं मन अम लहइ ॥ १०३२ ॥
कोशला नगरीइ जाउं अमे, आज्ञा दिउ स्वामी ! हवइ तह्मे ।
जउ कहु तु जईइ अह्म वासि,' एहवूं पूछइ मन उल्हासि ॥ १०३३ ॥
भीमराय तव करइ विचार, ' रहइ एह जु तु राज्य सार ।
राखींतइ एहवइ नवि रहइ, परवसिपणउं ए तु नवि सहइ ॥ १०३४ ॥
लीधउं महूरत ज्योतिषी तेडि, ' सैन्य सज्ज करु, म करु जेडि ' ।
कौशला भणी पीआणउं करइ, दवदंती दुख मनि अति धरइ ॥ १०३५ ॥
पुत्री आवी माता भणी, माहोमाहि माया छइ घणी ।
हित सीखडी दीधी तेह, ' देव गुरु धर्मस्यूं करयो नेह ' ॥ १०३६ ॥
मात-पितानइ लागी पाय, अश्रुपात धरती ते जाइ ।
सुखासणि बइठी दवदंती, जगगुरु धर्मनी आस्था चींति ॥ १०३७ ॥
वुलावा आवइ भीमराय, दवदंतीना सहू गुण गाइ ।
रूडइ महूरति निषधपुत्र, जेहनूं चित्त अछइ अतिहि पवित्र ॥ १०३८ ॥
भीम आज्ञा मागी वलइ, सैन्य सघलं तिहां टोले मिलइ ।
लीलागति हस्ती संचरइ, मद तणु प्रवाह अतिहि झरइ ॥ १०३९ ॥

परचक्र तिहां अतिहि स्कलइ, शत्रुवर्ग मोग्र नि[46-B]दलइ ।
सैन्य सुभट लेई दवदंति, चालंतइ पंच पद समरंति ॥ १०४० ॥
कोशला नगरीइ नल आवीआ, उपवनमांहि ते ठावीआ ।
तिहां सघलं मेहलिउं मेल्हाण, नलरायनी वरतइ आण ॥ १०४१ ॥
तिहा राज्य करइ कूबरराय, नलराय तणु लघु भाइ थाइ ।
अनिर्गलपणइ राज्य ज करइ, कसिउ भय हईइ नवि धरइ ॥ १०४२ ॥
कूबरिइ सांभलीउं सैन्य जसिइ, महाकंपरव हऊउ तसिइ ।
'एहनूं भाग्य प्रकटीउं आज, ए तुं लेसिइ माहरूं राज' ॥ १०४३ ॥
प्रजा सहू को साहमूं गयूं, आणंदित सहूनूं मन थयूं ।
नलराइ दीधउं अतिहि मान, सवेहू आप्या प्रत्येकइ पान ॥ १०४४ ॥
नगरमांहि आवीआ तेह, भला उच्छव कीधा छइ जेह ।
ठामि ठामि नाटक मंडाण, दीन दान तिहां अतिहि सुजाण ॥ १०४५ ॥
कूबरनइ मनि झंक पईठ, आ असंभम आश्चर्य दीठ ।
'किसी अवस्थाइ ए संचरिया ? आव्या किम सैन्यइ परिवरिया ? ॥१०४६॥
विधात्रा करइ ते न करइ कोइ, सघला दिन सरिखा नवि होइ' ।
एहवूं चींतवइ कूबर भ्रात, करम तणी छइ मोटी वात ॥ १०४७ ॥
नलइ कहाविउं, 'कूबर ! तह्मे, द्यूतइ हराविआ आगइ छउं अह्मे ।
तमे त्रिणि खंडना धणी थया, अम पाछिला दिन वही गया ॥१०४८॥
वली रमसिउं कूबर भाय ! कइ ताहरी माहरी रिद्धि जाइ ।
माहरी रिद्धि तमे लेइज्यो, नहींतरि तह्मारी रिद्धि देइज्यो' ॥ १०४९ ॥
कूबर चिंतइ त्यारइ जेह, 'संग्राम करसिइ मझस्यूं एह ।
घणउं सैन्य छइ श्रीनलह तणउं, माहरूं सैन्य थोडेरूं गणउं ॥ १०५० ॥
जोउं वली सी परि हवइ थाइ ?' रमवा बइठा बेहू भाइ ।
प्रजा विमासइ तव ते इसिउं, 'रमी वली ए करसिइ कस्यूं ? ॥ १०५१ ॥

आगइ रम्याना फल घणा लहि[47-A]या, नलराइ परि परि दुख सहिया।
हजी प्रकृति एहनी नथी टली, जू रमिवूं मांडिउं एणइ वली ' ॥ १०५२ ॥
नल कूबर तिहां बइठा बेउ, दाहा नांखइ अति भला तेउ ।
नलइ कूबर हरावीउ, दस अंगुली मुखि करावीउ ॥ १०५३ ॥
(भाग्योदय जेवारइ होइ, तेहनइ वसि आवइ सहू कोइ ।)
कूबरनी लीधी सवि रिद्धि, दिशा चडतइ रूडी सुबुद्धि ॥ १०५४ ॥
दवदंती कहइ रायनइ इसिउं, ' कूबरनइ उवेखु कसिउं ? ।
दिउ स्वामी ! तमे एहनइ मान, तम राज्यिइं थायु प्रधान ॥ १०५५ ॥
नान्हउ ए स्वामी ! लहूअडउ, लघु बांधव गुणे करी छइ वडउ ।
भाई तमारु, स्वामी ! एह, एहसिउं तमे म देखिउ छेह ' ॥ १०५६ ॥
नारी तणउं कहण मनि धरी, ' स्त्री तणी ए बुद्धि छइ खरी ।
गमइ तेहवु पण भाई एह, कहिवासिइ निषधना बेह ॥ १०५७ ॥
एह तु नान्हु अजाण, एवडूं न करइ जु हुइ जाण ।
उत्तम लक्षण कहिया इस्या, चंद किरण हुइ निर्मल जसिया ॥ १०५८ ॥
अवगुण जाणी गुण ज करइ, चित्तिमाहि अधिकेरु धरइ ।
तेहनइ लजावइ करी उपगार, ते ऊपरि क्रोध नाणइ लगार ॥ १०५९ ॥
जउ आपणउ ते वइरी होइ, रूडूं करीजइ निश्चइ सोइ ।
भलू करंता भलूं ज होइ, एह वात जाणइ सहू कोइ ॥ १०६० ॥
कही नमवावइ उत्तम जेह, निरगुण लही करइ तसस्यूं नेह ।
कुवचनि न दूहवइ तेहनइ सही, उत्तमनइ मनि दीर्घ रोस ज नही ' ॥१०६१॥
नलराइ चित्ति रीस नवि धरी, साहमु अधिकु प्रसाद ज करि ।
कूबर ऊपरि आवी दया, युवराजानी कीधी मया ॥ १०६२ ॥
राइ मनसिउं मेल्हिउ रोष, प्रजा सहूनइ हवु संतोष ।
श्रीगरणा वुइगरणा मिली, प्रधान सहू विमासइ वली ॥ १०६३ ॥

राज्य तणउ अभिषेक कीजीइ, श्रीनलरायनइ शोभा दीजीइ ।
'आपणउ ठाकुर स्वामी एह, दानवंत गिरूउ गुणगेह' ॥ १०६४ ॥
शुभ महुरति अभिषेक ज किद्ध, मंडलीकनइ देश ज दिद्ध ।
भरत अर्ध भोगवइ सार, आण मनाव्या भूप अपार ॥ १०६५ ॥
दवदंती नलनु संयोग, भोगव[47-B]इ पंच प्रकारिइ सुखभोग ।
राज्य अनोपम पामिउं जेणि, न्याय धरम पालइ बहु तेणि ॥ १०६६ ॥
पूरव पुण्य तणइ पसाय, विलास करइ नवनवा राय ।
दान पुण्यनु महिमा जोइ, आण न लोपइ तेहनी कोइ ॥ १०६७ ॥
पुण्यइ पृथवीमांहि प्रसिद्ध, पुण्य थकी हुइ कार्यसिद्धि ।
पुण्यइ हुइ रूडी बुद्धि, पुण्यइ पौत्रादिकनी वृद्धि ॥ १०६८ ॥
पुण्यइ शरीरि नावइ रोग, पुण्यइ कुटंब तणु संयोग ।
पुण्यइ पलाणीइ भला तुरंग, पुण्यइ घरि उच्छवना रंग ॥ १०६९ ॥
पुण्यइ द्वारिइ हुइ गजघटा, पुण्यइ हुइ चंदनछटा ।
पुण्य लगइ हुइ अदभुत रूप, पुण्य लगइ तस मानइ भूप ॥ १०७० ॥
पुण्य लगे वसिवा आवास, पुण्य लगइ हुइ भोगविलास ।
पुण्य लगइ तेहनइ सौभाग्य, पुण्यइं तेहनइ बहुलं भाग्य ॥ १०७१ ॥
पुण्य लगइ हुइ भली कलत्र, पुण्य लगइ पामइ गिरुआ मित्र ।
पुण्य लगइ बहुलं जीवतव्य, पुण्य लगइ पामइ बहुला द्रव्य ॥ १०७२ ॥
पुण्य लगइ कुटंबमाहि संप, पुण्य लगइ नही कहिनु आकंप ।
पुण्यइ हुइ हईइ ज्ञान, पुण्य लगइ पामइ बहुमान ॥ १०७३ ॥
पुण्य लगइ आज्ञा अखंड, वसि हुइ मोटा शत्रु प्रचंड ।
पुण्य लगइ संपदानी कोडि, पुण्यइ सेवइ सहू कर जोडि ॥ १०७४ ॥
पुण्य संपजइ सघला काम, पुण्य तणूं छइ अपूरव नाम ।
पूरव पुण्य संचयथी जोई, त्रिणि खंडनु अधिपति सोइ ॥

श्रीनल राजा पालइ राज, आश्रित जनना सारइ कार्ज ।
सुख भोगवइ दिन तेहना जाइ, दवदंतीस्यूं माहलइ राय ॥ १०७६ ॥

गुडी । बोलइ रे कमलावती०

एक दिवस नलनु पिता रे, पामी जेणड रिद्धि ।
निषध देव तव चीतवइ, 'नलनइ जई रे देउं सुबुद्धि' ॥ १०७७ ॥
बोलइ रे तव देवता, 'तमे जागउ रे चतुर सुजाण ! ।
हूं आविउ कहिवा भणी, हऊउ अवसर रे ताहरु जाणि' ॥ १०७८ ॥ बो.
पूरव मोहइ देवता रे आवि[48 A]उ तेणइ ठाणि ।
'म करि विलंब पुत्र ! नल ! ए सहू अस्थिर रे हईइ जाणि ॥१०७९॥ बो.
कामभोगनइ भोगव्या, चेतु तमे नल ! पुत्र ! ।
मोहनी निद्रा तह्ने छंडउ, संसारइ रे विविध छइ चित्र ॥ १०८० ॥ बो.
ए लक्ष्मी नइ यौवन, जेहवूं पीपल पान ।
सुणि तूं पुत्र ! नान्हडा ! हवइ थाइ रे तूं सावधान ॥ १०८१ ॥ बो.
ए संसारिइं सहू चंचल रे, जेहवु सध्याराग ।
अनित्य स्वरूप जाणीट, जैसिउ भ्रमरी रे तेहनु पाग ॥ १०८२ ॥ बो.
समुद्रनी जिसी लहिरडी रे, थोडा मेहनु स्यंद ।
दृष्टि वायसनी चंचल, जेहवु हुइ रे ठारनुं बिंद ॥ १०८३ ॥ बो.
कूप अरहट संसारनु रे, भवि भवि पामी रिद्धि ।
तृष्णा व्यापइ अति घणी, नावइ रूअडु रे धर्मनी बुद्धि ॥ १०८४ ॥ बो.
मात पिता सहू ए सगू रे धरिवु मिथ्या रंग ।
स्त्री तणी माया कारिमी, जाणजे रे जैसिउ पतंग ॥ १०८५ ॥ बो.
विपयवाहीउ जीवडु, जाणे माहरी एह ।
नारी न हुइ आपणी, फोकट रे धरिवु नेह ॥ १०८६ ॥ बो.

संसारमांहिइं जे अछइं, ते सहू ए रे असार ।
जगगुरु केरु श्रीधरम, जाणेजे रे नल ! पुत्र ! सार ॥ १०८७ ॥ बो.

कीधु व्याप अति घणउ, विषयादिक जे चोर ।
मारग रूडु ते लोपइ, पृथ्वीइ रे अतिहि कठोर ॥ १०८८ ॥ बोलइ.

ताहरू स्यूं क्षत्रीपणउं ? सी सुभटाई तुझ ? ।
नथी राखतु सिइ आपणउं ? म थाए रे तूं अबूझ ॥ १०८९ ॥ बोलइ रे.

सवि दिन सरिखा न लेखीइ, रे हईआस्यूं तूं जोइ ।
शंबल करि न तूं हवइ, पुण्य पाप रे साथिइ होइ' ॥१०९०॥ बोलइ रे.

वचन सवे हईइ धरिया, वल्तूं कहइ नलराय ।
' तम कहिउं मझ मनि वसिउं, सत्य सत्य रे श्रीदेवराय!' ॥ १०९१ ॥ बो.

हईआमांहि जागीउ, ' भलइ पधारि[48-B]या तात ।
सुकृतारथ ए राज्य थयूं, रूडी कही रे धर्मनी वात ' ॥ १०९२ ॥ बो.

कर जोडी लागउ पाए रे, ' हूं हूतु रे अनाथ ' ।
नललोचनि प्रवाह झरइ, ' तमे कीधु रे स्वामी ! सनाथ ' ॥ १०९३ ॥ बो.

' पुत्रमोइ ते जीवता रे, नल ! दोहिलु थाइ ।
देवगतिथी मझ मोह नडइ, मोहडु पास रे शास्त्रिइ कहिवाइ ॥१०९४॥ बो.

मोह मद्य सरिखु कहिउ रे, घारिउ हींडइ जीव ।
परवसि थयु ते नवि जाणइ, पण नरक रे दोहिली रीव' ॥ १०९५ ॥ बो.

पुत्रनइ कही निज ठामिइ, पुहुतु निषधदेव ।
नलराय विचारइ हईडलइ, 'सारउं काज रे अश्वमेव' ॥ १०९६ ॥ बो.

चउपई

राज्य पालइ, पण लखु चित्ति, धरमकाम साचवइ ते नित्त ।
'एहवइ जिनसेनसूरि आवीआ, कोशला नगरीइ वनि भावीआ ॥१०९७॥

गणधर भव पूरव कहइ, सुकृतारथ रे आजनु दिन्न कि ।
गहिगहिउं रे रायनूं मन्न कि ॥ ११०९ ॥ गणधर.
'वियोग पडीउ एवडु मिइं कारणि ? कहु स्वामि !?'।
पूछइ तिहां ए दवदंती, विनय करी रे, सीस ज नाम कि ॥ १११० ॥ ग.
'सुणि तूं राय ! भव पाछिलु, मम्मणराय सुजाण ।
वीरमती तस पटराणी, आहेडइ रे दीठउ मुनिभाण कि ॥ ११११ ॥ ग.
बार घडी संतापीउ, तइ बांधिउं पापकर्म ।
आवीनइ वली पाए लागु, उचरीउ रे श्रावकधर्म कि ॥ १११२ ॥ ग.
तिहांथी सुररिद्धि भोगवी, ऊपना कुलि आहीर ।
दान दीधूं तइ भावस्यूं मुनिवरनइ रे तइ सारूं खीर कि ॥ १११३ ॥ ग.
तिहांथी युगलीआ ऊपना, पांचमइ भवि हूआ देव ।
छट्ठइ भवि निषधधरिइ नल नाम रे, सहू करइ सेव कि ॥ १११४ ॥ ग.
भीमकुलिइ अवतरी, दवदंती नामिइं एह ।
यतीपीडा माटिइ तूंहनइ बार वरसी रे वियोग जेह कि ॥ १११५ ॥ ग.
दूधदान महिमा थकी, पामी एवडी रिद्धि ।
दान दीधउं निष्फ[49 B]ल न हुइ,
मानवनइ रे ए रूडी सुबुद्ध कि ॥ १११६ ॥ ग.
पहिलइ भवि यती देखी, ऊपनु तूंहनइ द्वेष ।
यती पीटिउ तइ बार घडी, परिट परिइं रे पीडीउ वेष कि ॥ १११७ ॥ ग.
ते करम तणइ कारणइ, वरस बार वियोग ।
ते अंतराय कर्म टलिउं, वली हूउ रे तुझनइ संयोग कि' ॥ १११८ ॥ ग.
ते संभली राजा नल, संपनु वइराग रंग ।
गुरु चरणे आवी नमइ, 'साधुनांहिइं रे गिरूआ तमे चंग कि ॥ १११९ ॥ ग.
हूं हवइ स्वामी ! निःपाप थयु, कीधी गुरुनी भगति'।
वांदी करी पाछउ वलइ, दीन दान रे यथाशक्ति कि ॥ ११२० ॥ ग.

वनपालकट वधामणी कही, 'समोसरिया श्रीगुरु वनि सही ।
पंचसयासिउं यतीना वृंद, भव्यजनकुमुदविकासी चंद' ॥ १०९८ ॥

राजा नल ग्लीयायन थयु, भाविइ करीनइ अति गहिगहिउ ।
'जई वादूं श्रीगुरुना पाय,' एम्वूं चींतवइ श्रीनलराय ॥ १०९९ ॥

आपणरानी रिद्धिइ करी, हर्दआम्यूं बहु ऊलट धरी ।
श्रीगुरु बइठा छइ वनि जिहां, राजा नल आवीउ तिहां ॥ ११०० ॥

उत्तरामणि गणधर बदीआ, श्रीनल मनसिउ आणंदीआ ।
भाविइ प्रणमइ राणी दवदंति, ते दिन धिन्न गणइ गुणवंति ॥ ११०१ ॥

के यती बइठा करइ सज्झाय, के बइठा श्रीनवकार ध्याइ ।
के रहिया कासग अपार, के वाचइ सिद्धांत विचार ॥ ११०२ ॥

के पूर्व तणी नित्य वाचना लेइ, निगोद तणा विचार करेइ ।
योगामारग साधइ जेह, मनसिउं पालइ चारित्र तेह ॥ ११०३ ॥

[49 A]साधु साध्वी श्रावक श्राविका, आगलि बइठा विनयी थिका ।
श्रीगुरु दीइ उपदेस ज सार, 'संभलु तमे भविक ! सुविचार ॥११०४॥

पंचेन्द्रिय भव मनुष्यह तणु, आर्य देश उत्तम कुल गणु ।
साधु तणउ योग दोहिलु होइ, ज्ञानदृष्टिइ जोउ भविया लोइ ! ॥११०५॥

च्यारि गतिमाहि प्राणी भमिउ, नव नव वेसे नाटक रमिउ ।
चुरासी लाख जीव मझारि, वार अनंती हऊउ संसारि ॥ ११०६ ॥

तन धन यौवन चचल जाणि, मोह माया ममता मनि आणि ।
धर्म तणउं काम करिवूं सही,' एहवी देशना श्रीगुरइ कही ॥ ११०७॥

ढाल। अति बोल्य आणी कामिनी०

दोइ कर जोडी श्रीनल पूछइ पूरव भव जेह ।
'म्यूं मइ एहउ आचरिउ ? जेणइ पामी रे रूडी रिद्धि एह कि' ॥११०८॥

गणधर भव पूरव कहइ, सुकृतारथ रे आजनु दिन्न कि ।
गहिगहिउं रे रायनूं मन्न कि ॥ ११०९ ॥ गणधर.
' वियोग पडीउ एवडु सिइ कारणि ! कहु स्वामि ! ' ।
पूछइ तिहां ए दवदंती, विनय करी रे, सीस ज नाम कि ॥ १११० ॥ ग.
' सुणि तूं राय ! भव पाछिलु, मम्मणराय सुजाण ।
वीरमती तम पटराणी, आहेडइ रे दीठउ मुनिभाण कि ॥ ११११ ॥ ग.
बार घडी संतापीउ, तइ बांधिउं पापकर्म ।
आवीनइ वली पाए लागु, उचरीउ रे श्रावकधर्म कि ॥ १११२ ॥ ग.
तिहांथी सुररिद्धि भोगवी, ऊपना कुलि आहीर ।
दान दीधूं तइ भावस्यूं मुनिवरनइ रे तइ सारूं खीर कि ॥ १११३ ॥ ग.
तिहांथी युगलीआ ऊपना, पांचमइ भवि हऊआ देव ।
छट्ठइ भवि निषधघरिइ नल नाम रे, सहू करइ सेव कि ॥ १११४ ॥ ग.
भीमकुलिइ अवतरी, दवदंती नामिइ एह ।
यतीपीडा माटिइ तूंहनइ बार वरसी रे वियोग जेह कि ॥ १११५ ॥ ग.
दूधदान महिमा थकी, पामी एवडी रिद्धि ।
दान दीधउं निष्फ[49 B]ल न हुइ,
मानवनइ रे ए रूडी सुबुद्ध कि ॥ १११६ ॥ ग.
पहिलइ भवि यती देखी, ऊपनु तूंहनइ द्वेष ।
यती पीडिउ तइ बार घडी, परिइ परिइ रे पीडीउ वेष कि ॥ १११७ ॥ ग.
ते करम तणइ कारणइ, वरस बार वियोग ।
ते अंतराय कर्म टलिउं, वली हऊउ रे तुम्हनइ संयोग कि ' ॥ १११८ ॥ ग.
ते संभली राजा नल, संपनु वइराग रंग ।
गुरु चरणे आवी नमइ, ' साधुनांहिइ रे गिरूआ तमे चंग कि ॥ १११९ ॥ ग.
हूं हवइ स्वामी ! निःपाप थयु, कीधी गुरुनी भगति ' ।
वांदी करी पाछउ वल्इ, दीन दान रे यथाशक्ति कि ॥ ११२० ॥ ग.

चिमासइ निज चित्तिसिउं, 'सारउं माहरूं काज ।
चारित्र लेउं हूं गुरु कन्हइ, ए आपू रे पुत्रनइ राज कि' ॥११२१॥ ग.
श्रीनलरायनइ गुणवंत, पुष्कल नामिइ पुत्र ।
सघला गुण तेह्मां पामीइ, दयावंत रे चित्ति पवित्र कि ॥ ११२२ ॥ ग.
'पूरविइ राजा जेहवा, बाल्पणइ विद्याभ्यास ।
यौवनि विषयादिक वांछता,
चुथइ आश्रमि रे हुआ वनवास कि ॥ ११२३ ॥ ग.
श्रीरिषभनइ वंश ऊपनु, हूं नल नामिइ विख्यात ।
मुक्तिरमणि तेणइ वरी, हवइ आदरूं रे तेह सरखी धात कि ॥११२४॥ ग.
दवदंतीनु नेहलु, जैसीउ रंग पतंग ।
खोटी माया एहनी करूं,
करूं अविहड रे मुक्तिसिउ रंग कि ॥ ११२५ ॥ ग.
धरी माया नइ टली जाइ तेहसिउं सी कीजइ प्रीति ? ।
निशिदिन ते हईइ धरइ, न वीसारइ रे ते क्षणि चित्त कि ॥११२६॥ ग.
नारी करूं तेहवी जे बइसइ माहरइ मन्नि ।
सुखदुख साथिइ भोगवइ, जेहथी सुख रे मझ होइ तन्न कि' ॥११२७॥ ग.
मुक्तिरमणि जाणी करी ते ऊपरि थयूं चित्त ।
वेध लागउ तेहनइ घणउ, नाम समरइ रे तेहनूं नित कि ॥११२८॥ ग.

दूहा

'पुण्य पाखइ किम पा[50-A]मीइ चतुरवंति रूडी नारि ? ।
जेह ऊपरि जेहनउं मन घणउं, दोहिलइ मिलइ सुविचारि' ॥११२९॥
एहवूं हईइ चींतवी, पुष्कल तेडिउ पुत्र ।
'राज्यभार तमे लीउ, अमे लेस्यूं संयम पवित्र' ॥ ११३० ॥
प्रधान सहू एकठा करी, दीधउ राज्य ज सार ।
आपणपूं निसंग थयु, भाव थयु अति सार ॥ ११३१ ॥

प्रजानइ एहवूं कहइ, 'ए सहू रिद्धि भंडार ।
माहरू ए काई नही, हवइ दिक्षानु अधिकार' ॥ ११३२ ॥
पुष्कलनइ दीइ सीखडी, 'कुव्यसन वारयो दूरि ।
करज्यो देवगुरु ध्यान मनि, नित ऊगमतइ सूरि ॥ ११३३ ॥
म करसिउ पीडा प्रजा तणी, आद[र]यो सुसंगति ।
राज्य रूडी परिइ पाल्यो, एहवी धरयो सुमति' ॥ ११३४ ॥
राणीनइ मनि धर्म वसिउ, चारित्र ऊपरि भाव ।
दीक्षासिउं तस बुद्धि वसी, तेहनइ नथी कुभाव ॥ ११३५ ॥
नगरलोक सहू चिंतवइ, 'धिन ए श्रीनलराय ।
धिन ए दवदंती पटराणी, एहना प्रणमीइ पाय' ॥ ११३६ ॥
छती रिद्धि जे नर मेहलइ, वयरागी खरू तेह ।
अछतानी वांछा करइ, बहुलकरमी जेह ॥ ११३७ ॥
भला संवेगी जाणिवा, जेहनइ मनि संतोष ।
अपुणीक अभागीआ, सदा हुइ असंतोष ॥ ११३८ ॥
नगरमांहि उच्छव हुइ, सुखासणि बइसी राय ।
'पालत्र एहनु नवि मेहलउं,' चींतवइ दवदंती माय ॥ ११३९ ॥
पूठिइ तेहनी पालखी, बइठी दवदंती नारि ।
पंच शबद वाजित्र घणा, आगलिथी प्रतीहारि ॥ ११४० ॥
बेहू जणां ते संचरइ, मोतीभरिया छइ थाल ।
वधावइ तिहां राय राणा, 'करियो स्वामी ! संभाल' ॥ ११४१ ॥
एणी परि आवइ बेहू, जिहां छइ श्रीगुरुराय ।
त्रिणि प्रदक्षण देई करी, वांद्या सूरिवर पाय ॥ ११४२ ॥
'स्वामी ! मझ चारित्र दीउ, अमनइ छइ घणूं कोड ।
संसारसमुद्रतारण तरण !' कहइ एहवूं कर जोडि ॥ ११४३ ॥

सुवर्णजटित रत्नह तणा, कंठिइ अपूरव हार ।
यती मारगि ते नवि घटइ, [50 B] आपिउ सवि सिणगार ॥ ११४४ ॥

गुरु आगलि ऊभा रहिया, नल दवदंती दोइ ।
तव सहिगुरु श्रीमुखिइ करी, एहवूं क्हीउं सोइ ॥ ११४५ ॥

करेमि भंते सामायक, सर्व सावज्ज पच्चखाण ।
पांच महाव्रत उचरावी, आदरी जिनवर आण ॥ ११४६ ॥

चारित्र लीधूं भावसिउं, पालइ पंचाचार ।
पुष्कल निज ठामिइ गयु, भोगवइ राज्य ज सार ॥ ११४७ ॥

सहिगुरु तेणइ ठामिथी, कीधु अनेथि विहार ।
नल मुनिवर साथिइ अछइ, अनित्य गणइ संसार ॥ ११४८ ॥

दवदंती साध्वी तव महासतीनु समुदाय ।
महचरानइ पासइ रहइ, हईइ हरख न माय ॥ ११४९ ॥

अतिकोड आर्णा० ढाल

चारित्र पालइ निरमलं, परीसह जीपइ बावीस ।
निवारी ममता माया जेह, नलनइ रे नही मनि रीस कि ॥ ११५० ॥

वांदीइ नलराय, जेहनइ प्रणमइ रे सुरासुर पाय कि ।
जेहनइ नमतइ रे दुकृत जाइ कि भव्य प्राणी रे सहू गुण गाइ कि ॥११५१॥ वां.

पंच समिति त्रिणि गुप्ति भली, पालइ दसविध धर्म ।
पंच प्रमाद ते टालइ ते फेडइ रे अशुभ कर्म कि ॥ ११५२ ॥ वां.

संयम मारग दोहिलु, जाणइ सोहिलु एह ।
नवि खंडइ आण जिन तणी, उपशम रस रे धरीउ जेह कि ॥११५३॥ वां.

एकदा नलमनि राग हऊउ, स्त्री ऊपरि धरिइ मोह ।
साध्वी दवदंती देखी मनि ऊपनु रे तस दिक्षा द्रोह कि ॥ ११५४ ॥ वं.

नारीस्यूं वांछा थई, चंचल थयूं नल चित्त ।
मन राखंता दोहिलुं, वसि न रहइ रे ते क्षणमात्र कि ॥ ११५५ ॥ वं.
मन मांकड सरिखूं कहिउं, मनिइ ज लहीइ सुख ।
मनिइ ज नरकनी वेदना, मन राखइ रे जे हुइ दक्ष कि ॥ ११५६ ॥ वं.
श्रीगुरइ जाणी करी त्याज्य कीधु तेह ।
गच्छनिश्राथी अलगु रहइ, पण संयम रे पालइ जेह कि ॥ ११५७ ॥ वं.
अवधि ज्ञानिइ जोईउं, निषधपिता जे देव ।
दीठउ सुत श्रीनल रिषि, चित्त चंचल रे हऊउं ततखेव कि ॥११५८॥ वं.
सुत्रनइ मोहइ [51-A] ते पिता आविउ प्रतिबोध काजि ।
जईनइ पुत्रनइ प्रतिबोधउं, 'कां छांडइ रे चारित्रराज कि ?' ॥ ११५९ ॥
देव पुहुतु तेणइ ठामिइ, कहइ पुत्रनइ तेह ।
तूं संवनु चारित्रीउ, ताहरूं करणी रे न हुइ एह कि ॥ ११६० ॥
चित्त स्थिर कीजइ आपणउ, जेणइ लहीइ रे मुक्तिना सुख कि ।
जेहथी टलीइ रे नरकना दुख कि चित्त स्थि० ॥ ११६१ ॥
संभलि, पुत्र ! तूं सीखडी, ए सी ताहरी पइरि ? ।
मन नवि कीजइ मोकलउं,
चारित्र विधि रे सूधी तूं करि कि ॥ ११६२ ॥ चित्त स्थिर.
आछण तणइ कारणइ कुण ढोलइ अमृत ? ।
तैल तणइ कारणइ कुण छंडइ रे महिषीनूं घृत कि ? ॥ ११६३ ॥ चि.
वेळ तणइ कारणइ नांखइ को कर्पूर ? ।
घूअड तणइ कारणइ कोइ हणइ रे सारु मयूर कि ? ॥ ११६४ ॥ चि.
कुडिनइ कारणि करी कुण नर नींगमइ कोडि ? ।
लिहाला तणइ कारणइ कुण ज्वालइ रे चंदन मोड कि ? ॥११६५॥ चि.
पांन तणइ कारणइ कुण छेदइ वृक्ष ? ।
कण लाभनइ कारणि करी कुण वंछइ रे भुंडु दुर्भिक्ष कि ? ॥११६६॥ चि.

खील तणइ कारणइ कुण पाडइ विहार ?।
तातणनइ कारणि करी कोट त्रोडइ रे नवसर हार कि ? ॥ ११६७॥ चि
कारेली कारणि करी कोइ मेल्हइ नागरवेलि ?।
वनि रहिवानइ कारणट कुण छडइ रे नगरनी पेल्ह कि ? ॥११६८॥ चित्त
अपवित्र जल्नइ कारणइ कुण नाम्वट खीर ?।
दीकिरीनइ कारणइ अपमानट रे कोइ नर वीर कि ? ॥ ११६९ ॥ चि
एरड तणइ कारणट कोट विणासइ जाट ?।
नारीनट कारणि करी कोइ दूहवइ रे आपणी माइ कि ? ॥ ११७० ॥ चि
वयरी तणट कारणइ मूकइ को वाहलु मित्र ?।
तिम विषय तणइ कारणइ परिहरइ रे कोट सारू चारित्र कि ?॥११७१॥ चित्त

ढाल। चचल यौवन माहरू०

सुणि पुत्र ! [51 B] श्रीनलरिपि ! आभा पाखइ किम वृष्टि रे ?।
हईआ साधिइ जोइ न, भोजन विण किम पुष्टि रे ? ॥ ११७२ ॥
चचल न कीजइ चित्तडउ, सयम दोहिलु जाणउ रे।
ए रत्न कष्टिइ पामीइ, शुभ मति रूडी आणउ रे ॥ ११७३ ॥
सुणि पुत्र ! श्रीनलरिपि ! बीज पाखइ किम वृक्ष रे ?।
हईआस्यू तू जोइ न, मेह विना किम सुभिक्ष रे ? ॥ ११७४ ॥ च
सुणि पुत्र ! श्रीनलरिपि ! लक्ष्मी पाखइ किम दान रे ?।
हईआस्यू जोइ न, गुरु विना न हुइ ध्यान रे ॥ ११७५ ॥ चचल.
सुणि पुत्र० पुण्य विना किम सौख्य रे।
हई० सयमथी न हुइ दुख रे ॥ ११७६ ॥ च
पच महाव्रत आदर्या, भला गुरुनु सीस रे।
ताहरु मारग ए नुइइ, सी करू तुझ रीस रे ? ॥ ११७७ ॥ च

लीधउं व्रत नवि खंडीइ, संभलि साधु ! सुजाण ! रे ।
स्यूं कहू हूं तूहनइ ? तूं तु नथी अजाण रे' ॥ ११७८ ॥ चं.
मनमांहि नल लाजीउ, 'सूधूं कहिउं एह रे' !
चित्त थयू हूतूं चंचल, मन वालिउं पाछउं तेह रे ॥ ११७९ ॥ चं.
उपदेस देई देवना पुहुतु आपणइ ठामि रे ।
श्रीनल रिषिवर पाय लागीनइ चारित्र मागउं मननइ उल्हास ॥११८०॥ चं.

दूहा

तिहांथी गुरु भणी आवीउ, चरणे लागइ तेह ।
'अपराध खमिवु माहरु वली वली कहू छउं एह ॥ ११८१ ॥
स्वामी ! दिउ वाली संयम, चंचल कीधउं चित्त' ।
श्रीगुरुइ तव ऊलट धरी, दीधउ संयम पवित्र ॥ ११८२ ॥
मनमांहि नल चिंतवइ, 'मइ न पलइ ए दीख ।
थोडा दिनमांहि काज सरइ, ते कहु स्वामी ! सीख ॥ ११८३ ॥
संपनु छइ मझ मनोरथ, लेउं अणशन उचार ।
दुख दोहिला संसारना, आज्ञा आपु सार' ॥ ११८४ ॥
भव्य प्राणी जाणी करी, गुरु कहइ वलतूं इम ।
'जउ ताहरा मनमांहि ऊलट, निश्चइ करु ए नियम ॥ ११८५ ॥
चतुर्विध संघ साक्षिक [52 A] अणसन लीइ दोइ ।
ध्यान धरइ जगगुरु केरूं, भावना भाविइ सोइ ॥ ११८६ ॥
शुभ परिणामि अवतर्या, पहिलइ देवलोकि तेह ।
भंडारी थयु इंद्रनु, धनद नामिइ जेह ॥ ११८७ ॥
पेढालपुर नामिइ नगर, तिहां छइ हरिचंदराय ।
दवदंती तिहां अवतरी, कनकवती नामिइ थाय ॥ ११८८ ॥

सयंवरा हरिचंद करइ, राजकुमरा आवेइ ।
उच्छव हुइ तिहा घणउ, रूडूं तिहां भावेइ ॥ ११८९ ॥
एणइ अवसरि तेणइ ठामिइ आव्या श्रीवसुदेव ।
हरिचंदइ सुंदर देखी, परणावड ततखेव ॥ ११९० ॥
इंद्र तणउ जे भंडारी, धनद भोगवइ रिद्धि ।
इसिइ अवसरि इंद्रनइ मनमा ऊपनी सुबुद्धि ॥ ११९१ ॥
महाविदेहमांहि अछइ, विमलस्वामि अरिहंत ।
इंद्र तिहा वंदणि आविउ, धनद साथि गुणवंत ॥ ११९२ ॥
भगवंतइ उपदेस दीधु, ततखिण पूछइ धनद ।
'दवदंती किहां अवतरी ? कहु तमे ज्ञानी ! जिणंद !' ॥ ११९३ ॥
'ते ताहरी नारि दवदंती, पेढालपुरि हरिचंद ।
तेहनइ कुलि ते अवतरी, कनकवती नामिइ चंद ॥ ११९४ ॥
सयंवरामंडप मांडिउ, वसुदेव परणइ तेह'।
हईआमाहि जागीउ, पाछिला भवनु नेह ॥ ११९५ ॥
तिहांथी जिनमुखि सांभली, देवतानइ परिवारि ।
पेढालपुरि आवइ धनद, तिहां हुइ छइ उच्छव अपार ॥ ११९६ ॥
देवरिद्धि दीठी घणी, सहू को आश्चर्य थाइ ।
पूछइ वसुदेव तेहनइ, 'सिउं कारण कहिवाइ ? ॥ ११९७ ॥
तमे देवता अहां किहां लगइ पधारिया सिइ कामि ? ।
ते अमनइ कारण कहु.' राय प्रशंसइ ताम ॥ ११९८ ॥
'धिन सुता ए हूं भणउं, जिहां देवता आवी जोइ ।
रलीआमणु हवु सयंवरा, घरि घरि उच्छव होइ' ॥ ११९९ ॥
धनद कहइ, 'सुणउ, वसुदेव ! पूरव भव ए नारि ।
दवदंती नामिइ हसी, कोशला नगरी मझारि ॥ १२०० ॥

जिन कहणे मइ जाणीउ, परणइ वसुदेव राय ।
ते हूं जोवा आवीउ, स्नेह [52-B] घणउ हईइ थाइ ॥ १२०१ ॥
स्नेह संतापइ अति घणउ, दुख कारण छइ स्नेह ।
ते जीपता दोहिलु, त्रिहु भुवने व्याप तेह ' ॥ १२०२ ॥
सुवर्ण रत्ननी वृष्टि कीधी, हऊउ जयजयकार ।
देवता निज ठामिइ आवीउ, नारी हरख अपार ॥ १२०३ ॥
वसुदेव परणी आविउ, पुहुतु द्वारिका मझारि ।
कनकवतीस्यूं सुख भोगवइ, लाहु लीइ संसारि ॥ १२०४ ॥
एकदा नाटक मंडीउं, भावनाइ चडी तेह ।
भरतेसर रायनी परिइ केवल ल्हीउं जेह ॥ १२०५ ॥
तिहां थकी मुक्तिइ गई, एहवी सती दवदंति ।
धनददेव निश्चलपणइ आराधइ धर्म चित्ति ॥ १२०६ ॥
ते भंडारी देवता पामसिइ सुख अपार ।
सुगति वहू वरसिइ भली, सुख ल्हिसिइ ते सार ॥ १२०७ ॥
दान शील तप भावना, कहिया च्यारि प्रकार ।
नल दवदंतीइ कीधा वहू, हऊआ सुविचार ॥ १२०८ ॥
पुण्य थकी सुख संपति, पुण्यथी बहुली रिद्धि ।
धर्म ऊपरी धरीइ मति, दिन २ हुइ वृद्धि ॥ १२०९ ॥
लोकमांहि पृथ्वी कहीइ, मोटी बहुली एह ।
लोकभाषाइ पंचास कोडि जोअण छइ जेह ॥ १२१० ॥
जिनशासनमांहिइ कहिउं, द्वीप समुद्र असंख्यात ।
तेहनु पार को नवि ल्हइ, एहवूं कहीउ सिद्धांति ॥ १२११ ॥
द्वीप समुद्र छइ घणेरडा, जगगुरुइ कहिया अनेक ।
वृक्षावली विहसइ बहू, उल्लसइ अन्न अनेक ॥ १२१२ ॥

द्विपद चतुष्पद छइ घणां, विलसइ मन तणइ रंगि ।
तेह पृथ्वीतु मेघ मोटउ, मविहुमां कहीइ चंग ॥ १२१३ ॥
अखंड धारा घोरणइ धरामंडलि वरसंति ।
वेला भलेरा लहलहइ, सहू ए लोक हरखंति ॥ १२१४ ॥
ते मेघथी समुद्र मोटउ, एकइ पासिथी लेइ ।
लेशमात्र पाणी ग्रही, सचराचरि ते देइ ॥ १२१५ ॥
समुद्र पाहिइं कुंभजन्मा गिरूउ अगस्ति गुणवंत ।
खोलइ करी समुद्र पीधउ, एहवु छइ ते बलवंत ॥ १२१६ ॥
तेहथी मोटउ आकाश, [53 A] एक खूणइ जेह ।
तारानी कोडाकोडि वसइ, अगस्ति सरीखा तेह ॥ १२१७ ॥
चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र सेवइ राजा पुण्य ।
पृथ्वीइ आधार छइ ते जाणेज्यो पुण्य ॥ १२१८ ॥
जिम रत्ननइ आधार छइ, हुइ रोहणाचल ।
चंदननइ आधारडउ कहिउ हिमाचल ॥ १२१९ ॥
आधार छइ कल्पवृक्षनइ मेरु महीधर एह ।
तेजनइ आधार छइ श्रीसूरिज कहीइ तेह ॥ १२२० ॥
लोकमांहिइं एहवूं अछइ, कुलाचल आठ कहिवाइ ।
पण पृथ्वीनइ आधार छइ, पुण्य तणउ लहिवाइ ॥ १२२१ ॥
लवणसमुद्र एवडउ, वि लाख जोअण प्रमाण ।
मेघ तणी परि गडयडइ, पण नवि मूंकइ ठाण ॥ १२२२ ॥
समुद्र मर्यादा नवि मेल्हइ, वैश्वानर झलहलंति ।
मधु घृतइ करी सींचतु, पण ऊरध ज्वाला जलंति ॥ १२२३ ॥
ए जाणेवू पुण्यबल, अधविसा सत्य आधारि ।
पृथ्वी कुणइ कीधी ? अनादि छइ विचारि ॥ १२२४ ॥

धर्मरूपीउ जे राजा, तेहनइ च्यारि प्रधान ।
मेघ १ समुद्र २ सूर्य ३ चंद्रमा ४ उपगारिइ सावधान ॥ १२२५ ॥
पुण्यरायनइ आदेसिइ, समुद्र हऊउ छइ जेह ।
पुण्यवंत जे नर अछइ, बइठा रहइ घरि तेह ॥ १२२६ ॥
तेह तणइ कारणि करी रत्न धरइ ते कुक्षि ।
रूप्य सुवर्ण नइ माणिक मणि मुक्ताफल लक्ष ॥ १२२७ ॥
अगर तगर चंदन जिहां संख सिला प्रवाल ।
कपूर कस्तूरी भली भोगवइ पुण्यना पाल ॥ १२२८ ॥
मेघ मनोहर देवता ए बीजु प्रधान ।
पुष्करावर्त्तक मेहलु जीविते दीइ दान ॥ १२२९ ॥

चउपई

एक वारनइ वर्षाइ करी, वरस सहस दस सुभक्ष करी ।
खीरोद घृतोद अमृत रसोद, पुण्य तणइ बलि बरसइ प्रमोद ॥ १२३० ॥
अनुकूल वायु वाइ जिम जिम, आकाशमंडल छाइ तिम तिम ।
मधुर ध्वनि गाजइ रे अपार, सुभिक्षइ जयढक वाजइ सार ॥ १२३१ ॥
अविछिन्न धारा वृष्टि करइ, पृथ्वीपीठ पाणीइ भरइ ।
कलंबी [53-A] लोक ते अतिहि नाचइ,
सचराचरि जीवलोक माचइ ॥ १२३२ ॥
किशलय नींकलता गहगहइ, वेलाकूले रा गहगहइ ।
मूंड लक्ष धान्य नींपजइ, सकल वांछित सुख संपजइ ॥ १२३३ ॥
एक जोउ पुण्य तणूं प्रमाण, दिनि दिनि झगइ निरंतर भाण ।
देवगृहना बार ऊघडइ, श्रीजगगुरुनइ पूजा चडइ ॥ १२३४ ॥
पुण्यवंत लोक अतिहिं गाजइ, भव्य प्राणी पुण्यमारगि लागइ ।
सूरय उदइ कमल बहिसीइ, चक्रवाक पंखी हसीइ ॥ १२३५ ॥

चउरासी चहुटा मंडाइ, मोकुलमोकला साव मेहलाट ।
यती व्रतीनइ दीजइ दान, इष्ट मित्रनइ हुइ मान ॥ १२३६ ॥
चउथउ प्रधान छइ चंद्रमा जेह, सोल कलाइ सपूरण तेह ।
अंधकार महा तिरस्करइ, लोचननइ आणंद ज करइ ॥ १२३७ ॥
किरणइ करी जीवनइ सुख होइ, ग्रह नक्षत्रनु नायक जोइ ।
पुण्यराजानु आदेस ज पालइ, श्रीगरणा ए च्यारइ माहलइ ॥ १२३८ ॥
चिंतामणि कामधेनु कल्पवृक्ष, पूर्णकलस सहुमाहि मुख्य ।
ए च्यारिइ भंडारी कहिया, पुण्यराजानइ घरि ते रहिया ॥ १२३९ ॥
जं गाइ रहइ हुइ भला दुग्ध, घृतादिक रस अति सुस्निग्ध ।
वनस्पती बहुल औषधी सप्रभाव, ते जाणेवउ पुण्यप्रभाव ॥ १२४० ॥
विश्व बंधाण छइ पृथ्वी तणउं, अनादि छइ सही ए हूं भणउं ।
कर्त्ता हर्त्ता नथी कोइ, ए मारग छइ पुण्यनु जोइ ॥ १२४१ ॥
जे प्राणी पुण्य करइ सदा, ते नरनइ न हुइ कष्ट सदा ।
पूरव पुण्य जउ नलराय किद्ध, भला भलेरा सुख तेणइ लद्ध ॥ १२४२ ॥
नलनु संबंध जे साभलइ, तेहना पाप सघलाइ टलइ ।
नल मोटउ हऊउ ऋषिराय, त्रिकरणसुद्धिइ वंदू पाय ॥ १२४३ ॥
जिनशासनमाहि अतिसयवंत, गच्छ चुरासी छइ गुणवंत ।
तपा पक्षमाहिइ सोहइ दिणंद, गिरूआ श्री**धर्मरत्नसूरिंद** ॥ १२४४ ॥
[54 A] तस पटि श्री**विद्यामंडनसूरि,** जेहनइ नामिइ नवनिधि पूरि ।
तास पाटि उदयु जसिउ भाण, श्री**सौभाग्यरत्नसूरींद** सुजाण ॥ १२४५ ॥
तेह तणउ रूअडु परिवार, दीप्तिवंत बहुश्रुती उदार ।
श्री**विनयमंडन** गणींद उवज्झाय, जेहनइ नमइ मोटा नरराय ॥ १२४६ ॥
तेहनइ प्रथम अति सार, विवेकवंति चातुरिम अपार ।
श्री**विवेकमंडन** गणिंद सुजाण, श्रीगुरुनी पालइ नित आण ॥ १२४७ ॥

सौभाग्यमंडन बीजु लघु सीस, श्रीगुरु पूरइ वंछित जगीस ।
मइ सहिगुरुना प्रणमी पाय, गायु उल्हासिइ नल रिपिराय ॥ १२४८ ॥

दूहा

संवत सोल बारोत्तरइ, भाद्रवउ सारु मास ।
शुक्लपक्ष नवमी तिथिइं, हस्त नक्षत्र पूरइं आस ॥ १२४९ ॥
प्रीतियोग ते अति भलु, सारी छइ दिनशुद्धि ।
श्री**सेनापुर** रास तणी, रचवा ऊपनी सुबुद्धि ॥ १२५० ॥
संप्रतिराय-निर्मापित श्रीऋषभदेव जिणंद ।
सुश्रावक भावना भावइ, जस सेवइ सुरनरवृंद ॥ १२५१ ॥
श्रीसंघने कहणे करी, श्रीआदिनाथ सानिध्य ।
नलराजानु रास कीधु, सुणतां लहीइ रिद्धि ॥ १२५२ ॥
पढइ गुणइ जे संभलइ, तस हुइ कर्ण पवित्र ।
निषधपुत्र श्रीनलराजा, पोढउं अछइ चरित्र ॥ १२५३ ॥
श्रीनलराजानु रास ए, बारसइ त्रिसठि रसाल ।
पंडित **महिराज** इम कहइ, तस लक्ष्मी सुविशाल ॥ १२५४ ॥

इति श्री**नलदवदंती रास** संपूर्णः । संवत १६७१ वर्षे कार्त्तिक वदि २ सोमे । श्री**सेनापुरे** । श्रीपूज्य भट्टारक श्री**धर्मरत्नसूरींद्र**-शिष्य पूज्य परमगुरु महोपाध्याय श्री**विनयमंडनगणींद्रशिष्य पंडित महिराज लखितं** । साध्वी विनयसुंदरिगणिशिष्यणी प्र० मरघाई योग्यं । पठनार्थं ।

तैलाद्रक्षेज्जलाद्रक्षेद्रक्षेश्शथिलबंधनात् ।
परहस्तगता रक्षे[त्] एवं वदति पुस्तिका ॥ १ ॥

श्रीरस्तु । शुभं भवतु । कल्याणमस्तु । श्रीः । श्रीः । श्रीः ।

परिशिष्ट

अज्ञात कविकृत

नल-दवदंतीचरित्र

सरसति सामणि सगुरु पाय हीयडइ समरेवी ।
कर जोडी सासणा देवि अविक पणमेवि ॥
नल-दवदंती तणु रास भावइ पभणेइ ।
एकमना थइ भवीय लोक विगतइ निसणेइ ॥ १ ॥

निषधनगर छइ निषधराय, सुरसुदरि राणी ।
शीअल सोभागइ आगली ए नलराय वषाणी ॥
नल-कुबर बे अछइ पुत्र, गुणवंत भणीजइ ।
नल-कुबरना रूप वन्न कुण ऊपम दीजइ ? ॥ २ ॥

कुडिनपुरि छइ भीमराय, भुजप्राणइ भीम ।
को सीमाडउ तेह तणी नवि चापइ सीम ॥
अति प्रीतिइ गहगहीय गेलि राणी पुप्पदती ।
मायताय मन मोहती ए बेटी दवदती ॥ ३ ॥

सोभागिइ सोहामणी ए सवि निया जाणइ ।
सहस जीभ हुइ मुखहमाहि तउ रूप वखाणइ ॥
प्रतिमा शाति जिणेस तणी सिद्धायक आपीय ।
दवदतीना मनमाहि जिणधर्म्म स थापीय ॥ ४ ॥

भीमरायु वर कारणिइ ए सयवर मडावइ ।
हसइ तेडिउ नल्हराय परणेवा आवइ ॥
राय अग्यारह रायमाहि रूपइ मन मोहइ ।
गहगण तारामाहि जेम पूनमि ससि सोहइ ॥ ५ ॥

पंच रूप करी देवराय वरमंडपि आवइ ।
दवदंतीना मनहमाहि एकइ नवि भावइ ॥
दवदंतीना मनहमाहि निरमल मति सूधी ।
वरमालं वेगिइ करी ए नलकंठ जि दीधी ॥ ६ ॥

नल परणीनइ चिंतवइ ए दवदंती राणी ।
' सवि बहिनर ! तुम्हे सांभलु ए सवि सहीय समाणी ॥
गय भवि भगतिइं अति संभागि मइ मुनि वहिराव्या ।
साहमीयवच्छल संघ सहित मइ गुरु पहिराव्या ॥ ७ ॥

बंधणि बांध्या जीवडा ए कंइ मइ म्हेलाव्या ।
आलक मायनइं मेलवां ए कय दव उल्हवीआ ॥
कइं जिण पूजिया त्रिणि काल दिनप्रति मइं भगति ।
बारे व्रत किइ नियम सहित मइ पालियां शक्तिइं ॥ ८ ॥

कइ गुरु देव ज द्रव्य मइ ए रूडइ प्रतिपालउ ।
सवि अभक्ष मइ परिहरियां ए समकित अजुआलिउ ॥
भूपियां तरस्यां सार करी, कइ मइ तप कीधउ ' ।
नल परणीनइ चिंतवइ ए, ' माणसफल लीधउं ' ॥ ९ ॥

हरपिउ भीमनरेसु राय जोसी तेडावइ ।
मंडपिमाहि सोना तणी ए चउरी बंधावइ ॥
सासू पूंपइ, मांहरइं ए वर आविउ जाम ।
रंगिइ जोसी समइ समइ वरतावइ ताम ॥ १० ॥

प्रीति सरिसूं वरवहू ए कंसार आरोगइ ।
अणूंअरनी डाढडी य गलइ ए तेणइ गंधि संजोगिइं ॥
लाधा लाप तुरीय सहिस, गयमर मदि माता ।
मणि माणिक सोवन्न असंख्य, सउ गाम वसंतां ॥ ११ ॥

सवि पहिर्या, सवि उन्हीआ ए वरजान चलावइ ।
संधदेश लगइ भीमराय वउल्यावा आवइ ॥
भणइ भीम, 'दवदंती, वछि! नलसिउं नेह पाले ।
सइयणि, धोबणि, अधम जाति मालणि संग टाले ॥ १२ ॥

जीणइ प्रिय परसीइ ए ते वात म करजे ।
सुपि दुपि आवियां प्रिय तणइ ए तूं पाय अणसरजे' ॥
वउलावी वलिउ भीमराय कुंडनपुरि पुहुतु ।
नल पुहुतु दवदंती सहित निपधई गहिगहिउ ॥ १३ ॥

ढाल वीवाहलानु

नियरि पुरि हुइ वधामणां ए, वर नितु नितु आवइ भेटणां ए ।
आछण पाणी छांटती ए, दवदंती मंदिर प्रापती ए ॥ १४ ॥
नव लख सोनासिउं नमइ ए, तीणइ सासूनइ वहूयर अति गमइ ए ।
पाय पडती द्रव्य परखती ए, तीणइ गोत्रनी नारि सवि हरपती ए ॥ १५ ॥
'पुत्रवंती प्रियसिउं मिली ए, वहू! जीवजे कोडि दीवालडी ए!'
दस दिन हूइं दसाईया ए, तीणइ माय ताय विहु हरपीआं ए ॥ १६ ॥
निपध भणइ, 'नल! कहिउं कीजइ, राजनउ भार जउ उद्धरीजइ ।
व्रत लेसिउं अम्हिइं सहीइ ए, तप करिवउ वन कासगि रही ए' ॥ १७ ॥
वलि करी राज सो आपीऊं ए, नलराजनइं भार सउ थापीउ ए ।
देइ सीखामण निपध तात, 'वत्स! वीसस्यां नरवर, म करी घात ॥ १८ ॥
सात विसन तइं टालिवां ए, छ दरसिण रूडी परि पालवां ए ।
रापेय राज रूडी परिइं ए, नवइ करि कोइ रपे पीडीइ ए ॥ १९ ॥
गुरुजन तइं न विलोपियां ए, जिणमंदिर आधाट आरोपिया ए' ।
देइ सीखामण चालीउ ए, नल राजनउ भार स आपीउ ए ॥ २० ॥
कूबर बुद्धि कूडी करइ ए, नलना पग भगतइं अणसरइ ए ।
आरांधइ एक कापडी ए, कूबरनइ विद्या सांपडीइ ए ॥ २१ ॥

कूबर कहइ ! 'नल, कहिउं य कीजइ, एह अथिर लच्छी तणु भोग लीजइ।
आलि माटिइं भव कांइं गमु ए? हिव सार पासे सरिसा रमउ ए' ॥ २२ ॥

रमतलां राज हरावीउं ए, दवदंती य विसन न वारीउं ए।
हारि आगलि सांभलइ नहीं ए, दवदंती य तु पाछी रही ए ॥ २३ ॥

कूबरि सहूइ हरावीऊं ए, दवदंतीं य सूथ करावीउं ए।
दवदंती जीती देवरीए, कूबर कहइ, 'जाउ अंतेउरीए' ॥ २४ ॥

एक रथ मुहते अपावीउ ए, नल दवदंती सरिसउ चलावीउ ए।
मारगि चोरे रथ हरउ ए, नल नारिसिउं पालउ सांचरिउ ए ॥ २५ ॥

प्रिय पूठिइं पाली पलइ ए, त्रषा भूपइ दवदंती टलविलइ ए।
'कहु, प्रिय! पीहर केतलइ ए?' 'ईणि वडि वीसामउ तेतलइं ए'॥ २६ ॥

दवदंती य पुढइ साथरइ ए, नल ऊढणउं ऊपरि पाथरइ ए।
चींतवइ नल, 'नारिसिउं ए, हिव सासरइ सइं मुहि जाइसिउं ए?॥ २७॥

सूती अबला एकली ए, जउ दोहिलउं होसइ तु मूंकिसउं ए'।
चोर चोरी पाछउ रहिउ ए, नलिइं पीहरनउ मारग कहिउ ए ॥ २८ ॥

पाछिली रातइं नीसरइं ए, दवदंतीय समणडउं अणसरइ ए।
फल पाती थइ आकली ए, जागी तउ प्रिय सारथि टली ए ॥ २९ ॥

सामातु वन्ननउ ढाल

दवदंती पुहवइं पडइ, सपी अंग ज मोडइ रे।
मोडइं नइं त्रोडइ हार हीआ तणु ए ॥ ३० ॥

वरह दावानल आकुली, सपी 'प्रिय प्रिय' भापइ रे।
भापइ नइ दापइ, 'कंत, किहां गयु ए?' ॥ ३१ ॥

वनदेव! तुम्ह वीनवउं, सपा नलवर दापउ रे।
दापउ नइ भापउ, कंत किहां गउ ए? ॥ ३२ ॥

चद सूरिज माथ रहु, मोग्उ जीअन जाणउ रे ।
जाणउ नइ आणउ वर वेगिइ करी ए ॥ ३३ ॥
रूप सोभागइ आगलु, सुरकन्या कइ लीवउ रे ? ।
लीवउ नइ दीधउ हाथ हीइ घणु ए ॥ ३४ ॥
कइ वनि दाधा दव घणा, मर फोडीय पाल रे ? ।
पालइ नइ डालि मोडी तरूयर तणी ए ? ॥ ३५ ॥
रषि सताप्या कइ घणा, कट मइ दीधा छइ आल रे ? ।
आल नइ वालक माय विछोहीया ए ? ॥ ३६ ॥
नल वाल्हा विण हे सपी ! किम यौवन जासिइ रे ? ।
जासइ नइ थासिइ अग अगारूआ ए ॥ ३७ ॥
नर नइ नारी जोडि करी, सखी ! सष्ट नीपाई रे ।
पाई नइ लाई काइ करी एकली ए ? ॥ ३८ ॥
किम्या उलंभा देव दिउ ? सपी ! मू कम छइ कूडइ रे ।
कूडउ नइ रूडउ शील न पालीउ ए ॥ ३९ ॥
एक वार मोरी वीनतडी सुणि सुंदर लाडण रे ।
लाडण नइ माडण नारिनइ नाहलु ए ' ॥ ४० ॥
धणीविहूणी धरणिं ढली, सपी मुपि मूकती सास रे ।
सास नइ आस टली जीवह तणी ए ॥ ४१ ॥
' पीहरि पुहती प्रिय तणी मइं वाहर जउ करवी रे ।
वाहर नइ थाहर अनेथि मू नहीं ए ' ॥ ४२ ॥
वाघ सिंघ वितर घणा, मुइ बीहती चालइ रे ।
चालइ नइ सालइ वरसा रन घणु ए ॥ ४३ ॥
नइं नाला पूरइं वहइं, पटुलडी भीजइ रे ।
भीजइ नइ खीजइ चीकण लपमणइ ए ॥ ४४ ॥

तापस 'परि तप छइ करी प्रतिबोध्या छइ तापस रे ।
तापस नइ पाप सवे मई निरजगियां ए ॥ ४५ ॥
चंद्रयशा मासी मिली, सपी अचलपुरि पुहती रे ।
पुहुती नइ वहिती कुंडिनपुरि गइ ए ॥ ४६ ॥
भीमराय पोलइ लेइ अंग अति घणु जोइ रे ।
जोइ नइ रोइ, नलगुण सांभरइ ए ॥ ४७ ॥
'तात ! जोआवु नल धणी, मूं जीवी छइ काज रे ।
काजनइ आज ज दूत ज मोकलु ए' ॥ ४८ ॥

हिव धुवुल

जव छांडी नल सांचरिउ, दव परजलतउ नाग ।
काढंतां करि अहि डसिउ, सूका छइ हाथ नइ पाग ॥ ४९ ॥
बील वे तसः आपीयां, तातिं कीउ पसाउ ।
समसमापुरि तिणि मूकीउ, तिहां छइ रथपूर्ण राउ ॥ ५० ॥
नित विनोद कउतिग करइ, हुंडिक नामइ सिद्ध ।
सूरिजपाक रस केलवइ, अभिनवु दा....* प्रसिद्ध ॥ ५१ ॥
हरिमित्र बडूउ तिहां गउ, मिलिउ ते हुंडं सूयार ।
लाष सोना तिणि आपीउ अनइ एकाउलि हार ॥ ५२ ॥
हुंडिक तेडेवा कारणि, सयंवर कूडउ रचीउ ।
अश्वरिदय हुंडउ जपइ, रिथपूर्ण त्रिहुं पुहुरे जाइ ॥ ५३ ॥
रिथपूर्ण मोलीयडउं पडिउं, 'कूबडा ! रथ हवइ राखे' ।
'पंचवीस जोयण ते छांडिउं, रथिपूर्ण ! वात म करिये' ॥ ५४ ॥

---

* आ स्थळे मूळ प्रतनी किनार घसाई जवाने लीधे एकाद अक्षर पडी गयो लागे छे.

अश्वरिदय हुंडउ जपइ, संप्या नलनइं दीघी ।
राजह लेग कारणि नलनूं काज ते सीधु ।
भीमइ ऋतिपर्ण रायुनइ भलउ प्रवेस ते दीधउ ॥ ५५ ॥

ढाल

कर जोडी अवला वीनवइ, 'विरह-दवानल काइं तूं दहिउ ।
दासी तह्मारी हूं छुं नाथ ' दुषिसागर पडता दइ हाथ ॥ ५६ ॥
सुपुरिसनु नही ए आचार, अवला छाटइ जे निरधारु ।
नारि तणा नीसासा पडइ, घणा जन्म ते नर रडवडइ ' ॥ ५७ ॥
रूप प्रगट करइ नलवर राउ, दमयंतीनइ मनि उच्छाह ।
भीमराय रलीआइत थउ, निपधइ नयरि राजा नल गयु ॥ ५८ ॥
नलराय जीतूं प्रथवीराज, कूनर कीधु जेणइ युवराज ।
धवल मंगल घरि घरि उच्छाह, नल्ह नरिंद हूउ पहुवीनाह ॥ ५९ ॥
माते पेत्र धन वावरइ, दुषीआ पीड्यानइ ऊधरइ ।
निकरा करिया ते सघला लोक, पृथवी वर्तिउ पुण्यश्लोक ॥ ६० ॥
चार घडी जीणइ उघड लीध, बार बरस तीणइ वरेहु कीध ।
पुत्र राजि बइसारी करी, नल दवदंती सयम वरी ॥ ६१ ॥
क्षमा सरीसा वे तप करइ, अष्ट कर्म सवेगइं तरइ ।
देवलोकि बेहू सुरवरइ, सयल सघनइ आणंद करइ ॥ ६२ ॥
भणइ, भणावइ, जे साभलिइ, अष्ट महासधि तेह घरि फलइ ।
जे भणेसइ नर नइ नारि, नव नधि तेह तणइ घरबारि ॥ ६३ ॥

इति नलदवदंतीचरित्र समाप्त. ॥ भुवनवल्लभ*गणि लषित ॥

* आ नकल करनारनु नाम कोईए पाछळथी छेकी नाख्यु छे, पण प्रयत्न करता ते वाची शकाय छे

शब्दकोश

शब्दना अर्थनी पछी नोंधेला अंको मूळ काव्यमां जे कडीमां ए शब्द प्रयोजायो छे ते कडी सूचवे छे. अंकनी साथे कौंसमां '(प)' एवो निर्देश छे त्यां परिशिष्टमां छापेला 'नलदमयंती चरित्र'नी कडी सूचवाय छे. उदाहरण तरीके, ११ (प) एटले परिशिष्टमां ११मी कडी.

संक्षेपसूचि नीचे मुजब छे :—

अ.	अव्यय
अ. क्रि.	अकर्मक क्रियापद
अ. गुज.	*अर्वाचीन गुजराती*
अप.	अपभ्रंश
अर.	अरबी
क.	कन्नड
काठि.	काठियावाडी बोली
क्रि. वि.	क्रियाविशेषण
गुज.	गुजराती
ग्रा. गुज.	ग्राम्य गुजराती
जू. गुज.	जूनी गुजराती
दे.	देश्य
न.	नपुंसकलिंग
पं.	पंजाबी
पा.	पालि
पुं.	पुंलिंग
प्रा.	प्राकृत
फा.	फारसी
बं.	बंगाळी
भू. कृ.	भूत कृदंत
म.	मराठी
मा.	मागधी

मार	मारवाडी
वि	विशेषण
स	सर्वनाम
स क्रि	सकर्मक क्रियापद
सं	संस्कृत
स्त्री	स्त्रीलिंग
हि	हिन्दी

अहलिउ वि एवु हि एसा ८७० जुआ अमिउ

अऊठ वि 'साडात्रण, गुज उठ, उठ,' सर० आजमा 'ऊठाना घडियो,' ९६८ [स अध्युष्ट > प्रा अउट्ठ]

अगड पु 'साठमारीनुं मेदान,' ते उपरथी 'साठमारी' ७९८ [प्राकृतमा 'अगड' शब्द छे खरो, पण तेनो अर्थ 'कूवो' अथवा 'हवाडो' थाय छे आ ज रूपवाळो परन्तु भिन्न अर्थवाळो आ बीजो कोई देश्य शब्द छे जे गुजराती तेम ज मराठीमा चालु रहेलो छे स 'अवट'नु प्रा मा 'अगड' थाय, पण ते तो स्पष्ट रीते प्रस्तुत 'अगड'थी भिन्न छे]

अगर पुं 'सुगधी काष्ठविशेष' ९८४ [स अगरु]

अगली वि 'आगळ पडती, विशिष्ट,' गुज 'आगली' १६१ [स अग्र > प्रा अग्ग + ली] जुआ आगली

अछ अ क्रि 'होवु' अछइ ३ गुज 'छइ,' अ गुज 'छे' ८०, १०४, ३२२, ३४३, ३८२, ९१, ७०१, ७७३, ७७४, ७७८, ८०८, ९३२, ९५२, ९७०, १०३८, १०८७, ११४८, ११९२, १२२१, १२२६, १२५३, २ (प) [प्रा अच्छ] जुओ छ

अणसण न 'आहारत्याग, उपवास' ५०० [स अनशन]

अणसत्र न ८५६ जुओ अणसण

अणसर स क्रि 'अनुसरवु पाछळ पाछळ जवु' अणसरइ २१ (प) [स अनुसृ]

अणुराउ पु 'अनुराग, प्रेम' ७८

अणुरउं वि 'न्यून, ओछुं' २७७ आनो 'अयोग्य, अनुचित' एवो अर्थ पण थाय छे, जुओ–'एउ भणइ, अम्हे जन्मि आगिलइ हीड्या किस्युं अणूरू,

तुरकां पासि पाडीआ देवि, वइरी दीधउं पूरं'–' कान्हडदेप्रबन्ध ' (सं. १५१२), खंड १, कडी १५९ [सं. अ + पूरितम् > प्रा. अपऊरियं. सर० गुज. अधूरुं < प्रा. अद्धऊरियं < सं. अर्धपूरितम्.]

अणहाण वि. 'पगे जोडा पहेर्या विना,' गुज. 'अडवाणा.' ४१२ [सं. अनुपानह् > प्रा. अणुवाणह]

अणूअर पुं. स्त्री. 'पहेली वार सासरे जतां वर अथवा कन्या साथे मोकलातो सोबती,' गुज. 'अणवर.' अणूअरनी ११ (प) [सं. अनुवर]

अतिसयवंत वि. 'महिमावंत, प्रभावशाली.' १२४४ [सं. अतिशय°]

अधलूं वि. 'अर्धुं.' ४२१. जुओ–' मारी तुरक नि अधलूं कीवूं '–' कान्हडदेप्रबन्ध,' खड १, कडी ४५ (देरासरीनी वाचना प्रमाणे. व्यासनी वाचनामां पाठ जुदो छे.) सर० गुज. 'अधेलो' (अर्धो पैसो), 'अधेली' (अर्धो रुपियो) [सं. अर्ध > प्रा. अद्ध > गुज. अध + स्वार्थिक प्रत्यय 'ल']

अधिकार पुं [सं.] 'वृत्तान्त.' १२२ [संस्कृत शब्द 'अधिकार'नो-आ नोंधपात्र अर्थफेर जैन संस्कृतमां तथा जूनी गुजरातीमां सुप्रचलित छे. जैन चरित्र-ग्रंथो अने रासाओमां कृतिना विभागो माटे पण आ शब्द केटलीक वार वपराय छे.]

अध्यारू पुं. 'अध्यापक, शिक्षक.' १३७ [सं. अध्वर्यु > प्रा. अद्धारू. उत्तर गुजरातमां 'अध्यारुनी निशाळ' एटले 'महेताजीनी गामठी निशाळ' एवो अर्थ थाय छे, अने एवी निशाळोमां बाळको शिक्षकने घणुंखरुं 'अध्यारु' के 'अधारु' तरीके संबोधे छे.]

अनाम न. 'वर्षास.' ७६६. जुओ 'अन्तरनानि जूजूआं दिवार्या ते सविहुंनि अनाम'–' कान्हडदेप्रबन्ध,' खंड १, कडी १३८. [अर. इनाम.]

अनेथि अ. 'अन्यत्र, बीजे स्थळे.' ४०४, ११४८. जुओ 'पुण्यधर्मनउ आचार जिहां जीवदया सत्यवचन ब्रह्मचर्यादिक गुण तिहां जि छइ. अनेथि नथी'–' षष्टिशतक प्रकरण', सोमसुन्दरसूरिकृत बालावबोध, पृ. ९, पं. २०. [सं. अन्यत्र < प्रा. अण्णत्थ]. वळी जुओ अन्येथि.

अनेरउ वि. 'बीजो.' अनेरानइ २७९ [सं. अन्यतर > प्रा. अण्णयर] जुओ 'षष्टिशतक प्रकरण'ना 'शब्दकोश'मां अनेरउ.

अन्या पु 'अन्याय' ३२४ [स अन्याय]

अन्येथि ७७३, ४२ (प) जुओ अनेथि

अपुणीक वि 'पुण्य विनाना' ११३८ [स * अपुण्यक]

अबीर न [अर] 'एक प्रकारनु सुगधीदार सफेद चूर्ण, अबील'. १८० [आ अरबी शब्दनो प्रमाणमा जूना समयमा गुजरातीमा प्रवेश नोंधपात्र छे जुओ 'कान्हडदेप्रबन्ध'मा – 'मारगि नवा पाथर्या चीर, फूल पगर परिमल अबीर,' खड १, कडी २४०]

अभिग्रह पु [स] 'प्रतिज्ञा, धार्मिक नियम' आ जैन पारिभाषिक शब्द छे ५६, ५७, ८३४

अमरष पुं. 'अदेखाई' २११ [स अमर्ष]

अमूझ वि 'विकल, आकळो' २९९ [स मुह्यति > प्रा मुज्झइ उपरथी सर० गुज 'अमुझण' अहीं 'अ' वडे 'अति'नो भाव व्यक्त थाय छे जेम के 'घोर-अघोर,' 'लोप-अलोप,' 'जड-अजड' इत्यादि मराठी अने पौर्वात्य हिन्दीमा 'अचपल' शब्द 'चपळ' अर्थमा छे सस्कृतमा 'रक्त'नी पूर्वे 'अ' लागीने 'अरक्तक' (प्रा अलत्तअ, गुज अळतो) थयो त्या पण 'अ' आवो भाव व्यक्त करे छे एम गणवु जोईए]

अरहट पु 'रहेंट' १०८४ [स अरघट्ट > प्रा अरहट्ट, रहट्ट सस्कृत मूळ तरीके सूचववामा आवे छे ते शब्द पण लोकभाषामाथी लेवायो होय ए सभवित छे]

अलवेसर वि 'अत्यत सुदर, अलबेलो' १०४ [आना मूळमा प्राचीन द्राविडी 'अडव,' 'अळव' (सुदर-लीलायुक्त) छे, जे साथे सुदरतावाचक सस्कृत शब्दो अलर, अलका, अलकार आदि सबध धरावे छे 'अल्वेसर' नुं 'अल्व' अग पण एमाथी होय एम बने अलव + ईश्वर = अल्वेश्वर, अल्वेसर जूना गुजराती साहित्यमा आ बन्ने रूपो प्रयुक्त थयेला छे तथा 'लीलापूर्वक, लटकाथी' ए अर्थमा 'अलविहिं,' 'अलवइ,' 'अलवि' जेवा प्रयोगो मळे छे आ विषे चर्चा माटे जुओ 'गुजराती साहित्य परिषद पत्रिका,' डिसेंबर १९४३मा मारो लेख 'अलवेसर']

अवदात पु [स] 'वृत्तांत' १८ [सस्कृतमा अवदात'नो अर्थ 'सफेद, स्वच्छ, सुन्दर' एवो छे, 'उत्तम' एवा अर्थमा पण ते क्वचित् वपराय छे जूनी

गुजरातीमां ए शब्द एना तत्सम स्वरूपमां-पण नोंधपात्र अर्थफेर साथे-प्रयोजाय छे त्यां एनो अर्थ 'पराक्रम—कीर्तिनो वृत्तान्त' एवो छे अने साथोसाथ केवळ 'वृत्तान्त' अथवा 'हकीकत' एवो साधारण अर्थ पण छे. आम उत्तरोत्तर अर्थ आछो बनतो गयो अने छेवटे ए शब्द पोते ज प्रयोगलुप्त थयो.]

अवधि ज्ञान न. [सं.] अतीन्द्रिय ज्ञानविशेष; ए वडे अमुक अवधि-मर्यादामांना पदार्थो जोईजाणी शकाय छे. आ जैन पारिभाषिक शब्द छे. अवधि ज्ञानिइ ५११, ५५१, ११५८; अवधि ज्ञानिइं ७६६.

अवधूत पुं. [सं.] 'मस्त.' ४०५ [अहीं 'मद्यपानथी परवश थयेला'ने 'अवधूत' कह्या छे ए बतावे छे के अर्थ हलको पडयो छे.]

अविहड वि. 'अभग्न, सातत्ययुक्त.' ११२५ [सं. अविघट]

अष्टापद पुं. [सं.] एक पर्वत, ज्यां प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेव निर्वाण पाम्या हता. आथी ए महातीर्थ गणाय छे. पण अष्टापदनो स्थाननिर्णय अत्यारे थई शकतो नथी. २७, ४८१. अष्टापदि ४१.

असिउ वि. 'एवुं,' हि. 'ऐसा.' ७१८ [सं. ईदृशिक > पा. इदिस, प्रा. एरिस, अप. अइस] जुओ अइसिउं.

असंभम पुं. 'संभवनो अभाव, अशक्यता.' ९१५, १०४६ [सं. असम्भव]

अस्त्री स्त्री. 'स्त्री.' ३१, २१३, ४६३.

अहिनाण न. 'एंधाण, निशानी.' २२१ [सं. अभिज्ञान > प्रा. अहिण्णाण]

अंगओलगूं पुं. 'अंगरक्षक.' ३६८ [सं. अङ्ग + कन्नड उलिग. जूनी गुज.-मां 'अंगओलगणा' छे. 'ओळग' शब्द 'सेवा'ना अर्थमां आजे पण वपराय छे अने भंगीओने गामडांमां 'ओळगाणा' (शब्दार्थ 'सेवको') कहे छे.] जुओ उलग.

अंगारूउ पुं. गुज. 'अंगारो.' अंगारूआ ३७ (प) [सं. अङ्गारक > प्रा. अंगारअ]

अंगित न. 'इशारो, चेष्टा.' ९१७ [सं. इङ्गित]

अंगुलफरस पुं. 'आंगळीनो स्पर्श.' ९७४ [सं. अङ्गुलस्पर्श]

अंजन पुं. [सं.] 'एक प्रदेश, ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो.' २६४ [सुलेमान गिरिमाळाने 'अंजनगिरि' कहेवामां आवे छे: जुओ नंदलाल दे, 'ज्योग्रोफिकल डिक्शनरी,' पृ. ८].

अंतराइ न. 'अतराय कर्म, एक प्रकारनुं कर्म, जे शुभ कार्योमा अनराय— विघ्नरूप थाय छे' ७३७ [सं. अन्तराय. आ जैन पारिभाषिक शब्द छे]

अतेउर न. 'राणीवास' अंतेउरीए २४ (प) [स. अन्त पुर]

अंदोह पुं. 'विमासण.' ९०८ [फा. 'अन्देशह्,' गुज. 'अदेशो' साथे आने सबंध होय ?]

अंध्य पु [सं] 'एक प्रदेश, ज्या नरराजाए विजय कर्यो हतो, आन्ध्र.' २७०

अंबिक स्त्री 'अंबिका देवी' १ (प) [स अम्बिका]

आगली वि. २ (प) आगलु ३३८, ९०३ जुओ अग्गली.

आगु न. 'एक प्रकारनु बख्तर.' आगां ३०६ [स. अङ्ग उपरथी, 'अंगनुं रक्षण करनार' ए अर्थमा सहेज रूपफेरे 'आगा' शब्दनो 'बख्तर' अर्थमां प्रयोग अन्यत्र पण छे, जेम के-'कान्हडदेप्रबन्ध,' ३–७५, ३–९१, इत्यादि.]

आघाट पुं 'देवस्थानने दानमा अपायेली जमीन,' गुज. 'आघाट' ९३, २० (प). गुज.मा खास करीने दस्तावेजोना लखाणमा 'अघाट'नो अर्थ 'कुल हक्क सहितुं' एवो पण थाय छे

आछण न. 'छाश' ११६३ १४ (प) [सर० 'आछ,' 'आश' = 'छाशनुं पाणी.' स अच्छ = 'पातळु, बारीक' उपरथी. सर० 'पराश' = खूब पातळी छाश.]

आपणउ स 'पोतानो.' ५४६. आपणउं २३९, ३९३, १०८९; आपणपानें ११४; आपणपू ४०७, ४३८, ११३१; आपापणा १०१८; आपापणी १७२, २०५ [स आत्मन् > प्रा अप्पणो. अर्वाचीन गुज मा थयेलो आ शब्दनो अर्थविस्तार नोंधपात्र छे, जेम के 'आपणुं' एटले पोतानुं तेम ज वक्ता-समेत बीजा अनेकनुं.] जुओ 'षडावश्यक प्रकरण'ना 'शब्दकोश'मा आपण

आभीर पुं [स] 'देशविशेष, आभीरोनो—आहीरोनो देश' २७१

आभूउं न. 'वादळुं,' आभूआ ५८६ [सं अभ्र > प्रा. अब्भ > गुज. आभ उपरथी सर० गुज. 'आभलुं']

आम स. 'अमे.' ७३६. 'पोताना.' ७७३. मातापिताने संबोधन करतां पण आ शब्द वपराय छे; जेम के 'अम तात' (अर्थात् 'मारा पिता'). २३७, ७७५, ९५०. [स. अस्मद्–, प्रा. अम्हअ]

आरावन पुं. 'एक प्रदेश, ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो.' वर्णन अनुसार ए गंगाने पेले पार आवेलो हतो. २६४.

आराम पुं. [सं] 'उपवन, बगीचो.' ८९, ५२४. आरामि ५९३ [गुज. 'रामी' = माळी शब्द सं. आरामिक > प्रा. आरामिअ > रामिअ उपरथी आवेलो छे.]

आलव स. क्रि 'आलाप करवो, गावुं.' आलवइ १००५, १००६ [सं. आलप् > प्रा. आलव]

आलि न. 'तुच्छ वस्तु, जूठी वस्तु, आळ'; सर० गुज. 'आळपंपाळ' २२ (प) [सं. आल. आ शब्द प्राकृत अने अपभ्रंशमां पण तत्सम रूपे चालु रहेलो छे. जुओ हेमचंद्रनां अपभ्रंश अवतरणोमां – 'महु कंतहो बे दोसडा, हेल्लि म झंखहि आलु. ८-४-३७९.]

आवट अ क्रि 'मुंझावुं, दुख पामवुं.' आवटइ ३६६ [सं. आवृत्त > प्रा. आवट्ट.]

आप्या स्त्री. 'आशा, इच्छा.' ६६ [सं. आशा]

आहवु वि. 'आवो, आ प्रकारनो.' आहवा २११, २१२, २३७.

आहि स्त्री. 'शक्ति, हिंमत,' गुज. 'आय.' ९८८ [सं. आय. सर० गुज. 'हाय' = शक्ति; जेम के 'एनामां कशी हाय नथी.']

आहेडु पुंन. 'शिकार, मृगया.' ७९८. आहेडइ १११९ [सं. आखेट > प्रा. आहेड]

आंगुली स्त्री. 'आंगळी.' आंगुलीइ ३५९ [सं अङ्गुलि]

आंब पुं. 'आंबानुं झाड.' ४३४ [सं. आम्र > प्रा. अंब]

इड न. 'इंडुं.' ७५५ [सं. अण्ड]

उगनिडं न. 'स्त्रीनुं काने पहेरवानुं एक घरेणुं,' एनुं अर्वाचीन गुज. रूप 'ओगनियो.' १५१.

उघउ पु 'जैन साधुनुं रजोहरण, ओघो' ६१ (प) [स अवग्रह > प्रा उग्गह]

उचितबोलु पु 'प्रसगानुसार उचित वाणी बोली रानानुं मन रजन करनार' उचितबोला २७३

उच्छक वि 'आतुर' ५८०, ५५८ उछकपणइ ६१ [स उत्सुक]

उछी वि 'ओछु कमी' २७६ उछेरडउ 'वधारे प्रमाणमा आछु गुज 'ओछेरडु' ८२१ [प्रा उच्छ]

उडीस पु 'आरिसाना प्रदेश' २६० जुओ उडू

उडू पु [स] 'वर्तमान ओरिसा प्रान्तनो अगभूत एक प्रदेश' २.५ जुओ उडीस.

उत्तरासण पुं 'वदन करती वखत उत्तरीय वस्त्रने शरीर उपर अमुक रीते राखवु ते' उत्तरासणि ११०१ [स उत्तरासङ्ग आ जैन पारिभाषिक शब्द छे]

उदभुत वि [स] 'अद्भुत' २७२ जुओ उद्भुत

उद्भुत १०८ जुओ उदभुत.

उपगार पुं 'उपकार, पाड.' १२०, ४९३, ५८८, ८८३ १०४९ [स उपकार]

उपदिशा स्त्री 'खराब दशा अवदशा' ४००, ८०१ [स अपदशा]

उपसर्ग पु [सं] 'विघ्न (खास करीने तपश्चर्यामा)' ७२२

उलख स कि, 'ओळखवु' उलखतू ६६३, उलखान्यउ ५३० उलखी ८,४, उलखीइ ४, ६५७ उलखीउ ६८८, ७०३, उलखीउ २४, उलखीति ९१७ [स उपलक्ष् > प्रा उवलक्ख] जुओ ओलख

उलग स कि 'सेवा करवी' उलगूं ५०७ [क उळिगिसु 'सेवा करवी,' ऊळिग 'सेवा'] जुओ अगओलगू

उलव स कि 'रोटी रीते पचावी पाडवु' गुज 'ओळववुं' उलवी ९८.

उलाल 'उगाळवु' अ कि 'उल्ळवु'नुं कारक उलालइ १७९, उलाली जइ ७३७ [सं उद् + लल् नुं कारक–उल्लालयति हि उलारना]

उलि स्त्री 'पक्ति,' गुज 'ओळ' ३०८ [प्रा ओली < सं आलि ?]

उलंभउ पुं. 'ठपको', गुज. 'ओळंभो.' उलंभा ३९ (प) [सं. उपालम्भ > प्रा. उवालंभ. 'ओलंभउ' शब्द पण जूनी गुज.मां आवे छे. जुओ 'षष्टिशतक प्रकरण'नो शब्दकोश.]

उल्हव स. क्रि. 'बुझाववुं,' गुज. 'ओल्हववुं.' उल्हवीआ ८ (प) [दे. उल्हव]

उवज्झाय पुं. 'उपाध्याय, जैन साधुनी एक पदवी.' १२४६ [सं. उपाध्याय > प्रा उवज्झाय. भारतना जुदा जुदा प्रांतोमां ब्राह्मणोनी केटलीक अटको–'ओझा' (गुजरात) 'वझे' (महाराष्ट्र), 'झा' (उत्तर प्रदेश)– प्रा. रूप 'उवज्झाय' क्षीण थतां व्युत्पन्न थई छे.]

उसीकल वि. 'आभारी,' गुज. 'ओशिंकल, ओशिंगण.' ६९०, ७५८, १०२१.

उसंख अ. क्रि. 'संकोचावुं,' गु. 'ओशंकावुं.' २८४ [उत् + शंक > प्रा. उसख]

ऊआरणउं न. गुज. 'ओवारणुं.' ऊआरणइ ६६८ [सं. अवतारणकम्]

ऊफरु वि. 'उपरनुं, चडियातुं.' ७५०; ऊफरुं ९७२ [जूनी गुज.मां 'उपहरऊं' पण मळे छे; जुओ 'षष्टिशतक प्रकरण,' शब्दकोश. एमांना 'प' अने 'ह' ना संकरथी 'ऊफरउ–ऊफरु' थयुं होय ए शक्य छे.]

ऊरध वि. 'ऊंचे.' १२२३ [सं. ऊर्ध्व]

ऊवट पुं. 'आडो रस्तो.' ऊघटि ८३५ [सं. उद्वर्त्म–, प्रा. उवट्ट]

ऊवरथ स. क्रि. 'व्यर्थ करवुं.' ऊवरथइ २९१ [सं. उद् + व्यर्थ]

ऊसनी भू. कृ. 'नंखाई गयेली.' ४१२ [सं. उत्सन्ना]

ऊसस अ. क्रि. 'खीलवुं, विकास पामवो.' ऊससइ ८२५ (प) [सं. उत् + श्वस्]

एकाउलि वि. 'एक सेरनो (हार), एकावळ (हार).' ५२ (प) [सं. एकावलि]

एतलइ क्रि. वि. 'एटलामां.' ४८७ [सं. *अयत्य + इल्ल > प्रा. एत्तिल, अप. एत्तुलउ]

एवडू वि ' आवडु ' ६१, ७७ थी ८८०, ८८२ थी ८९० [स * ईयत् (यावत्, तावत्नी जेम), अप एवडउ गुज एवडा]

ओल्हर स कि ' ओळसर्तुं ' ओल्हरइ ३८३ जुओ उल्हर

ओसीसउ न ' सूती वखते माथा नीचे मूकवानु ढळण ओशीकुं ओसीसा ३७० [स उत्शीर्षक > प्रा उस्सीसअ]

कक्काण पु ' देशविशेष ज्या नगरानाए विनय कया हता ' ९६७ [बलुचिस्तानन अहींने आवेला प्रदेशन ' कयकान ' कहता त्याथी आवता घोडा ' कयकान ' के ' केकाण ' कहेवाता पछी वाइ घोडा माटे ' केकाण ' शब्द प्रचलित थया] जुओ केकाण

कच पु ' कच्छ देश ' २७१ [स कच्छ कच्छ'नो मूळ अर्थ ' नदी अथवा समुद्रकिनारानो सीमाडावाळो प्रदेश ' एवा छे प्राकृतमा पण एनो एवा अर्थ छे सर० ' मालुयाकच्छ ' (' ज्ञाताधर्मकथा सूत्र, ' श्रुतस्कन्ध १, अध्ययन १), ' भरुकच्छ ' आदि] जुओ काछ

कचपिचि स्त्री ' न समजाय एवो अवाज,' गुज ' कचपच ' ४०१.

कचोल्डु पु ' प्याले ' कचोलडा २७१ [प्रा कचोल्य, गुज ' कचोळु ' जैन सस्कृतमा कचोलक शब्द वपरायो छे पण ते लोकभाषामाथी लेवाया जणाय छे]

कछोटी स्त्री ' लगोटी ' ८८२ [प्रा कच्छोटी ज स कक्ष > प्रा कच्छ उपरथी छे]

कटा स्त्री ' छगन ' ९२

कडछिऊ वि ' मोगे कडछा जेवो ' ४८ [दे कडुच्छय उपरथी कारी ओना विशिष्ट पहेरवेशनी मोगी, डौली काछडीनो प्रस्तुत स्थळे निर्देश छे]

कडि स्त्री केड,' काठि ' मध्य ' कडिइ ९४० [स कटि]

कडी स्त्री ' स्त्रीने पगे पहेरवानो अलकारविशेष ' ९४० [स कटक गुज कडु–कडी]

कडूउ वि ' कडवुं ' ३२५ [सं कटुक > प्रा कडुअ सस्कृतमा कटु एटले ' तीखु ' अने तिक्त एटले ' कडवु ' पण गुजरातीमां ' कडवु ' अने ' तीखु ' ए बन्नेना अर्थ मूळनी तुलनाए उलटपालट थइ गया छे]

कण वि. 'अल्प.' ११६६ [सं. कण]

कणमण अ. कि. 'दुःखने लीधे झीणो अवाज काढवो, त्रासवुं.' कणमणइ २३६ [रवानुकारी]

कणवार स्त्री. 'सहाय करवी, खबर करवी.' ७३४ [सं. कण > प्रा. कण्ण + वार ? कंईक आ गुजराती शब्दने मळता अर्थमां जैन संस्कृतमां कर्णवारा, कर्णवारी आदि शब्दोनो प्रयोग छे. जुओ 'पुरातन प्रबन्धसंग्रह,' पृ. १११–१२]

कतूहल न. 'कौतुक.' ७८०, १००२; कतूहले ८१३.

कन्हइ अ. 'पासे, कने.' ४१४, ५५३, ५६७; कन्हइथी ६८३; कह्नइ २६. ['कन्हइ' सप्तमीनो अनुग छे. सं. *कर्णस्मिन् > अप. कण्णहिं > कन्हइ. जुओ 'पष्टिशतक प्रकरण'ना शब्दकोशमां कन्हइ.]

कय स. 'प्रश्नार्थक शुं.' ८ (प) [सं. कानि > अप. काइ, अथवा सं. किमु उपरथी काइं, जू. गुज. कइ. 'इ'नुं प्रतिसंप्रसारण थतां कय, अर्वाचीन गुज. 'के.']

कयर पुं. 'एक वृक्षविशेष, केर, केरडो.' १००७ [सं. करीर > प्रा. कइर]

करणहार पुं. 'करनार.' ७३५ [सं करण + कार, 'ह'ना प्रक्षेपथी 'करणहार,' गुज. 'करनार.' जुओ 'पष्टिशतक प्रकरण'ना शब्दकोशमां आराधणहार शब्दनी नीचे नोंधायेला आ प्रकारना प्रयोगो.]

कलंबी पुं. 'खेडूत,' गुज. 'कणबी' ८२५, १२३२ [सं. कुटुम्बिन् > प्रा. कुडुंबी–कुडंबी, म. कुळंबी–कुणबी. जूनी गुजमां अन्यत्र 'कुलंबी' शब्द छे—'घांची मोची नइ सूतार, धोबी कुलंबी नइ लुहार,' संघकुलकृत 'नंदबत्रीसी' (सं. १५६०), कडी १२७. ग्राम्य गुज.मां आजे पण 'कणबी' शब्द वपराय छे.]

कसि स्त्री. 'कसोटी (सोनानी)'. ८५३ [सं. कष]

कसिउं स. 'शुं,' गुज. 'कशुं.' ५४, ४१४, ७५०; कस्यू १०५१ [सं. कीदृश > प्रा. किदिस, प्रा. केरिस, अप. कइस. सर० हि. कैसा, म. कसा.]

कहण न. 'कथन.' १०५७ [सं. कथन]

कहि स. 'कोई.' २२, २५६, ३९७; कहिनइ ९८, ३९३; कहिनी ९८; कहिनु २५६; कहिनूं १०१८ [सं. कापि > प्रा. कावि > अप. कवि > जू. गुज. कइ]

ककुम न ‘ कंकु ’ २६७ [स कुंकुम]

कडीउ पु ‘ छोया चणवानु काम करनार कारीगर, कडियो ’ कडीआ १०२ [दे कडइअ]

कत पु ‘ पति,’ गुन ‘ कथ ’ ३६०, ४३२, ४३६, ४३७ ४४४, ४५२, ५१०, ६३१, कतनी ६३२, कता ३५५, ४१७, ४४० ४४२, ४४४, ४५४, ४५८, ४५९, ४७७, कतानइ ४४४, कतिइ ७३ [स कान्त]

कब स्त्री ‘ छडी ’ १९८ [सं कम्बा]

कबोज पु ‘ एक देश ज्या नलराजाए विजय कर्यो हतो, अफघानिस्तान ’ २६७ [कम्बोज]

काछ पु ‘ कच्छ देश ’ २६६ [स कच्छ] जुओ कछ

काछड पु ‘ काछडो, कछोटो ’ ४८ [स कक्ष > प्रा कच्छ + स्वार्थिक ड]

काज न ‘ काम ’ काजनइ ‘ कामने माटे ’ [स कार्य > प्रा कज्ज]

कापडी पु ‘ साधु, तापस ’ २१ (प) [स कार्पटिक > प्रा कप्पडिअ]

कामणगारिउ पु ‘ कामण करनार, कामणगारो ’ ७३४ [स कार्मणकारक > प्रा कम्मणगारओ]

कामाक्षा स्त्री ‘ कामाख्या देवीनु पीठ ज्या आवेलु छे एवो प्रदेश, कामरूप अर्थात् आसाम ’ २६६, २७१ [स कामाख्या]

कार पुं ‘ एक प्रदेश, ज्या नलराजाए विजय कर्यो हतो ’ [स कारा आ स्थळे दक्षिण समुद्रमा अगस्त्य मुनिनो आश्रम आवेलो हतो ताम्रपर्णी नदीना मुख आगळ आवेल ‘ कोलगइ ’ जेनो उल्लेख मार्को पोलोए कर्यो छे ते ज आ स्थान एम केल्लाक माने छे जुओ नदलाल दे, ‘ ज्योग्रोफिकल डिक्शनरी,’ पृ ९२]

कारिमी वि ‘ बनावटी ’ १०८७ [स कृत्रिम > प्रा कारिम]

कारू पु [स] ‘ कारीगर ’ सर० गुन ‘ नारु कारु ’ १०१

कालीउ न ‘ स्त्रीनो एक अलकार.’ १९१

कासग पु. ‘ ध्यान माटे शरीरने निश्चल राखवु ते, काउसग,’ ११०२. कासगरहीउ ४९, कासगि ७६, २३५, ७२२, १७ (प) [स कायोत्सर्ग > प्रा काउस्सग]

कासर पुं. [सं.] 'जंगली पाडो.' ४८२

कांकिमपणउं न. 'हांकी काढवानी प्रवृत्ति.' ४५७

किहां अ. 'क्यां.' किहांथू ४१४ [सं. कस्मात् > प्रा. कम्हा > अप. कहां]

कीडीउं न. 'नानो काचनो मणको.' कीडीआ ८८३ [दे. चीड. सर० प्रा. गुज. 'चीडियुं']

कुछित वि. 'निन्दनीय'. ७५९ [सं. कुत्सित]

कुडि स्त्री. 'कोडी, शंखलुं.' कुडिनइ ११६५ [सं. कपर्दिका > प्रा. कवड्डिआ, कउड्डिआ, जू. गुज. कउडि, म. कवडी.]

कुतिग न. 'कुतूहल, नवाई.' २३ [सं. कौतुक]

कुशोभो पुं. 'शोभानो अभाव, अपकीर्ति.' ३९०

कुंकण पुं. 'एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो, कोंकण.' २६६ [सं. कोङ्कण]

कूकस पुं. धान्यनां छोडां,' गुज. 'कूशका.' ७६ [दे. कुकुस]

के. स. [सं] 'केटलाक.' ११०२, ११०३

केकाण पुं. 'घोडो.' ९३८. जुओ ककाण.

केतलउं वि. 'केटलुं.' केतलइ २६ (प); केतला १८०; केतली ३९३, ४१७; केतले ३९८ [सं. *कयत्तिअ (= कियत्), प्रा. केत्तिअ, अप. केत्तिल. हि. कितना, म. किती.]

केलवण स्त्री. 'खिलवणी, व्यवस्थित विकास,' गुज. 'केळवणी.' १०; केलविउं ४४९.

केलि स्त्री. 'केळ.' १००६ [सं. कदली > प्रा. कयली]

केवल न. [सं.] 'सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, सर्वज्ञता, केवल ज्ञान.' ५३४, १२५०. केवली पुं. 'केवल ज्ञानी.' ५३५, ५५३, ५५४ [आ जैन पारिभाषिक शब्दो छे.]

कोइलि स्त्री. 'कोयल.' १००६ [सं. कोकिला > प्रा. कोइला]

कोडि स्त्री. 'करोड.' २४३ [सं. कोटि]

क्षण पु 'पर्वदिवसनी कथा के व्याख्यान' ३८९ [स क्षण = पर्व गुज प्रयागमानो अर्थफेर नोंधपात्र छे]

क्षुद्र न 'छिद्र, दोष' ९९ [स छिद्र अहीं व्युत्पन्न शब्दने संस्कृत जवा बनाववानो अज्ञानमूलक प्रयास छे आवा बीजा शब्द माटे जुओ क्षेद]

क्षेत्र न [स] 'जैनधर्ममा विहित सात स्थानो, ज्या धन वापरवानु विधान छे' १२१, पेज २० (प) [आ जैन पारिभाषिक शब्द छे]

क्षेद पु 'खेद क्लेश' २२ [स खेद] जुओ क्षुद्र

खडोखली स्त्री नाना नाटनी नानी वाव' खडोखलीइ २४२ [प्रा खुड्डा खुड्डिया वळी जुओ– खडोखली दीर्घिका' ('प्राचीन गुजराती गद्यसन्दर्भ,' पृ १८६) वीरसिंहना 'उषाहरण,' प ५२२मा आ ज अर्थमा 'खडोखडी' शब्द छे, ज गुज मा अन्यत्र पण सुप्रचलित छे]

खप पु. 'उपयोग' ३९५ [स क्षप् उपरथी भाषाना आ करता वधारे जूना थरमा 'क्षप' अने 'खप' ए बन्ने शब्दोनो 'श्रम' एवो अर्थ थाय छे जुओ 'षष्टिशतक प्रकरण' ना शब्दकोशमा क्षप अने खप]

खीटली स्त्री 'स्त्रीनु एक घरेणु' १९२

खीर न 'दूध' १११३, ११२९ [स क्षीर]

खेल स्त्री 'पंक्ति, परंपरा' ११६८ [उत्तर गुजरातमा युवानो अने बाळको माटे 'नानी खेल (खेप)' एवो प्रयोग थाय छे, ते आ साथे सरखाववा जेवो छे]

खेस पु 'द्वेष' ३४९, ६२८

खोड 'लाकडु' ११६५ [स क्षोड > प्रा खोड]

खोवलड पु 'खोबो, खो ो' खोवलइ १२१६

खोह स्त्री 'खीण,' गुज 'खो' ५४३ [स गोह ?]

गणीउ पु 'ज्योतिषी' गणीआ १०२ [स गणक]

गयमर पु 'हाथी,' गुज 'गेमर'. ११ (प) [स गजवर > प्रा गयवर गुजरातमा प्रचलित विशेषनाम 'घेमर' आ उपरथी छे श्री रमणलाल देसाईनी नवलकथा 'हृदयविभूति'मां घेमर सुखी नामे पात्र आवे छे गुजरातमां गेमलदास नामे एक कवि थई गयो छे]

गरढउ वि. 'घरडो, वृद्ध.' गरढा ३५१ [सं. जरठ > प्रा. जरढ, गरढ. सर० काठि. 'गलडो'.]

गरसली स्री. 'स्त्रीनुं एक घरेणुं.' १९१

गरूअडी स्री. 'मोटाई, माहात्म्य.' ५८९. जुओ गिरुउ.

गहगह अ. क्रि. 'आनंद पामवुं, सुगंधथी महेकवुं.' गहगहइ १००५; गहगहिया २२४ [उपर नोंधेला बे अर्थो अनुक्रमे आ बे प्रयोगोमां छे.]

गंभीरिम स्री. 'गंभीरता, ऊंडाई.' १८८, २०८

गाह स्री. 'गीत.' २९२ [सं. गाथा > प्रा गाहा]

गांछउ पुं. 'वांसफोडो.' गांछा १००, १०१ [दे. गंछ, गंछय]

गांठीउ पुं. 'स्त्रीनुं एक घरेणुं.' गांठीआ १९४ [सं. ग्रन्थिकः > प्रा. गंठिओ] जुओ घाटऊड.

गिरुउ वि. 'मोटो,' गुज. 'गरवो.' २०८, ९९९, १०६४, १२१६; गिरूआ २६, ५४, १०७२, ११११. जुओ गरूअडी.

गुड स. क्रि. 'सज्ज करीने चलाववुं.' गुडी ४६६ [हाथीने सवारी माटे सज्ज करवानी क्रिया माटे 'गुड' धातु जूनी गुज.मां व्यापक छे.]

गुडउ पुं. 'पग,' गुज. 'गुडो'. ४६६

गुडी स्री. 'नानी धजा.' १२३; गुडीआ ३९१ [आ कन्नड ऋणशब्द छे. चैत्र सुद एकमथी शरू थता दक्षिणी नवा वर्ष माटे 'गुडीपडवो' शब्द छे, एमां पण 'गुडी' 'धजा' ना अर्थमां छे. ए दिवसे धजानां तोरण बांधवामां आवतां.]

गुण स. क्रि. 'बोलवुं, वांचवुं,' गुज. 'गणवुं.' गुणइ १२५३ [सं. गण्. सर० गुज. 'भणवुंगणवुं.']

गुणनिलु वि. 'गुणोनुं स्थान, गुणवान.' ४८ [सं. गुणनिलय]

गुल पुं. [सं.] 'गोळ'. ५१४

गूगलीउ वि. 'हाथीनी एक जात.' गूगलीआ ३०५

गूंझ न. 'छानी वात.' ८५४ [सं. गुह्य. सर० गुज. 'गूंझुं' = 'खीसुं.']

गेलि स्री. 'रमत, मस्ती, गेल.' ३०५ [सं. केलि ?]

गोठ स्री. 'प्रेमभरी वात.' ४२२ [सं. गोष्ठि > प्रा. गोट्ठि. सर० गुज. 'गोठडी,' 'गोठियो' इत्यादि.]

गोफणु पु 'अवाड लम्बावनानु स्त्रीओनुं एक घरेणु' १९२ [स गुम्फन > प्रा गुंफण]

गोमनी स्त्री [स] 'स्त्रीओनुं एक घरेणु' १९४

गोरू न 'गायो' ४७ [स गोरूप > प्रा गोरूअ आ प्रकारना बीजा प्रयोगो–स. वत्सरूपानि > प्रा वेडरूवाइ (वाळको) स भाडरूप > प्रा भाडरूअ > गुज भाडरू वळी जुओ–'गोरू चारीने घेर आवे, वहालेनी मारा गोरू चारीने घेर आवे'–एक प्रचलित भजन]

घड पुं 'त्रिझो' घडली = गटनी २३ [द गट्ट] जुओ °ली

घण पु 'चिन्ता' ३६५ [स घन गुज मा अहीं लक्ष्यार्थ आव्या छे]

घणेरडउ वि 'वधारे,' गुज 'घणेरडो' घणेरडा १२१० [स. घनतर > प्रा घणयर + अप स्वार्थिक प्रत्यय 'ड']

घरुक अ क्रि 'घूरकवु गुस्सामां अवाज करवो' घरकइ ४८० [दे घुरुक रवानुकारी]

घरणि स्त्री 'पत्नी' ४६ [स गृहिणी > प्रा घरिणी जूनी गुज मा 'घरणी' प्रयोग पण छे]

घाट पुं 'पहाडी मार्ग' ३०० [सर० हि घाटी जैन संस्कृतमां 'घट्ट' प्रयोग मळे छे (जेम के 'गाडराघट्ट' = एक विषम पहाडी मार्ग), एनो संबंध आ साथे छे गुजरातीमा 'घाटी' शब्द 'डुंगराळ रस्तो' तथा लक्षणाथी 'संकट' ए बन्ने अर्थमा छे]

घाठऊउ पु 'ग्रन्थिच्छेदक,' गुज 'गाठुओ, गठियो' घाठऊआ ७९२ [स *ग्रन्थुक > प्रा गठुअओ > अप गठुअउ आ शब्द विषे विगतसर चर्चा माटे जुओ 'संस्कृति,' वर्ष ६, पृ १२३, २१६ तथा वर्ष ७, पृ २४] जुओ गाठीउ

घार अ. क्रि 'घेनमा पडवुं बेभान थवुं' घारिउ १०९५ [घृ–घारयति उपरथी स घारित > प्रा घारिअ सर० गुज. घारण]

घूतकार पुं 'घुवडनो अवाज.' ४८० [रवानुकारी]

चउत्थ स्त्री 'एक दिवसनो उपवास' ९१६, चउथ ५०२. [सं चतुर्थ (भक्त) > प्रा चउत्थ > गुज चोथ अहीं भक्त अथवा भोजन शब्द अध्याहृत

समजवानो छे. आ जैन पारिभाषिक शब्द छे. माणस चोथे टंके भोजन करे ए तेनो अर्थ छे.]

चउथउ वि. 'चोथुं.' १२३७; चुथइ ११२३. [सं. चतुर्थकः > प्रा. चउत्थउ]

चउरी स्त्री. 'लग्नविधि माटेनो मंडप,' गुज. 'चोरी.' १० (प) [प्रा. चउरिआ < सं. * चतुरिका]

चतुरवंति वि. 'चतुर.' ११२९.

चमर पुं. 'चामर.' चमरात बहुवचन ३७१. सरखावो समुद्रात ['गुजरात,' 'भीलात,' 'महेलात,' 'जीवात,' 'मेवात' आदिमां बहुवचननो जे अरबी प्रत्यय 'आत' छे ते ज अहीं वपरायो छे.]

चहइ स. क्रि. 'इच्छवुं,' गुज. 'चाहवुं'. चहइ ९५ [प्रा. चाह]

चहुटउं न. 'बजार,' गुज. 'चौटुं.' चहुटइ ३८७, चहुटा ९२, १२३६; चुवटा ९२. [सं. चतुर् + हट्ट > प्रा. चउहट्ट]

चंग वि. [दे.] 'सुन्दर'. १८५, २६४, ८७६, १११९, १२१३. सर० म. 'चांगला'. जुओ सुचंग.

चंद्रूउ पुं. 'चंदरवो.' १७० [प्रा. चंदुअ < सं. * चन्दुक]

चाक पुं. 'अंबोडामां खोसवानुं स्त्रीनुं एक चक्राकार घरेणुं'. १९३ [सं. चक्र > प्रा. चक्क]

चाचर न. 'चोगान.' ९२ [सं. चत्वर > प्रा. चचर. सर० 'चाचर त्यां जातर' ए रूढिप्रयोग.]

चाडूउ पुं. 'एकनी वात बीजाने कही देनार, चाडियो.' चाडूआ ७९२ [सं. चाटुक > प्रा. चाडुअ]

चातुरिम स्त्री. 'चतुराई.' १२४७ [सं. चतुरिमा]

चरित्र न. [सं.] 'दीक्षा.' ७६१, ११२१

चिऊआलीस वि. 'चुंवाळीस.' ६६८ [सं. चतुश्चत्वारिंशत् > प्रा. चउआलीस]

✓चिडउ पुं. 'चकलो.' ७५१ [सं. चटक:]

चिग्राम न. 'चीतरामण, चित्रग्राम.' ८५, १७०, ३४७ [सं. चित्र + मयट् प्रत्यय]

चिंत न. 'चित्त, मन.' ४३२; चींत ३६०, ८८८; चींति ७०२, ९२६ [सं. चित्त]

°ची पष्ठीनो प्रत्यय. कमला दलची ४५२ [सं. °त्य > प्रा. °च्च; मर० प्रा. अम्हेच्चअ, तुम्हेच्चअ, आदि]

चीखल पुं. 'कादव.' ५४; चीखलि ८३५ [दे. चिक्खल्ल. म. चीकल.]

✓चींतारउ पुं. 'चित्रकार, चीतारो.' चींतारा १०२ [सं. चित्रकार > प्रा. चित्तआर]

चुंकडउ पुं. 'घानतुं एक घरेणुं, चोकडा.' ११३ [सं. चतुष्क > प्रा. चउक्क + स्वार्थिक प्रत्यय]

चुपट न. 'चोगान,' गुज. 'चोपटुं, चोकठुं.' ९२ [सं. चतु पट > प्रा. चउपट]

चुपाखर अ. 'चारे बाजु.' ३०३ [सं. चतुःपक्ष > प्रा. चउपक्ख, चउ-पाख + स्वार्थिक ल].

चुमासूं न. 'वरसादना चार मास, चोमासुं' ५५, ७९ [सं. चातुर्मास > प्रा. चाउम्मास, चउमास]

चुसठि वि. 'चोसठ.' ११६, १६१ [सं. चतु षष्टि > प्रा. चउसट्ठि]

चुसाल वि. 'पहोळी.' १७० [सं. चतुःशाला > प्रा. चउसाल]

✓चोल न. 'चूडो रंगवानो लाल रंग, मजीठ.' ९५; चोलनु ८४९ [दक्षिण भारतमां आवेला चोल देशमांथी आ रंग आवतो हशे? मजीठने अनेक स्थळे 'चोल मजीठ' तरीके वर्णववामां आव्यो छे सर० 'लाल चोळ.']

छ गुज. 'छे'. अत्यारे पण गुजरातनी केटलीक बोलीओमां 'छे'ने बदले 'छ' बोलाय छे. ९२१. जुओ अछ.

✓छइल्ल पुं. 'रसिक पुरुष, छेल.' ८४७ [सं. छेक + इल्ल > प्रा छेअ + इल्ल]

छलछलीउ वि 'आछक्लो.' १०००

छींपउ पुं. 'कपडां छापनार,' गुज. 'छीपो.' १०१ [दे. छिंपय. जैन संस्कृतमां 'छिंपक' शब्दनो प्रयोग छे खरो, पण ते लोकभाषामांथी लेवायेलो जणाय छे.]

छेह पुं. 'दगो, विश्वासघात' ८२३, ९९१, ९९६; छेहु ४४६; छेह 'त्याग,' १०५६; 'पार, अंत,' ९३३ [सं. छेद > प्रा. छेअ > अप. छेह].

जइतवादी पुं. 'जय मेळवनार' १५०; जयतवाद 'विजय'. २१८

जगीस स्त्री. 'इच्छा.' १२४८ [सं. जिगीषा 'जीतवानी इच्छा.' आ विशिष्ट अर्थने बदले जूनी गुज.मां 'जगीस' शब्द 'इच्छा' अथवा 'आकांक्षा' एवा सामान्य अर्थमां वपरातो थयो. पण समय जतां ए अर्थ पण आछो बनी गयो, अने 'सार' अने 'निरधार'नी जेम ते केवळ पादपूरक बन्यो.]

जडीउ पुं. 'दागीनामां हीरामाणेक जडवानुं काम करनार, जडियो.' जडीआ १०२ [सं. जटित > प्रा. जडिअ]

जयढक स्त्री. 'विजयसूचक पडघम' १२३१ [सं. जयडक्का]

जवहरी पुं. 'झवेरातनो वेपार करनार, झवेरी.' ९६ [अर. जौहर उपरथी]

जाम क्रि. वि. 'जे समये.' ५४, १० (प) [सं.यावत् > प्रा. जाव > अप. जावँ. जूनी गुज.मां 'जां' रूप पण छे.]

जामलि अ. 'जेवुं, बराबर.' १४५, १८३ [सं. यामल=जोडकुं, प्रा. जामल. आ रीते सं. यमल = जोडकुं उपरथी प्रा. जमल द्वारा जूनी गुज.मां जमलउ–जमलि ('बराबर, पासे, सरखुं') आदि तथा मराठीमां जवळ थाय छे.] जुओ 'षष्ठिशतक प्रकरण'ना शब्दकोशमां जमलउ.

जिनकल्पी पुं. 'अतिशय कठिन आचारो पाळनार एक प्रकारना जैन मुनि.' ५३० [सं. जिनकल्पिक > प्रा. जिणकप्पिअ. आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे.]

जिमणवार पुं. 'भोजनसमारंभ, जमणवार.' ३८७ [प्रा. जिमण + वार] जुओ 'षष्ठिशतक प्रकरण'ना शब्दकोशमां जिमइ.

जीप स. क्रि. 'जीतवुं, फतेह मेळववी' जीपइ. २६८, २६९, ३२९, ३५३, ११५०; जीपता १२०२; जीपी ३३७; जीपीआ ५०, २६६, २७१; जीपीउ ३१२; जीपुं ३०९ [सं. जित > प्रा. जित्त, जिप्प]

जीवी न 'जीवन' ४८ (प) [स जीवित > प्रा जीविअ]

जू न 'जुगार' ३०६, ३३०, ३०६, १०५२, जूइ ७०७, ७११ [स द्यूत > प्रा जुअ] जुओ जूअ.

जूअ न 'जुगार' ३२७, ३२९, ३९९, ६२८, जुओ जू

जूआरी पुं 'जुगारी' ३०९, जूआरीनइ ३८९ [स द्यूतकारिन > प्रा जूअआरी]

जूआरीपणउ न 'जुगारीपणु'. ६२९ [स द्यूतकारित्व > प्रा जूअ-आरिप्पण]

जूउ वि. 'जुदु' ४००, जूइ ४०० [स युत > प्रा जुअ गुज 'जुदु' शब्द समानार्थ होवा छता फा 'जुदा' उपरथी आवेलो छे, एटले व्युत्पत्तिनी दृष्टिए 'जूउ' थी भिन्न छे]

जूरी स्त्री 'सतामणी,' गुज 'जोराई' ४४६ [फा ज़ोर]

जेडि स्त्री 'विलंब' १०३५ ['जेडजेडि' नाम तेम ज क्रियापद जूनी गुज मा सुप्रचलित छे स 'जड' साथे एने व्युत्पत्तिगत संबंध होय ए कदाचित् शक्य छे आ विषे जुओ 'बुद्धिप्रकाश' ऑगस्ट १९५१ मा छपायेला 'कान्हडदे-प्रबन्धना त्रण विशिष्ट शब्दप्रयोगो' ए मारा लेखमा 'जड जेडि' विषेनी नोंध]

जोअण न 'चार गाउ, जोजन' ९९, ६६८ [स योजन > प्रा जोअण]

झत्ति अ 'झट, जल्दी' ५९६ [सं झगिति > प्रा झडत्ति, झत्ति]

झंक स्त्री 'सताप, झरामण' १०४६ [प्रा झख 'सतप्त थवु']

झूज्झ न 'युद्ध' ०९९, झूझ ८५४ [स युद्ध > प्रा जुज्झ]

झूझ अ क्रि 'युद्ध करवु, झझवु' झूझइ ३९१ जुओ झूज्झ

झूझार पुं 'योद्धो' २१६ [स युद्धकार > प्रा जुज्झआर]

झूबकु न 'झमरु भमरु' १७० सर० म 'झुमका'

टलविल अ क्रि 'टळवळवु' टलविलइ ०६ (प)

टकउ पु 'चलणनो मुख्य सिक्को, टको' टका ९१२ अहीं 'सोवन टंका' ए निर्देश वडे सोनानो टको समजाय छे [सं टक सर० गुज 'टको' (दा त 'दर वरसे दर सेंकडे चार टकानु व्याज') वळी सर० 'टकशाळ' = सिक्का पाडवानुं कारखानुं]

टक्क पुं. एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो; टक्क देश, सिन्धु अने बियास नदीओ वच्चेनो प्रदेश. ' २६९ [सं. टक्क]

टालउ पुं. ' खेल, चमत्कार, ' गुज. ' टाळो. ' ४३९ [सं. ताल]

टांडी वि. ' शोभायुक्त, सौभाग्ययुक्त. ' ४६४ [सं तुण्डकम्, जूनी गुज. ' तांडउ ' = मस्तक; ' तांडऊ पाडिउ घालिउ पाइ, पूछिउं कुसलु युधिष्ठिर राइ '– शालिभद्रसूरिकृत ' पंचपंडवरासु ' (सं. १४१०), पं. ६१५. शरीरमां मस्तक उच्च स्थाने होवाथी सं. तुण्ड, जूनी गुज. तांड–टांड शब्दमां ' शोभा 'नो अर्थ आव्यो हशे. ए उपरथी बनेलुं विशेषण ते टांडी.]

टोप पुं. ' युद्धमां पहेरवानुं शिरस्त्राण. ' ३०६

टोल पुं. ' निवासस्थान, घर. ' ८३० [प्रस्तुत अवतरणमां आ अर्थ जोईए एटलो स्पष्ट नथी, पण जूनी गुज.ना अन्य उल्लेखो जोतां आ अर्थ योग्य लागे छे. ' जे घटशुद्धि अजाणतां करइ कथाकटोल, पडतुं घर ते परहरी गिरिसिरि मंडइ टोल '–' त्रिभुवनदीपक प्रबंध, ' कडी ५. सर० गुज. ' टोळो ' = घरनी मुख्य बारसाखनी बाजुनो आगळ पडतो भाग; बं. ' तोला '= शेरी. सं. प्रतोलि उपरथी.] जुओ पोलि.

ठव स. क्रि. ' आरोपवुं, मूकवुं. ' ठवी २०९ [सं. *स्थपयति > प्रा. ठवइ. सर० मं. ठेवणें] जुओ ठाव.

ठाकुर पुं. ' राजा, ' गुज. ' ठाकोर. ' २८६, २९५, ६८३, ८३०, १०६४; ठाकुरा ५२७ [सं. प्रा. ठक्कुर. सर० गुज. ठक्कर (एक ज्ञाति), ठाकोर (ब्रह्मक्षत्रियो अने भोजकोनी अटक), ठाकर (ब्राह्मणोनी एक अटक); सर० गुज. ठाकोरजी, ठाकरडो; हि. म. ठाकुर]

ठाव स. क्रि. ' मुकाम करवो. ' ठावीआ १०४१ [सं. स्थापयति > प्रा. ठावइ] जुओ ठव.

ठाह न. ' स्थान, ठाम. ' ठाहिं १७४ [सं. स्थाम > पा. थाम > प्रा. ठाम > अप. ठाउ, जूनी गुज. ठाउ, ठाय. सर० हि. ठाँव, म. ठाव; प्रा. गुज. ठा=मोभो, मरतबो]

डाहापण न. ' डहापण, समजुपणुं. ' १०१८; डाहापणपणूं (भाववाचक बे प्रत्ययो नोंधपात्र) ६९ [सं. दक्षत्वन] जुओ डाहु.

दाहु वि 'डाह्यो, समजु.' ११३, ६४१, ८६४, १०००; डाहा ३७४ [स. दक्ष > प्रा. दक्खो, दाखो, * दाहो] जुओ 'पष्टिशतक प्रकरण'ना शब्दकोशमा ढाहउ.

डील न. 'शरीर.' ४४७, डीलिइ २३६, २९३, ४१३, ८०६ [प्रा. डिल]

डुहलूं वि. 'कचरावाळुं, डहोळुं' ९८३ [प्रा डोह 'डहोळुं करवुं.' आचार्य हेमचन्द्रे आपेला नीचेना अपभ्रंश अवतरणमा आ प्रकारनो प्रयोग छे—'रक्खइ सा विसहारिणी वे कर चुंबिवि जीउ, पडिबिंबिअ-मुंजालु जलु जेहिं अडोहिउ पीउ,' ८-४-४३९ अहीं 'अडोहिउ' एटले 'नहि डहोळायेलुं, स्वच्छ.']

डोडी स्त्री 'एक अलंकार, हाथे पहेरवानुं मादळियुं' ९१९ [अहीं डोडीनुं वर्णन स्त्रीना अलंकार तरीके छे अत्यारे पुरुषो पण डोडी पहेरे छे.]

डोली स्त्री 'झूलती झोळी, मादा अशक्तने उपाडीने लई जवानी मांची.' ८८१ [सं दोला > प्रा. डोला. सर० गुजराती 'डोल' (पाणी भरवानी), 'हिंडोल,' इत्यादि]

ततखिण क्रि. वि. 'ते ज समये.' ११९३ [स. तत्क्षण > प्रा. तक्खण. सर० पं. तखन]

तलार पुं. 'नगररक्षक, कोटवाल.' २७३ [प्रा तलवर, तलार. जूनी गुज.मा 'तलार' शब्द सुप्रचलित छे जैन संस्कृतमां 'तलवर'नो प्रयोग छे, पण ते प्राकृतनी असर छे. पंजाबमां 'तलवर' अटक छे, ते आ प्राकृत शब्दनुं सातत्य बतावे छे]

तलीया तोरण न. 'एक प्रकारनुं तोरण, तरिया तोरण.' ११९३

ताई पुं [अ.] 'वणकर.' १०२ [अर. 'तइ' = कपडांनी गडी वाळवी']

ताम क्रि वि. 'ते समये.' ५४, ११ (प) [स. तावत् > प्रा. ताव > अप. ताव जूनी गुज मा 'ता' रूप पण मळे छे]

तायक पुं. 'एक देश, ज्या नलराजाए विजय कर्यो हतो' २६९

तालाचर पुं. [स] 'नृत्यनो व्यवसाय करनार एक जाति.' ३९० [प्रसिद्ध संस्कृत साहित्यमा आ शब्द जोवामां आवतो नथी, पण प्राकृतमा एनु 'तालायर' रूप मळे छे.]

तावडु पुं. 'सूर्यनो ताप, तडको.' तावडि ७९३, ७९४ [सं. ताप > प्रा. ताव + स्वार्थिक 'ड.' मारवाडीमां आ अर्थमां 'तावडो' शब्द प्रचलित छे. सर० गुज. 'ताव' (ज्वर), 'तावडो' (मोटी कटाई)]

तिज स. क्रि. 'त्यजी देवुं, छोडी देवुं.' तिजी ४६१ [सं. त्यज्]

°तु पंचमीनो प्रत्यय. 'पृथ्वीतु' = पृथ्वी करतां. १२१३ [सं. °तः > अप. तउ. आचार्य हेमचन्द्र (८-४-३५५, ३७३) सं. भवन्तकः > अप. होन्तउ एम आपे छे]

तुडि स्त्री. 'बराबरी, स्पर्धा.' १२ [सं. तुलित > प्रा. तुडिअ]

तुरिउ पुं. 'घोडो.' तुरिया ९३५ [सं. तुरग > प्रा. तुरय]

तरूआरि स्त्री. 'तरवार.' १८० [सं. तरवारि. आ शब्दना अर्वाचीन गुजराती उच्चारो 'तरवार-तरवेर' सूचवे छे के एनी व्युत्पत्ति फा. 'तलवार' मांथी नथी]

तेतलउ वि. 'तेटलुं.' तेतलई २६ (प). [सं. तत्रत्य = प्रा. [illegible], तेत्तिल > अप. तेत्तुल]

त्राटी स्त्री. 'कामडानी भींत के पडदो.' ८८० [दे. तट्टी = वाड, आवरण]

त्राटीहरु न. 'कामडानुं घर.' ३४७ [सं. °गृह > प्रा. °हर]

त्रिकरणसुद्धि स्त्री. 'मन, वचन अने कायानी शुद्धि'. त्रिकरणसुद्धिइ १२४३ [आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे.]

त्रेह पुं. 'जमीनमां ऊतरेलुं वरसादनुं पाणी.' ७५२ [जुओ, 'काठि जलणु जिम धरणिहिं त्रेहु, कुसुमिहिं परिमल गोरवि नेहु; तिलिहिं तेलु जिम ताढिक नीरि, तिम ते निवसइ जगत शरीरि'—'त्रिभुवनदीपक प्रबन्ध,' कडी १३]

त्रोटी स्त्री. अर्थ अस्पष्ट. ८८२. 'त्रोटी' नो अर्थ 'काननुं एक घरेणुं' तथा 'कमरपट्टो' थाय छे, पण ए बेमांथी एके अर्थ अहीं बंधबेसतो नथी.

त्रोड स. क्रि. 'तोडवुं.' त्रोडइ ११६७; त्रोडी ४६० [सं. त्रोटयति > प्रा. तोडइ] जुओ त्रोडवूं.

त्रोडवूं न. 'तोडवानी क्रिया.' १४३. जुओ त्रोड

थईधर पुं. 'राजानो तांबूलवाहक.' ९३९ [सं. स्थगीधर. 'पृथ्वीचंद्रचरित्र' (प्रा. गुज. का. सं., पृ. ९७) मां आ अर्थमां 'थईयात' शब्द छे. मंगल-माणिक्यकृत 'अंबडविद्याधर रास' ५-१७३ मां 'थईयार' छे.]

थाहर स्त्री 'स्थान.' ४३ (प) [सं *स्थात > प्रा थाअ, थाह + स्वार्थिक 'ड' सर० गुज ठार]

थाभु पुं 'थामलो,' गुज 'थाभो' ३९७ [सं स्तम्भ > प्रा थंभ]

थोडेरूं वि. 'वधारे ओछुं' १००० [स स्तोक > प्रा थोअ + स्वार्थिक 'ड' + स °तर]

दक्षण वि 'जमणुं' २, 'दक्षिण दिशा' २७१ [स दक्षिण]

दसाहआ न ब व ४३२ 'लग्न पछी वरवहुने श्वसुर पक्ष तरफथी अपाता दस जमण, दसैया.' १६ (प) [स दश + अहानि > अप दसाहाई मगल-माणिक्यकृत 'अवडविद्याधर रास' २-९२मा 'दसाहीद' (दसैयामा) प्रयोग छे ते मूळनी वधु नजदीक छे]

दह ि 'दश' १०६ [स दश]

दाघ पु. 'दाह, बळतरा.' ३४ (प) [स दाह]

दाधउ वि 'दाझेलो' दाधा ५९२ [स दग्ध > प्रा दड्ढ]

दालिद्र न 'दरिद्रता, गरीबाई' १२१ [स दारिद्र्य]

दाहा पु ब व 'रमतमा पडता दाणा, दा' ३६९, १०५३ [फा दाव]

✓ दिणद पु 'सूर्य' ६२३ [स दिनेन्द्र]

दिहाडउ पुं 'दिवस, दहाडो' दिहाडइ ५६ दिहाडा ५०१ [सं दिवस > प्रा दिअह > दीह + स्वार्थिक 'आड' सर० अर्वाचीन गुज 'दि'] जुओ दीस, दीह

दीवटीउ पुं 'राजा आगळ मशाल पकडनार' दीवटीआ २७३ [स दीपवर्तिक > प्रा दीअवट्टिओ]

दीस पुं 'दिवस' २८८ [स दिवस > प्रा दिअस] जुओ दिहाडउ, दीह

दीह पु 'दिवस' ९८५ [स दिवस > प्रा दिअह] जुओ दिहाडउ, दीस.

✓ दुत्थ वि 'दुःखी' १२० [स दुःस्थ]

दूतपालक पु 'एक राज्याधिकारी' २७४

दूदु पु 'दडियो, पडियो' ४१६

दूहव स कि 'दुःख आपवु' दूहवइ १०६१, ११७० [स दुःखापयति > प्रा दुहावइ]

दे अ. प्राकृतमां ए संबोधनसूचक छे; अहीं छंदमां पादपूरक तरीके वपरायो छे. ६६९ थी ६८२.

देउर पुं. 'दियर.' ६२८, ६३० [सं. देवर]

देसोटुं न. 'देशवटो, देशनिकाल.' ३९८

देहरउं न. 'दहेरुं, मन्दिर.' देहरइ २४० [सं. देवगृहं > प्रा. देअहरं]

दोभागपणउं न. 'दुर्भाग्य.' ३३३ [सं. दौर्भाग्यत्वनं > प्रा. दोभग्गप्पणं]

दोसी पुं. 'कापडनो वेपारी.' ९५ [सं. दौष्यिक > प्रा. दोसिअ]

द्रूपद न. 'गीतमां दरेक कडीए पुनरुक्त थती पंक्ति, टेक.' ५४६ [सं. ध्रुवपद]

द्रेठि स्त्री. 'नजर, दृष्टि.' ९१ [सं. दृष्टि]

धवल न. 'मंगल प्रसंगोए स्त्रीओ वडे गवातुं गीत, धोळ.' ५९ (प) [सं. प्रा. धवल] जुओ धुयुल.

धात स्त्री. 'धातु.' ३२; 'प्रकृति, स्वभाव.' ९७३, ११२४ [सं. धातु]

धार स्त्री. 'एक प्रदेश ज्यां नले विजय कर्यो हतो. मध्य भारतमां आवेल धार [सं. धारा. भोजराजा धारानगरीनां राज्य करतो हतो ए इतिहासप्रसिद्ध छे.]

धिन अ. 'शाबाश, धन्य.' १०१०, ११३६, ११९९; धिन्न ५२, ६५, ११०१ [सं. धन्य]

धीरट्ट स्त्री. 'धैर्य' ५०६; वि. 'धैर्यवान'. ४०३ [सं. धृष्ट > प्रा. धरट्ठ, धिरट्ठ. वळी जूनी गुज.मां आ अर्थमां 'धीरष्ट' शब्द पण मळे छे; जुओ 'षष्टि-शतक प्रकरण'ना शब्दकोशमां धीरट्ठ. सर० गुज. हि. 'धीट.']

धुयुल जुओ धवल.

धूपघटी स्त्री. [सं.] 'धूपदानी' १७१.

धूलहडी स्त्री. 'होळीना बीजा दिवसनो तहेवार, धूळेटी.' धूलहडीना ३४७ [सं. धूलि, प्रा. धूल्ही + स्वार्थिक 'डी.' सर० 'बहु विगोइउ फेडिउ ठाउ, जिम धूलहडी केरउ राउ'–जिनप्रभाचार्यकृत 'भव्यचरित' (नरसो संसो), कडी ५]

ध्रसुड स. क्रि. 'हांकी काढवुं.' ध्रसुडी ४६६

न अ. भारदर्शक, अर्वाचीन गुज. 'ने' (जेम के–कहो ने, बोलो ने इत्यादि) १, ४५४, ६४३, ६६७, ६७८, ८२२, ९२५, ११७२, ११७४, ११७५.

नइ चतुर्थीनो प्रत्यय. 'माटे.' काजनइ (कामने माटे) ४८ (प)

नइं स्त्री. 'नदी' ४४ (प) [सं. नदी > प्रा. नइ] जुओ नय.

नट अ. क्रि 'दुःख पामवुं' नडइ ९७७ [प्रा. णड 'खेद पामवो.' ए उपरथी गुज. 'नडवुं' स क्रि छे सर० म नडणें, हिं नटना स नृत्-नट्> प्रा. णट्ट उपरथी अर्थ थोडोक बदली पहीने आ शब्द आव्यो होय एम बने.]

नणंदर स्त्री. 'पतिनी बहेन, नणद.' २३० [सं. ननान्दृ]

नधि पुं. 'समृद्धि' ६३ (प) [स निधि]

नभव स क्रि 'निभाववुं' नभवावइ १०६१ [स निर्वह् > प्रा. णिव्वह उपरथी]

नय स्त्री. 'नदी' ५०० [सं नदी > प्रा. नइ] जुओ नइं

नरवहिवुं न. 'निर्वाह करवो ते.' नरवहिवानी ९८८ [सं निर्वह्]

नवसर वि. 'नव सेरनो (हार).' १९१ [°सर < प्रा. सरि; जे संस्कृत स उपरथी]

नस्तर अ. क्रि 'छूटवु.' नस्तरइ ८४१ [स. निस्तरति]

नहींतरि अ. 'नहि तो, नहितर.' १०४९ [सं. नहि + तर्हि]

नागफूली स्त्री. 'स्त्रीनो एक अलंकार.' १९४

नागहथ पुं. 'स्त्रीनो एक अलंकार.' १९४

नाटईउं न. 'रेशमना वाणानुं वस्त्र.' ८८३ [प्रेमानंदे 'मामेरा'मां 'छेल-वहुने छींट ज आपी, नानी वहुने नाट जी' (पंक्ति ५६८) ए प्रमाणे 'नाट'नो उल्लेख कर्यो छे, पण एथी आ वस्त्रना प्रकारनी स्पष्टता थती नथी सत्तरमा शतकमां थयेला गोविन्दकृत 'मामेरा'ना उल्लेखो आ माटे कामना छे 'नीत्री शाली नाटी घणी, जाणे ने हवडानी वणी' (पं. १३७); 'हीरवणी नाटीआणी भात्य चोखलीआ.' (पं. १६३)]

नाटक न. 'नृत्य'. ८५, १२४, ५३३, १०४५; नीचेना स्थळोए 'नृत्य' अने 'नाटकनो प्रयोग' ए बन्ने अर्थो होय ए शक्य छे १४५, ११०६, १२०५

नाण स. क्रि 'जाणवुं,' गुज. 'नाणवुं.' ६६७ [सं. ज्ञान > प्रा. नाण]

नादर स. क्रि. 'आदर न करवो ते.' नादरइ २५३ [न + आदरइ]

नान्हूं वि. 'नानुं, लघु.' ९८४ [सं. श्लक्ष्ण > प्रा. लण्ह, नण्ह]

नाप स. क्रि. 'नहि अपवुं ते.' नापी ४४८ [न + आपी. सं. अर्प > प्रा. अप्प]

नालुं न. 'वहेळो, गरनाळुं.' नाला ४५ (प) [सं. नालकम्]

नाव अ. क्रि. 'नहि आववुं ते.' नाविउ ५९१ [न + आविउ. सं. आयाति > प्रा. आयाइ > आवइ]

नाह पुं. 'पति.' ५०९, ७३७ [सं नाथ] जुओ नाहलु.

नाहलु पुं. 'पति, नावलियो.' ४० (प) [सं. नाथ > प्रा. नाह + स्वार्थिक 'ल'] जुओ नाह.

निकरु वि. 'कर विनानो.' निकरा ६० (प) [सं. निष्कर > प्रा. णिक्कर]

निखूंती वि. 'निमग्न.' ५०६ [नि + खूंती < प्रा. खुत्त < सं. * क्षुत्त]

निगध पुं. 'निषध राजा.' २२६ [सं. निषध]

निगोद पुं. [सं.] 'अनंत जीवोनु एक साधारण शरीरविशेष.' ११०३ [आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे.]

नितु अ. 'दररोज.' १४ (प) [सं. नित्य]

निदान न. [सं.] 'अंत, परिणाम.' निदानि ८१८; निदानिइ ४७५

नियरि स्त्री. 'नगरी.' १४ (प) [सं. नगरी > प्रा. नयरी]

निरतु वि. 'आसक्त.' ५८८; निरता १६३ [सं. निरत]

निर्गुणगारु पुं. 'अवगुण करनार.' निर्गुणगारा ८४८ [सं. निर्गुण + कारक > प्रा. गारअ]

निर्मदा स्त्री. 'नर्मदा नदी.' २७१ [सं. नर्मदा]

निवड वि. 'सजड.' ६७३ [सं. निबिड]

निसण स. क्रि. 'सांभळवुं.' निसणेइ १ (प) [नि + सुणेइ < प्रा. सुणेइ, सुणइ < सं. शृणोति]

नीठर वि. 'दयाहीन.' ८२३; नीठर ७३४, ८४९ [सं. निष्ठुर > प्रा. णिट्ठुर]

नीसत वि. 'सत्त्वहीन.' ८२३ [सं. निःसत्त्व > प्रा. निस्सत्त]

पटउलउं न. 'उत्तम रेशमी वस्त्र, पटोळुं.' ८८२; पटकूल २२३, ३६९; पट्टकूल ७१७; पटुलडी स्त्री. ४४ (प) [सं. पट्टकूल > प्रा. पटऊल. 'वस्त्र' अर्थमां कूल शब्द संस्कृत कोशमां जो के मळतो नथी, पण 'वणकर'ना अर्थमां कौलिक छे, एटले कूल विषे संदेह रहेतो नथी. केटलाक 'पटोळा'नी व्युत्पत्ति पट्ट + दुकूल-उपरथी आपे छे.]

पडख स. क्रि. 'राह जोवी.' पडखु ६० [सं. प्रतीक्ष् > प्रा. पडिक्ख, पडक्ख. जूनी गुज.मां आ क्रियापद सुप्रचलित छे. विगत माटे जुओ 'बुद्धिप्रकाश,' ऑगस्ट १९५१मां 'कान्हडदेप्रबन्धना त्रण विशिष्ट शब्दप्रयोगो' ए मारा लेखमां 'पडख' विषे नोंध.]

पडवडु वि. 'स्पष्ट, उचित.' पडवडा २८४ [सं. प्रतिपद् > प्रा. पडिवड. अन्य सन्दर्भमां आ शब्दनो 'सज्ज, तैयार' एवो अर्थ पण थाय छे. जुओ मंगलमाणिक्यकृत 'अंबडविद्याधर रास,' ४-२४०]

पढ स. क्रि. 'वांचवुं, पढवुं.' पढइ १२५३ [सं. पठ् > प्रा. पढ].

पणम स. क्रि. 'प्रणाम करवुं.' पणमेवि १ (प) [सं. प्र + नम्].

पतीज स्त्री. 'विश्वास.' ८५७ [सं. प्रत्यय > प्रा. पत्तिज्ज]

पत्तन न. [सं.] 'नगर, पाटण.' ३६८. जुओ पाटण.

पभण स. क्रि. 'बोलवुं.' पभणेइ १ (प) [सं. प्र + भण्]

परनाल स्त्री. 'नेवांनुं पाणी झीलवा माटेनी नीक, परनाळ.' परनालि ८२९ [सं. प्रणाल > प्रा. परणाल]

परवार पुं. 'परिवार, रसालो.' परवारस्यूं ८६९ [सं. परिवार]

पराणि अ. 'पराणे, बळजबरीथी.' ९७४ [सं. प्राण > पराण] जुओ प्राण अने सपराणु.

परि स्त्री. १३०, २७७, ९१०, १०५१; परिइ १०, ५९, १२२, ३१२, ३२९, ३९०, ४१५, ४९९; परिपरिना ९७. जुओ पइर.

परिख स. क्रि. 'परीक्षा करवी, परखवुं.' परिखी २०९; परीखडी स्त्री. 'परीक्षा, परख.' ८५७, ८५८ [सं. परीक्ष् > प्रा. परिक्ख]

परीअचि स्त्री. 'पडदो.' [परियच्छि तिरस्करिणी'—' प्राचीन गुजराती गद्यसन्दर्भ,' पृ. १९०. परीअच अने परीअछ एवां पण एनां रूपो जूना साहित्यमां मळे

नींख स. क्रि 'नाखी देवुं' नींखोउ ३९७ [सं. निक्षिपति > प्रा. णिक्खिवइ, णिक्खइ]

नींशाण न. 'निशानडंका' १२३ [सं नि.स्वन के नि.स्वान > प्रा. णिस्साण. फा. निशान = 'चिह्न' शब्दथी आ भिन्न छे]

नुमु वि. 'नवमो' १०० [सं. नवम > प्रा. नउम]

नुहइ 'न होय,' गुज. 'न्हाय' ६२, ६३, ६४, ७०, ४१०, ४९०, ९८८, ११७७. नुहुती 'न हती, न्होती.' ९८८ [न + सं. भवति > प्रा. हवइ, अप. हुइ]

नेउर न. 'झाझर, नूपुर.' ११०, नेउरनू ३ [सं *नेपुर = नूपुर; सर० गुज. नेवर, नेपुर, हि. नेवर, नेवल]

नेसडू पुं. 'भरवाडोनुं जंगलमां आवेलुं निवासस्थान, नेसडो.' ३४६ [सं. निवेश > प्रा. निएस > गुज. नेस + स्वार्थिक 'डू']

नेसाल स्त्री. 'निशाळ, पाठशाळा.' नेसाल्इ १२८, १४५, १६१, ३८८. नेसालि १३६ [सं लेखशाला > प्रा. लेहसाला > जूनी गुज. लेसाल]

नेहलु पुं. 'स्नेह, नेह.' ११२५ [सं. स्नेह > प्रा. नेह + स्वार्थिक 'लु']

पइर स्त्री. 'प्रकार, पेर.' पइरि ३७३, ७४२, ८०२, ११६२. [सं. प्रकार > पयार, पयर, पइर, पइरि, परि. जुओ परि.

पखीइ अ. 'विना.' ९९२. पखे १७१ [स. * पक्षस्मिन् > अप. पक्खहिं > जूनी गुज. पाखइं, पखइं; पाखे, पखे] जुओ पाखइ.

पगपडण न. 'पहेली वार सासरे आव्या पछी वहु वडीलोने पगे लागे ए क्रिया.' पगपडणइ २४४ [सं. पदक > प्रा. पअग, जे उपरथी पग अने पाग ए बे शब्दो आवे छे. सं. पतन > पडण]

पचखाण न. 'कोई वस्तुनो त्याग करवानी प्रतिज्ञा.' ११४६ [सं. प्रत्याख्यान > प्रा. पचक्खाण. आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे.]

पछेडी स्त्री. 'उत्तरीय' १४१ [स. प्रच्छदिका > प्रा. पच्छडिआ. बालिकाओनी ओढणी माटे आजे 'पछेडो' शब्द वपराय छे. 'पछेवडउ' अने 'पछेरडी' जेवा प्रयोगो पण जूनी गुज. मा छे जुओ मंगलमाणिक्य कृत 'अंबडविद्याधर रास' ७-९, ३-१८९.]

पटउलउं न. 'उत्तम रेशमी वस्त्र, पटोळुं.' ८८२; पटकूल २२३, ३६६; पट्टकूल ७१७; पटुलडी स्त्री. ४४ (प) [सं. पट्टकूल > प्रा. पटऊल. 'वस्त्र' अर्थमां कूल शब्द संस्कृत कोशमां जो के मळतो नथी, पण 'वणकर'ना अर्थमां कौलिक छे, एटले कूल विषे संदेह रहेतो नथी. केटलांक 'पटोळा'नी व्युत्पत्ति पट्ट + दुकूल उपरथी आपे छे.]

पडख स. क्रि. 'राह जोवी.' पडखु ६० [सं. प्रतीक्ष् > प्रा. पडिक्ख, पडक्ख. जूनी गुज.मां आ क्रियापद सुप्रचलित छे. विगत माटे जुओ 'बुद्धिप्रकाश,' ऑगस्ट १९५१मां 'कान्हडदेप्रबन्धना त्रण विशिष्ट शब्दप्रयोगो' ए मारा लेखमां 'पडख' विषे नोंध.]

पडवडु वि. 'स्पष्ट, उचित.' पडवडा २८४ [सं. प्रतिपद् > प्रा. पडिवड. अन्य सन्दर्भमां आ शब्दनो 'सज्ज, तैयार' एवो अर्थ पण थाय छे. जुओ मंगलमाणिक्यकृत 'अंबडविद्याधर रास,' ४-२४०]

पढ स. क्रि. 'वांचवुं, पढवुं.' पढइ १२५३ [सं. पठ् > प्रा. पढ].

पणम स. क्रि. 'प्रणाम करवुं.' पणमेवि १ (प) [सं. प्र + नम्].

पतीज स्त्री. 'विश्वास.' ८५७ [सं. प्रत्यय > प्रा. पत्तिज्ज]

पत्तन न. [सं.] 'नगर, पाटण.' ३६८. जुओ पाटण.

पभण स. क्रि. 'बोलवुं.' पभणेइ १ (प) [सं. प्र + भण्]

परनाल स्त्री. 'नेवानुं पाणी झीलवा माटेनी नीक, परनाळ.' परनालि ८२६ [सं. प्रणाल > प्रा. परणाल]

परवार पुं. 'परिवार, रसालो.' परवारस्यूं ८६९ [सं. परिवार]

पराणि अ. 'पराणे, बळजबरीथी.' ९७४ [सं. प्राण > पराण] जुओ प्राण अने सपराणु.

परि स्त्री. १३०, २७७, ९१०, १०५१; परिइ १०, ५९, १२२, २१२, २२९, २९०, ४१५, ४१९; परिपरिनत ९५. जुओ पइर.

परिष स. क्रि. 'परीक्षा करवी, परखवुं' परिषी २०९; परीखडी स्त्री. 'परीक्षा, परख.' ८५७, ८५८ [सं. परीक्ष् > प्रा. परिक्ख]

परीअचि स्त्री. 'पडदो.' [परियच्छि तिरस्करिणी'—'प्राचीन गुजराती गद्य-सन्दर्भ,' पृ. १९०. परीअच अने परीअछ एवां पण एनां रूपो जूना साहित्यमां मळे

छे. एनां अवतरणो माटे जुओ 'बुद्धिप्रकाश,' जुलाई सप्टेम्बर १९४५मा मारो लेख 'परीअचि.' एनी व्युत्पत्ति 'परि + प्रा. अंछ' (लांबुं करवुं, बांधवुं) एमांथी अथवा सं. परिच्छद (पडदो) एमांथी प्रा. * परिच्छअ > परिअछ > परीअच > परीअचि ए क्रमे संभवे छे.]

परीसह पुं 'तपश्चर्यामा सहन करवाना विघ्नो.' ५१, ११५० [सं. परीषह. 'उत्तराध्ययन सूत्र'ना "परीषह अध्ययन'मां बावीस प्रकारना परीषह गणाव्या छे. जैन धार्मिक परिभाषाओनो आ शब्द छे]

परुस स क्रि 'क्रोध करवो.' परुसीइ १३ (प) [सं. प्र + रुष्]

पल्यु न. 'सफेद वाळ, पळियुं' पल्या २५२ [स. पलित > प्रा. पलिअ]

पसाय पुं 'कृपादान.' ११२, ७९८ [स. प्रसाद] जुओ सुपसाउलु.

पहिट स. क्रि. 'पलटवुं.' पहिटीइ ८३६

पहुवीनाह पुं. 'पृथ्वीनो अधिपति.' ५९ (प) [सं. पृथ्वीनाथ]

पंच पद न. [सं.] 'पंच नमस्कार, नवकार मंत्र.' १०४०

पंच शबद पुं. 'पांच वाद्यनो मंगलसूचक ध्वनि.' १२५, ११४० ['पंच शब्द' अथवा 'पंच महाशब्द'नो उल्लेख गुजराती तथा अन्य भारतीय भाषाओना जूना साहित्यमां आवे छे. केटलाक एनो अर्थ पांच मंगलगीत, पांच देवताओनां स्तोत्र अथवा पांच वार वाजां वगडावना एवो पण करे छे. परन्तु ए करतां उपर पहेलं कहेलो अर्थ वधारे उचित जणाय छे. कन्नड भाषाना 'विवेकचिन्तामणि' नामे ग्रन्थमा शृंग, तम्मट अथवा तम्बूर, शंख, भेरि अने जयघंटा ए प्रमाणें पांच वाद्योनां नाम आप्यां छे. तुलसीकृत 'रामायण'नी एक टीकामां पांच वाद्योनो नीचे प्रमाणे निर्देश कर्यो छे-'तंत्री ताल सुझांझ पुनि जानु नगारा चार; पंचम फूंके से बजे पांच शब्द परकार.' जुओ 'नागरीप्रचारिणी पत्रिका,' पु. १, पृ. २३७]

पाइक्क पुं. 'पायदळनो सैनिक, पायक.' ६४ [प्रा. पाइक्क < सं. पाद+क?]

पाखइ अ 'विना.' १३८, ६०३, ८०८, ९७०, ९९२, ११२९, ११७२. जुओ पखीइ.

पाग पुं. 'पग.' १०८३, ४९ (प); पागि ५०८. जुओ मगपइण.

पाटण न. 'नगर.' ३३७ [सं. पत्तन > प्रा. पट्टण].

पाटल पुं. 'एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो.' २७०

पाडूउ वि. 'अशुभ, हलको.' ३१९, ६८९; पाडूई ४०० [सं. * पातुक > प्रा. पाडुअ]

पात्र स्त्री. [सं.] 'नर्तिका.' ३८८. सर० गुज. 'पातर' = गणिका; एमो अर्थ नीचे ऊतर्यो छे.

पापांतिक पुं. 'एक प्रदेश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो.' २७१

पारधि स्त्री. 'शिकार, मृगया.' २१ [सं. पापर्द्धि > प्रा. पारद्धि]

पालउ वि. 'पगे चालतो, पाळो.' २५ (प); पाला ३९४; पाली २६ (प) [सं. पालक 'रक्षक, चोकीदार' > प्रा. पालअ. चोकीदार घणुंखरुं पगे चालतो होय तेथी उपर्युक्त अर्थ निष्पन्न थयो हशे.]

पालक न. [सं.] 'एक देवविमान.' १७४

पाहिइ अ. '°ना करतां.' २६२, २७५, ८४५; 'पासे' ९३४ [सं. पक्षे के * पक्षस्मिन् > अप. पक्खहिं, पक्खइ, पाखइ, पाहइ. जूनी. गुज.मां आ शब्दनां विविध रूपान्तरो माटे जुओ 'षष्टिशतक प्रकरण' ना शब्दकोशमां पाहइ.]

पीआणउं 'प्रयाण, कूच.' १०३५; पीआणे ३०० [सं. प्रयाणक > प्रा. पयाणअ]

पीआरडी वि. 'बीजानी, पराई.' ३१८; पीआरा ४५० [प्रा. पराय < सं. * पराक ?]

पीठमर्दक पुं. [सं.] 'नृत्यशिक्षक, नृत्यकार.' २७४

पीहर न. 'पियर, स्त्रीना पितानुं घर.' ४०४, २६ (प); पीहरि ४७९, ५१२, ७२८, ७४०, ८२१, ९०९, ४२ (प); पीहरिथी ८१६, ८१७. [सं. पितृगृह > प्रा. पियहर. ए ज प्रमाणे सर० सं. मातृगृह > प्रा. माइहर > गुज. मैयर; सं. कदलीगृह > जूनी गुज. कदलीहर; सं. भूमिगृह > प्रा. भूइंहर > गुज. भुइरुं-भोयरुं; सं. जिनगृह > प्रा. जिणहर; सं. यमगृह > प्रा. अने जूनी गुज. जमहर > जवँहर, गुज. हि. जौहर.]

पुढ अ. क्रि. 'सुई जवुं, पोढवुं.' पुढइ २७ (प) [दे. पवड्ड. का.मां आ अर्थमां 'पहुड' क्रियापद छे; एटले आने द्राविडी ऋणशब्द गणवो घटे.]

पुतार पुं. 'हाथीनो महावत.' पुतारनी ७८४ [आ शब्दनी व्युत्पत्ति नक्की थई शकी नथी, पण जूना साहित्यमां ठेठ प्रेमानंदना समय सुधी ते निश्चितपणे आ अर्थमां वपरायो छे जुओ 'बुद्धिप्रकाश,' सप्टेम्बर १९४८मां मारो लेख 'पउतार–पूंतार.']

पुहचतु वि 'मोटो, शक्तिशाळी, पहोंचतो.' ९००; पुहुचवउ १०९ जुओ पुहुत.

पुहवी स्त्री. 'पृथ्वी' पुहवइं ३० (प) [सं पृथ्वी]

पुहुत अ क्रि. 'पहोंचवुं.' पुहुता १७२, पुहुतु ७०३, ८०१, ११८०, १३ (प) [सं प्रभूत > प्रा. पहुत्त, पहुच. नरसिंहराव सं. प्राप्त > पत्त > पहुंत्त उपरथी अने टर्नर प्रभुत्व > पहुत्त उपरथी आपे छे.] जुओ पुहचतु.

पूग अ. क्रि. 'संतोष थवो, पुरावुं.' पूगइ १, १५२, ७९१, ८६७; पूगसिइ ३२६; पूगी १२२, ९५३, १०१० [स पूर्यते > प्रा पुज्जइ > जूनी गुज. पूजइ, पूगइ. सर० अर्वाचीन गुज. पूगवुं = पहोंचवुं]

पूर्व न. 'जैन शास्त्रोनो एक विभाग.' ११०२ [आगम साहित्यना अंगविभागमां बारमुं अंग 'दृष्टिवाद' नामे हतुं. एमां चौद 'पूर्व' हता. दृष्टिवाद तेम ज पूर्व घणा समय पहेला लुप्त थई गया छे]

पूंख स. क्रि. 'वरकन्याने वधाववां ते, पोंखवुं.' पूंखइ १० (प) [प्रा. पुंख, पोक्ख < स. प्रोक्ष ?]

पोवडं वि. 'महान.' १२५३ [सं. प्रौढ]

पोलि स्त्री. 'दरवाजो.' ९५३ [सं. प्रतोलि > प्रा. पओलि. गुज. 'पोळ.' सर० त्रिपोळियुं = त्रण दरवाजा.] जुओ टोल.

प्रतिमा स्त्री. [सं.] 'ध्यान माटे शरीरने निश्चल राखवुं ते, कायोत्सर्ग.' प्रतिमाइ ३१० [जैन धार्मिक परिभाषानो आ शब्द छे.]

प्रदक्षण स्त्री. 'प्रदक्षिणा.' ११४२ [सं. प्रदक्षिणा]

प्रहुसु पुं. 'आनंद.' ७३१ [स. प्रहर्ष]

प्राण न. 'बळ.' प्राणइ ३ (प). जुओ पराणि अने सपराणु

प्रीस स. क्रि 'पीरसवुं, भोजन आपवुं.' प्रीसीउं ९११ [सं. परिविश् > प्रा. परीस]

फणगर पुं. 'साप, फणिधर.' ४८० [सं. फणकर > प्रा. फणगर]

फरस स. क्रि. 'स्पर्श करवो.' फरसइ ९३७; फरसावीसि ९७३ [सं. स्पर्श]

फाग पुं. 'वसंतमां गावानुं गीत.' ३८९, १००५ [सं. फल्गु = 'वसंत,' प्रा. फग्गु, जूनी गुज. फागु]

फाली स्त्री. 'वस्त्रनो टुकडो.' ८८३ [सं. स्फाल् > प्रा. फाल, फाड. सर० गुज. चोफाळ, फाळियुं, फाळवणी, इत्यादि.]

फाव स. क्रि. 'लाभ मेळववो, फाववुं.' फावइ ९१७; फावीउ ७२३ [प्रा. फव्व. 'बृहत्कल्प सूत्र' भाष्यगाथा २२१९मां 'फव्विहामो' एवो प्रयोग छे.]

बकाण पुं. 'एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो.' २६७

बडुउ पुं. 'ब्राह्मण,' गुज. 'बडवो.' ५१(प) [सं. वटुक > प्रा. बडुअ]

बरक स. क्रि. 'गर्जना करवी.' बरकइ ४८१ [प्रा. बुक्क. म. बरकणें]

बरटी स्त्री. 'एक हलकुं धान्य, बंटी.' ७० [दे. बरठी]

बब्क पुं. 'एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो.' २६९

बहिनर स्त्री. 'बहेन,' गुज. 'बहेनड.' ६६३, ७(प) [सं. भगिनी > प्रा. बहिनी, बहिन + स्वार्थिक 'ड']

बहिरख पुं. 'स्त्रीनी कोणीनुं एक घरेणुं.' बहिरखा १९३ [प्रा. बाहरक्ख < सं. बाहुरक्ष. सर० हि. बैरखी]

बंभ पुं. 'ब्राह्मण.' ८९२ [सं. ब्रह्म > प्रा. बंभ. अमदावादमां सांकडी शेरीमां 'रघुनाथ बंम (बंभ) नी पोळ' छे. सर० 'जाडो बम.']

बाई स्त्री. 'बहेन.' ६४३ [दे. बाइया = माता]

बाउलि स्त्री. 'नाना बावळ, बावळी.' १००७; बाउलीआ पुं. ४८७ [सं. बब्बुल > बाबुल > बाबुल]

बापीहउ पुं. 'एक पक्षी, पपैयो' ६९६ [दे. बप्पीह]

बिंद न. 'टीपुं.' १०८३ [सं. बिन्दु]

बूजर पुं. 'एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो.' २६८

बोंकार पुं. 'गर्जना.' ४८० [रवानुकारी]

भइसाइत पुं. 'भेंसो राखनार.' १०० [सं. महिष > प्रा. महिस. म. म्हैस, हि. भैंस, गुज. भेंस. पाटणमां एक महोल्लानुं नाम 'भेंसातवाडो' छे.]

भणी अ. 'माटे.' ८०४ [सं. भणित्वा, प्रा. भणिअ]

भमरी स्त्री. 'स्त्रीनुं एक घरेणुं' १९८ [म भ्रमरी]

भमहि स्त्री. 'भमर.' १८४, ४५२ [स * भ्रमुक > प्रा. भमुह]

भविक पुं [स] 'मोक्षने योग्य जीव' ११०४ [आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे] जुओ भविय अने भव्य.

भविय पुं. 'मोक्षने योग्य जीव.' भविया ११०५; भवीय १ (प) [सं. भविक] जुओ भविक अने भव्य.

भव्य पुं. [सं] 'मोक्षने योग्य जीव.' ८३४. जुओ भविक अने भविय.

भासडी स्त्री. 'वाणी.' ४६५ [स भाषा > भासा, भास+स्वार्थिक 'डी'] जुओ भास.

भामणउं न. 'माथा उपर हाथ फेरवीने ओवारणां लेवा ते.' भामणइ ६०८ [प्रा. भामण, < सं. भ्रामण – भ्रमण]

भावठि स्त्री. 'उपाधि, जंजाळ.' ८२२, ९७४ [सं. भाव +अर्थिन् > प्रा. भाव + अट्ठी]

भास स्त्री. 'गीत.' ३८९ [स. भाषा > प्रा. भासा. जूनी गुजरातीमां जैन रास आदिनां कडवाने 'भाषा' अथवा 'भास' कहेवामां आवे छे. केटलीक वार अल्प काव्योने पण 'भास' कहे छे, जेम के 'लक्ष्मी महत्तरा भास.'] जुओ भासडी.

भांकार पुं. 'भेरनो अवाज.' ३९० [रवानुकारी]

भुइ स्त्री. 'जमीन.' ९४२. भुइ सप्तमीनुं रूप. ४१२; भुइं ४३ (प) [सं भूमि]

भोलुव स. कि. 'भोळववुं' भोलुव्या ४८ [सं. *भ्रमुल्लक > प्रा. भोल्लअ–भोलअ; क्रियापदिक रूप भोलवइ]

'म अ. निषेधार्थ २५७

मझ स. 'मने.' १ [सं. मह्यम् > पा. मय्हं, प्रा. मज्झं > अप. मज्झु > गुज. मज-मुज]

मझारि अ. 'अंदर, मध्ये.' ७०३, ११०६, १३०४ [सं. * मध्यकार्ये अथवा मध्य + कार > प्रा. मज्झआर. गुज. मोझार, मझियारुं (सहियारुं), म. माझारी]

मढ पुं. 'मठ.' ८९ [सं. मठ]

मथिला स्त्री. 'ए नामनुं नगर.' ६२१; मथिलाइ ६२२; मथिलामा ६२३ [सं. मिथिला]

मदभिंभल वि. 'मदविह्वल' ३०५ [सं. मद + विह्वल > मद + प्रा. भिब्भल. जुओ: 'वउललिरि मदभींभल इ भलगणु भलिराज'—'वसंतविलास,' कडी ७४; भ्रमर भमइ मदभिंभलया, मुखि लेवा मुखवास'—गणपतिकृत 'माधवानलकामकंदला प्रबन्ध,' अंग ८, कडी १४९; 'मुख संभाहुं मदभिंभली, सुरतवसा सोहइ जे वलि'–ज्ञानकृत 'बिल्हणपंचाशिका,' कडी ७९. 'बीभलपणूं' (विह्वलपणुं) ए रूप भालणनी 'कादंबरी' (कडवुं १९, कडी ७८)मां आवे छे, जेमांथी सहेजे 'भीभलपणुं' के 'भींभलपणुं' निष्पन्न थाय.]

मरुउ पुं. 'डमरो.' ११०७ [सं. मुकुल > प्रा. मउर]

मलापी वि. 'अज्ञान.' ७२ [शास्त्रश्लोक नहि बोली शकनार पोपटने माटे आ विशेषण वपरायुं छे. आ शब्दना अन्य प्रयोगो मळे त्यारे एनो अर्थ पूरेपूरो निश्चित थई शके. गुजरातीमां 'मलारुं'नो अर्थ 'वांकुं–दोढी आंखवाळुं' थाय छे; 'मलाखुं जोवुं' एटले 'आडी नजरे जोवुं'. एटले आ जूना तथा नवा प्रयोगो वच्चे केटलोक अर्थगत संबंध होय ए शक्य छे.]

मसु पुं. 'मच्छर' ८८६ [सं मशक > प्रा. मसअ]

महकम वि. 'समर्थ.' ८०६, ९०३ [अर. मुहकम = बळवान. गुजरातना वणिकोमां महोकमचंद नाम होय छे.]

महुअरि स्त्री. 'वांसळी, महुअर'. ४८ [सं. मधुकर > प्रा. महुअर = 'मिष्टता उत्पन्न करनार' ए अर्थमां ?]

महुत न. 'मोटाई.' ७०३, ८२१ [सं. महत्त्व > प्रा. महत्त].

मंजीठ पुं. 'एक प्रकारनो लाल रंग, मजीठ.' ९५, ८३९ [सं. मंजिष्ठा > प्रा. मंजिट्ठा]

माच अ. क्रि. 'आनंदित थवुं.' माचइ १२३२ [सं. माद्यति > प्रा. मज्जइ > जूनी गुज. मचइ अथवा सं. मत्त > मच्च > माच.]

माछिली स्त्री 'माछली' ३२१ [सं. मत्स्य > प्रा. मच्छ + स्वार्थिक 'इली']

माझ न. अंदाज, सुमार. 'माझनइ ३५४ [अर. मवाज = वजन. 'सुमारे, आशरे' ए अर्थमा आ प्रयोग जूनी गुज. मा अन्यत्र पण छे: 'सात वरसनइ माजनइ गोरीइं दल घण घाण, गढपति गढरोहि भडयु चूपटमल्ल चहुआण'–कान्हडदे-प्रबन्ध,' खंड २, कडी १५४, 'रात नि पहुर तणइ माझनइ, कीसी वात कीधी ते भणइ'–संघकुलकृत 'नंदबत्रीसी,' कडी १५१]

माण स. क्रि 'नहि आणवुं ते' माणसि ७७४; माणसिउ १४० [म + आणसि, इत्यादि सं. आनयति > पा. आनेति, प्रा. आणेइ > जूनी गुज. आणइ]

मादलीउं न. 'एक घरेणुं, मादळियुं' मादलीआ १६१ [सं. मर्दल > प्रा. मद्दल (एक वाद्य) वच्चेना घाटना साम्य उपरथी]

माम स्त्री. गौरव' ४२४ [स. माम = मारु. जुओ अन्य केटलाक प्रयोगो– "सुदामो कहे, विप्रने नथी मागतां प्रत्यवाय, पण मित्र आगळ माम मूकी मागतां जीव जाय, माम न मूकीए रे'–प्रेमानंदकृत 'सुदामाचरित्र,' कडवुं ३, कडी २; 'रयवीणा कीधा राम, मूकी माम ने नाठा काम'–प्रेमानंदकृत 'ओखाहरण,' 'बृहत्काव्यदोहन' भाग १ ला नी वाचना, कडवु २७, कडी ३५]

माल पुं 'पहेलवान.' ३९१ [सं मल्ल] जुओ मालाखाड.

मालाखाड पुं 'अखाडो, व्यायामशाळा.' मालाखाडइ ३९१ [सं. मल्ल+ अक्षवाट > अक्खाड] जुओ माल.

माहिलु वि. 'अंदरनुं.' ८९५ [सं मध्य > प्रा मज्झ > अप. मज्झि > गुज. महिं, माहि + 'लु'.]

मांकड पुं. 'वानर, मांकडुं.' ११५६ [सं. मर्कट > मक्कड, मंकड]

मांडण न. 'शणगार.' ४० (प) [सं. मंडन > प्रा. मंडण, मांडण ए विशेषनाम पण होय छे ए नामनो एक जाणीतो कवि, 'प्रबोधबत्रीशी' नो कर्ता सोळमा सैकामां थई गयो छे.]

मुडघु पुं. 'सामंत राजा.' मुडधा २७२ [सं मुकुटबद्ध > प्रा. मउडबद्ध > मउडउधउ > मुडधउ. आ शब्द ठेठ 'भरत-बाहुबली रास' (सं. १२४१)ना समयथी वपरायेलो छे 'मुकुटबद्ध राजा,' 'राज्याधिकारी' एम एनो अर्थ उत्त-रोत्तर नीचे आवतो गयो छे गया सैकामां 'टपाल लई जनार कासदोना उपरी'

माटे मडधो शब्द वपरातो अने अर्वाचीन गुजरातीमां 'दादागीरी करनार माणस' माटे प्रयोजाय छे. आ विषे अवतरणो सहित सविस्तर चर्चा माटे जुओ 'बुद्धिप्रकाश,' जुलाई-सप्टेम्बर '१९४६मां 'मुड्धो-मडधो' ए मारो लेख.]

मुहडुं न. 'मुख.' मुहडानी ९९५ [सं. मुख > प्रा. मुह + स्वार्थिक 'ड']

मुंहतु पुं. 'मंत्री, महेतो.' मुहुते २५ (प) [सं. मंहत्, प्रा. महंत, अप. महंतउ. जूना गुज.मां महंतउ, महतउ, महुतउ, मंहितउ, महितुं, महूंतु आदि एनां स्वरूपान्तरो छे. सर० हिं. महता, मोर. मुंता. चौलुक्ययुगीन गुजरातना शिलालेखो, ग्रन्थपुष्पिकाओ आदिमां व्यक्तिविशेषोनां नामो पूर्वे 'महं.' पदवी लगाडेली होय छे एने अप. 'महंतउ'नो संक्षेप गणवी जोईए.]

मुंड पुं. 'धान्यनुं एक मोटुं माप, मूडो.' [दे. मूड. सं. १४४९मां जूनी गुजराती गद्यमां लखायेली, श्रीधराचार्यना 'गणितसार' उपरनी राजकीर्तिमिश्रनी टीका प्रमाणे, १० कळशीनो मूडो थतो. (१६ मणनी कळशी गणाय छे.) ए टीकामांनुं संबंध धरावतुं आवुं अवतरण आ प्रमाणे छे: '३......डे छोइहडे, २ छोहिएं पवालिउं, २ पवाले अधवाली, २ अधवाली पाली, ४ पाली माणउ, ४ माणे सेई, ८ सेइ हारउ, १६ सेइ कलसी, १० कलसी मूडउ, मूडइ २० हारा, मूडइ १६० सेइ, मूडइ ६४० माणा, मूडइ २५६० पाली, मूडइ ५१२० अधवाली, मूडइ १०२४० पवालां, मूडइ २०४८० छोहिआं, मूडई ४०९६० अधछोहीआं, मूडइ १५९७४४०० चोखा, मूडइ १६३८४० गड, मूडइ ३२०००००६० राइ'– Journal of the Numismatic Society of India, डिसेम्बर १९४६मां मारो लेख Weights, Measures and Coinage of Mediæval Gujarat]

मूलगु वि. 'मुख्य, मूळगो.' ३२४, ४७६, ४८८, ५३३; मूलगुं ७०; मूलगू ४७०; मूलगूं ३४२ [सं. मूलगत: > प्रा. मूलगओ. प्रेमानंदमां 'मूळना, समूळगां' ए अर्थमां आ शब्द छे. 'दामोदरे घणी कीधी दया, मूळगा मारा तादुल गया'– 'सुदामाचरित्र; कडवुं १२, कडी १८; 'मान दइ उपमान मांड्युं, ज्यारे वस्तु पेटीनी जाणी; मूळगूं वस्त्र जे सुभद्रानुं भामीए लीधुं ताणी'– 'अभिमन्यु आख्यान,' कडवुं १५, कडी १७]

मेल्हाण न. 'मुकाम, छावणी, मेल्हाण.' १०४१ [प्रा. मेल्ल 'मेलवुं, मूकवुं;' मेल्लण 'मूकवुं ते.']

मेहलु पुं. 'मेघ,' गुज. 'मेहुलो, मेगलो.' १२२९ [सं. मेह > प्रा. मेह + स्वार्थिक 'लु']

मोकल स. क्रि. 'विदाय आपवी, रजा आपवी,' गुज. 'मोकलवुं' मोकलु २२५ [सर० जूनी गुज. मोकलामणी = विदाय : 'अम्हस्यूं प्रीति आणिज्यो घणी, आणी जमाइइ मोकलामणी'—'कान्हडदेप्रबन्ध,' खंड २, कडी १५०] जुओ मोकलउं अने मोकुलमोकला.

मोकलउं न 'शिथिल, ढीलुं,' सर० गुज. 'मोकळुं'. ११६२ [सं. मुक्त + ल > प्रा. मुक्कल, मोक्कल] जुओ मोकलु अने मोकुलमोकला.

मोकुलमोकलु वि. 'तद्दन मोकळुं, खुल्लुं'. मोकुलमोकला १२३६. जुओ मोकलउं अने मोकल.

मोगर पुं. 'हथोडी जेवुं लाकडानुं ओजार, मोगरी.' ७५१ [सं. मुद्गर > प्रा. मोग्गर]

मोठउ वि. 'मोटो.' ११२ [सं. महत्त्व > प्रा. महत्त, मट्ट, गुज. महोटो, म. मोठा. दे.मां मोट्टिम शब्द छे, ए प्राकृत काळमां मोट्ट शब्दनुं अस्तित्व बतावे छे.]

मोतीसिरी स्त्री. 'मोतीनी सेर.' ९८३ [सं. मौक्तिक > प्रा. मोत्तिअ + प्रा. सरि, जे स उपरथी]

मोरउ स. 'मारो.' ३३ (प), मोरी ४० (प) [अप. महु + षष्ठीनो अनुग रउ. सर० मेरो, मेरी.]

मोलि स्त्री. 'फेंटो.' ३३ (प); मोलीयडउं न. ५४ (प) [सं. मौलिकं > प्रा. मउलिअं, अप. मउलिउं, गुज. मोळियुं]

युगलीउ पुं. गुज. 'जुगलियो.' युगलीआ ८०; युगलीआनइ ८३ [सं. युगलिक. आ जैन पुराणकथानो एक विशिष्ट शब्द छे. ए माटे जुओ प्रस्तावना, पृ. ७, टिप्पण.]

रगाउलि स्त्री. 'एक प्रकारनुं वस्तर.' ३०६ [आ शब्दनुं 'रंगाउलि' रूप पण मळे छे. जुओ 'कान्हडदेप्रबन्ध,' १-१८७, २-४९, इत्यादि. सं. रंग + आवलि उपरथी ?]

रत स्त्री. 'ऋतु'. ४३ (प); रतिइ १०१० [सं. ऋतु] जुओ रितु.

रत्नजटित वि. ' रत्नजडित '. ४२, ७७१. जुओ सुवर्णजटित.

रत्नपारक्ष पुं. ' रत्ननी परख करनार.' ९६ [' पारख 'ना ' ख 'नो अहीं खोटा संस्कृतीकरणथी ' क्ष ' थयो छे ए ध्यानपात्र छे.]

रलीयायत वि. ' आनंदित.' ३८, १७३, २४०, ६६३, ७२५, ९१२, ९५४, १०१९, १०३०, १०९९ [सं. रति > प्रा. रइ, रय + स्वार्थिक ' ली ' = जूनी गुज. रली + आयत] जुओ रली.

रवाडी स्त्री. ' सवारीमां वैभवपूर्वक फरवुं ते'. ३९१ [सं. राजपाटिका > प्रा. रायवाडी. आ प्राकृत शब्द ' राजानी सवारी' माटे वपरायो छे अने जूनी गुज.मां ' रवाडी ' शब्द ए अर्थमां पण छेः ' एहवइ विक्रमनृप भूधणी, पहुतउ वनइ रवाडी भणी '—संघविजयकृत ' सिंहासनबत्रीसी,' कथा ४, कडी १४; ' लखमीपुरी राजा श्रीचंद, प्रजामाहिं अभिनवउ इंद्र; रव्वाडीइ रमवा इक वार, हय पेलवइं थई असवार '—मंगलमाणिक्यकृत ' अंबडविद्याधर रास,' आदेश ६, कडी ११२; उत्तर गुजरातमां आजे पण ' रवाडी ' शब्द वपराय छे.]

रसो स्त्री. ' रसोई.' ९५७, ९५९; रसोई-२७३; रसोतु ९५८ [सं. रसवती > प्रा. अप. रसवई]

रहइ अ. षष्ठीनो अनुग. १२४०. जुओ ' षष्टिशतक प्रकरण 'ना शब्दकोशमां रहइ.

रा पुं. ' राजा '. १२३३ [सं. राजा > प्रा. राओ > अप. राउ, गुज. राव. ईडरना राजा ' राव ' कहेवाता अने जूनागढना राजा ' रा ' तरीके ओळखाता ए जाणीतुं छे.]

राटी स्त्री. ' हलकी स्त्री ' ८८०

रातु वि. ' आसक्त.' ९८० [सं. रक्त > प्रा. रत्त. सर० गुज. ' रातो मातो ']

रामति स्त्री. ' रमत, क्रीडा ' ३६४, ७४१ [सं. *रम्यति > प्रा. रम्मति]

रावडी स्त्री. ' फरियाद '. ४५१ [सं. राव + स्वार्थिक ' डी ']

रास पुं. [सं.] ' गोळाकारे नृत्य करतां गीत गावुं ते. ' ३८९

राहु पुं. ' राहुनो ग्रह '. ८९० [सं. राहु]

रितु स्त्री. ' ऋतु '. १०१० [सं. ऋतु] जुओ रत.

रीव स्त्री. ' पीडा '. १०९५

रली स्त्री 'आनद' ९५७ [स रति > प्रा रइ, रय + ली, जूनी गुज रली, रली] जुओ रलीयायत

रूअडउ वि 'सुन्दर, रूडो' ४३६, रूअडा ५१९ [स रूप > प्रा रूअ + स्वार्थिक 'ड']

रूड पु 'चादीनो एक सिक्को' ८७७ [स रूपक > प्रा रूअओ रूओ श्रीधराचार्यना 'गणितसार' उपरनी स १४४९मा लखायेली जूनी गुजराती गद्यटीकामा 'रूड' साथे सबध धरावतु कोष्टक नीचे प्रमाण छे '२० कउडे कागिणा ते भणीइ बोडी ४ कागिणी पगु, १६ पाण पुराणु ५ कउडे पावीस, ४ पावीसे वीसु, ४ वीसे लोहडीउ, ८ लोहडीए रूउ ५ रूए एक द्रामु—' Journal of the Numismatic Society of India, डिसेम्बर १९४६मा मारो लेख Weights, Measures and Coinage of Mediaeval Gujarat उपरनो उल्लेख स्पष्ट रीते बतावे छे के द्राम अथवा द्रम्मना पाच रूआ थता]

रूखडु पु 'वृक्ष' रूखडा ५८४ [स वृक्ष > प्रा रुक्ख, रुख + स्वार्थिक 'ड' चारणी भाषामा 'रुखडो' प्रयोग छे]

रेखा स्त्री [स] 'परिसीमा' ९३६ जुओ रेह

रेह स्त्री 'परिसीमा'. ८९६ [स रेखा > प्रा रेहा] जुओ रेखा

लगइ अ पूर्वमर्यादासूचक 'ते कारणे, त्यारथी माडीने' १३५, ५१६, १०७०, १०७१, १०७२, १०७३, १०७४, ११९८ उत्तरमर्यादासूचक, 'सुधी,' अर्वाचीन गुज 'लगी' १२९, २३३, ३९३, ६१०, ८५१, ९७२, १२ (प) [स *लग्नस्मिन् > अप लग्गहि] जुओ 'षष्टिशतक प्रकरण'ना शब्द-कोशमा लगइ

लगार वि 'जराक, थोडुक' ५४६ [सं लग्नकार > प्रा लग्गआर ?]

लगे अ पूर्वमर्यादासूचक १०७१ जुओ लगइ.

लवि स्त्री 'लिपि, लेखनविद्या' १६१ [स लिपि]

लहूअडउ वि 'नानो, लघुवयस्क' १०५६, लहूव २२० [स लघुक>प्रा लहुअ + स्वार्थिक 'ड']

लाजी पु 'एक प्रदेश ज्या नलराजाए विजय कर्यो हतो' २७०

लाडण पुं. 'सुन्दर पति'. ४० (प) [प्रा. लड्डिय 'सुन्दर;' लड्ह, जे उपरथी संस्कृतमां लडभ शब्द लेवायो जणाय छे. प्रा. लड्ढ + स्वार्थिक 'ड.' संस्कृतमां लाड् 'रमाडवुं' धातु छे, पण ते लोकभाषा उपरथी लेवायो होय ए असंभवित नथी. जुओ 'लाडण-लाडी लहूयडां ए, बे निरुपम रूपि रूअडां ए'-- 'त्रिभुवनदीपक प्रबंध, कडी ३३६. सर० लाडडो, लाडणी, लाडडी, लाडकडी आदि शब्दो. मध्यकालीन गुजरातमां लाडण पुरुषोनुं विशेषनाम पण हतुं. आजे पण स्त्रीओनुं नाम लाडू होय छे.]

लालू अ. छंदमां पादपूरक तरीके. ५०८

लाहु पुं. 'लाभ, लहावो'. ४२, २४५, २४६, ८४०, १२०४ [सं. लाभ > प्रा. लाह]

लिंहालु पुं 'कोलसो, लहालो.' ११६५

°ली षष्ठीनो प्रत्यय. घडली बार = गडनी बहार. २३ [आ प्रत्यय 'कान्हडदे-प्रबन्ध'मां पण मळे छे; जुओ दिवेटिया, Gujarati Language and Literature Vol. II, p. 310]

लूस स. क्रि. 'लुंस्वुं'. लूस्या ४४८ [सं. लुप्]

लेणहार पुं. 'लेनार'. ७६ [सं. लाति > प्रा. लेइ उपरथी नाम लेण + कार > लेणआर, 'ह'ना प्रक्षेपथी लेणहार, लेण्हार, लेनार] जुओ करणहार, अने 'षष्टिशतक प्रकरण'ना शब्दकोशमां आराधण्हार शब्दनी नीचे नोंधायेला आ प्रकारना प्रयोगो.

लोइ पुं. 'लोक'. ११०५ [सं. लोक > प्रा. लोय]

ल्याव स. क्रि. 'लाववुं.' ल्यावइ ४५८, ७०१; ल्यावउं ४१५; ल्यावयो ८६७; ल्यावीआ ९५६; ल्यावीउ ७४; ल्यावू ४१४; ल्यावेयो ९२३ [सं. ला > ले + आवइ < आयाति. प्रा. गुज. लिआवो = लइ आवो, लावो]

वइगरण पुं. 'व्ययनी देखरेख राखनार राज्याधिकारी.' वइगरणा २७२, १०६३ [सं. व्ययकरण]

वउलाव स. क्रि. 'वळाववुं, विदाय आपवी.' वउलावा १२ (प), वउलावी १३ (प) [सं. व्रजति > प्रा. वोलइ, कारक वोलावेइ.] सर० गुज. वोळावो, वळावो = मुसाफरीमां साथे रही चोकी करनार.] जुओ वुलाव.

वकृति स्त्री. 'विकार.' ७५९ [सं. विकृति]

वखाण न. 'धार्मिक प्रवचन.' ३८८ [सं. व्याख्यान > प्रा. वक्खाण]

वरलु वि. 'विरलो.' ९७२ [सं. विरल]

वरसात पुं 'वरसाद, वर्षा.' वरसाति १९८. जुओ वरसाल.

वरसालि पुं. 'वरसाद, वर्षा.' वरसालइ ७४१, वरसाला ८२४ [सं. वर्षाकाल > प्रा. वरिसाआल, वरिसाल एमाथी वरसाद, वरसात] जुओ वरसात.

वरह पु 'वियोग.' ३१ (प); वरहु ६१ (प) [सं. विरह]

वहिराव स. क्रि. 'वहिर'नुं कारक. 'जैन साधुने कोई वस्तु दानमां आपवी ते, वहोरावबुं' वहिराव्या ७ (प).

वाणही स्त्री. 'मोजडी.' ८४४ [सं. उपानह् > प्रा. उवाणह, वाणह, व्यत्ययथी वाणह. म वाहणे = चंपल, पं. पाहण. जूनी गुज.मां 'पाणही' अने 'वाणही' ए बन्ने शब्दो वपरायेला छे: 'ऊघाडी जोइ पुरधणी, तउ दीठी आपणी पांणही' – संघकुलकृत 'नंदबत्रीसी,' कडी ७३; 'राय तणी दीठी वाणही, भूपति आव्यो हतो सही' – नरपतिकृत 'नंदबत्रीसी,' कडी ५०; 'तो पण वाणही पगि पहिरवी' – श्रीधरकृत 'रावणमंदोदरी संवाद,' कडी ८२७]

वारूग पुं. 'एक कारीगर,' एनो निश्चित अर्थ सन्दर्भ उपरथी स्पष्ट थतो नथी. वारूगा १०२.

वालिभ पुं. 'एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो.' २६६

वालिंभ पुं. 'प्रियतम, वेहाल्म.' २६६, ४६८ [सं. वल्लभ] जुओ वाहलउं.

वाह स्त्री. [सं.] 'सवारी.' ३९२

वाह पुं. [सं.] 'प्रवाह.' ८८९

वाहलउं वि. 'वहालुं, प्रिय.' ७३२ [सं. वल्लभ > प्रा. वल्लह] जुओ वालिंभ.

विचारचतुर वि. 'शाणो.' ११३, ३७४. विचारचतुरपणउं न. 'शाणपण.' ६९

विवसाईउ पुं. 'वेपारी, व्यवसाय करनार.' विवसाईआ ३८७ [सं. व्यवसायिक > प्रा. वित्रसाइअ. सर० गुज. 'वसवायो' = कारीगर]

विवहारी पुं. 'वेपारी.' ५०१ [सं. व्यवहारिन् > प्रा. विवहारी. गुज. वहेवारियो = वेपारी] जुओ व्यवहारीउ.

विश्राल वि. 'शान्त'. ५९६

विसन न. 'दुर्गुण'. १९ (प), २३ (प) [सं. व्यसन]

विहार पुं. [सं.] 'देवमन्दिर'. ११६७

वितर पुं. 'एक प्रकारनी भूतयोनि'. ४२ (प) [सं व्यन्तर]

वीक स. क्रि. 'वेचवुं'. वीकइ ९५ [सं. वि + क्री > प्रा. विक्क. सर० प्रा. गुज. 'वेकवुं', गुज. वेचवु]

वीसस स. क्रि. 'विश्वास करवो.' वीससइ ८२५ [सं. विश्वस्]

वुलसिरी स्त्री. 'बोरसली'. ९८३ [सं. बकुलश्री > प्रा. वउलसिरी]

वुलाव स. क्रि. 'वळाववुं, विदाय आपवी.' २३३, ३९५, ७२८. जुओ वउलाव.

वुहर स. क्रि. 'खरीदवुं, वहोरवुं'. वुहरइ ९५

वेच स. क्रि. 'व्यय करवो.' वेचीनइ २४० [प्रा. वेच]

वेध पुं. [सं.] 'आकर्षण.' ११२८. जुओ सुवेध.

वेला स्त्री. [सं.] 'संकटसमय.' ७६०. सर० 'वेळावेळानी छांयडी.'

वेलाकूल न. [सं.] 'बंदर.' वेलाकूले १२३३ [सौराष्ट्रना समुद्र किनारे आवेलुं 'वेरावल' ए 'वेलाकूल'नो तद्भव छे पण एमां सामान्य नामनुं विशेष नाम बन्युं छे ए नोंधपात्र छे.]

वैरोट पुं. 'एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो, वैराट'. २१०

वौढउर न. 'एक नगर ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो.' २७१ [°उर < सं. °पुर]

व्यवहारीउ पुं. 'वेपारी'. व्यवहारीआ ९३; व्यवहारू ८८१. जुओ विवहारी.

व्रासिउ वि. 'अयोग्य मार्गे गयेलो.' ३९९. सर० 'वरांस्यो'.

सत्रूकार पु 'सदावत, अनदानशाळा' ९७, ७०१ [स सत्कार + अगार > प्रा सतुअगार. जूनी गुजमां आ शब्दनां 'सत्तूकार,' 'सत्रुकार', 'सत्रुगार,' 'सूत्रूकार' एवां रूपो मळे छे]

शथल वि 'ढीलु'. ६७७ [स शिथिल]

शबल पु [स] 'भालु' १०९०

शिय्या स्त्री 'पथारी' १४९ [स शय्या] जुओ सुखशिज्जा

श्रीकाष्ठ पु 'एक प्रदेश ज्या नलराजाए विजय मेळव्यो हतो' २०८

श्रीगरण पु 'राजाओनी देखरेख राखनार अधिकारी' श्रीगरणा २१२, १०६३, १२३८ [स श्रीकरण]

सइथु पु 'सथा उपर पहेरवानो स्त्रीनो अलंकार.' १९२ [स सीमन्तक > अप सइथउ]

सइयणि स्त्री 'दरजण' १२ (प) [स. सूचिक > प्रा सूइअ + णी. जुओ सुई

सउ वि 'एक सो' ११ (प) [स, शत > प्रा. सअ]

सउ स 'बधु, सौ.' १८ (प) [स. सर्व > प्रा. सव्व, सव मर० हि. सब, गुज. साव जुओ सवि.

सदूतरु वि. 'तुरत उत्तर आपनार, हाजरजवाबी.' २८४ [सं सद्योत्तर > प्रा. सद्दुत्तर]

सद्दह स क्रि 'श्रद्धा राखवी' सद्दहउं ६०४ [सं श्रद्धाति > प्रा सद्दहइ]

सपराणु पुं. 'बळवान.' ६२७ [स. सप्राण] जुओ पराणि अने पराण

समकित न. 'सत्य तत्त्व पर श्रद्धा' ७९ [सं. सम्यक्त्व. आ जैन पारिभाषिक शब्द छे]

समणउउ न. 'स्वप्न, शमणुं.' २९ (प) [सं स्वप्न > प्रा. सुविण, सुमिण + स्वार्थिक 'ड'] जुओ सुहणउ.

समुद पुं. 'सागर.' समुद्रात ३३२ [सं समुद्र + बहुवचननो अत प्रत्यय आत] जुओ चमरात

सर अ. क्रि. 'चालनुं'. सरइ ८०८, ८१२. सरइ 'सिद्ध थाय', ११८३ [सं. सृ]

सवि स. 'सर्व.' सविकहि 'सौ कोई.' ३६६, ५३१; सविहुनइ ४८ [सं. सर्व > प्रा. सव्व, सव + इ + कहि] जुओ कहि, सउ.

ससउ पुं. 'ससलो.' ८८६ [सं. शशक > प्रा. ससअ]

सहसफूल न. 'फूलनुं एक घरेणुं.' १९३

सहिगुरु पुं. 'सद्गुरु.' २५७, ५६७, ५७०, ११४५, ११४८; सहिगुरुना १२४८.

संड वि. 'उच्छृंखल, सांढ जेवो.' २७९ [सं. षण्ड]

संधिरेहु पुं. 'संधिना दस्तावेज लखनार.' संधिरेहा २७४ [सं. सन्धि-लेखक > प्रा. संधिलिहअ, °रेहअ]

संबंध पुं. [सं.] 'वृत्तान्त.' ९१२

संभाग पुं. [सं.] 'दान.' संभागि ७ (प)

✓सागडी पुं. 'रथ हांकनार.' ९३५; सागडीत ३९४ [सं. शाकटिक > प्रा. सागडिअ. सर० गुज. गाडीत = गाडी हांकनार]

साथरउ पुं. 'घासनी पथारी.' साथरइ २७ (प) [सं. प्रस्तर > प्रा. सत्थर. गुज. साथरो.]

सामणि स्त्री. 'स्वामिनी.' १ (प) सामिनी ३ [सं. स्वामिनी]

सामायक न. 'समतापूर्वक एकाग्र बेसवानुं जैन धार्मिक नित्यकर्म'. ११४६ [सं. सामायिक]

सार स्त्री. 'सहाय.' ३३८; सारधि २९ (प). सर० 'सारवार.'

सारणि स्त्री. 'संताप'. २९ (प) [सर० गुज. 'शारडी' = कागुं पाडवानुं ओजार; सं. शृ 'चीरवुं' उपरथी. 'संताप' अर्थमां 'सारणि'ना प्रयोग माटे जुओ मगलमाणिक्यकृत 'अंबडविद्याधर रास,' आदेश ४, कडी १६६.]

सावज्ज वि. 'पापयुक्त'. ११४६ [सं. सावद्य]

साहमी वि 'एक धर्मना अनुयायी' ६१५, ६४३ [सं साधर्मिन् > प्रा. साहम्मी. सर० अर्वाचीन गुज. 'साहमी (सामी) भाई' = धर्मभाई] जुओ साहमीअवच्छल.

साहमीअवच्छल न 'धर्मबधुओ प्रये ल्हाणी वगेरे वडे प्रेम बतावबो ते'. ७ (प) [स. साधर्मिस्वात्सल्य > प्रा. साहम्मिअवच्छ‌ल आ जैन परिभाषानो शब्द छे] जुओ साहमी

सांकलु न. 'एक घरेणु' सांकला १९४ [स शृङ्खला > प्रा संकला]

सांकली स्त्री 'एक खाद्य पदार्थ.' ८३७ [स. शष्कुलि > प्रा. सक्कुलि. सर० तलसाक्ली]

सिद्धि स्त्री. [स] 'समाचार, शोध.' ६३२

सिंगल पुं. 'एक देश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो.' २७० [सं सिंहल]

सिंघ पुं 'सिंह.' ४३ (प) [स सिंह]

सीमाडउ पुं. 'सीमा प्रदेश उपरनो राजा, पडोशी राजा.' ३ (प) [सं सीमा + स्वार्थिक 'डउ.' जुओ भालणनी 'कादंबरी (कडवुं २, कडी ८०)मा— 'सीमाडा सवि शीर्ष मागता नरपति नामि शीश.']

सुई पुं. 'दरजी,' गुज. 'सई' १०१ [सं. सूचिक > प्रा. सूइअ] जुओ सइयणि

सुकुमाल वि. 'कोमळ' ४०७, ४२८ [स. सुकुमार]

सुखशिज्जा स्त्री. 'सुखशय्या.' सुखशिज्जाइ ४०५, ४२८ [स. सुखशय्या] जुओ शिय्या

सुचंग वि. 'सुन्दर.' २६४. जुओ चंग.

सुपसाउलु पुं. 'कृपा'. सुपसाउलइ, [सं सुप्रसाद > प्रा सुपसाअ + स्वार्थिक 'ल'] जुओ पसाय.

सुभक्ष पुं. 'सुकाळ' १२३०[सं. सुभिक्ष]

सुवर्णजटित वि. 'सुवर्णजडित.' ११४४. जुओ रत्नजटित.

सुवेध वि. 'रसिक, विदग्ध.' ९९९ [सं. सु + वेध] जुओ वेध.

सुहणउ न. 'स्वप्न, सोणुं.' ९४७; सुहणउं १५०, १५२, १५३, ४३०, ४३१, ४३३; सुहणा ५९९; सुहणू १५०; सुहणूं १४९, १५३ [सं. स्वप्न > प्रा. सुविण, सुहिण] जुओ सवणडउं.

सुहबोलु पुं. 'राजानी तहेनातमां रहीने मीठां वचन बोलनार, सुखबोलो.' सुहबोला २७३ [सं. सुख > प्रा. सुह + प्रा. बोल्ल]

सुपसाउलु पुं. 'कृपा.' सुपसाउलइ ७ [सं. सुप्रसाद > प्रा. सुपसाअ + स्वार्थिक 'ल'] जुओ पसाय.

सुंदिरि स्त्री. विशेष नाम. ११५, ११६, ११८; सुंदिरिस्यूं ११७. सुंदिरि 'सुन्दर स्त्री.' ९३७ [सं. सुन्दरी]

सूआर पुं. 'रसोईयो.' ७९९, ८०५, ९०३, ९१०, ९५६; सूयार ५३ (व) [सं. सूपकार > प्रा. सूअआर. अन्यत्र पण आ शब्द मळे छे: 'मरण तणिइ भयि भोजन वार वासी चाटुउ धरइ सूआर'—'कान्हडदेप्रबन्ध,' खंड १, कडी २५; 'पाषंडी पोलि पडिहार, कुकवि सवे कीधा सूयार'—त्रिभुवनदीपक प्रबन्ध,' कडी ६८]

सूकडि स्त्री. 'सुखड.' १८८; सूकडि तृतीयानो प्रयोग. १५६ [सं. शुष्क > प्रा. सुक्क + स्वार्थिक 'डी.' दक्षिण गुजरातनी बोलीमां 'सुकड' के 'सुकेड' बोलाय छे.]

सूतली स्त्री. 'शणनी दोरी, सूतळी.' ८८४ [सं. सूत्र > प्रा. सुत्त + स्वार्थिक 'ली' [अर्वाचीन गुज.मां 'सूतळी' = शणनी दोरी. व्युत्पत्तिनी दृष्टिए जोतां सूतरनी दोरी माटे पण आ शब्द वपराई शके. अहीं मूळ काव्यमां सन्दर्भ उपरथी एना प्रकारनी स्पष्टता थती नथी. अहीं 'हीर' अने 'सूतली' वच्चेनुं अंतर कर्तांने बताववुं छे. जूनी गुजरातीमां 'सूतली' शब्दनो अर्थ 'शणनी दोरी' नहि, पण 'सूतरनी दोरी' होय तो ए पुरवार करवा माटे वधारे सुस्पष्ट प्रयोगोनी अपेक्षा रहे छे.]

सूत्रधार पुं. [सं.] 'एक कारीगर, सुथार.' १०० [सं. सूत्रधार > प्रा. सुत्तहार > गुज. सुथार, सुतार]

सूथ न. अर्थ अस्पष्ट. २४ (प)

सूधउ वि. 'शुद्ध.' ५२२; सूधा ५३७; सूधी १९६२, ६ (प), सूधूं ६९५, ११७९ [सं शुद्ध > प्रा. सुद्ध]

सूहाली स्त्री. 'लीसी, सुंवाळी' १८८, 'पुरी जेवो एक खाद्य पदार्थ, सुंवाळी.' ८३८ [सं. सुकुमारिका > प्रा सुउमारिआ, सुउंवारिआ. तळेली 'सुंवाळी' माटे जैन संस्कृतमा सुकुमारिका शब्द वपरायेलो छे जुओ 'पंचतंत्र' नां मारा अनुवादमा पृ. ३३१-३२ उपरनुं टिप्पण.]

सैघ्रपणउं न. 'शीघ्रपणुं, उतावळ.' शैघ्रपणइ २८०

सोनईउ पुं. 'सोनामहोर, सोनैयो.' ८७७. 'सर० 'रूपैयो' [सं. सौवर्णिक > प्रा. सोवण्णिअ > अप. सोअण्णिउ]

सौरसेन पुं. 'शूरसेन प्रदेश ज्या नलराजाए विजय कर्यो हतो, मथुरानी आसपासनो प्रदेश.' २६५.

सौवीर पुं. [सं.] 'एक प्रदेश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो.' २६७. मूलताननी आसपासना प्रदेशने अल बिरूनीए सौवीर कह्यो छे.

स्कल अ. क्रि 'खसी पडवुं, पडी जवुं' स्कलइ ८३५, १०४० [सं. स्खल्. सर० खडी जवुं, आखडवुं, पडवुं आखडवुं]

स्त्रीराज्य न. [सं.] 'एक प्रदेश ज्यां नल राजाए विजय कर्यो हतो.' २६८ [हिमाचल प्रदेशमा गढवाल अने कुमाउंने स्त्रीराज्य गणवामा आवे छे जुओ नंदलाल दे, 'ज्योग्रोफिकल डिक्शनरी,' पृ. १९४]

स्वामी पुं. 'प्रभु, स्वामी.' ६०० [सं. स्वामिन् > प्रा. सामी]

हलुइ अ. 'हळवे, धीरे.' ४१९ [सं. लघुकेन > अप. हलुअइ] जुओ हलुआपणउं अने हलुई.

हलुई स्त्री. 'हळवी, हलकी.' ८१७ [सं. लघुक > प्रा. लहुआ, व्यत्ययथी हलुआ.] जुओ हलुआपणउं अने हलुइ.

हलूआपणउं न. 'हळवापणुं, हलकाई.' ४०४ [सं. लघुक > प्रा. लहुअ, व्यत्ययथी हलुअ + सं. °त्वन > प्रा. °प्पण] जुओ हलुइ-हलुई.

हवइ अ. 'अत्यारे, हवे.' १०५१ [सं. एतादृशके > अप. एवहइ, एहवइ. 'हवइ'नुं हिव अने हव रूप पण मळे छे]

हवडा अ. 'हवे, हमणां.' ९६६ [सं. अधुना > प्रा. अहुणा, हउणा, हवडा. एने सप्तमीनो 'आं' लागतां 'हवडां' अने पछी 'हमणां' रूप थाय. जूनी गुज.मां 'हिवडां' पण मळे छे. 'हिवडां' एटले के 'हवडां' शब्द श्री. टी. एन. दवे हिव + डां उपरथी व्युत्पन्न करे छे. जुओ एमनुं A Study of the Gujarati Language, पृ. १९६.] जुओ हवइ.

हस्तमुखी वि. 'हसता मुखवाळी.' [सं. हसितमुखा]

हाट न. 'दुकान.' ३८७ [सं. हट्ट]

हाणि स्त्री. 'नुकसान, क्षय,' गुज. 'हाण'. ३० [सं. हानि]

हाली वि. 'असंस्कारी, जड, गामडियो.' ८८३ [सं. हालिक > प्रा. हालिअ. सर० गुज. 'हाळी.']

हांस पुं. 'गळामां पहेरवानुं एक घरेणुं, हांसडी.' १९४ [सं. अंस > आंस, हांस. सर० हि. हंसली, म. हांसळी]

हीयाली स्त्री. 'कोयडो, उखाणुं.' १६२ [आ शब्दना आ अर्थमां केटलाक सुस्पष्ट प्रयोगो माटे जुओ वीरसिंहना 'उषाहरण'मांथी नीचेनां अवतरणो–'चतुरपणूं अति चाहवा नारी जंपिइ नाह, एक बार अम्हनइ कहु अर्थ हैयाली आंह' (पंक्ति ६०१-२); 'अनिरुद्ध उषा प्रति कहि अरथ हैयाली एह, कहितां लाधूं कामिनी सुरतकल्हरस तेह (पंक्ति ६०४-५); 'अनिरुद्ध उषा प्रति कहि अरथ हैयाली एह, कहितां लाधूं कामिनी मूं करमंडप तेह' (पंक्ति ६०८-९), 'अनिरुद्ध उषा प्रति कहि अरथ हैयाली एह, कहितां लाधूं कामिनी एनि ओत्तम सम देह' (पंक्ति ६१२-१३). आ 'हैयाली' उपरांत 'हरियाली' एवुं पण एनुं

सूत्रधार पुं. [स] 'एक कारीगर, सुथार ' १०० [स सूत्रधार > प्रा. सुत्तहार > गुज. सुथार, सुतार]

सूथ न. अर्थ अस्पष्ट. ७४ (५)

सूधउ वि 'शुद्ध.' ५२२, सूधा ५३७, सूधी १९६२, ६ (५), सूधूं ६९५, ११७९ [सं शुद्ध > प्रा सुद्ध]

सूहाली स्त्री. 'लीसी, सुंवाळी ' १८८, ' पुरी जेवो एक खाद्य पदार्थ, सुंवाळी.' ८३८ [सं सुकुमारिका > प्रा सुउमारिआ, सुउंमारिआ तळेली 'सुंवाळी' माटे जैन संस्कृतमा सुकुमारिका शब्द वपरायेलो छे जुओ 'पचतंत्र' नो मारा अनुवादमा पृ. ३३१-३२ उपरनुं टिप्पण.]

सैघ्रपणउ न. 'शीघ्रपणुं, उतावळ.' शैघ्रपणइ २८०

सोनईउ पुं 'सोनामहोर, सोनैयो.' ८७७. 'सर० 'रूपैयो' [सं सौवर्णिक > प्रा. सोवण्णिअ > अप. सोअण्णिउ]

सौरसेन पुं. 'शूरसेन प्रदेश ज्या नलराजाए विजय कर्यो हतो, मथुरानी आसपासनो प्रदेश.' २६५.

सौवीर पुं. [सं.] 'एक प्रदेश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हतो ' २६७. मूलताननी आसपासना प्रदेशने अल बिरूनीए सौवीर कह्यो छे

स्कल अ. क्रि 'खसी पडवु, पडी जवुं ' स्कलइ ८३५, १०४० [सं. स्खल्. सर० खडी जवुं, आखडवुं, पडवुं आखडवुं]

स्त्रीराज्य न. [सं] 'एक प्रदेश ज्या नल राजाए विजय कर्यो हतो.' २६८ [हिमाचल प्रदेशमा गढवाल अने कुमाउंने स्त्रीराज्य गणवामा आवे छे जुओ नंदलाल दे, 'ज्यॉग्रोफिकल डिक्शनरी,' पृ. १९४]

स्यामी पुं 'प्रभु, स्वामी ' '६०० [सं. स्वामिन् > प्रा. सामी]

हलुइ अ. 'हळवे, धीरे ' ४१९ [सं. लघुकेन > अप. हलुअइ] जुओ हलुआपणउं अने हलुई

रूप मळे छे जेमा आध्यात्मिक अर्थो सूचवती अवळवाणी कविताने जूना गुजराती साहित्यमा 'हरियाळी' कहे छे 'हरियालाओ' मळे छे जैन साधुओमा आजे पण आ शब्द छे सर० व 'हयाळी' एनी व्युत्पत्ति स हृदय > प्रा उपरथी हशे ?]

हेज न 'हेत' ५४१ [स हृय > प्रा हिज]

प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'ना प्रथम प्रकाशन विषे ...
केटलाक अभिप्रायो

Shri G. V. Mavlankar (Speaker, Indian Parliament; President, Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad)—" It was a new thing to me to know that our old literature has a number of works in prose. Then there are a couple of points which I appreciate very much. The first is that the book is printed in Devanagari script. The other point is the gradual compilation of a vocabulary consisting of words of special importance. It is essential to have such a vocabulary for the study of our old literature."

Dr. Suniti Kumar Chatterji (Emeritus Professor of Comparative Philology, University of Calcutta; Chairman, West Bengal Legislative Council)—" I congratulate you on the very fine piece of work which you have brought under the auspices of the University of Baroda. This is a very auspicious start. The book, because of both its language and subject-matter has very great interest for all the students of Indian linguistics and philosophy as well as general culture; and the editing has been done in a very fine scholarly style, and on the top of that, the printing and the get-up are excellent. It was a very good idea to print the Introduction and everything in Gujarati in the Devanagari character. Your work is a valuable addition to the mass of texts in early Gujarati which has been made already available by other scholars. The University of Baroda can be most heartily felicitated for inaugurating this series of *Prācīna Gurjara Granthamālā*, which I feel perfectly confident, will become a very honoured series among the various well-known series of texts published by different institutions of India."

Professor Alfred Master (Retired Professor of Indian Philology, School of Oriental and African Studies, London University)—" The edition as the part of a planned series is very welcome, as the number of critical texts in old Gujarati

रूप मळे छे. जेमा आध्यात्मिक अर्थो सूचवती अवळवाणी आवनी होय एवी कविताने जूना गुजराती साहित्यमा 'हरियाळी' कहे छे आवां मत्स्यावंध 'हरियाळीओ' मळे छे जैन साधुओमां आजे पण आ शब्द सामान्य रीते प्रचलित छे. सर० बं. 'हयाळी' एनी व्युत्पत्ति सं. हृदय > प्रा हिअअ + स्वार्थिक 'आळी' उपरथी हशे ?]

हेज न. 'हेत.' ५४१ [सं हृद्य > प्रा. हिज्ज]

प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'ना प्रथम प्रकाशन विषे

केटलाक अभिप्रायो

Shri G. V. Mavlankar (Speaker, Indian Parliament; President, Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad)—"It was a new thing to me to know that our old literature has a number of works in prose. Then there are a couple of points which I appreciate very much. The first is that the book is printed in Devanagari script. The other point is the gradual compilation of a vocabulary consisting of words of special importance. It is essential to have such a vocabulary for the study of our old literature."

Dr. Suniti Kumar Chatterji (Emeritus Professor of Comparative Philology, University of Calcutta; Chairman, West Bengal Legislative Council)—"I congratulate you on the very fine piece of work which you have brought under the auspices of the University of Baroda. This is a very auspicious start. The book, because of both its language and subject-matter has very great interest for all the students of Indian linguistics and philosophy as well as general culture; and the editing has been done in a very fine scholarly style, and on the top of that, the printing and the get-up are excellent. It was a very good idea to print the Introduction and everything in Gujarati in the Devanagari character. Your work is a valuable addition to the mass of texts in early Gujarati which has been made already available by other scholars. The University of Baroda can be most heartily felicitated for inaugurating this series of *Prācīna Gurjara Granthamālā*, which I feel perfectly confident, will become a very honoured series among the various well-known series of texts published by different institutions of India."

Professor Alfred Master (Retired Professor of Indian Philology, School of Oriental and African Studies, London University)—"The edition as the part of a planned series is very welcome, as the number of critical texts in old Gujarati

published is still very small, considering the vast amount of manuscripts extant As it is still necessary to emphasise the linguistic rather than the literary significance of old Gujarati texts the publication of a manuscript of Somasundarasuri's commentary written only fourteen years after his death is of particular importance The book is well planned clearly printed and well bound so that it is a pleasure to the student to handle and read

Professor G H Bhatt (Director Oriental Institute Baroda in the *Journal of the Oriental Institute* Vol, II, p 405) We congratulate Dr Sandesara on his excellent edition and we are sure the new series under his able guidance will in course of time supply the necessary sources of a Gujarati Dictionary to be prepared on historical principles—a long felt desideratum

Dr A N Upadhye (Rajaram College Kolhapur President Prakrit and Jainism section 11th All India Oriental Conference)— The Introduction gives useful material and the text of the Balavabodhas is very well presented I am sure you will bring out many such books which would give us a connected account of the development of Apabhramsa prose

Dr J Filliozat (Professor of Sanskrit College de France in *Journal Asiatique* no 2 of 1953)— Premier volume d une Pracina gurjara granthamālā Serie d'ouvrages anciens du Gujrat publiée à Baroda par l Université Maharaja Sayaji Rao avec une préface en gujrati par Mme Hamsa Mheta Vice Chancelier L édition est très soigneuse et très bien présentée [First volume of Pracina gurjara granthamala series of ancient works of Gujarat published at Baroda by the Maharaja Sayajirao University, with a preface in Gujarati by Mrs Hansa Mehta Vice Chancellor The edition is very careful and very well presented]

श्री. कनैयालाल माणेकलाल मुनशी (गवर्नर, उत्तर प्रदेश; प्रमुख, भारतीय विद्याभवन, मुंबई)–" तमे तो खूब काम करी रह्या छो; अने प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला घणी ज उपयोगी थशे. तमारा प्रयत्नोने सफळता इच्छुं छुं."

श्री. हरसिद्धभाई दिवेटिया (वाइस-चान्सेलर, गुजरात युनिवर्सिटी)–" भाषा तेम ज विवेचन बन्नेनी दृष्टिए पुस्तक मूल्यवान छे अने तमारो विवेचन अने विद्वत्तापूर्ण शब्दकोशथी ते वधारे मूल्यवान बन्युं छे."

श्री. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी (वाइस चान्सेलर, शेठ ना. दा. ठा. महिला विद्यापीठ)–" साधारण रीते एवी मान्यता प्रसरी गयेली के जूना गुजरातीमां गद्य हतुं ज नहि...आ संशोधन, ने ते पण शास्त्रीय रीते, करीने तमे आपणा साहित्यनी परंपरा पर नवो ज प्रकाश पाड्यो छे."

विख्यात विवेचक प्रो. रामनारायण विश्वनाथ पाठक–" वांचतां संपूर्ण संतोष थयो. तमे जे उद्देशथी ग्रन्थमाला शरू करी छे तेने सिद्ध करवा बधी रीते उपयोगी नीवडे तेवी संपादनपद्धति योजी छे. आ पुस्तक हवे पछी प्राचीन गुजराती भाषाना पुस्तकसंपादननो एक सारो नमूनो थई पडशे. मुद्रण चोख्खुं अने मूळ पाठ अने बालावबोध स्पष्ट जुदां तरी आवे एवी रीते करेलुं छे ते योग्य ज कर्युं छे. अंते आपेलो शब्दकोश भविष्यमां गुजराती भाषानो पूर्ण कोश करवो हशे त्यारे पूरो उपयोगी थशे."

प्रो. रसिकलाल छोटालाल परीख (अध्यक्ष, भो. जे. अध्ययन-संशोधन विद्याभवन, गुजरात विद्यासभा, अमदावाद)–" महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय स्थापी मुंबई राज्ये युनिवर्सिटीना साचा अर्थमां–' गुरुशिष्यमंडळ 'ना अर्थमां–विद्याकीय संस्थानो अखतरो आदर्यो छे. आ युनिवर्सिटी अनेक विद्याशाखाओ विकसाववा प्रयत्न करे छे, तेमां तेनो प्रशंसनीय अने सौथी वधारे आवश्यक प्रयत्न गुजराती विद्याविभाग खोलवानो छे. सद्भाग्ये आ विभागना अध्यक्ष तरीके डॉ. सांडेसरा जेवा कृतपरिश्रम संशोधनकुशल विद्वाननी निमणूंक थई छे. डॉ. सांडेसराए

प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमालानी योजना करी तेना पहेला ग्रन्थ तरीके नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित 'षष्टिशतक प्रकरण' अने तेना त्रण बालावबोधोनु संपादन करी प्रकाशन कर्युं छे ते तेमनी कार्यपरायणता अने संशोधन-दक्षता व्यक्त करे छे.

गुजराती भाषानुं वास्तविक स्वरूप जाणवा माटे तेनां विकास अने घडतरने जाणवां जरूरी छे. सुनीतिकुमार चातुर्ज्याए बंगाळी भाषानुं अने फ्रेन्च भाषाशास्त्री सद्‌गत ब्लॉके मराठी भाषानुं जे शास्त्रीय पद्धतिए निरूपण कर्युं छे तेवुं गुजरातीनुं थवु हजी बाकी छे. अंग्रेजी भाषानो जेवो शब्दकोश ऑक्सफर्ड युनिवर्सिटी तरफथी बहार पडयो छे तेवो गुजराती भाषानो शब्दकोश संशोधकोनी प्रतीक्षा करे छे. पण आ प्रवृत्तिओ हाथ धराय ते पहेलां कालक्रममां प्राचीन गुजराती साहित्यनी कृतिओनुं शास्त्रीय पद्धतिए संशोधन अने प्रकाशन वहोळा प्रमाणमां थवु जरूरी छे. आ जरूरियातने लक्ष्य करी डॉ. सांडेसराए आ ग्रन्थमाळानी योजना अने आ ग्रन्थनुं संपादन कर्यां छे ते शास्त्रीयताना साचा मार्गे जाय छे एवो मारो अभिप्राय छे. ....

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालयना, प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमालाना आ पहेला प्रकाशनने आवकार आपतां अने तेना संपादकने धन्यवाद आपतां मने आनंद थाय छे. आवी ग्रन्थमाळाने अवकाश आपवा माटे गुजराती भाषाना अभ्यासीओ वाईस-चान्सेलर श्रीमती हंसाबहेनने अभिनंदन आपशे."

विख्यात साहित्यकार **श्री· रमणलाल वसंतलाल देसाई** ('सयाजी-विजय,' ता. २९मी मार्च १९५३ ना अंकमां) – "वडोदरा राज्यनी 'प्राचीन काव्यमाला'नी श्रेणीनी याद आपती अने ,ए श्रेणीना कार्य-उद्देशने विस्तार आपती 'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'ना पहेला ग्रन्थ तरीके प्रसिद्ध थयेलुं 'षष्टिशतक प्रकरण' संपादनकार्यनो एक यशस्वी नमूनो बनी रहयुं छे."

प्रो· विष्णुप्रसाद र· त्रिवेदी (अध्यक्ष, श्री. चुनीलाल गांधी विद्याभवन, एम. टी. बी. कॉलेज, सूरत)– "संपादननी समग्र पद्धति नमूनेदार छे... ग्रन्थनो देखाव आकर्षक छे, तेनुं संपादन प्रशंसापात्र छे; अने तेनुं तात्पर्य सद्वृत्ति अने सद्धर्मना शोधकने उपयोगी नीवडे तेम छे."

प्रो· अनंतराय म· रावळ (गुजरात कॉलेज, अमदावाद)– "आपणी भाषाना अभ्यासीओने भाषाविकासना इतिहासमां खूटता अंकोडा पूरा पाडती तेम ज साहित्यना अभ्यासीओने अभ्यास अने विवेचन माटे नवो भंडार संपडावती प्राचीन गुजराती कृतिओनुं प्रकाशन आ पुस्तकथी प्रारंभती, तमारा विश्वविद्यालयनी 'प्राचीन गुर्जर ग्रंथमाळा' गुजराती साहित्यनी मोटी सेवा करशे."

प्रो· डोलरराय मांकड (आचार्य, दरबार गोपाळदास महाविद्यालय, अलियाबाडा)– "युनिवर्सिटीने योग्य ए प्रकाशन छे. आपणा प्राचीन गद्यना अभ्यासमां ए घणुं उपयोगी नीवडशे, एमां शंका नथी. संस्कृतनी पेठे जूनी गुजरातीमां पण आवी विवरणशैली हती ते पण आ प्रकाशनथी स्पष्ट थाय छे."

प्रो· गौरीप्रसाद चु· झाला (सेन्ट झेवियर्स कॉलेज, मुंबई)– "प्रस्तावना अने शब्दकोश बन्नेमां तमारी लाक्षणिकता–विद्वत्तानी, विचारनी अने शैलीनी–अंकाई छे. अभिनन्दन अने 'ग्रन्थमाळा' ने शुभेच्छा!"

डॉ· वासुदेव शरण अग्रवाल (कॉलेज ऑफ इन्डोलोजी, बनारस हिन्दु युनिवर्सिटी)–"नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित 'षष्टिशतक' ग्रन्थ को तीन बालावबोध टीकाओं के साथ प्रकाशित देख कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। आपने बडौदा विश्वविद्यालय से प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला का संपादन आरम्भ कर के अपने लिये उत्तम कार्य का सूत्रपात किया है। गुजराती